सफलता के सूत्र



डा. विमला मल्होत्रा

Low of Success for Both the worlds

इस पुस्तक की अंग्रेजी अनुवाद की माननीय लोगों द्वारा प्रशंसा

ept my congratulation for writing and publishing such a good book 'Law of Success'. Thank you for sending a copy of the same.

The book is really good and I have gone through it. Both the contents and purpose is laudable. I am sure this book will do ample good to most of its readers. On my part, I have marked and forwarded the copy to the Library.

P.P. RADHAKRISANAN.
MA, PGDBM, LLB.(Gen.),MIM, FIIEIM
PRESIDENT: INDIAN INSTITUTE OF
EXPORTAND IMPORT MANAGEMENT

With season's greetings, I convey my sincere thanks for presenting your treatise on 'Law of Success.'

The book I felt will be of immense use for our senior students particularly with reference to our BMS students. I shall ensure that your thought and ideas, as brought out in this publication are given the best of attention by our students.

DR. A. VARADARAJAN
PRESIDENT AND FOUNDER OF NATIONAL
EDUCATION SOCIETY AND MORE THAN
FORTY EDUCATIONAL INSTITUTES

"I have read your book 'Law of Success for both the worlds'. This book is very informative, easy to read, and it teaches business ethics spiritually. I have recommended it to my lot of friend who got great amount of benefit to this book.

I have distributed copies of this book to staff and students and kept in libraries. My personal suggestion is that teaching of this book will greatly help student and kept in libraries. My personal suggestion is that teaching of this book will greatly help students in succeeding in their career."

DR. MUSHTAQUE MUKADAM
MEDICALDIRECTOR: Z.V.M GENERAL
HOSPITAL, AZAM CAMPUS, PUNE.

I found the book extremely interesting and informative. The book takes the reader to, as yet, un-explored areas of wisdom. We are yet to come across such a book with varied dimensions and range of invaluable thoughts. To tell you frankly, the book has put me on a pondering mode right from the start. I take this opportunity to heartily congratulate you for your farsightedness, vision and endeavor. May God bestow you with health & happiness to enable you to bring such publications which is the need of the hour.

M. A. H. SHEIKH
DIRECTOR, SHANZE
POWER TECH PVT. LTD.

सफलता के सूत्र

डा. विमला मल्होत्रा

प्रकाशक

तनवीर पब्लिकेशन

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस
ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,
एल.बी.एस. मार्ग, सोनापुर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078
फोनः 022-2596 5930
मोबाइलः 932006 4026
ई-मेलः hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in
वेब-साइटः www.freeeducation.co.in,
www.tanveerpublication.com

सफलता के सूत्र

ISBN. 978-93-80778-03-7

कीमत: 100/- रु.

विनंती

इस पुस्तक में पवित्र वेद, पवित्र बाइबल और पवित्र कुरआन के श्लोक हैं। इसलिए इस पुस्तक का सम्मान कीजिए और फिल्मी मॅगझीन तथा अश्लिल मासिकों से इसे दूर रखें।

लेखक

क्यू.एस. खान

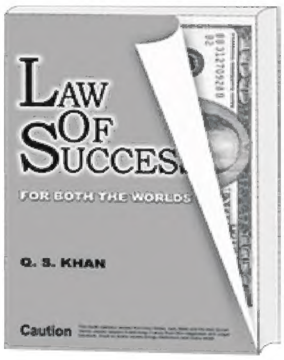
अनुवाद

डा. विमला मल्होत्रा

Detail of original book
Copyright 2007. Q.S.Khan
blished by Wheatmark
610 East Delano Street,Suite 104
Tucson, Arizona **85705 U.S.A.**
www.wheatmark.com

International Standerd Book Number:
978-1-60494-019-0

Library of Congress Control Number:
2007943653



प्रस्तावना

मनुष्य भौतिक वस्तु (Matter) और शक्ति (Energy) इनका संगम हैं। यानि शरीर (Matter) और आत्मा(Energy)। इसी प्रकार समृद्धि भी वस्तु और सकारात्मक शक्ति का संगम है। समृद्धि में वस्तु (Matter) यानी प्रत्यक्ष रुप में संम्पत्ति का मालिक होना और सकारात्मक शक्ति (Energy) यानी ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होना।

बहुत से लोग सफलता की प्राप्ति के लिए बौद्धिक (Intellectual) और आध्यात्मिक (Spritual) स्तर पर कोशिश नही करते। क्योंकि वह इस बारे में अनजान होते हैं। इसीलिए वह अपने कार्यकाल में हमेशा कोशिश ही करते रह जाते हैं, परंतु सफलता के रास्ते का उचित ज्ञान न होने के कारण जिंदगी के आखिरी क्षण तक वह असफल ही रहते हैं।

'सफलता के सूत्र' यह पुस्तक आप सभी को सफलता के दोनों पहलुओं (Aspect) की पहचान कराने के हेतु लिखी गई हैं। यानि ईश्वर के आशीर्वाद के साथ संम्पत्ति कमाना। यह पुस्तक बहुत ही सरल भाषा में लिखी है। इस पुस्तक में लेखक के नज़रिये के साथ विश्व के प्रसिद्ध और स्वंयप्रेरणा देनेवाली (Self-Motivational) पुस्तकों का भी संदर्भ (Summary) दिया गया है। अगर आप जवान उद्योगपति (Young enter preneur) हो और आपके पास अगर बहुत सारी पुस्तके पढ़ने के लिए समय उपलब्ध नहीं है, तो यह एक पुस्तक आपको कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा विषयों के बारे में मार्गदर्शन करेगी।

क्यू. एस. खान
hydelect@vsnl.com

अनुक्रमणिका

भाग-३ अच्छे कार्यो के प्रति नियम

भाग-४ असफलता के सामान्य कारण

भाग-५ अंतिम उपाय

भाग-६ ईश्वर कौन है?

भाग-७ विश्व की समृद्धि

अंतिम वाक्य

अध्याय - १

भाग्य के द्वारा समृद्धि

Prosperity through Luck

(गुमराह करने वाले उदाहरण)

उदाहरण १

श्रीमान सुनील यादव बारहवीं कक्षा पास करने के बाद २० वर्ष की आयु में (१९८० में) उत्तर प्रदेश से मुंबई आए। मुंबई में वह अपने ससुराल वालों के साथ तांबा, पीतल और सीसा इन धातुओ के भंगार का व्यापार करने लगे। उन्होंने शुद्ध सीसे को पिघलाने की कला सीख ली। वह शुद्ध सीसे को ईंटों के रुप में ढलाई करके नया माल कह कर इंजिनियरिंग उद्योग में सप्लाई करने लगा। उन्होंने धातुओं की ढलाई का एक कारखाना भी स्थापित कर लिया। तत्पश्चात् दस वर्ष की अवधि में उन्होंने दो करोड रुपयों से अधिक धन कमा लिया।

उदाहरण २

श्रीमान आर. डी. सिंह एक बुद्धिमान और जोशीले नौजवान थे। विभिन्न आवश्यक परिक्षाऐं और इंटरव्यू पास करने के साथ साथ राजनीतिक प्रभाव तथा रिश्वत देकर उन्होंने (१९७५ में) कस्टम ऑफिसर की नौकरी प्राप्त की। अपनी नौकरी के दौरान वह एअर पोर्ट पर आने-जाने वाले सामान की जांच-परख करके अनुमति (Clearence) देते समय काफी धन और माल रिश्वत के रुप में लिया करते थे। इस प्रकार बहुत ही कम समय में उन्होंने बंगला, कार, भारी बैंक-बॅलेन्स और भौतिक सुख-सुविधाओं के सभी साधन जुटा लिए।

उदाहरण ३

श्रीमान फर्नांडीज़ ने मुंबई के पास, एक नए बसे उपनगर में (१९७० में) एक दुकान खरीदी। वह अपनी दुकान में न केवल नामी ब्रांड की साइकिलें ही बेचते थे, बल्कि दुकान के साथ उनकी अपनी एक छोटी-सी वर्कशॉप भी थी, जिस में वह कुछ थोड़े-से असली पुर्ज़े और शेष दूसरे नकली पुर्ज़े लगा कर साइकिलें बनाते थे। थोड़े-से असली पुर्ज़े वह इस होशियारी और चालाकी से लगाते कि उनका ब्रांड असली दिखाई देता था। इन साइकिलों को वह सस्ते दामों पर ग्राहकों को यह कहकर बेचते थे कि यह असली साइकिलें हैं और उन्हें इस व्यापार में कोई लाभ नहीं हो रहा है। ग्राहक उनकी मूल्य-सूची (Price List) तथा साइकिल के ब्रांड का नाम देखते और उनके वायदों पर विश्वास करके बिना किसी झिझक के साइकिलें खरीद लेते थे। इस प्रकार दस वर्ष की अवधि में उन्हों ने सात करोड़ की जायदाद बना ली।

उदाहरण ४

श्रीमान खन्ना की अपनी वर्कशॉप थी। वह एक ईमानदार आदमी थे और उनका नाम जाने-माने व्यापारियों में लिया जाता था। दलाल उनके पास आते और तस्करी किए गए विदेशी औज़ारों को मिट्टी के भाव खरीदने के लिए उनसे विनती करते। (यह सन १९७०-८० के बीच का समय था।) जिसे

खरीद कर श्रीमान खन्ना इन्हें विशेष संस्थानों में बहुत अधिक लाभ के साथ बेचा करते थे। श्री खन्ना खुद अपने वर्कशॉप में विशेष मशीनें भी बनाते और उन्हें ऊँचे दामों पर बेचते थे। इस तरह थोड़ी कोशिश और सरल जीवनशैली जीते हुए भी उन्होंने भारी धन-दौलत इकट्ठा कर ली।

उदाहरण ५

श्रीमान किरीट शाह उन्नीस वर्ष की आयु में अपनी कॉलेज की शिक्षा अधूरी छोड़ कर (१९६५ में) मुंबई आए। उन्होंने स्टेनलेस स्टील के स्क्रॅप खरीदने का काम शुरु किया। उनके मन में स्टेनलेस स्टील के पत्रों को, ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार सही नाप (Size) में काटकर सप्लाई करने का विचार आया; जिन्हें वह स्टील स्क्रॅप के पतरों से काटकर अलग किया करते थे। इस कारोबार से इन्हें नए स्टील के बिना कटे और बड़े पतरों से भी अधिक दाम मिलता था। इसके साथ-साथ किरीट शाह ने चमड़े की वस्तुओं को आयात करने का काम भी शुरु कर दिया और चमड़े की वस्तुएँ स्वयं भी बनाने लगे। इस तरह ६५ वर्ष की आयु में उनके पास दस करोड़ से अधिक की संपत्ती हो गई। वह जीवन भर एक ईमानदार और सज्जन पुरुष रहे। उन्होंने सभी भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ बड़ा आरामदायक जीवन व्यतीत किया।

इस प्रकार से सफलता प्राप्त करने की कहानियाँ आम नहीं हैं। इक्के-दुक्के ही ऐसे अनोखे उदाहरण मिलते हैं।

- इस प्रकार के आसानी से सफलता प्राप्त करने के उदाहरणों ने हज़ारों व्यक्तियों को गुमराह किया है। ऐसे उदाहरण उन्हें कठिन परिश्रम करने से रोकते और बेईमानी छल-कपट और गैर-कानूनी कार्य करके शीघ्र धनवान बनने की राह दिखाते हैं।

ऐसे ही कुछ उदाहरणों के दुःखद अंत के बारे में हम अगले अध्याय "सफलता के पश्चात् दुखद अंत" ("After the Success the Sorrowful ending") तथा "महान कार्य का महत्व" ("Importance of Noble deeds") नामक पाठों में अध्ययन करेंगे।

****

अध्याय - २

सफलता के पश्चात् दुःखद अंत

After the Success, The Sorrowful Endings

उदाहरण १

कस्टम अधिकारी आर. डी. सिंह (अध्याय १ का उदाहरण २) को हृदय-रोग हो गया (१९७० में)। जब उन्हें पहली बार हल्का सा दिल का दौरा पड़ा तो वह अस्पताल में दाखिल किए गए। डॉक्टरों ने बाइपास सर्जरी करके उन्हें धोखा दिया और उन्हें खूब लूटा। "फाइव स्टार" अस्पताल के कमरे में रहने, दवाई और ऑपरेशन का कुल मिलाकर पांच लाख रुपये का बिल बना। ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों की लापरवाही के कारण उनकी किडनियों (Kidney) में लंबे समय तक रक्त संचार बंद रहा, जिस के कारण उनके किडनियों में (Infection) हो गया। और उन की किडनियों ने काम करना बंद कर दिया। उसके बाद श्री आर. डी. सिंह को लंबे समय तक नियमित रुप से रक्त साफ करने के लिए 'डायलायसिस' (Dialysis) की तकलीफें झेलनी पड़ी। आखिरकार वह इलाज के लिए विदेश गए और वहाँ दो महीने तक अस्पताल में रहे। इस इलाज में १५ लाख से अधिक रुपये खर्च हो गए। इन सब प्रयासों के बावजूद अंततः उनकी मृत्यु हो गई।

वह अपने पीछे उच्च जीवन स्तर जीने वाला परिवार छोड़ गए। उनके किसी भी बच्चे ने ग्रेजुएशन नहीं किया था ओर न ही उनकी आमदनी का कोई अन्य स्त्रोत था। रिश्वत से कमाई हुइ धन दौलत और खुशहाली का इस प्रकार दुःखद अंत हुआ।

उदाहरण २

श्री किरीट शाह (अध्याय १, उदाहरण ५) एक भाग्यशाली, समृद्ध, ईमानदार एवं सज्जन व्यक्ति थे। उन्होंने ६५ वर्ष की आयु में व्यापार से 'रिटायरमेंट' (निवृत्ति) ली। उनके पुत्र चिराग ने अपने पिता का व्यापार पूरी तरह से संभाल लिया। वह भी एक बुद्धिमान व्यापारी सिद्ध हुआ। वह अपना व्यापार बहुत अच्छी तरह से कर रहा था।

श्री हिरेन नाम के उनके एक रिश्तेदार उनसे चमड़ा खरीदा करते थे और तुरंत उनके दाम भी चुका देते थे। उन्हों ने चिराग से गहरी दास्ती कर ली और उन्हें कई हफ्तों तक माल उधार देने के लिए राज़ी कर लिया। हिरेन हमेशा चिराग से भारी मात्रा में माल खरीदते और नियमित समय पर पैसे चुका देते।

एक बार श्री हिरेन को चमड़े की जैकिटों को निर्यात करने का बड़ा आर्डर मिला। उन्होंने श्री चिराग से ५ करोड़ का माल (चमड़े) उधार खरीदा। उन्होंने उन चमड़ो से जॅकिट्स बनाईं और उन्हें निर्यात कर दिया। परंतु दुर्भाग्यवश उस का भेजा हुआ माल कुछ तकनीकी समस्या के कारण विदेश में अस्वीकृत (Reject) हो गया।

यूरोपीय देशों ने चमड़े रंगने के कई प्रकार के डाई (Chemicals) पर प्रतिबंध लगाया है। विदेश में कस्टम अधिकारियों ने पाया कि हिरेन ने चमड़े की जॅकिट्स को रंगने के लिए उन प्रतिबंधित (Chemicals) का प्रयोग किया था और इस कारण उन का पूरा माल अस्वीकृत (Reject) कर दिया गया। श्री हिरेन का न

सिर्फ अस्वीकृत माल पर नुकसान हुआ बल्कि जॅकिट्स से भरे हुए तीन लंबे-चौड़े बक्सों (Containers) को ठिकाने लगाने पर भी भारी रकम खर्च करनी पड़ी। श्री हिरेन ने अपने आप को दिवालिया घोषित कर दिया और अपने माल की सप्लाई करने वालों का रुपया भुगतान नहीं कर सके। अंततः उधार माल देने के कारण श्री चिराग भी दिवालिया हो गए। श्री चिराग को अपने सप्लायर्स का रुपया चुकाने के लिए अपना ऑफिस बेचना पड़ा। उन्होंने भी अपनी साख (Reputation) और व्यापार दोनों को खो दिया।

ऊपर दिए गए दोनों उदाहरणों में एक बेईमान (आर. डी. सिंह) और एक सज्जन (श्रीमान किरीट शाह) दोनों बर्बाद हो गए। सब सावधानियाँ और अपने प्रयासों के बावजूद दोनों ही अपने ऊपर आने वाली आपत्ति और विनाश को नहीं टाल सके।

कठिन परिश्रम करके कोई समृद्धि और सफलता प्राप्त तो कर सकता है, परंतु उसे स्थिर रखना बहुत मुश्किल होता है।

इस पुस्तक में आप को समृद्धि और सफलता प्राप्त करने और साथ साथ उन्हें लम्बे समय तक स्थिर रखने के कुछ रहस्य मिलेंगे।

****

सफलता के सूत्र
Laws of Success

सफलता के सूत्रों को मुख्य रुप से तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है।

१. मन की सकारात्मक अवस्था से संबंधित सूत्र

Laws related to positive state of mind.

२. प्रशासन एवं व्यापारिक-कौशल से संबंधित सूत्र

Laws related to administration and business skills.

३. सत्कर्म, मानवता और ईश्वर की प्रार्थना से संबंधित सूत्र

Laws related to noble deeds and worship of God.

भाग- १

मन की सकारात्मक अवस्था से संबंधित सूत्र

Laws related to positive state of mind.

अध्याय - ३

शरीर की तुलना में मन का महत्व

Importance of mind over body

- फिलिस्तीनी (Palestine) नेता श्री. यासीन अपनी किशोर अवस्था में ही एक पहाड़ी से गिर पड़े थे। सिर के पिछले हिस्से में चोट लगने के कारण उन के पूरे शरीर को लक्वा मार गया था। जिस के कारण उन का पूरा जीवन 'व्हील-चेअर' पर सीमित हो कर रह गया। किन्तु उस अपाहिज हालत में भी 'व्हील-चेअर' से उन्होंने शक्तिशाली 'इज़राईल सरकार' का मुकाबला पचास वर्षों से भी अधिक समय तक किया। उन्होंने फिलिस्तीन की आज़ादी के लिए लड़ने वाले सब से अधिक निडर एवं साहसी संघठन "हमास" की स्थापना की।

  इज़राईल सरकार ने कई बार उन्हें जेल में बंद किया। किन्तु न तो वह श्री यासीन की मन और इच्छा-शक्ति से लड़ सके और न ही उन पर नियंत्रण कर पाए। अंत में जब उन्हें अपनी लाचारी का एहसास हुआ कि वह श्री यासीन के मज़बूत इरादों का मुकाबला नहीं कर सकते तो इस शारीरिक विकलांग व्यक्ति को मारने के लिए उन्होंने हॅलीकॉप्टर का प्रयोग किया, और उनकी कार पर मिसाईल दागे। इस तरह उन्होंने श्री यासीन को मार डाला।

- इंगलैंड के खगोलशास्त्री (Astrophysicist), श्री 'स्टीफन हॉकिन्स' भी व्हील-चेयर पर निर्भर हैं। वह इतने अशक्त हैं कि अपने कंधों पर अपना सिर भी सीधा नहीं रख सकते। परन्तु इतने असहाय होते हुए भी उन्होंने अपना नाम संसार के धनी और प्रसिध्द लोगों की सूची में लिखवाया है। वह इस जमाने के सब से अधिक सफल और धनी वैज्ञानिक तथा लेखक हैं।

- १९४७ से पहले भारत की मिलीटरी और गवर्नमेंट-मशीनरी पर ब्रिटिश सरकार का पूरा नियंत्रण था। किन्तु उस समय भी तीस करोड़ भारतीयों के हृदय पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी राज करते थे।

  शक्तिशाली ब्रिटिश शासक, महान अहिंसात्मक महात्मा गांधी के संकल्प और इच्छा-शक्ति का सामना नहीं कर सके और अंततः भारत से चले गए।

- ऊपर दिए गए उदाहरणों में हम ने जिन महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व का वर्णन किया है, वे मुख्यतः शारीरिक रुप से अशक्त थे। इन उदाहरणों के माध्यम से हम आप को यह बताना चाहते हैं कि सफलता प्राप्त करने के संघर्ष में शारीरिक-शक्ति की अपेक्षा मस्तिष्क और विचार शक्ति अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है।

  आगे के अध्यायों में हम विवेचना करेंगे कि मन और विचार शक्ति व्यक्तियों की समृद्धि और सफलता पर किस प्रकार प्रभाव डालती है।

****

समृद्धि को प्रभावित करने वाले बुद्धि संबंधि तथ्य

(Intellectual factors affecting prosperity)

बुद्धिमत्ता के स्तर पर किसी व्यक्ति की सफलता और समृद्धि को तीन तथ्य प्रभावित करते हैं:

१. मन का शारीरिक स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य)
Physical health of mind.

२. अवचेतन मन की अनुकूल अवस्था
Favourable state of the subconscious mind.

३. ईश्वर की कृपा
Favour and blessing of God.

अध्याय -4

मन का शारीरिक स्वास्थ्य

(Physical health of Mind)

अब हम मस्तिष्क का चिकित्सा-विज्ञान (Medical Science) के अनुसार नहीं बल्कि दार्शनिक (Philosophical) रूप से अध्ययन करेंगे। मेडिकल सायन्स के अनुसार हम मस्तिष्क से विचार करते हैं और हृदय केवल शरीर में रक्त पहुँचाने का काम करता है। आम बोलचाल की भाषा में हम मस्तिष्क के लिए मन शब्द का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम कहते है 'मेरा मन शांत हैं।' यहाँ मन नहीं बल्के मस्तिष्क में शांती होती है। फिर भी हम मन ही कहते है। इसी तरह इस पुस्तक में हम मस्तिष्क के लिए 'मन' शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

चेतन मन (Conscious Mind)

- पांच इंद्रियां जैसे, नाक (गंध), आँख (दृष्टि, नज़र), कान (सुनना), जीभ (स्वाद) और त्वचा (स्पर्श) हमारे आसपास से तथ्य (Fact) इकठ्ठा करती हैं, और चेतन मन (Conscious Mind) को पहुंचाती हैं।
- चेतन-मन पाँचो इंद्रियों से सूचना प्राप्त करता है, एकत्रित करता है, उस की समीक्षा करता है और तर्क-सहित (Logical) निर्णय लेता है। हम अपने रोज़मर्रा के कामों को चेतन मन (Conscious Mind) की सहायता से पूरा करते हैं।
- केवल स्वस्थ कंधे ही स्वस्थ मन का भार उठा सकते हैं और केवल स्वस्थ मन में ही सकारात्मक भावनाएँ और विचार होते हैं जो सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। इसलिए स्वस्थ शरीर, तथा स्वस्थ एवं सकारात्मक भावनाओं वाला मन सफलता प्राप्त करने की पहली आवश्यक्ता है।

****

अध्याय - ५

अवचेतन मन

(Subconscious Mind)

- आपका अपना ई-मेल आईडी और वेब-साइट होगा। आप अपने कम्प्यूटर पर संदेश टाइप करके अपने दोस्तों को भेजते हैं। या फिर इंटरनेट पर खोज करके दूसरों की वेबसाइट से डेटा डाउनलोड करते हैं। लैकिन क्या आप यह सही तरीके से जानते हैं कि आप की और अन्य लोगों की वेबसाइट्स कहाँ स्थित हैं, और अपने कम्प्यूटर पर डेटा डाउनलोड करने से पहले आपके ई-मेल संदेश (Messages) कहाँ एकत्रित (Store) होते हैं? आपका उत्तर होगा 'सरवर (Server)'। परन्तु आपका सरवर कहाँ पर है? आपके शहर में? आपके देश की राजधानी में ? अमेरिका में ? या अंतरिक्ष-यान में ? ९ ९ प्रतिशत लोग इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाते। वे यह तो जानते है कि सरवर (Server) कहीं तो है, पर वह कहाँ पर है, यह ठीक तरह से नहीं जानते।
- भोज निमंत्रण (Party) में, पेट भर भोजन करने के बाद आप अपने पेट को फूला हुआ पाते हैं, परन्तु धर्मगुरूओं को आप देखते हैं कि वे हज़ारों पन्ने याद कर लेते हैं, पर आप उन में से किसी का सिर फूला हुआ नहीं पाते। स्मरण के रूप में पुस्तक-सामग्री मस्तिष्क (Memory) में कहाँ समाई हुई है, यह यादें कहाँ एकत्रित हैं, और वे किस रूप में हैं? इन प्रश्नों का उत्तर भी हर आम व्यक्ति नहीं दे सकता। परंतु प्रत्येक व्यक्ति यह ज़रूर जानता है कि यह मस्तिष्क में ही कहीं किसी रूप में हैं।
- अवचेतन मन (Subconscious Mind) एक चेतना का क्षेत्र (Filed) है, जिस में प्रत्येक विचार की लहर (Vibrations), अनुभव (Experience) और दूसरी जानकारियाँ (Data) एकत्रित रहती हैं, जिन्हें हम अपनी पाँच इंद्रियों की सहायता से अपने आसपास के वातावरण से इकठ्ठा करते रहते हैं। अवचेतन मन जानकारियों (Data) को वर्गों में बांटता है, सुरक्षित रखता है। जहाँ से जब भी हम चाहें जानकारी (Data) प्राप्त भी कर सकते हैं, ठीक उसी तरह, जिस प्रकार हम एक भरी हुई अलमारी (Filling Cabinet) में से एक पत्र निकालते हैं।
- अवचेतन मन (Subconscious Mind) मनुष्य की स्मरण-शक्ति (Memory) जैसा ही होता है किंतु यह इंटरनेट से जुड़े किसी सुपर कम्प्यूटर के जैसा काम करता है।
- जब कोई विचार हमारे मन में आता है और उसे पाने की हमारे मन में ज्वलंत इच्छा होती है तो हमारा अवचेतन मन उसे वास्तविकता में बदलने के काम पर लग जाता है। उस समय वह उस व्यक्ति की यादों में जो कुछ भी जानकारियाँ उपलब्ध हैं उन की मदद से वह एक कम्प्यूटर की तरह उन जानकारियों को Process करता है और उस ज्वलंत इच्छा को वास्तविकता में बदलना का Plan सामने रख देता है।
- इंटरनेट-कनेक्शन और सर्च-इंजिन की तरह यह अवचेतन-मन, प्रकृति (Mother Nature) के साथ भी जुड़ा होता है। (जो ईश्वर द्वारा नियंत्रित एक स्वःचलित (Automatic) पद्धति है।) उस ज्वलंत

इच्छा को पूरा करने की पूरी जानकारी उस व्यक्ति के याददाश्त में पहले से हो तो अवचेतन मन, प्रकृति के साथ उस काम (विचार को वास्तविकता में बदलने) के बारे में जानकारी का आदान प्रदान करता है (जिस पर उसे काम करना होता है)। और उस कार्य को पूरा करने के लिए वह प्रकृति से भी सूचनाएं, योजनाएं, नए आइडिया (तरकीबें) लेता है।

- अवचेतन मन जिस भाषा को समझता है और जिस भाषा का प्रयोग वह प्रकृति (Mother Nature) से संपर्क के लिए करता है वह है 'भावना' (Emotion)।
- अवचेतन मन, भावना रहित (Cold reasoning) तर्कों (Logics) और इच्छाओं से प्रभावी नहीं होता है।
- अवचेतन मन की प्रक्रिया-क्षमता (Processing capacity) और याद करने की क्षमता (Storing capacity) चेतन मन से लगभग नौ गुनी अधिक होती है।

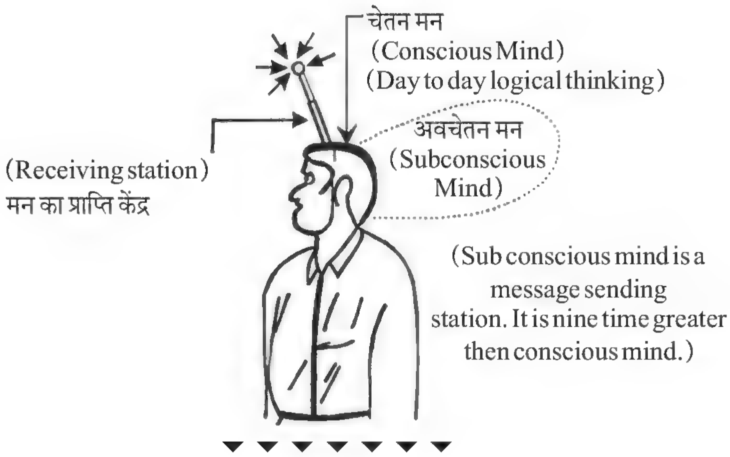
****

अध्याय - ६

मन का प्राप्ति केंद्र

(Receiving station of Mind)

मनुष्य का मन एक रेडिओ-स्टेशन की तरह है। यह ईश्वर, प्रकृति और दूसरे लोगों के मन से संपर्क (Communication) करता रहता है। अवचेतन मन, जानकारियों को सुरक्षित रखने (जमा करने) और उन्हें प्रसारण करने का एक साधन है। मन का प्राप्ति केंद्र (Receiving station),रचनात्मक कल्पना (Creative Imagination) के रूप में जाना जाता है। अर्थात यह वह जगह है जहाँ मन में नए-नए विचार, कल्पनाएं आती हैं। मन का यह प्राप्ति केंद्र भी चेतना का एक क्षेत्र (Field of consciousness) है जो विचारों के कंपन (Vibrations) को महसूस करता है। यह प्रकृति द्वारा प्रसारित संदेश प्राप्त करता है, और दूसरे लोगों के मन के प्रभावशाली कंपन (लहरें) भी प्राप्त करता है। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं, जिस में सकारात्मक विचार, उत्साह और संपति के प्रति जागरुकता हो तथा महान कार्य करने वाला हो तो हमारा मन भी उसी तरह की भावनाएं ग्रहण करता है। हम भी वैसी ही सकारात्मक मानसिकता, उत्साही एवं उच्च मानवता तथा पवित्रता की कंपन लहरों को महसूस करते हैं। ठीक इसी प्रकार जब हम किसी नकारात्मक मानसिकता अथवा अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति से मिलते है तो हम उस से उसी प्रकार की भावनाएं ग्रहण करते हैं और वैसी ही भावनाएं महसूस भी करते हैं। यदि हम मन का काल्पनिक एवं आकार मात्र खाका (Schematic Diagram) बनाएं तो वह निम्न प्रकार से बनेगा।

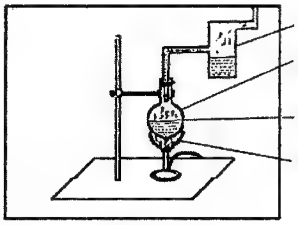


अध्याय -७

मन की भाषा

(The Language which Subconscious Mind Understand)

एक पानी से भरे शीशे के बर्तन की कल्पना कीजिए। जब पानी गरम किया जाता है तो यह उबलता है और भांप बर्तन के उपरी भाग में जुड़ी एक नलिका के द्वारा एक दूसरे शीशे के बरतन में पहुंचती है। जैसा कि इस रेखा-चित्र में दर्शाया गया है। किन्तु ठंडी अवस्था में न तो भांप बनेगी और ना ऊपर उठकर दूसरे बर्तन में पहुंचेगी।

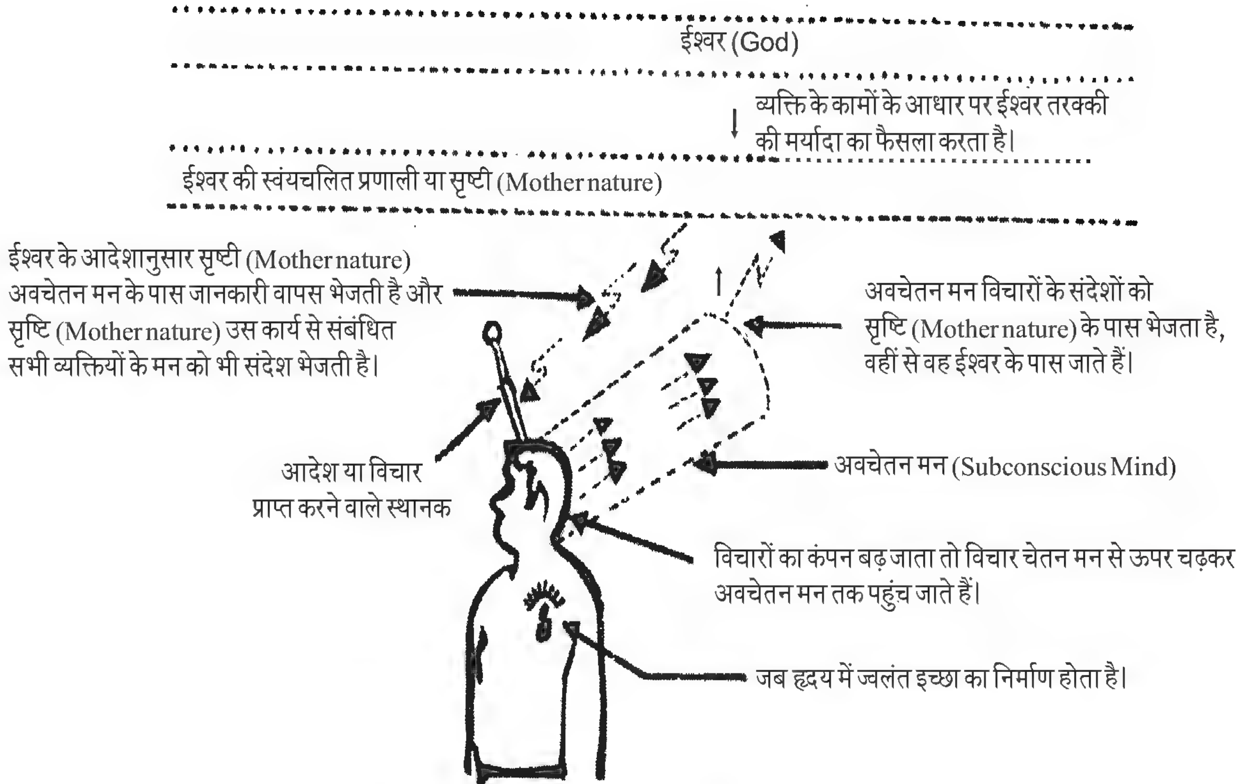


इसी प्रकार एक व्यक्ति के मन में आने वाले विचार जब भावना और ज्वलंत इच्छा (Burning desire) के साथ मिलते हैं तो विचार का कंपन (Vibration) बढ़ता है और यह अवचेतन मन के स्तर तक ऊपर उठते हैं। और अवचेतन मन उन्हें स्वीकार कर लेता हैं। अवचेतन मन विचारों को प्राप्त करने के बाद उन पर प्रक्रिया (Process) करता है और ईश्वर की स्वयंचलित प्रणाली (Mother nature) तथा ईश्वर से उस भावना को वास्तविक रुप देने के लिए संपर्क करता है। चूंके अवचेतन मन विचारों में होने भावना के बाद ही सक्रिय होता है इसलिए हम यह कह सकते है की भावना ही अवचेतन मन की भाषा (Software) है जो अवचेतन मन समझ लेता है और उसके अनुसार कार्य करता है।

हजरत मुहम्मद (स) ने कहा कि,
'ऐसा व्यक्ति जिस पर अत्याचार किया गया हो उसके शाप से बचो। क्योंकि पीड़ित व्यक्ति के मन से निकला हुआ शाप (बद-दुआ) सीधे ईश्वर तक पहुँचता है।' (मिश्कात)

छोटे बच्चे को जब कोई तकलीफ नहीं होती तो वह खेलता रहता है। मगर जैसे ही उसे कोई तकलीफ होती है वह तुरंत अपनी माँ को याद करता है। दु:ख जितना ज्यादा होगा उस बच्चे के मन में अपनी माँ से मिलने कि तड़प उतनी ही ज़्यादा होगी। और बच्चा दिल से माँ-माँ पुकार कर रोता है। इसी तरह खुशहाली में इन्सान ईश्वर को भूला हुआ होता है। मगर संकट और दु:ख के समय वह ईश्वर को ही याद करता है। और दु:ख, अत्याचार जितना अधिक होगा वह ईश्वर को उतना ही भावुक होकर पुकारता है। ऐसी स्थितियों में पीड़ित व्यक्ति की दुआ और शाप भावना के साथ भरे हुए होते हैं। इसीलिए सीधे ईश्वर तक पहुँचते हैं।

****



अवचेतन मन की ईश्वर और प्रकृति से संपर्क करने की पद्धति

अध्याय-८

भावनाओं के विभिन्न प्रकार

(Types of Emotions)

- भावनाओं के विभिन्न प्रकार है, जिन्हें मुख्य रूप से दो वर्गो में बाँटा जा सकता है, एक है सकारात्मक भावनाएं और दूसरी है नकारात्मक भावनाएं। अवचेतन मन दोनो प्रकार की भावनाओं की वजह से समान रूप से सक्रिय हो जाता है और उन्हें वास्तविकता में बदलने के लिए कार्य करता है।

सकारात्मक भावनाएं

अ. ज्वलंत इच्छाओं की भावनाएं।
ब. आशा और विश्वास की भावनाएं।
क. प्रेम-स्नेह और काम संबधी भावनाएं।
ड. उत्साह और साहस संबधी भावनाएं।

नकारात्मक भावनाएं

अ. निराशावादी भावनाएं।
ब. गरीबी, आलोचना, बीमारी और मृत्यु के भय की भावनाएं।
क. प्रिय व्यक्ति की जुदाई के भय की भावनाएं।
ड. प्रतिशोध की भावनाएं।
इ. ईर्ष्या की भावनाएं।
फ. क्रोध, द्वेष और प्रलोभन (लालच) आदि की भावनाएं।
ग. अंधविश्वास, ज्योतिष-शास्त्र, अंक-शास्त्र, हस्तरेखा-शास्त्र और भविष्यउक्ति आदि में विश्वास या आस्था रखना। (ज्योतिष की बताई हुई नकारात्मक भविष्यउक्ति मन में घर कर लेती है।)

- एक भी नकारात्मक भावना की उपस्थिति शेष सभी सकारात्मक भावनाओं को दबा देती है और स्वयं अवचेतन मन में पहुंच जाती है। अवचेतन मन सब से ज्यादा प्रभावशाली नकारात्मक भावना को ग्रहण करता है और उसे वास्तविक्ता में बदलने का प्रयास करने लगता है।

- सभी धर्मों में यह कहा गया है कि यदि ईश्वर से किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी हो तो पूर्ण विश्वास के साथ करो कि ईश्वर आप की इच्छा अवश्य पूरी करेगा और अपनी प्रार्थना पूरी होने के बारे में मन में कोई शंका या संदेह न करें। क्योंकि अविश्वास से की गई प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिलता।

  क्योंकि विश्वास एक सकारात्मक भावना है। जब विश्वास की भावना प्रार्थना के साथ मिल जाती है तब यह अवचेतन मन के स्तर तक पहुंचती है। वहाँ से यह सृष्टि (Mother nature) और ईश्वर के पास पहुंचती है और सकारात्मक परिणाम लेकर वापस लौटती है। निःसर्ग-माता ईश्वर की एक स्वःचलित

पद्धति है। यह ईश्वर के दिए गए आशिर्वाद (Blessing) को अवचेतन मन को सुझाती है कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की ज्वलंत इच्छा कैसे पूर्ण हो। इसी प्रकार वह अन्य लोगों के मन में भी यह सुझाव-संदेश भेजती है कि प्रार्थना करने वाले व्यक्ति की सहायता कैसे की जाए, जिससे उसकी मनोकामना पूरी हों।

इस के विपरीत जब प्रार्थनाएं शक और अप्राप्ति के ड़र के साथ की जाती हैं, तब अवचेतन मन उन नकारात्मक विचारों को ग्रहण करता है और उन्हें नि:सर्ग-माता और ईश्वर के पास भेज देता है। और वहाँ से उसे उसी प्रकार का आदेश मिलता है। नि:सर्ग-माता संबंधित लोगों के अवचेतन मन में यह संदेश भेजती है कि प्रार्थना करने वाले का शक और ड़र पूर्ण हो।

धार्मिक पुस्तकें ऊपर दिए गए सिद्धांत को सरल शब्दों में निम्न प्रकार से वर्णन करती हैं;

- पवित्र बाइबल कहता है,

  "जो कुछ भी तुम चाहते हो, जब तुम प्रार्थना करते हो तो विश्वास करो कि तुम ने उनको प्राप्त कर लिया है और भविष्य में तुम उन्हें प्राप्त भी कर लोगे।" (मार्क ११:२४)

- पवित्र कुरआन कहता है,

  "जब तुम कोई काम करने का मज़बूत इरादा करो तो अल्लाह पर भरोसा रखो। अल्लाह को वह लोग प्रिय है जो उस पर भरोसा करते हैं।" (पवित्र कुरआन ३:१५९)

  यहाँ 'ईश्वर पर भरोसा' का अर्थ है कि आप को यह पक्का विश्वास है की ईश्वर आप के संघर्ष में आप की सहायता करेगा और आप अवश्य सफल हो जाओगे।

- अंतिम दूत हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा है,

  "ईश्वर से प्रार्थना अटल विश्वास के साथ मांगो।" (बुखारी ६:९९५)

- ईश्वर कहता है, **"मैं लोगों से वैसा ही व्यवहार करता हूँ, जैसी वह मुझ से उम्मीद (अपेक्षा) रखते हैं।"** (बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं. ५६३, पेज नं. २१४)

  अर्थात मनुष्य ईश्वर से जैसी आशा रखता है ईश्वर उस के भाग्य को वैसे ही बदल देता है। इसलिए ईश्वर से सदैव अच्छी आशा रखें और मन भी सकारात्मक भावनाओं से भरा रहे।

****

अध्याय-९

विश्वास : सब से अधिक महत्वपूर्ण सकारात्मक भावना

(Faith: The most impostant positive Emotion)

- रोम (Rome) और ईरान (Parsia) प्राचीन काल में अत्याधिक बलवान राष्ट्र थे। ईरान का साम्राज्य पश्चिम में सऊदी अरब तक फैला हुआ था। ईरानी लोग आग की पूजा करते थे, और अपने शासन में अन्य धर्म पर अमल करने पर लोगों पर पाबंदी लगा रखी थी। जब इस्लाम के दूसरे खलीफा हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने महसूस किया कि वे अरब लोग जो ईरानियों के शासन में हैं, उनपर अत्याचार किया जाता है और एक ईश्वर की पूजा व भक्ति से रोका जाता है तो उन्होंने यह निश्चय किया कि अरबो को ईरानियों से आज़ाद कराना है। इसलिए ई.सन ६४० में उन्हों ने हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) को सेनापती नियुक्त किया, और उन्हें लगभग तीस हज़ार सिपाही देकर अरबों को ईरानियों के अत्याचार और दबाव से आज़ाद कराने के लिए भेजा।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ईरानियों को ईराक़ के प्रत्येक मोर्चे पर पराजित किया। परन्तु उनके सामने एक ऐसी समस्या आई जो उनके नियंत्रण से बाहर थी। पीछे हटते ईरानियों ने युफ्रेटस (फरात) नदी के सभी पुलों को नष्ट कर दिया और सारी नावें डुबा दीं। हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) के लिए पुल और नावों के बिना ईराक़ के शेष हिस्से से ईरानियों को निकाल बाहर करना संभव नहीं था।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक महान योद्धा थे इसमें कोई शक नहीं, लेकिन वह एक संत की तरह पूर्ण रूप से पवित्र आदमी भी थे। उन्होंने अपने योद्धाओं को इकठ्ठा किया और एक प्रेरणादायक भाषण दिया। उनके भाषण का सारांश यह था कि हमने ईश्वर के संदेश को फैलाने के लिए अपने जीवन को दाँव पर लगाया है। ईश्वर हमारा नाश नहीं करेगा। वह हमारी सहायता करेगा और हर तरह की विपत्ति से हमें बचाएगा। यह फरात नदी हमें न तो आगे बढ़ने से रोक सकती है और न ही हमें नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए इससे मत ड़रो, इसमें कूद पड़ो और तैरते हुए दूसरे किनारे पर पहुंच जाओ।

हज़रत साद बिन अबी वक़ास (रज़ियल्लाहु अन्हु) और उनके शक्तिशाली सैनिक फरात नदी में अपने घोड़ों सहित कूद पड़े और बिना डूबे, घोड़ों की पीठ पर बैठे हुए नदी पार की। ईरानी सेना ने जब अरबी सैनिकों को घोड़ो की पीठ पर सवार नदी पार करते हुए देखा तो वे चिल्ला उठे, "देव आ गए, देव आ गए"। और उनके सेनापती हरज़ाद और कुछ सिपाहियों को छोड़ कर सभी ईरानी सैनिक ड़र कर भाग गए। दुनिया के इतिहास में पहली बार ऐसी घटना घटी कि तीस हज़ार सैनिकों ने घोड़ों पर सवार हो कर नदी पार की। यह घटना वास्तव में एक चमत्कार था।

- किस कारण यह चमत्कार हुआ? यह विश्वास था, ईश्वर में दृढ़ विश्वास। केवल विश्वास के कारण ही चमत्कार होते हैं। केवल इस्लाम में ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों में धार्मिक व्यक्तियों ने बहुत से चमत्कार किए हैं । और इसका एकमात्र कारण विश्वास ही था, इसके सिवा कुछ नहीं जिस के कारण चमत्कार घटित होते हैं।

  ईसा मसीह कई प्रकार के चमत्कार करते थे। वे कोढ़ी (कुष्ठरोगी) को ठीक करते थे, वे अंधे को दृष्टि (नज़र) देते थे, यहाँ तक कि ईश्वर की आज्ञा से वे मृत व्यक्ति को जीवित भी करते थे। बाइबल की निम्नलिखित पंक्तियाँ उन के चमत्कारों में विश्वास की महत्ता को प्रकट करती हैं।

  जब यीशु घर आए, तब अंधे व्यक्ति उनके पास आए और यीशु के पास बैठ गए। यीशु ने उनसे कहा, "तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूँ?" उन्होंने कहा, "हाँ प्रभु!" यीशु ने उन अंधे व्यक्तियों की आंखों को छू कर कहा कि 'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी बीमारी दूर हो।' जब उन अंधे व्यक्तियों ने अपनी आंखें खोलीं तो उन्हें दृष्टि प्राप्त हो चुकी थीं। इसके बाद यीशु ने उन्हें स्पष्ट ताकीद कि "यह किसी को भी नहीं बताना।" (मॅथ्यू ९:२८-३०)

  'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारी बीमारी दूर होगी' उन के इस कथन का अर्थ यह है कि जिनका विश्वास होगा उन्हीं के साथ चमत्कार होगा, अर्थात विश्वास पर ही चमत्कार होता है। यह पंक्ति विश्वास की महत्ता को स्पष्ट करती हैं।

विश्वास क्या है?

विश्वास मूलतः दृढ़-विश्वास, संपूर्ण आत्म-विश्वास अथवा भरोसा या पक्का यकीन है।

- विश्वास एक महत्वपूर्ण सकारात्मक भावना है, जिसके बिना दूसरी सभी सकारात्मक भावनाएँ अधूरी हैं। विश्वास मूल रूप से एक आशावादी भावना है। 'अपने आप पर विश्वास' इसका अर्थ है कि आप को अपनी सफलता प्राप्त करने की योग्यता पर विश्वास है। ईश्वर पर विश्वास का अर्थ है कि आप को ईश्वर के अस्तित्व पर और उसकी सहायता पर विश्वास है कि वह आपको कामयाब करके आप पर कृपा करेगा। विश्वास के न होने का अर्थ है शक अथवा संदेह, अर्थात अपनी योग्यता पर शक है, ईश्वर के अस्तित्व पर शक है, उसकी सहायता और कृपा पर भी संदेह है। जब मन में शक और संदेह हो तो, सफलता के बजाए आपका शक ही पूरा होगा, अर्थात असफलता हाथ आएगी।

- यदि एक सज्जन व्यक्ति लगातार अपराधियों के संपर्क में रहे, तो वह भी अपराधी बन सकता है, क्यूँकि "अपराध जीवन का एक हिस्सा है" यह विचार उसके मन में लगातार घूमता रहेगा और जो विचार मन में बार बार दोहराए जाते हैं, वह अवचेतन मन सच समझ कर स्वीकार कर लेता है। मन का अधिक प्रभावशाली विचार व्यक्ति की सोचने की पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करता है, और जैसे विचार होते हैं, मनुष्य का चरित्र भी वैसा ही होता है। इसलिए जो लोग बुराइयों से दूर नहीं रहते वह गुनाह करना शुरू कर देते हैं।

  अवचेतन मन को प्रभावित करने के लिए विचारों को बार बार दोहराना Auto Suggestion कहलाता है।

जब मन में विश्वास की भावना कम होती है तब Auto Suggestion ही केवल ऐसी पद्धति है, जिसके द्वारा हम विश्वास विकसित कर सकते हैं।

- श्री नेपोलियन हिल के अनुसारः- विश्वास एक ऐसा अनादि अनंत अमृत है जो विचारों को जीवन-शक्ति और प्रेरणा देता है।

  विश्वास ही कीमती धन सम्पत्ति और उन्नती का प्रारंभिक बिंदु है।

  कुछ चमत्कार ऐसे होते हैं जिनकी विवेचना (Analysis) विज्ञान के द्वारा नहीं की जा सकती है, विश्वास ही उन सभी चमत्कारों का भी आधार है।

  विश्वास ही असफलता का तोड़ है।

  विश्वास एक मौलिक-शक्ति है। यह जब प्रार्थना के साथ मिल जाती है, तो ईश्वर के साथ सीधा संपर्क करा देती है।

- विश्वास एक उत्प्रेरक (Catalyst) है, जो साधारण विचार में इतनी शक्ति पैदा कर देता है, कि वे उच्च कंपन वाले विचार आवेगों (Impulses) में बदल जाते हैं, जो अवचेतन मन से होते हुए सृष्टि (Mother nature) तक पहुँच जाते हैं।

- धार्मिक पुस्तकों में ईश्वरीय ज्ञान बहुत ही सरल शब्दों में वर्णन किया गया है ताकि साधारण व्यक्ति भी उन्हें अच्छी तरह समझ सके।

  अंतिम दूत हज़रत मुहम्मद (सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहाः

  "ईश्वर कहता है, जैसा कोई मुझ से आशा रखता है, मैं उस से वैसा ही व्यवहार करता हूँ।"
  (बुखारी, मुस्लिम, बा-हवाला हदीसे नबवी, हदीस नं. ५६३, पेज नं. २१४)

  इसका अर्थ है, यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि ईश्वर उस पर अपनी कृपा-दृष्टि रखेगा और जीवन के सभी कार्यों में उसे सफल बनाएगा तो ज़रूर ही ईश्वर उसे जीवन के हर कार्य में सफलता के लिए सहायता करेगा।

- धार्मिक रूप से अथवा वैज्ञानिक आधार पर, जिस तरह और जैसा भी आप सोचते हों, सच्चाई यही रहती है कि मन का सब से अधिक प्रभावशाली विचार व्यक्ति की सफलता पर गहरा प्रभाव डालता है।

  इसलिए व्यापार और जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए हमें हमेशा सकारात्मक रवैया अपनाना चाहिए। इसी प्रकार हम अवश्य सफल होंगे इस बात पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। और इस बात पर भी विश्वास रखना चाहिए कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारी अवश्य सहायता करेगा।

****

अध्याय-१०

प्रकृति (निःसर्ग-माता)

(Mother Nature)

निःसर्ग-माता और ईश्वर में अंतरः-

- ईश्वर ने इस पूरे संसार की रचना की है और वह अकेला ही उसका पालन-पोषण भी करता है। उसे इसके लिए किसी की सहायता की आवश्यक्ता नहीं है।

- ईश्वर ने हर प्रकार के पदार्थ, हर प्रकार की शक्ति तथा इस संसार की संपूर्ण पद्धति को बिना किसी दोष (कमी) के सब प्रकार से उचित व उत्तम रूप में बनाया है। उसने केवल संपूर्ण संसार और इसकी प्रत्येक रचना को ही उत्तम रूप में नहीं बनाया है, बल्कि उसने कुछ पूर्ण रूप से स्वःचलित पद्धतियों को भी बनाया है जो ईश्वर के नियम, आदेश और इच्छा के अनुसार निरंतर इस संसार को स्थिर रखने का प्रबंध करती हैं, तथा इस संसार और इसकी प्रत्येक वस्तु को सही और उत्तम रूप में काम करने की दिशा देती रहती है।

- ईश्वर की नियंत्रित करने वाली पद्धति इस संसार को इतने उचित और पूर्णतः सही ढंग से चलाती है कि कोई व्यक्ति आज से हज़ारों साल पहले अथवा बाद की आकाश में तारों की स्थिति की गणना और अचुक भविष्यवाणी कर सकता है।

- इस संसार को नियंत्रित करने वाली शक्ति के रूप में देवदूत (Angels) हो सकते हैं जो ईश्वर के बनाए विधि-विधान और नियम के अनुसार काम करते है। या फिर इस संसार को नियंत्रित करने या चलाने के लिए ईश्वर ने कुछ शक्तियाँ और "सॉफ्टवेयर" बनाए होंगे। सत्य क्या है यह तो केवल ईश्वर ही जानता है। हम केवल अपने अनुभवों के आधार पर देखते हैं, सोचते हैं और फिर निष्कर्ष निकालते हैं।

- यह स्वःचलित पद्धति जिसे (मेरे विचारों के अनुसार) ईश्वर ने रचा (बनाया) है, मैं इसे "मदर नेचर" (Mother Nature) कहता हूँ। मेरे कुछ निम्नलिखित निरिक्षण हैं जो सिद्ध करते हैं कि मदर नेचर अवश्य है:

१.पक्षी प्रत्येक वर्ष मौसम के अनुसार स्थलांतर (Migration) के लिए हज़ारों मील का सफर तय करते हैं। वह अपने रास्ते से भटक कर किसी गलत दिशा में मरने के लिए नहीं जाते। कोई गुप्त नियंत्रण पद्धति अथवा योग्यता है, जिसके द्वारा वह हमेशा एक निश्चित (सही) समय पर प्रवास क्रिया शुरू करते हैं और ठीक समय पर सही स्थान पर पहुंचते हैं, और सही समय पर वापस लौट आते हैं। उनका मार्गदर्शन कौन करता है?

२.बड़े आकार के कछुए, जिन में से प्रत्येक का वज़न ५०० किलोग्राम से भी अधिक होता है, लॅटिन अमेरिका से तैरते हुए सऊदी अरब के समुद्री किनारे पर आते हैं और अंडे दे कर इतनी ही दूरी का सफर

तय करके वापिस अपने स्थान पर पहुंच जाते हैं। एक निश्चित समय के बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं। अंडों से बाहर आते ही नन्हें कछुए समुद्र की ओर रेंगना शुरू कर देते हैं। उन में से कुछ गिद्धों और बाज़पक्षियों का शिकार बन जाते हैं, लैकिन उनमें अनेक जीवित भी रहते हैं।

अंडों के सफेद और पीले पदार्थ को कछुओं में कौन बदलता है? नन्हें कछुओं के दिमाग में इस सच्चाई का बीज कौन बोता है कि उनकी सुरक्षा और उनकी दुनिया समुद्र में है न कि धरती पर, जिस पर कुछ क्षण पहले उनका जन्म हुआ था। उन्हें यह कौन बताता है कि पूर्ण रूप से विकसित अर्थात युवावस्था होने पर अंडे देने के लिए उन्हें हज़ारों मील दूर से उसी स्थान पर सऊदी अरब के समुद्र तट पर वापस आना है, जहाँ वे अंडे से पैदा हुए थे।

३.यदि कुछ महीने के आयु के बच्चे की आँखों में खुजली होती है, तो वह अपनी उंगलियों और नाखूनों को आँखों में डाल कर आँखों को जख्मी नहीं कर लेता। बल्कि वह अपनी उंगलियों के जोड़ों और हथेली के पिछले भाग से अपनी आँखें मलता है, जो सब से अधिक सुरक्षित तरीका है। यह सुरक्षित तरीका बच्चे के मन को कौन सुझाता है?

४.हम सौ लीटर पानी कुछ दूरी तक भी नहीं ले जा सकते है। लेकिन हज़ारों टन पानी समुद्र से आसमान तक ले जाया जाता है, वहाँ से बादलों के रूप में हज़ारों मील दूर-दूर के स्थानों तक हवा उसे पहुंचाती है। और फिर वर्षा की छोटी-छोटी बूंदों के रूप में पानी बरसता है। यह काम कौन करता है?

बादलों का बनना और पानी की बूंदों के रूप में बरसना, इन सब के वैज्ञानिक कारण हैं। परंतु वैज्ञानिक कारण होने का यह अर्थ नहीं है कि इसे कोई नियंत्रित नहीं करता। कोई गुप्त शक्ति है जो इसे नियंत्रित करती है, परंतु वैज्ञानिक रूप से।

उदाहरण के लिए, यदि पानी की छोटी बूंदों के स्थान पर, आसमान से बड़ी मात्रा में पानी गिरना शुरू हो जाए अथवा पानी के स्थान पर आसमान से बर्फ के बड़े टुकड़े गिरने लगें, तो यह नैसर्गिक घटना भी वैज्ञानिक कारण के द्वारा समझी और उन की विवेचना भी की जा सकती है। लेकिन वह विवेचना मनुष्य-जीवन को डूबने और मरने से बचा नहीं सकती। तो इन दुर्घटनाओं को होने से कौन रोकता है?

५.लंबी दूरी वाली उड़ानों में 'पाइलट' विमान को 'स्वःचलित यंत्र' (Auto-Pilot) पर चलाता है और स्वयं आराम करता है। 'स्वःचलित यंत्र पद्धति' (Auto-Pilot System) विमान को उसके निश्चित मार्ग, निश्चित ऊंचाई, तथा विमान की अन्य निर्धारित सीमाओं पर चलाती है। परंतु आपात काल और उतरने के समय पाइलट फिर स्वंय विमान को चलाने लगता है और 'स्वःचलित यंत्र' (Auto-Pilot) का बटन बंद कर देता है। इस उदाहरण में 'स्वःचलित यंत्र पद्धति' (Auto-Pilot System), मदर नेचर (Mother nature) की तरह है, और पाइलट 'ईश्वर' की तरह है। मदर नेचर पूरे संसार के कार्यों को नियंत्रित करती है अथवा चलाती है। ईश्वर 'मदर नेचर' को नियंत्रित करता है, तथा वह सारे निर्णय लेता है, जो मदर नेचर नहीं ले सकती।

६.आइये! अब अन्य उदाहरण द्वारा प्रकृति (Mother nature) को समझें, वह है कम्प्यूटर द्वारा 'टेलीफोन बिलों' का अपने आप बनना।

कम्प्यूटर क्या है?

- कम्प्यूटर निर्माण-कर्ता कम्प्यूटर बनाने के लिए तीन प्रकार की सामग्री प्रयोग करते हैं।

१. विद्युत-कुचालक (Non-conductor), जैसे शीशा (काँच), प्लास्टिक, फाइबर इत्यादि,
२. अर्द्ध-कुचालक (Semi-conductor) जैसे सिलिकॉन इत्यादि, और
३. विद्युत-सुचालक (Conductor) जैसे तांबा, चांदी, टिन इत्यादि।

वे विद्युत-सुचालक (Conductor) (तांबा, टिन इत्यादि के तारों) को अर्द्ध-कुचालक (Semi-conductor) (सिलिकॉन) से जोड़ते हैं, और इनको एकत्रित कर विद्युत-कुचालक (Non-conductor) पर असेंबल करते है और एक संपूर्ण तथा जटिल इलेक्ट्रोनिक सर्किट बनाते हैं। इस सर्किट में बिजली का प्रवाह दोनो तरफ से होता है परंतु इस का प्रभाव अलग-अलग होता है।

बिजली-प्रवाह के समय एक दिशा में पैदा होने वाले प्रभाव को '1' माना जाता है। और जब बिजली-प्रवाह विपरित दिशा से होती है तो अलग प्रकार से पैदा होने वाले प्रभाव को '0' समझा जाता है।

हम '0' से '9' तक दस संख्याओं को पहचानते हैं । परंतु इलेक्ट्रोनिक-सर्किट (Circuit) केवल दो नम्बरों को पहचानता है '0' और '1' यह दो संख्या वाली पद्धति (Binary System) कहलाती है। विद्युत सर्किट ऐसे जटिल और पूर्ण रूप से बनाई जाती है कि यह मन की तरह काम करती है। केवल दो नम्बरों यानी '0' और '1' के ज्ञान से यह सेकंड के एक हिस्से में बहुत बड़ी बड़ी गणना कर सकता है।

कम्प्यूटर में ऐसा प्रबंध किया गया होता है कि की-बोर्ड (Key-board) के द्वारा 'डेटा' (Data) डाला जाता है, 'मॉनिटर' (Monitor) द्वारा देखा जाता है, और प्रिंटर द्वारा परिणाम (छापाई के रूप में) प्राप्त किए जाते हैं। इस पूरी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करने के लिए कम्प्यूटर के 'सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट' (C.P.U) में 'सॉफ्टवेयर' डाले जाते हैं। जब ऐसी प्रणाली (यानी कम्प्यूटर) में संबंधित 'सॉफ्टवेयर' लोड करके टेलिफोन एक्सचेंज के साथ जोड़ा जाता है, तो यह जाने और आने वाली सभी कॉल्स को दर्ज (Record) करता है। टेलिफोन प्रयोग करने की अधिकतम सीमा को नियंत्रित करता है, निश्चित तिथि के बाद टेलिफोन सेवा को बंद कर देता है और बिल बनाता है।

यदि हम फिर से इस संपूर्ण पद्धति (कम्प्यूटर) की समीक्षा करते हैं, तो हम यह पाते है कि इस में केवल विद्युत-कुचालक, अर्द्ध-कुचालक, विद्युत-सुचालक, साफ्टवेयर और बिजली की शक्ति है। जब इस पद्धति में बिजली प्रवाहित होती है तो इस में कोई आत्मा, कोई बुद्धिमत्ता न होने के बावजूद भी यह पूर्णतः सही रूप से कार्य करता है। सॉफ्टवेयर के आदेशों या वर्णन के बिना यह पद्धति कोई भी काम नहीं करती।

मदर नेचर (Mother nature) भी ठीक इसी प्रकार स्वःचलित पद्धति है, जिस की रचना ईश्वर ने इस संपूर्ण संसार की कार्य-प्रणाली को नियंत्रित करने के लिए की है। यह ईश्वर के निर्देशों के अनुसार ही अपना कार्य पूर्ण रूप से सही ढंग से करती है और ऐसा कोई काम नहीं करती, जो इसे करने के लिए न कहा गया हो।

मदर नेचर (Mother nature) देवदूतों की एक सेना हो सकती है या कम्प्यूटर की तरह, बिना शरीर और आत्मा की एक पद्धति जो केवल शक्ति के आधार पर कार्य करती है।

८.हमारे शरीर पर हमारा पूरा नियंत्रण होता है, किन्तु यदि हम गहराई से सोचें तो मालूम होगा कि हालाँकि शरीर हमारा है, पर इस की देखरेख किसी दूसरे के हाथ में है। यह अदभुत प्रकार की एक शक्ति है और एक प्रकार का सॉफ्टवेयर (Computer Program) की तरह है। जिस के अनुसार हमारा शरीर कार्य करता है और उसकी देखरेख की जाती है।

उदाहरण के लिए, हमारे हृदय के एक कोने में एक बिजली की लहर विकसित होती है और दूसरे किनारे तक जाती है, जिस के कारण हृदय फैलता और सिकुड़ता है। इसी से हृदय की धड़कन होती है। इस बिजली की लहर को कौन पैदा करता है?

यदि हम टॉयलेट के लिए जाते हैं, तो मल (Stool) कभी खुद से बाहर नहीं आएगा, यदि किसी को गंभीर रूप से जुलाब हो तो अलग बात है। वरना वह अपने आप शरीर से बाहर नहीं निकलता। यदि विश्वास न हो तो उन लोगों से पूछिए जिन्हें कब्ज़ की बीमारी है। उन्हें कितना ज़ोर लगाना पड़ता है फिर भी परिणाम कुछ भी नहीं होता। यह आंतड़ियों की एक स्वःचलित (अपने आप चलने वाली) क्रिया है। यह एक केंचुए की चाल की तरह है जो मल्ल को शरीर से बाहर फेंकती है। इस प्रकार शरीर में अनेक क्रियाऐं हैं, जैसे पाचन क्रियाए निद्रा, काम क्रिया, श्वसन क्रिया, रोग प्रतिकार शक्ति आदि। यह सब स्वःचलित क्रियाऐं हैं और इन्हें हमारे शरीर में कोई दूसरा हमारे लिए करता रहता है।

क्या आप निश्चित रूप से बता सकते हैं कि यह स्वःचलित क्रिया हमारे शरीर में हमारे लिए कौन करता है?
आत्मा?

नहीं।

एक बार किसी व्यक्ति ने पैगम्बर मुहम्मद (स.) से पूछा, "आत्मा क्या है?" तब ईश्वर ने कुरआन की एक पद-पंक्ति (आयत) उतारी, जिसका अर्थ है कि "'आत्मा' ईश्वर का निर्देश अथवा आज्ञा है।"
(पवित्र कुरआन १७:८५)

इस ज्ञान से और दूसरी गणनाओं तथा पुस्तकों में अध्ययन किए हुए तथ्यों के आधार पर मैं यह अनुभव करता हूँ कि आत्मा कोई गुप्त शक्ति का रूप है और इसमें भी एक साफ्टवेयर होता है, परंतु यह शरीर की कार्यप्रणाली को नियंत्रित नहीं करता है। शरीर की कार्यप्रणाली पर किसी दूसरी शक्ति और साफ्टवेयर का अधिकार अथवा नियंत्रण है। क्योंकि दिल का दौरा (Heart Attack) पड़ने के समय हृदय की धडकन बंद हो जाती है। आत्मा हृदय की धड़कन को बंद नहीं कर सकती। यदि वह ऐसा करती है तो यह आत्मा की आत्महत्या करने की तरह है। आत्महत्या वर्जित है और यह एक पाप है। आत्मा यह कभी नहीं करना चाहती। सच्चाई तो यह है कि आत्मा अंतिम क्षण तक शरीर को छोड़ना नहीं चाहती है। तब यह सब कौन करता है? ईश्वर भी यह सब नहीं करता। क्योंकि ईश्वर के पास किसी के हृदय की धड़कन या आंतड़ियों की क्रिया को रोकने के अतिरिक्त और दूसरे अनेक महत्वपूर्ण काम हैं।

मस्तिष्क (Conscious Mind) और अवचेतन मन (Sub-conscious Mind) भी हृदय की धड़कन बंद नहीं करेगा, क्योंकि शिशुअवस्था में माँ के गर्भाशय में ही हृदय की धड़कन शुरू हो जाती है, जबकि मन और अवचेतन मन शिशु में विकसित होना अभी बाकी होता है। इसलिए अवचेतन मन भी हृदय की

धड़कन को नियंत्रित नहीं करता है।

मनुष्य के शरीर की गुप्त स्वःचलित नियंत्रित करने वाली पद्धति की तरह इस संसार को नियंत्रित करने वाली स्वःचलित पद्धति भी है, जिसे हम मदर नेचर (Mother nature) या प्रकृति या सृष्टि कहते हैं।

९. ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

"वह तो जब किसी चीज़ (के बनाने) का इरादा करता है तो उसका काम बस यह है कि उसे आदेश दे कि हो जा, और वह हो जाती है।" (पवित्र कुरआन ३६:८२)

इसी तरह ईश्वर ने इस संसार और इसमें प्रत्येक वस्तु की भी रचना की है। मेरे विचारो के अनुसार इस संसार के देखभाल के लिए ईश्वर हमेशा "ऐसा हो" यह नहीं कहेगा, परंतु उसने ऐसी कुछ गुप्त स्वःचलित पद्धतियाँ अवश्य बनाई होंगी, जो उसकी इच्छाओं को पूर्ण करती है और इस संसार की देखभाल करने के कार्य को अंजाम देती है। मैं इस ईश्वरीय पद्धति को मदर नेचर (Mother nature) कहता हूँ। संसार के सभी लोग भी इस स्वःचलित पद्धति का अनुभव करते है और वे इसे "खुदा की कुदरत" कहते हैं। इस पुस्तक में मैं इसे मदर नेचर या खुदा की कुदरत के नाम से याद करुंगा।

****

अध्याय-११

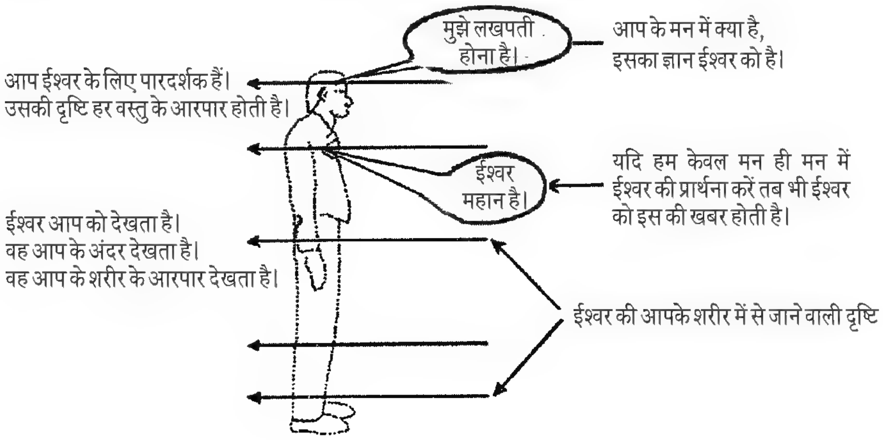
ईश्वर का परिचय

(Introduction of God)

- मानो आपके हाथ में एक गिलास है। गिलास पारदर्शी है और उस के अंदर का पानी भी पारदर्शी है। आप इस गिलास को देख सकते हैं, आप इस के अंदर भी देख सकते हैं, और आप इस के पार भी देख सकते हैं। उंगलियों से पकड़े इस गिलास पर आपका पूरा नियंत्रण है।



- ठीक इसी प्रकार यह संपूर्ण संसार भी ईश्वर के लिए पारदर्शी हैं। वह इसे देख सकता है, और इस के अंदर भी देख सकता है और वह इस के पार भी देख सकता है। यह पूरा संसार ईश्वर की उंगलियों के बीच में है। वह अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी कर सकता है। इस संसार पर उस का पूरा नियंत्रण है। (ईश्वर का कोई आकार नहीं है, सिर्फ समझने के लिए हमने उसकी उंगलियों का उदाहरण दिया है।)



- ईश्वर हमारे दिल में छिपे विचारों को भी जानता है, निम्नलिखित आयत इसको साबित करती है।

"आसमान और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे खोल दो, या छिपाओ अल्लाह हर हाल में उनका हिसाब तुमसे ले लेगा। फिर उसे अधिकार है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे, सज़ा दे। उसे हर चीज़ पर क़ुदरत (नियंत्रण) प्राप्त है।"
(पवित्र क़ुरआन २:२८४)

"पिता (ईश्वर) जानता है तुम्हारी आवश्यक्ता क्या है?" (पवित्र बाइबल मॅटः ६:८)

"इस से पहले कि वे (मनुष्य) पूछें, मैं (ईश्वर) उत्तर दूंगा।" (पवित्र बाइबल ईसाः ६५:२४)

"जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है।"
(अथर्ववेद ०४-१६-०५)

- हम सभी प्राणी ईश्वर के लिए पारदर्शी हैं। वह हमारे ह्रदय की प्रत्येक धड़कन सुनता है, यहाँ तक कि हमारे ह्रदय की गहराई में बसे प्रत्येक विचार को वह जानता है। वह हमें देखता है, वह हमारे अंदर देखता है, वह हमारे आर पार देखता है। वह हमारा निर्माता है।

पवित्र क़ुरआन में है कि,
"क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया है? हालाँकि वह सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखनेवाला है।"
(पवित्र क़ुरआन ६७:१४)

अर्थात हम स्वयं अपने बारे में उतना नहीं जानते, जितना वह (ईश्वर) जानता है।

वह हमें प्यार करता है। वह हमें खिलाता है। इस धरती पर जीवन कैसे व्यतीत करना है, इसके लिए उसने विभिन्न मापदंड निश्चित किए हैं। यदि व्यक्ति उस के निर्देशों का पालन करता है, तो इस धरती पर ईश्वर उसके जीवन को आसान बना देता है। वह व्यक्ति के मृत्यु-पश्चात् का जीवन भी आसान बना देता है, जहाँ वह आत्मा अथवा शक्ति के रूप में होगा।

- एक बिल्डर बिल्डिंग बनाता है, वह बिल्डिंग के फ्लेट्स अपने ग्राहकों को बेचता है, उनकी सोसायटी बनाता है और बिल्डिंग का प्रबंधन फ्लॅटस् के मालिकों के हवाले कर देता है।

- ईश्वर ने इस पूरे संसार को बनाया है, उसने अनेक प्रणियों को इस में रहने की अनुमति दी है। परंतु इस का प्रबंधन उसने किसी के हाथों में नहीं दिया है। वह प्राणियों की हर चाल (गति) और कार्य पर अपना नियंत्रण रखता है। यह संसार ईश्वर की मिल्कियत है। इस धरती पर जीवन कैसे बिताया जाए इस बारे में उसने कुछ निश्चित मापदंड तय किए हैं। यदि व्यक्ति इस का पालन करते हैं, तो वह जीवन में सुख-समृद्धि प्राप्त करते हैं। यदि वह इसे नज़र अंदाज़ करते हैं, तो उन्हें कठिनाइयाँ और दरिद्रता का सामना करना पड़ता है। दरिद्रता, अपमान, कठिनाइयाँ, अन्याय, दबाव इत्यादि मनुष्य के अपने कर्मों के फल हैं, जिनके बीज उन्होंने स्वयं बोया था। ईश्वर किसी को भी कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता है।

- अपनी आख़िरी आकाशवाणी (पवित्र क़ुरआन) में ईश्वर कहता है:

"ज़माने की क़सम, इन्सान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ (सच्चाई) का उपदेश देते रहे और (कठिनाइयों

में) सब्र और धीरज रखने की ताकीद करते रहे।" (पवित्र क़ुरआन, सूरह नं.१०३)

- ऋग्वेद में लिखा है,

यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत सत्यमंगिरः (ऋग्वेद ०१:०१:०६)

"हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते है, यह आपकी सद्प्रवृत्ति है।"

- एक दूसरी जगह ईश्वर कहता है,

"जो व्यक्ति भी अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वह ईमान वाला (एक ईश्वर को मानने वाला) हो, तो उसे हम दुनिया में पवित्र जीवन-यापन कराएँगे और (परलोक में) ऐसे लोगों को उनके उत्तम कर्मों के अनुसार बदला देंगे।" (पवित्र क़ुरआन, १६:९७)

- ईश्वर कहता है,

"कसम है इंजीर और ज़ैतून की और तूरे सीना (सीना पहाड़) और इस शान्तिपूर्ण शहर (मक्का) की, हमने इन्सान को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उल्टा फेरकर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे कि उसके लिए कभी समाप्त न होनेवाला बदला है।" (पवित्र क़ुरआन, ९५:१-७)

- पवित्र ऋग्वेद में लिखा है,

यह एक इद् विद् यतेवसुं मर्ताय दाशुषे (ऋग्वेद ०१:८४:०७)

"परमेश्वर एक है। वही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देता है।"

- पवित्र क़ुरआन में ईश्वर कहता है,

"अल्लाह किसी जान (व्यक्ति) पर उसकी सहन-शक्ति से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ (भार) नहीं डालता। हर आदमी ने जो कमाई की है, उसका फल उसी के लिए है और जो बुराई समेटी है, उसका वबाल उसी पर है।" (पवित्र क़ुरआन, २:२८६)

- यजुर्वेद में लिखा है,

स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व। (यजुर्वेद ३:१५)

तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग।

- सफलता और समृद्धि के संघर्ष में ईश्वर को कभी भी, न तो व्यक्तिगत स्तर पर और न ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर नज़रअंदाज़ करना चाहिए। प्रत्येक को उस पर विश्वास रखना चाहिए तथा उसके दिखाए सही मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

- संसार में अनेक महान सभ्यताएँ हो कर गुज़री हैं। इतिहास की पुस्तकों में हम उनकी संस्कृति, उनकी समृद्धि और उनकी बनाई हुई अदभुत इमारतों इत्यादि के बारे में पढ़ते हैं। इतिहास-लेखक उनके विनाश और अंत का जो कुछ कारण दें, लेकिन हम उनसे सहमत नहीं होते और हमेशा आश्चर्य करते हैं

कि उनका अचानक अंत कैसे हुआ?

कोई भी उनके अंत का निश्चित कारण नहीं जानता। पवित्र बाइबल, तोहरा और कुरआन में अनेक सभ्यताओं का वर्णन किया गया है, जैसे आद, समूद, हूद, और लूत इत्यादि, जिनका विनाश अचानक हो गया, क्योंकि उन्होंने ईश्वर और उसके निर्देशों की आवहेलना की थी।

अनेक प्राचीन सभ्यताएँ, जिन के बारे में हम इतिहास में पढ़ते हैं, उनका भी ईश्वर के क्रोध के कारण विनाश हुआ। अधिक जानकारी के लिए मेरी अन्य पुस्तक "Teaching of Vedas & Quran" का www.freeeducation.co.in पर अध्ययन करें अथवा डाउनलोड करें।

- यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत स्तर पर ईश्वर की अवहेलना करता है, तो वह अपनी कोशिश के अनुसार किसी सीमा तक तो प्रगति करता है, लेकिन अंत में वह अपने पुराने अथवा पहले वाले स्तर पर वापस आ जाता है। (हम इसका वर्णन 'महान कार्यों का महत्व' नामक अध्याय के 'गरीबी का गड्ढा' विभाग में करेंगे।)
- सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी यदि काई ईश्वर और उस के निर्देशों को नहीं मानता, अथवा नज़रअंदाज़ करता है, तो वह कुछ समय तक एक स्तर पर विकास करेगा, परंतु अंततः उसकी समृद्धि नष्ट हो जाती है, और वह फिर अपने प्रारंभिक स्तर पर आ जाता है। रूस (Reussia) इस तरह की घटना का ताज़ा उदाहरण है।
- व्यक्तिगत अथवा राष्ट्रीय स्तर पर धन कमाने और संम्पदा इकट्ठी करने की प्रक्रिया में ईश्वर को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। हर एक को ईश्वर को सही तरीके से मानना ही पड़ेगा। इसलिए यदि हम विकास करना चाहते हैं, तो ईश्वर की प्रार्थना हमारे व्यापारिक-अभ्यास और जीवन का एक हिस्सा होना चाहिए।
- इस पुस्तक के अंत में हम पढ़ेंगे कि ईश्वर कौन है और विभिन्न धर्म उसके बारे में क्या कहते हैं? पैगम्बर कौन हैं? आदि।

****

अध्याय-१२

कल्पना तथा विचार का महत्व

(Importance of Imagination and Thoughts)

- सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया एक सकारात्मक विचार से आरंभ होती है।
- मनुष्य अपने मन में जिस वस्तु अथवा कार्य की कल्पना करता है, तो वह उसे प्राप्त भी कर सकता है।
- विचार भी पदार्थ (Things) की तरह हैं, लेकिन शक्ति के रूप में। कुछ सिद्धांतों पर चल करके वह वास्तविकता या वस्तुओं में परिवर्तित हो सकते हैं।
- धनवान तथा सफल होने की प्रक्रिया मन में एक ज्वलंत-इच्छा के रुप में आरंभ होती है, और यह दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ आगे बढ़ती है।
- योजनाएँ, विचार, अनोखे आविष्कार, संकेत, समस्याओं के समाधान इत्यादि प्रकृति(निसर्गमाता) और ईश्वर से अवचेतन मन द्वारा विचारों के रूप में प्राप्त किए जाते हैं। वे जो लखपती बनने के लिए संघर्ष करते हैं, उन्हें इन विचारों को समझना, पहचानना और महत्व देना चाहिए, और उन विचारों के अनुसार कार्य करना चाहिए जो उन्हें अवचेतन मन द्वारा प्राप्त हुए हैं।
- लाखों रूपए कमाने की कल्पना अथवा विचार, किसी धनवान होने वाले व्यक्ति के मन में जब पहली बार आते हैं, तो वह उसे हमेशा विचित्र दिखाई देते हैं। संघर्ष करने वाले का यह कर्तव्य बनता है कि वह इन विचारों को मरने न दें और न ही उन्हें नज़रअंदाज़ करे, बल्कि उन्हें विकसित करें, उनकी समिक्षा करें और उन योजनाओं तथा कल्पनाओं को वास्तविकता में बदलने का प्रयत्न करें।
- ऐसी ही कुछ कल्पनाएं जो वास्तविकता में परिवर्तित की गईं, निम्नलिखित है:

फोर्ड कार (Ford Cars):

- शुरू में मोटर कारें बहुत अधिक महंगी हुआ करती थीं, और समाज के कुछ गिने-चुने अमीर लोग ही उन्हें खरीद पाते थे। हेनरी फोर्ड का ऐसी सस्ती कारें बनाने का सपना था जिसे साधारण आदमी भी खरीद सके। यह बात असंभव थी, लेकिन दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले हेनरी फोर्ड के लिए नहीं।
- उन्होंने व्यापारियों के सामने अपने विचार रखे। उनसे एडवांस धन इकठ्ठा किया और कारें निर्माण करने वाला एक कारखाना स्थापित किया। उन्होंने लोहे की कच्ची धातुओं (Iron Ores) से कारें बनाई। यह उस समय की बात है जब लोहा और धातुओं की शीटस् बड़ी मात्रा में नहीं मिलती थी। श्री फोर्ड खानों से लोहे की कच्ची धातु (Iron Ores) लिया करते थे। वे उन्हे शुद्ध करते और लोहा बनाते थे, और उस लोहे से कारें बनाते थे। कार के लिए प्रत्येक वस्तु उन की कंपनी में ही बनाई जाती थी। यह एक असंभव कार्य था, लेकिन श्री.हेन्री फोर्ड ने इसे वास्तविकता में परिवर्तित किया।

श्री. फोर्ड ने एक कल्पना की जो असंभव था, लेकिन एक जाने-माने ढंग के साथ उन्होंने उसे वास्तविकता में परिवर्तित किया। बदले में उन्होंने विशाल संपत्ति प्राप्त की और संसार ने अपनी खरीदने की क्षमता के अंदर एक मोटर-कार प्राप्त की।

फेडेक्स कोरियर सर्विस (FedEx Courier Service)

- फेडरिक्स अपनी पढाई के अंतिम वर्ष में थे। इस वर्ष उन्हें "समाज की समस्याओं का समाधान कैसे हो?" इस विषय पर एक "प्रोजेक्ट रिपोर्ट" तैयार करने को कहा गया। उन्होंने "पोस्ट सर्विस" इस विषय को अपने प्रोजेक्ट के लिए चुना। पोस्ट सर्विस में इस बात की कोई गारंटी और वायदा नहीं होता कि, भेजे हुए माल को अपने निश्चित ठिकाने पर पहुंचने में कितना समय लगेगा? जिसके कारण औद्यागिक प्रतिष्ठानों (Factory) को बहुत हानि उठानी पडती थी। फेडरिक्स ने पोस्ट तथा डाक प्रक्रिया का आंतरिक अध्ययन किया, देरी होने के कारणों की समीक्षा की और एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की। इस रिपोर्ट में फेडरिक्स का मानना था कि यदि सभी पार्सल और डाक्युमेंटस एक केंद्र में इकट्ठे किए जाएं और फिर वहाँ से बांटे जाएं तो अनचाही अधिक देरी से बचा जा सकता है।

फेडरिक्स का प्रोफेसर उसकी रिपोर्ट पर हंसा और इसे अस्वीकार कर दिया।

परंतु फेडरिक्स को विश्वास था। वह इस बारे में निश्चित थे। उनके मन में अपनी एक ऐसी कंपनी स्थापित करने की ज्वलंत इच्छा थी, जहाँ से वह ग्राहकों को विश्वास और जल्द डिलिवरी दे सके। यह कार्य पद्धति उभरते उद्योगों के लिए बहुत ज़रूरी भी थी।

उसने समाचार पत्रों में विज्ञापन दिया कि वह कुछ चुने हुए शहरों में एक निश्चित समय के अंदर सामान पहुंचाएगा और वह इस बात की गारंटी भी देता है। पहले दिन उन्होंने ६ कंसाइनमेंट (Order) प्राप्त किए, जिन्हें उन्होंने वादा किए हुए समय के अंदर सौंप दिया। इस तरह उन्होंने लोगों का विश्वास जीत लिया और अधिक से अधिक कंसाइनमेंट (Order) प्राप्त होने शुरू हो गए।

कोरियर कंपनी, जिसकी फेडरिक्स ने कल्पना की थी और फिर उसे स्थापित कर दिखाया, वह आज फेडएक्स (FedEx) के नाम से जानी जाती है। यह कोरियर कंपनियों में सब से बडा संगठन है, जिस में ६८० हवाई जहाज़ों का बेड़ा है और उसकी सालाना आमदनी २८ बिलीयन डॉलर है।

फेडरिक्स ने एक नई कल्पना की जो अपने आप में अछूती कल्पना थी। अपनी ज्वलंत इच्छा और इरादे के साथ उन्हों ने इसे वास्तविकता मे बदल दिया। परिणाम स्वरूप उन्होंने एक बहुत बडी संपत्ति व धन कमाया और दुनिया ने एक विश्वसनीय कोरियर कंपनी प्राप्त की।

कोका कोला (Coca Cola)

- सर्दियों की कड़कड़ाती ठंड की रात में एक कैमिस्ट

- ने कुछ रसायन (Chemical) की एक बड़ी केतली और कागज़ का एक टुकड़ा जिस पर एक सिद्धांत (Formula) लिखा हुआ था, उसे अपने साथ लिया और गाड़ी चलाते हुए 'आसा कॅंडलर' के पास पहुँचा और इसे बहुत ही ऊंचे दामों पर उनको बेच दिया। आसा कॅंडलर ने उन कॅमिकल्स और फार्मूले के

लिए अपनी जिंदगी की पूरी कमाई दे दी। कॅमिस्ट के लिए वह कॅमिकल और फार्मूला एक मामूली चीज़ थी, मगर आसा कॅंडलर के लिए नहीं। आसा कॅंडलर ने कड़वे और गले को पलभर के लिए सर्द करने वाले एक अजीब ठंडे-पेय (Cold Drink) का सपना देखा था, जो कोल्ड्रिंक्स की दुनिया में एक क्रांति लानेवाली था। और अपने इस सपने के लिए उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी की कमाई दांव पर लगा दी। और वह सफल भी हुए। वह केमिकल Coco cola बनाने का सामान था।

आज कोका कोला केवल पार्टियों और उत्सवों का मनपसंद पेय (Drink) ही नहीं है, बल्कि यह लाखों लोगों को रोज़गार भी देता है और उनकी आमदनी का ज़रिया भी है।

मॅक्डोनाल्ड (McDonald)

श्री. मॅक्डोनाल्ड होटल के व्यापार में थे। वह अपने व्यापारिक क्षेत्र में बहुत ही सफल व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने समीक्षा की और अपने ग्राहकों की ज़रूरतों और इच्छाओं को पूरा किया था।

ग्राहकों की इच्छाएं निम्नलिखित प्रकार की होती हैं:

- होटल का सुविधाजनक स्थान (Convenient Location of hotel)
- जल्द सेवा (Fast Service of Food)
- कम कीमत (Low Cost of Food)
- अच्छी गुणवत्ता (Good Quality of Food)

श्री. मॅक्डोनाल्ड ने उत्तम स्थानों पर होटलें स्थापित किए और ग्राहकों की सारी इच्छाओं को उन्होंने पूरा किया। उसने केवल सीमित वस्तुएँ ही रखीं, इसलिए इन्हें तैयार रखना आसान होता था। ग्राहक जैसे ही ऑर्डर करता वह उसे तुरंत परोसी (Serve) जाती।

थोडी वस्तुएं, बड़ी मात्रा में बनाने से लागत मूल्य कम होता है, इसलिए अपने होटल में वह कम से कम दाम रखने में समर्थ हुए। वह सब से अच्छी गुणवत्ता को भी कायम रखते थे, क्योंकि उन्हें अपना ध्यान कुछ सीमित पकवान पर ही एकाग्र रखना होता था।

ग्राहकों की इन चार अपेक्षाओं को पूरा करने पर उन्हें बहुत प्रसिद्धी मिली। आरंभिक सफलता के पश्चात् वह अपने व्यापार को अधिक विस्तृत करना चाहते थे।

लेकिन कैसे?

अधिक होटल खोलने से वह और व्यस्त हो जाते और सारे होटलों का कारोबार एक साथ संभालना मुश्किल हो जाता।

उनके मन में एक विचार आया, जिसकी उनसे पहले (अतीत में) किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने केवल २ % के आधार पर लोगो से साझेदारी कर प्रस्ताव रखा। जिसका अर्थ है, कि वह केवल २% के साझीदार होंगे और दूसरे व्यक्ति का हिस्सा ९८ % होगा। इस २ % की साझेदारी के बदले में वह अपने प्रसिद्ध होटल का नाम 'मॅक्डोनाल्ड' देंगे और खाना बनाने तथा होटल-व्यवस्थापन में वह अपने विचार-विमर्श (Consultancy) देंगे।

यह एक ऐसा फायदेमंद प्रस्ताव था, कि थोडे समय के अंतराल में ही केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि संसार के सभी देशों में ४०,००० मॅक्डोनाल्ड रेस्टोरेंट खुल गए।

मि. मॅक्डोनाल्ड ने एक व्यापार-शैली की कल्पना की, जो परम्परागत (पहले से चली आ रही) साझेदारी से बिल्कुल अलग थी। उन्होंने उसे वास्तविकता में बदला और अपार धन-संम्पत्ति प्राप्त की और संसार को विश्व-स्तरीय होटल और स्वादिष्ट खाना मिला।

ज़ेरॉक्स (Xerox)

मि. चेस्टर कार्लसन ने एक ऐसी मशीन की कल्पना की जो किसी भी डॉक्युमेंट की कुछ सेकंडों के अंदर नकल तैयार कर सके । उन्होंने इस कल्पना को वास्तविकता मे बदला और कई बिलियन्स डॉलर कमाए।

मि. थॉमस ऍडिसन (Mr. Thomas Edison)

मि. थॉमस ऍडिसनने अनेक असंभव आविष्कारों की कल्पना की, जैसे इलेक्ट्रिक बल्ब तथा ग्रामोफोन इत्यादि। उन्होंने अपनी कल्पना को वास्तविकता में बदला और एक समृद्ध तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक बने।

- सैंकड़ों ऐसे उदाहरण हैं, जिसमें सपना देखने वाले ने असंभव और विचित्र वस्तुओं का सपना देखा, और वह अपने सपनों को वास्तविकता में परिवर्तित करने के अपने इरादे पर जमे रहे। और उन्होंने उसे कर दिखाया।

कल्पना को वास्तविकता में बदलने के लिए जो अत्याधिक महत्वपूर्ण चीज़ चाहिए वह है ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire)! परंतु ज्वलंत-इच्छा क्या है? मैं आपको निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire) के बारे में समझाने की कोशिश करता हूँ:

- ७५० ई. सन में "तारिक बिन ज़ियाद" खलीफा "वलीद इब्ने अब्दुल मलिक" की सेना में 'वेस्टर्न कमाँड' के कमाँडर इन चीफ थे। तारिक बिन ज़ियाद को उत्तरी अफ्रीका और यूरोप के दक्षिणी देशों जैसे स्पैन (Spain) आदि (समुद्र के पार) पर विजय प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया था।

उन्होंने अफ्रीका को जीत लिया, परंतु स्पैन पर विजय प्राप्त करना आसान कार्य नहीं था। तारिक बिन ज़ियाद के दिल में स्पैन को जीतने की बहुत अधिक इच्छा थी, इसलिए उन्होंने अपनी सेना को जहाज़ में चढ़ाया, स्पैन के किनारे पर ले गए, अपनी सेना और सामान को उतारा तथा सभी जहाज़ो को जला दिया।

जब जहाज़ों ने जल कर डूबना शुरू किया तो उन्होंने अपने सैनिकों से कहा: "इन जहाज़ों की ओर देखो, इन के डूबते ही तुम्हारे पलायन (भागने) के सारे रास्ते बंद हो गए। अब बिना विजय प्राप्त किए तुम इस तट से कभी जीवित वापस अपने देश नहीं जा सकते। अब तुम्हारे सामने कोई रास्ता नहीं है, जियो या मरो।

और वे जीत गए। तारिक बिन ज़ियाद की बारह हज़ार की सेना ने स्पैन की एक लाख की सेना से सात दिनों तक मुकाबला किया और उन पर विजय प्राप्त कीया।

"जबल तारिक" अथवा जिब्राल्टर पहाड़ी जिस पर वह लड़े और युद्ध में विजय प्राप्त की, आज भी उन के

नाम से याद की जाती है। (अरबी शब्द जबल का अर्थ है पहाड़ी, जबल तारिक का अर्थ है तारीक की पहाड़ी)

इच्छा की वह अवस्था जो तारिक बिन ज़ियाद के दिल में थी, वह "ज्वलंत-इच्छा" है।

ज्वलंत-इच्छा रखने वाला व्यक्ति अपनी कल्पना को वास्तविकता में बदलने और इसे संभव बनाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देता है।

- लेकिन उस समय हम क्या करें, जब मन ज्वलंत-इच्छा को विकसित करना चाहता है, लेकिन ज्वलंत-इच्छा हृदय में जलती ही नहीं है?

इस का उत्तर है "ओटो सजेशन" (Auto-Suggestion) है। जिसका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे।

****

अध्याय-१ ३

ओटो सजेशन

(Auto Suggestion)

ओटो सजेशन कैसे काम करता है।

ओटो सजेशन तीन नियमों पर निर्भर है।

नियम १- अवचेतन मन जब मन में भावनाओं के साथ स्पष्ट उद्देश्य या इच्छा हो उसके बाद ही सक्रिय होता है।

नियम २-लोग जब पहली बार किसी अपराध के संपर्क में आते हैं, तो वह उसे बुरा समझते हैं और उसे टाल देते हैं। यदि वह अपराध के संपर्क में कुछ और समय के लिए रहते हैं तो उसके अभ्यस्त (आदि) हो जाते हैं, और उसे सहन करने लगते हैं। यदि वह उसके संपर्क में काफी लम्बे समय तक रहते हैं, तो अंततः उसे स्वीकार कर लेते हैं और स्वयं अपराध करने लगते हैं। यह मनुष्य का स्वभाव है।

नियम ३-एक रूसी शरीर विज्ञान शास्त्रज्ञ (Physiologist) पावलोव्ह (Pavlov) ने अपने कुत्ते पर एक प्रयोग किया। इस प्रयोग में वह एक घंटी बजाता और उस के तुरंत बाद अपने कुत्ते को खाना देता था।

कुछ समय बाद कुत्ते के मन में यह बात बैठ गई कि घंटी की आवाज़ के तुरंत बाद ही खाना मिलता है। इसके बाद जब भी घंटी बजाई जाती, कुत्ते के मुंह से लार बहने लगती, चाहे उसे खाना दिया जाए या न दिया जाए। पावलोव्ह का यह प्रयोग-निष्कर्ष जगप्रसिद्ध है और "संबंध-क्रिया" (Conditional Response) के नाम से जाना जाता है।

- इस प्रयोग से यह बात सिद्ध होती है कि कुत्ते के मन ने घंटी की आवाज़ को भोजन से जोड दिया था। इसलिए घंटी बजते ही उसका मन भोजन के लिए शरीर को तैयार कर देता, अर्थात कुत्ते के मुंह से लार (खाना खाने के लिए) आने लगती।

- इसका अर्थ यह है कि यदि मन को जागृत अवस्था में कुछ समय तक कुछ बाहरी संकेत (Signal) लगातार मिलते रहें जिस से शरीर में कुछ बदलाव, भावना अथवा प्रतिक्रिया पैदा होती हो तो उसके बाद जब भी मन को वही बाहरी संकेत मिलते हैं तो मन अपने-आप अधिक प्रयत्न न करते हुए वैसा ही बदलाव, भावना अथवा प्रतिक्रिया शरीर में पैदा करता है।

Auto Suggestion क्या है और उसकी विशेषता क्या है?

- इसे हम अपने आप को विश्वास दिलाना भी कह सकते है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम कुछ विचार और विश्वास को बार-बार दौहराते है। और याद करने का प्रयत्न करते है, ताकि उन्हें हमारा मन और मस्तिष्क सत्य के तौर पर मान ले क्योंकि विचार और विश्वास हमारी कार्य प्रणाली

(Performance) को बहुत प्रभावीत करते है। तथा हमारी सफलता में बहुत महत्वपूर्ण किरदार (Role)अदा करते है। इसलिए अगर सही विचार और विश्वास हमारे मन में बैठ जाए तो हमारी जिंदगी बदल सकती है।

- Auto Suggestion में सात काम हैं या अपने आप को विश्वास दिलाने के सात चरण है, जो निम्नलिखित है:

१. जीवन में आप जो लक्ष्य या सफलता प्राप्त करना चाहते हो उसकी कल्पना आप के मन में बिल्कुल स्पष्ट हो।

२. अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप जो संघर्ष करेंगे या आप जो कष्ट लेंगे, या आप जो बलिदान देंगे या आप की जो योजना(Plan) है, वह भी आप के मन में बिल्कुल स्पष्ट हो।

३. दोनों चीजों को एक कागज़ पर लिख लें। यानि अपने लक्ष्य को और अपने संघर्ष या योजना को।

४. रोज़ाना सुबह और शाम उस कागज़ में जो आपने लिखा है उसे जोर-जोर से पढ़े।

५. अपने लक्ष्य में सफल होने के पहले ही इस बात का विश्वास करने की कोशिश करें कि आप अभी से अपने लक्ष्य में सफल हो रहे हैं।

६. अपनी योजना (Plan) के अनुसार अमल करना शुरु कर दें और अपने लक्ष्य, योजना, संघर्ष या लक्ष्य को पाने की राह में आने वाली मुश्किलों को समझने की कोशिश करें। आवश्यकता हो तो कार्यप्रणाली में बदलाव करें, मगर लक्ष्य में सफलता पाने का प्रयास जारी रखें।

७. अपनी सफलता के लिए नियमित रुप से ईश्वर से प्रार्थना करते रहें।

ऊपर बताए गए चरणों की हम विस्तार से चर्चा करते हैं।

चरण १:- Define your goal clearly

- अपने लक्ष्य को स्पष्ट और विशेष रुप से परिभाषित करें। उदाहरण के लिए यदि आप बहुत अधिक धन चाहते हैं, तो इतना ही कहना काफी नहीं है कि आप अमीर होना चाहते हैं। बल्कि कहें, मैं इतनी रकम चाहता हूँ। (कहें, मैं एक करोड़ या दस करोड़ रुपयें चाहता हूँ।) और समय भी बताएँ। ऐसा न कहें, में भविष्य में अमीर बनना चाहता हूँ। बल्कि कहें, में इतनी रकम चौथे साल के अंत तक चाहता हूँ। (अथवा कोई भी निश्चित समय)

लक्ष्य को स्पष्ट रुप से निर्दिष्ट करने का अर्थ यह है कि अवचेतन मन केवल विशिष्ट (Specific) संदर्भ पर ही कार्य करता है। उदाहरण के लिए, यदि आप एक कम्प्यूटर (जिस में शब्दकोश (Dictionary) लोड़ की गई हो) से सकारात्मक भावना (Positive Emotion) का अर्थ पूछें तो वह सही उत्तर नहीं देगा। लेकिन यदि आप विशेष रुप से विश्वास (Faith) का अर्थ पूछें, तो वह बिल्कुल ठीक बताएगा, कि विश्वास का अर्थ है पूर्ण श्रद्धा और भरोसा।

इसी प्रकार अवचेतन मन प्रकृति से वही संदर्भ (Detail Knowledge) प्राप्त करता है, जिन की स्पष्ट

और विशिष्ट रुप से व्याख्या की गई हो। और लक्ष्य को प्राप्त करने का उचित समय निर्धारित किया गया हो।

चरण २ :- अपना प्रयास निश्चित करें :- Specify your effort

आप निश्चित कीजिए कि सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया में आप क्या त्याग करोगे।

- प्रत्येक महत्वपूर्ण वस्तु का मूल्य होता है। सफलता और समृद्धि बहुत महत्वपूर्ण है। कोई भी व्यक्ति मुफ्त में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। हर एक व्यक्ति को समृद्धि पाने के लिए कठिन परिश्रम, बुद्धि और शारीरिक श्रम खर्च करना ही पड़ता है।

- आपको अपने प्रयत्न को विस्तार से, स्पष्ट रुप से बताना होगा। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी कहेगा, मैं १४ घंटे प्रति दिन इस प्रकार और इस तरह पढूंगा कि मुझे ९० प्रतिशत अंक प्राप्त हो जायेंगे। एक साहसी विक्रेता कहेगा, मैं अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक दिन में १२ घंटे इस प्रकार काम करुंगा अथवा मैं इस प्रकार मार्केटिंग करुंगा, आदि आदि।

- मूलतः यह आपकी कार्य-योजना और कोशिश हैं, जिसे आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाओगे।

चरण ३ :- अपना लक्ष्य और प्रयास को कागज पर लिखें : Record your aim and effort on paper.

एक कागज़ के टुकड़े पर सब लिख लीजिए जो आपने निश्चय किया है। जो आपका उद्देश्य स्पष्ट रुप से है। वह समय जिस में आप अपना लक्ष्य पूरा करना चाहते हैं, और वह कार्य-योजना तथा कोशिश जो आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए करेंगे। यह पूर्ण कार्य-योजना होगी अथवा सफलता प्राप्त करने के लिए आप के प्रयासो की अंतिम रुप-रेखा (Blue Print) होगी।

किसी समस्या को यदि अच्छी तरह से परिभाषित (Describe) किया जाए, तो आधी वह स्वयं ही हल हो जाती है। इसी प्रकार यदि किसी व्यापार या प्रोजेक्ट को अच्छी तरह से परिभाषित (Describe) किया जाए तो उसका सफल होना या पूरा होना आसान हो जाता है। महाभारत में केवल अर्जुन का तीर ही पक्षी की आँख को वेधने में सफल हुआ था, क्योंकि मात्र अर्जुन ही अपने लक्ष्य पर पूर्ण रुप से ध्यान देने में समर्थ थे। जब उनसे पूछा गया कि आप को क्या दिखाई दे रहा है? तब उन्होंने उत्तर दिया, 'केवल पक्षी की आँख'। जबकि बाकी सभी ने कहा, हम पेड़, पक्षी, दिख रहा है, आदि आदि। उन में से कोई भी अपने लक्ष्य पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित नहीं कर सका ना अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सका। जब आप अपने लक्ष्य को ठीक प्रकार से परिभाषित (Describe) करते हो, तो आपकी कोशिश, शक्ति, समय और ताकत अनावश्यक वस्तुओं अथवा बातों में नष्ट नहीं होगी। इसलिए सफलता प्राप्त करने की प्रक्रिया में अपनी योजना को अच्छी तरह से परिभाषित(Describe) करना आवश्यक और अधिक महत्वपूर्ण तथ्य है।

चरण-४ :- स्वयं को प्रतिदिन याद दिलायें :- Remind yourself Daily.

- जो आपने लिखा है, उसे रोज सुबह-शाम ज़ोर-ज़ोर से पढ़ो, इस भावना के साथ कि आपने अपना लक्ष्य प्राप्त करना आरंभ कर दिया है।

- यह चरण Auto-Suggstion का हृदय है और सब से मुख्य भाग है। इस के बिना अवचेतन मन ना प्रभावित होगा और ना आपको सहायता करेगा। इससे पहले हमने पढ़ा है कि, जब कोई बुराई अथवा अपराध किसी व्यक्ति के सामने बार-बार दोहराया जाता है, तो पहले वह उसे बुरा समझता है, इसे अस्वीकार करता है, फिर अगर वह बातें बार-बार दोहराई जाए तो वह इसे सहन करता है, और अंततः उसे स्वीकार कर लेता है। इसी प्रकार यदि झूठ बार-बार दोहराया जाता है, तो अंततः मन उसे भी स्वीकार कर लेता है। अंतः एक सच की तरह वह झूठ पर विश्वास करने लगता है।

  इन तथ्यों के आधार पर अपनी योजना की पूरी कार्य-प्रणाली (Blue print) को आप "अभी से सफल हो रहे हो" इस भावना के साथ अपने मन में बार-बार दोहराओ। ऐसा करने से आपका मन इसे वास्तविकता और सच्चाई की तरह स्वीकार कर लेगा और जब आपका मन आपकी कार्य योजना को सफलता की सकारात्मक भावना के साथ विश्वास करता है, तो सफलता के यह तथ्य आपके अवचेतन मन को उत्तेजित करता है और वह इसे स्वीकार कर लेता है। उसके बाद आपका अवचेतन मन इन भावनाओं को साकार करने के लिए प्रकृति और ईश्वर की सहायता लेता है।

- प्रकृति ईश्वर के साथ वार्तालाप करेगी, आपकी कोशिश के अनुरुप, आपके उद्देश्य की ईमानदारी तथा आपके और समाज के लिए क्या अच्छा है इसके मुताबीक ईश्वर अपना निर्णय आगे बढ़ाएगा। और उसके निर्णय के अनुसार प्रकृति, विचार, योजना आप के अवचेतन मन को देगी। प्रकृति सभी संबधित लोगों को भी, जो आपकी सहायता के लिए हैं, संकेत प्रसारित करेगी और आपकी सफलता का रास्ता बनाएगी। इससे आपको सफलता के मार्ग पर जाने के लिए और अपने सपने साकार करने के लिए आपके मन में स्पष्ट संकेत और कल्पना आऐंगे। आपको नज़र आएगा कि इस दुनिया का हर एक व्यक्ति आपका जिम्मेदारी का काम पूरा करने में आपकी मदद कर रहा है, और आपको यह भी नज़र आएगा कि घटनाएँ अपने आप हो रही है तथा आपको अपना लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो रही है।

- उपर दी गई क्रिया को धार्मिक पुस्तकों में भी वर्णित किया गया है, उसका सारांश निम्नलिखित हैः

  ई.सन ६१९ साल, ईश्वर ने अंतिम पैगम्बर (स) को स्वर्ग दिखाने के लिए आकाश में बुलाया था। इस स्वर्ग की यात्रा में उन्होंने देखा कि, कुछ चीज़े जमीन से आसमान की तरफ जा रही हैं और कुछ चीजे आसमान से जमीन की तरफ आ रही है। तब उन्होंने अपने साथी महान ईश्वरदूत जिब्रील को इस बारे में पूछा तब उन्होंने कहा आकाश की तरफ जानेवाली चीजे लोगों के कर्म हैं और आकाश से जमीन की तरफ जानेवाली चीज़े ईश्वर के आदेश हैं (लोगों के कर्मो के हिसाब से)। (बुखारी शरीफ)

- एक और हदीस का अर्थ है कि जब ईश्वर किसी व्यक्ति के कर्मों को पसंद करता है तो उस से प्रेम करता है और ईश्वर फरिश्तों के सरदार जिब्रील से कहते है कि में इस व्यक्ति से प्रेम करता हूँ इसलिए तुम भी इस से प्रेम करो। तो जिब्रील भी उससे प्रेम करते है। और वह सभी फरिश्तों से कहते हैं कि ईश्वर इस व्यक्ति से

प्रेम करता है इसलिए आप सभी इससे प्रेम करो। तो सारे फरिश्ते इस व्यक्ति से प्रेम करते हैं। फिर उस व्यक्ति के लिए प्रेम सहायता की भावना, आदर इत्यादि सभी मानव जाति के ह्दय में भेज दिए जाते है। (हदीस)

ऐसे व्यक्ति के लिए सफल होना बहुत सरल हो जाता है।

- प्रकृति ईश्वर के आदेश के अनुसार ही कार्य करती है। वह किसी को भी अपनी मर्जी के अनुसार संदेश नहीं भेजती। ईश्वर का आदेश रहेगा जिस के लिए उसी को वह संदेश भेजती है।

जैसा ईश्वर कहता है:

वह सब के ज्ञान और बुद्धि को नियंत्रित करता है, और बिना उसकी इच्छा के कोई भी उन्हें हासिल नहीं कर सकता है। (पवित्र कुरआन २:२५५)

यह वह अध्यात्मिक कड़ी और ईश्वर की कृपा है जिस के कारण कभी कभी कम पढ़ा लिखा व्यक्ति एक दार्शनिक और बुद्धिमान व्यक्ति की तरह सोचता है और बात करता है, और कभी-कभी एक व्यक्ति जो की कुशल विद्वान और अधिक बुद्धिमत्ता वाला है, मगर जिस पर ईश्वर की कृपा और मदद ना हो वह एक मूर्ख की तरह कार्य करता है और बातें करता हैं।

चरण-५ :

Auto Suggestion में "सफल होने से पहले हमने सफलता को प्राप्त करना आरंभ किया है" यह भावना मन में हमेशा रखना बहुत कठिन कार्य है। लेकिन भावना तो अनिवार्य है। आपको प्रत्यक्ष रुप से सफल होने से पहले ऐसी कल्पना और भावना करनी ही चाहिए कि मैं सफल हो रहा हूँ। क्योंकि बिना इस भावना के अवचेतन मन कोई प्रतिक्रिया नहीं करेगा।

- यदि आप कोई भी धार्मिक पुस्तक पढ़ेंगे तो आपको मालूम होगा कि स्वर्ग की इतने प्रभावशाली रुप से व्याख्या की गई है कि हर कोई इसे प्राप्त करना चाहता है, अथवा इस में ठहरना चाहता है। इस आशावादी भावना, विश्वास और स्वर्ग की भोग विलास भरी ज़िंदगी की चाहत ही मनुष्य-मात्र को सत्य के मार्ग पर चलते समय खुशी से सभी दुःख और कठिनाइयों को सहने की शक्ति देती है।

इसी प्रकार यदि आपको इस पाँचवें चरण का अनुकरण करते हुए सफलता से पहले सफल होने कि कल्पना करना मुश्किल लगता है तो अपनी उस जिंदगी की कल्पना कीजिए जो आपकी लक्ष्य प्राप्त करने के बाद की होगी। इसका अर्थ है, कि खुशी, भोग-विलास, संतुष्टि, समाज में आदर-मान तथा प्रसिद्धि। जैसे मृत्यु के पश्चात, स्वर्ग-प्राप्ति की कल्पना से ही कठिन जीवन सरल हो जाता है। इसी प्रकार सफलता प्राप्त करने के पश्चात संतुष्ट जीवन की कल्पना और विश्वास इस पाँचवे चरण को आसान बना देते हैं और हर ज्वलंत इच्छा (Burning Desire) को और अधिक उत्तेजित करती है।

- इन्जेक्शन देने के पहले स्पिरीट से त्वचा को साफ किया जाता है। अगर किसी बच्चे (जो इन्जेक्शन से ड़रता भी हो) की त्वचा को स्पिरीट से साफ करके हर दिन इन्जेक्शन दिया जाए तो कुछ दिनों के बाद अगर बच्चे की त्वचा स्पिरीट से केवल साफ की जाए तो स्पिरीट की सुगंध सूंघते ही बच्चे के मन में भय

पैदा हो जाएगा चाहे वहाँ इन्जेक्शन की सुई हो या ना हो।

जिस तरह केवल घंटी की आवाज से कुत्ते के मुँह से लार निकलता है और स्पिरीट से केवल त्वचा साफ करते ही बच्चा भयभीत हो जाता है। अर्थात जैसे उनका मन एक तरह से Train है वैसे ही हर व्यक्ति का मन भी एक तरह से Train है। जैसे हम अगर निराश हो जाएँ तो हमारा सर झुक जाता है, कन्धे झुक जाते है, हम काहील हो जाते है, हमारा आत्मविश्वास कम हो जाता है और हम बगैर संघर्ष के ही हार मान लेते है और बीमार भी पड़ जाते है। इस के विपरीत अगर हमें किसी बड़ी सफलता की आशा हो या अधिक मात्रा में धन मिलने का विश्वास हो तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ जाता है, हम उत्साही हो जाते है अधिक मेहनत से काम करते है, अधिक समय तक काम करते है। कठीनाईयों को भी हसते हुए सहन कर लेते है। हमारा स्वास्थ (Health) अच्छा हो जाता है आदि आदि। तो हमारी जो दशा केवल सफलता के विश्वास से हो जाती है वही दशा असल में सफल होने के पहले चाहिए। इसलिए सफलता से पहले सफल होने का विश्वास बहुत महत्वपूर्ण है।

- क्या किया जाए जब वास्तविक सफलता प्राप्त होने से पहले अपने आप से सफल होने की कल्पना करना कठिन हो जाए?

हाँ! वास्तव में यह कठिन है। किन्तु एक बात याद रखें, मन, अवचेतन मन, सकारात्मक भावनाएँ, और ईश्वर की कृपा यह सब सफलता की राहें हैं। इन में से किसी एक को भी नज़र अंदाज करना आपकी सफलता को असंभव बना देगा। इसलिए सफलता के सूत्र और Auto Suggestion के चरणों का अनुकरण करें, जो इस पुस्तक में बताए गए हैं।

- वास्तव में सफलता प्राप्त करने के पहले, आप सफल हो रहे है ऐसी कल्पना करने के लिए किसी शारीरिक कठिनाई या धन की ज़रुरत नहीं हैं, न ही आप दुनिया में किसी के सामने जोकर बनेंगे। यह एक शुद्ध रुप से सोचने का तरीका है, और जिसने भी सफलता पाई है, उसने ऐसा किया है, तो आपको भी ऐसा ही करना होगा।

यह याद रखें कि जब तक आपके अंदर सफल होने की ज्वलंत-इच्छा की लौ नहीं भड़कती, तब तक आप अपने लक्ष्य अथवा भारी मात्रा में धन-संपत्ति नहीं प्राप्त कर सकते।

- यदि आपको शुद्ध-रुप से अर्थात केवल कल्पना करना कठिन लगता है, तो ऐसा कुछ काम करो जो आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने के बाद करने वाले हो तथा जो आपकी कल्पना को साकार करने में सहायक हो। उदाहरण के लिए यदि आपका सपना एक घर खरीदने का है, तो दरवाजे की एक घंटी खरीदें या ऐसी कोई वस्तु जिसे आप अपने सपनों के घर में प्रयोग करने वाले हों। यदि आप एक शानदार कार खरीदने की बात सोच रहे हैं, तो पहले आप उसके लिए एक सीट-कवर अथवा हेंडल-कवर खरीद लें। यदि आप चाहते हैं कि आपके पास बहुत धन हो, तो कुछ असली नोट ले लें, और उसी साइज़ के कोरे पेपर में रख दें, और असली नोट की तरह पूरा बंडल बनाएँ तथा उन्हें अपनी जेब में रख दें, और उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करें और ऐसा ही महसूस करें जैसे वे असली नोट हों। ऐसा करने के बाद, और घर की कोई वस्तू या कार का कोई सामान खरीदने के बाद जैसा कि ऊपर बताया गया है, अपने आप से कहें कि यह हमारी सफलता का एक छोटा सा हिस्सा है, बाकी का हिस्सा बस आने वाला है। इस प्रकार वस्तुओं की कल्पना

पूरे जोर-शोर से करें।

- ऊपर बताए तरीके से अपनी इच्छा को नियमित रुप से दोहराने पर जब आपका अवचेतन मन सक्रिय हो जाता है, तो यह पूर्ण, सुरक्षित और अचूक योजनाएँ प्रकृति से आपके लिए लाता है।

- याद रखिए, विचार वस्तु की तरह हैं, जो कुछ भी आपका मन विश्वास के साथ कल्पना करता है तो वह उसे अवश्य प्राप्त कर सकता है। सफलता मन की एक सकारात्मक अवस्था के साथ शुरु होती है। इसके लिए सपने देखना, कल्पना करना, पक्का इरादा, कोशिश करना और प्रार्थनाओं की जरुरत है। इस में कठिन परिश्रम का कुछ लेना देना नहीं है। केवल सामान्य या कठिन परिश्रम समृद्धि नहीं लाती बल्कि सकारात्मक एवं आवश्यक मानसिक दशा के साथ जब परिश्रम किया जाता है तब ही समृद्धि प्राप्त होती है। आज भी समाज में ९ ५ प्रतिशत लोग बहुत परिश्रम करते हैं। लोगों को कठिन परिश्रम के बाद भी रोटी आसानी से नहीं मिलती और वह सफल नहीं है। समाज में केवल ५ प्रतिशत लोग ही सफल समझे जाते हैं, और यह वह लोग हैं जो कठिन परिश्रम करते हैं, किन्तु सकारात्मक और आवश्यक मानसिक अवस्था के साथ, जो सफलता के लिए जरुरी है।

इसलिए पहले अपने सोचने कि आदत और सकारात्मक कल्पना को सुधारने के लिए परिश्रम करें उसके बाद शारीरीक कष्टों पर ध्यान दें।

इस बारे में ज्यादा जानकारी के लिए नेपोलियन हिल की Think & grow rich पुस्तक पढें।

चरण - ६ :-

अपने लक्ष्य, अपनी कार्यप्रणाली, अपने परिश्रम और अपने प्रगति की जांच करें और अगर कुछ बाधाएं आऐं तो उन बाधाओं के अनुसार अपनी कार्यप्रणाली में बदलाव अथवा सुधार कर लें और अपने परिश्रम जारी रखें।

चरण - ७ :-

किस डॉन का बेटा उद्योगपति है?

कोई नहीं।

इग्लैंड, फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल ने जहाँ भी राज किया वहाँ उन्होंने लोगों को बहुत लुटा। मगर क्या कोई इसे बचा कर रख सका?

किसी ने नहीं।

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी ने फ्रांस पर कब्ज़ा किया और बहुत लूटा तथा उसने बीस हजार टन बारुद की बारिश इंग्लैड पर की। इस बमबारी में लंदन की एक इमारत भी अखंड अर्थात टूट-फूट से बची नहीं रही। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि बुरे रास्ते से कमाई हुई संपत्ति कभी भी शेष नहीं रहती, वह हमेशा नष्ट हो जाती है।

समृद्धि को लम्बे समय तक बचाए रखने का केवल एक ही रास्ता है, और वह है सही तरीके से इसे

कमाना।

ईश्वर कहता है,

मैं केवल उन्हीं लोगों को सरल सहज जीवन और समृद्धि देता हूँ, जो मुझ में विश्वास रखतें है और सही रास्ते पर चलते है। (पवित्र कुरआन १६:९७)

- ५४० बी.सी. में कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ अपने जीवन में पहली बार अपने रथ पर बैठ कर देश-भ्रमण के लिए अपने महल से बाहर आए। जब उन्होंने एक मृत-शरीर तथा एक बूढ़े व्यक्ति को दयनीय अवस्था में देखा, तो उन्होंने तुरंत यह अनुभव किया कि यह भौतिक शरीर नाशवान है, और केवल भौतिक सफलता ही सच्ची या वास्तविक सफलता नहीं है। उन्होंने अपनी राजगद्दी छोड़ दी, और १२ साल तक साधना की यह जानने के लिए कि सही रास्ता क्या है? तब उन्हें ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ और वह उस काल के धर्म गुरु और महान गौतम बुद्ध हो गए।

- अंतिम देवदूत हजरत मोहम्मद (स) ने परिपक्व उम्र (३५ वर्ष) तक पहुँचते हुए यह अनुभव किया कि अरबी जन में धार्मिक अथवा असभ्य परंपराएँ ठीक नहीं हैं। वह अक्सर पहाड़ की चोटी पर 'गारे-हिरा' नाम की गुफा में मौन साधना और एक ईश्वर की प्रार्थना के लिए जाया करते थे। ईश्वर ने केवल उन्हें सही रास्ता ही नहीं दिखाया, बल्कि उन्हें कयामत तक के लिए पैगम्बरी भी दी।

- पैगंम्बरी देने के पश्चात, ईश्वर ने हजरत मुहम्मद (स.) से पवित्र कुरआन में कहा,

"ऐ! मुहम्मद (स.) तुम बुद्धि नहीं दे सकते हो जिसे तुम चाहते हो, लेकिन ईश्वर बुद्धि उन्हें देता है जिसे देने की उसे इच्छा होती है।" (पवित्र कुरआन २८-५६)

गौतम बुद्ध और पैगम्बर हजरत मुहम्मद (स.) को हालात को महसूस करने वाला और परखने वाला संवेदनशील मन किसने दिया?

- ये सभी धार्मिक व्यक्ति जन्म से ही बुद्धिमान और दूरदर्शी होते थे, और सही रास्ते के यह सभी ज्ञान, दूरदर्शिता और बुद्धि उन्हें ईश्वर द्वारा ही प्राप्त थी।

हर एक नए व्यापारी और बिजनिसमेन व्यक्ति को कोई व्यवहार के प्रति करार (Agreement) करने से पहले उससे होनेवाला नफा और नुकसान इसकी जानकारी दूरदर्शी और बुद्धिमानी से होनी चाहिए। तथापि यह दूरदर्शी और बुद्धिमानी कोई सिखाता नहीं है या किसी पवित्र व्यक्तियों के आर्शीवाद से प्राप्त नहीं होता। यह ईश्वर ही है जो इसे देता है।

ईश्वर कहता है,

वह बुद्धि उसे देता है जिसे वह चाहता है, और जिस किसी को भी (बुद्धि) दी जाती है, निःसंदेह वह बहुत ही शुद्ध आचरण का हो जाता है। (पवित्र कुरआन २:२६९)

लोगों को दूरदर्शी और बुद्धिमानी की जब भी आवश्यकता हुई तो उन्होंने ईश्वर का सहारा लिया। ऐसे ही उद्योगपतियों या व्यापारियों को इन दोनों चीजों की आवश्यकता होने पर ईश्वर का ही सहारा लेना होगा और कोई दूसरा मार्ग नहीं।

यदि आप लखपति होना चाहते हो तो अपने व्यापार में एक ईश्वर की उपासना को शामिल कर लीजिए। Auto Suggestion का यह अंतिम परंतु सबसे महत्वपूर्ण चरण है।

Auto Suggestion का सारांश:

१. अपने लक्ष्य की स्पष्ट रुप से व्याख्या कीजिए।

२. अपने प्रयास की स्पष्ट रुप से व्याख्या कीजिए।

३. अपना उद्देश्य और प्रयास कागज़ पर लिखिए।

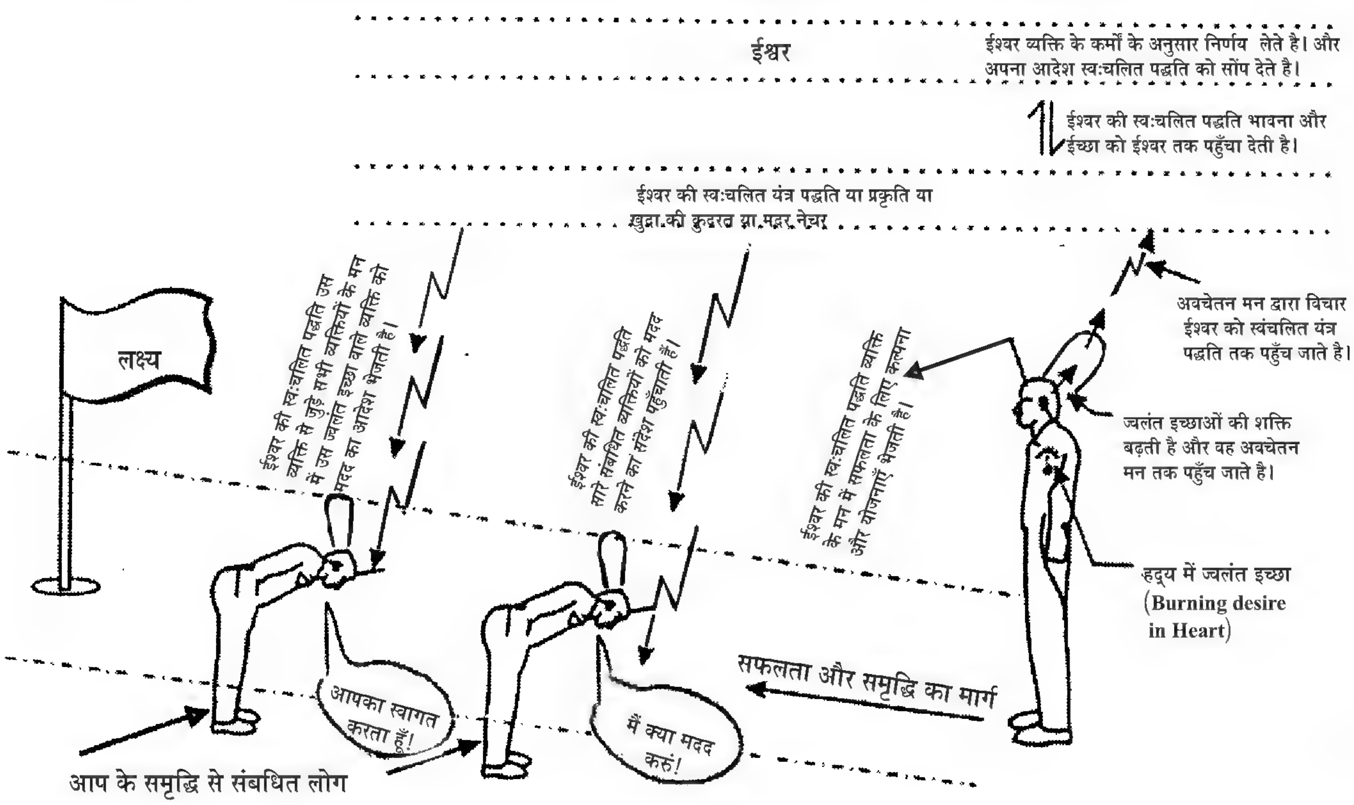
४. अपना उद्देश्य और प्रयास तथा अपनी सफलता की प्रमाणिकता को सकारात्मक भावना तथा विश्वास के साथ दिन-रात अपने मन में याद रखिए।

५. सफल होने से पहले आप सफल हो रहे हो इस की कल्पना कीजिए।

६. अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संघर्ष कीजिए। और संघर्ष करते समय जो बाधाए आए उनके अनुसार अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करें।

७. ईश्वर की प्रार्थना करते रहें और उस से मदद मांगते रहें।

मन, अवचेतनमन और ईश्वर की स्व:चलित पद्धति यह सकारात्मक विचारों पर कैसे काम करते हैं इसका सारांश



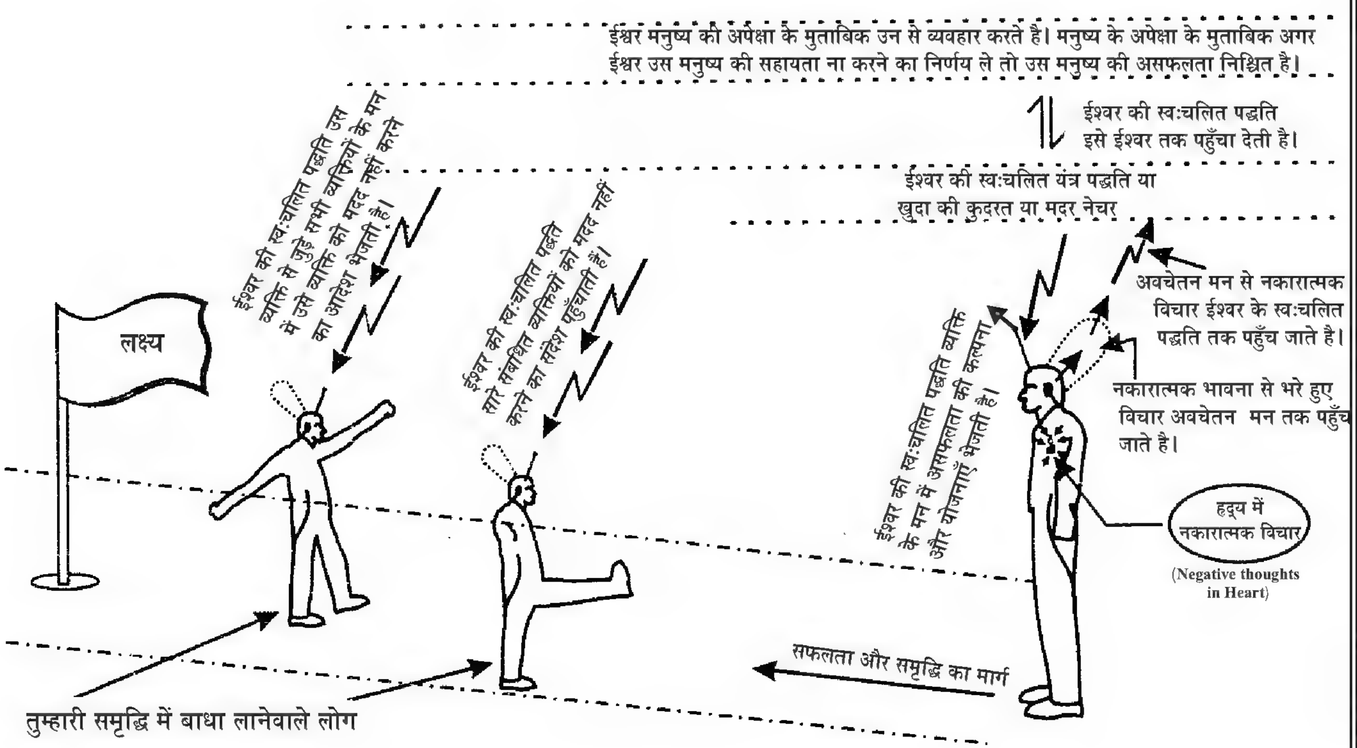
अवचेतन मन सकारात्मक विचारों पर कैसे काम करता है?

जब हृदय में कोई इच्छा भावनाओं के साथ प्रज्वलित होती है। तो इन इच्छाओं अथवा विचारों की शक्ति (Energy and vibration) बढ़ जाती है। शक्तिशाली विचार अवचेतन मन के स्तर के ऊपर उठते है। चूँकि अवचेतन मन सदा ईश्वर की स्वःचलित पद्धति या मदरनेचर या प्रकृति या खुदा की कुदरत के संपर्क में रहता है। इसलिए यह शक्तिशाली विचार ईश्वर के स्वःचलित पद्धति तक पहुँच जाते है। ईश्वर की स्वःचलित पद्धति इन्हें ईश्वर तक पहुँचा देती है। जैसे मनुष्य के कर्म होंगे ईश्वर उस व्यक्ति के लिए वैसा ही निर्णय लेते है। और अपना आदेश स्वःचलित यंत्र पद्धति को सोंप देते है। स्वःचलित पद्धति ईश्वर के आदेश अनुसार काम करती है और व्यक्ति की भावनाओं से भरे विचार को वास्तविकता या आकार देने का प्रयास करती है। इस कार्य के लिए वह उस व्यक्ति की मन में भी ऐसे विचार और कल्पनाएँ भेजती है जिस से उसको ज्वलंत इच्छा पूरी हो। इस के अलावा वह उस व्यक्ति से जुड़े अन्य लोगों के अवचेतन मन में भी ऐसे विचार और भावनाएँ उत्पन्न करती है जिस कारण सारे लोग उस व्यक्ति की ज्वलंत इच्छा को पूरा करने में मदद करते है।

हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा के फरिश्ते पृथ्वी की सैर करते रहते है और जब कभी वह कही भी ईश्वर की प्रशंसा होते हुए देखते है तो वहाँ जमा हो जाते है। वह इतनी अधीक मात्रा में जमा हो जाते है की उनकी कतार आकाश तक पहुँच जाती है। सभा खत्म होने पर जब वह स्वर्ग में जाते हैं तो ईश्वर सब कुछ जानने के बाद भी पूछता है कि तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? वह कहते हैं कि ऐसी सभा से जिस में हे ईश्वर तेरी प्रशंसा हो रही थी। ईश्वर पूछता है क्या उन्होंने मेरे स्वर्ग को देखा है? फरिश्ते कहते है नहीं। ईश्वर पूछता है अगर वह देख लेते तो क्या करते? फरिश्ते फरमाते है वह तेरी और प्रशंसा करते। ईश्वर कहता है तुम सभी साक्षी रहो मैंने उन सबको मुक्ति प्रदान कर दी। फरिश्ते कहते हैं हे ईश्वर उस में से एक व्यक्ति किसी दूसरे काम से उन के साथ बैठा था। ईश्वर कहता है मैंने उसको भी मुक्ति प्रदान कर दी क्योंकि पवित्र लोगों की संगत में वह अभागा नहीं रह सकता। (हदीस बुखारी शरीफ)

अर्थात धार्मिक तौर से भी ईश्वर की एक प्रणाली है जिस के द्वारा लोगों के कर्म ईश्वर तक पहुँचते हैं और ईश्वर उन कर्मों के आधार पर भाग्य का फैसला करता है।

मन, अवचेतनमन और ईश्वर की स्व:चलित पद्धति यह नकारात्मक विचारों पर कैसे काम करते हैं इसका सारांश



अवचेतन मन नकारात्मक विचारों पर कैसे काम करता है?

यदि व्यक्ति दृढ़ विश्वास के साथ नकारात्मक सोचता है, तो उसका अवचेतन मन उसके नकारात्मक विचार ग्रहण करता है और उन्हें प्रकृति को देता है। प्रकृति उनको ईश्वर के पास पहुँचा देती है। यदि सोचने वाले के कार्य महान होते हैं, तो पहली बार ईश्वर उसे बुद्धि और ज्ञान का आशीर्वाद स्थिति को समझने और सोचने के लिए देता है ताकि वह सकारात्मक सोचे। किन्तु जब व्यक्ति के कार्य महान नहीं होते हैं अथवा सज्जन व्यक्ति मार्गदर्शन के पश्चात् भी नकारात्मक सोचता है, तो अध्यात्मिक मदद हवा और पानी की तरह मुफ्त नहीं होती है। ईश्वर केवल उनकी सहायता करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं। अगर ईश्वर की कृपा न हो तो कोई व्यक्ति खुद अपनी शक्ति से सफल नहीं हो सकता है।

प्रकृति सभी संबधित व्यक्तियों को उस से सहयोग न करने का संकेत भी प्रसारित करती है। बगैर ईश्वर की कृपा और लोगों की सहायता के बिना किसी व्यक्ति का सफल होना असंभव है।

हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा की तुम में से किसी को उस समय तक मौत न आए जब तक उस की उम्मीद (Expectation) ईश्वर से सकारात्मक न हो। (हदीस-मुस्लिम-उर्दू-वॉल्यूम ६ - पेज नं. ४१४)

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

केवल वही लोग जो ईश्वर में आस्था नहीं रखते हैं, उम्मीद खो देते हैं। (पवित्र कुरआन १२:८७)

सकारात्मक सोच आर्थिक (Financial) और धार्मिक (Spiritual) दोनों में सफलता के लिए बहुत जरुरी है।

सकारात्मक सोचः

- ईश्वर ने नकारात्मक विचार का निषेध किया है और कहा है:

वह किसी को भी हानि नहीं पहुँचाता है। मनुष्य जो दुखःदर्द अथवा तकलीफ सहता है या पाता है, ये उसके अपने कार्यों तथा कर्मों का फल है। (पवित्र कुरआन २:२८६)

अर्थात नकारात्मक विचारो से जो कष्ट मनुष्यों को होता है वह उसकी अपने सोच के कारण होता है। इस प्रकार के कष्ट और हानि ईश्वर की तरफ से नहीं होती है।

- अंतिम देवदूत हज़रत मोहम्मद (स.) कहते है:

- **ईश्वर कहता है, मैं लोगों से वैसा ही व्यवहार करता हूँ, जैसी वे मेरे प्रति आशा** (Expectation) **रखते हैं।** (हदीस)

इसका अर्थ है, यदि व्यक्ति सोचता है, कि ईश्वर दयालु और महान है और ईश्वर ने उसे भाग्यवान बनाया है और वह उस पर अपनी दयादृष्टि रखेगा और उसकी मदद करेगा, तो ईश्वर वास्तव में वैसा ही करेगा जैसी व्यक्ति आशा करता है। यदि किसी व्यक्ति को ईश्वर में आस्था नहीं है और वह यह भी सोचता है कि ईश्वर ने उसे बदकिस्मत बनाया है और फेल होना अथवा असफलता उसके भाग्य में लिखी हैं, तो हो सकता ईश्वर उसकी सहायता न करें। और जिसकी सहायता ईश्वर न करें गरीबी, निराशा और पराजय उसका भाग्य होती है।

- पवित्र कुरआन कहता है,

केवल वही लोग जो ईश्वर में आस्था नहीं रखते हैं, उम्मीद खो देते हैं। (पवित्र कुरआन १२:८७)

- पवित्र बाईबल कहता है,

डरो नहीं, ईश्वर महान(असंभव) कार्य करता है। (पवित्र बाईबल Joel २:२१)

अर्थात ईश्वर पर आस्था रखो और उस से मदद मांगो वह असंभव को कभी भी संभव कर सकता है।

- **ईश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।** (पवित्र कुरआन २:२८६)

- ऊपर के पदों की व्याख्या हम निम्न प्रकार से कर सकते है।

ईश्वर महान है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। यदि कोई आशा खो देता है, तो वह इस बात को मानने से इन्कार करता है कि ईश्वर असंभव को भी संभव कर सकता है। वह ईश्वर का अपमान करता है अथवा ईश्वर की श्रेष्ठता को तुच्छ समझता है।

कोई कार्य हमारे लिए असंभव हो सकता है, पर ईश्वर के लिए नहीं। हम अकेले इसे प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन ईश्वर इसे प्राप्त कर सकता है। ईश्वर हमारे लिए प्राप्त करना आसान बना सकता है। इसलिए जब हम किसी कठिन और असंभव कार्य के लिए अपनी योग्यता पर विश्वास खो बैठते है, तो हमें सकारात्मक विचार रखने चाहिए, और विश्वास रखना चाहीए कि ईश्वर हमारे लिए अपना लक्ष्य

प्राप्त करने के लिए कोई आसान रास्ता अवश्य बनाएगा। और इसलिए हमें सकारात्मक विचार रखने की कोशिश करनी चाहिए।

- पवित्र कुरआन के अध्याय ९, पद ११८ में ईश्वर कहता है,

और उन तीनों को भी उसने माफ़ किया जिनके मामले को स्थगित कर दिया गया था। जब ज़मीन अपनी सारी फैलाव के बावजूद उनपर तंग हो गई और उनकी अपनी जानें भी उनपर बोझ होने लगी और उन्होंने जान लिया कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण लेने की जगह ख़ुद अल्लाह ही की दयालुता की छाया के सिवा नहीं है। तो अल्लाह अपनी मेहरबानी से उनकी ओर पलटा ताकि वे उसकी ओर पलट आएँ, यक़ीनन ही वह बड़ा माफ़ करनेवाला और दया करनेवाला है। (पवित्र कुरआन ९:११८)

इस पद अथवा इन पंक्तियों की पृष्ठभूमि यह है, कि हज़रत मोहम्मद(स.) के जमाने में ईश्वर के आदेशानुसार तीन व्यक्तियों का जिन्होंने इस्लाम के कुछ नियमों का पालन नही किया था। चालीस दिनों के लिए सामाजिक रुप से बहिष्कार किया गया था। जबकि पूरे शहर में घुमने के लिए वे आज़ाद थे। पर वे निरुद्देश्य इधर-उधर घूमते, लेकिन कोई भी उनके साथ मेल-जोल नहीं रखता था। उन्होंने अपने आप यह महसूस किया कि यद्यपि संसार बहुत बड़ा है, लेकिन उनके लिए एक जेल की कोठरी की तरह है।

ऐसा केवल उनके साथ ही नहीं हुआ। सामान्यतः किसी के साथ भी हो सकता है। यदि ईश्वर की ओर से असहयोग का निर्णय हो, तो संसार में कोई उसकी मदद नहीं कर सकता और न ही सहयोग देता है। पंरतु वह लोग, ईश्वर जिनके पक्ष में है और जिनके लिए, ईश्वर का निर्णय सहयोग और सफलता का होता है, संसार में प्रत्येक व्यक्ति उनकी मदद करने के लिए तैयार रहता है।

इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक ही सोचना चाहिए और ऐसी बुराइयों और पापों से दूर रहना चाहिए, जो ईश्वर के प्रकोप और क्रोध को आमंत्रित करती है।

- नकारात्मक चिंतन अथवा विचार जब हमारे उज्जवल भविष्य के लिए इतने हानिकारक है, तो हम इन्हें कैसे दूर कर सकते हैं अथवा इनसे कैसे बचा जा सकता है? इसका अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे।

****

अध्याय-१४

नकारात्मक विचारों से बचाव

(How to avoid Negative Thoughts)

- शैतान के बारे में आपके क्या विचार है? क्या वह मंदबुद्धि है? अशिक्षित है? मूर्ख है? अज्ञानी है?

गलत!

वह अपने घमंड के कारण ही शैतान बना था, अन्यथा वह इस धरती का एक अत्यंत बुद्धिमान प्राणी है और शैतान बनने से पहले स्वर्ग में फरिश्तों के साथ रहता था। वह इतना समझदार है की बिना किसी शारीरिक शक्ति और ताकत के सिर्फ मन और विचारों पर काबू करके, वह मनुष्य जाति पर विजय प्राप्त करता है और उन्हें सही रास्ते से भटकाता है।

- नकारात्मक विचार ही असफलता का मुख्य कारण है, यह बात शैतान अच्छी तरह जानता है इसलिए शैतान नकारात्मक विचारों को ही मन में विकसित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

ईश्वर जो सब कुछ जानता है, इस तथ्य को पवित्र कुरआन में इस तरह कहा है:

"वह शैतान ही है, जो मन में गरीबी का भय पैदा करता है। और शर्मनाक नीति अपनाने के लिए उकसाता है," (कुरआन २:२६८)

इसलिए याद रखें, कि विनाश नकारात्मक विचारों से ही प्रारंभ होता है। और विचार हवा की तरह नहीं है, जो बिना किसी कारण के आपके मन में आते हैं और आपके मन से गुज़र जाते हैं। नहीं, यह एक अदृश्य वस्तु है, जो आपके मन में उतारी जा सकती है तथा इच्छा-शक्ति के द्वारा मन से निकाली भी जा सकती है। मनुष्य को अपने विचारों पर नियंत्रण रखने की शक्ति दी गई है। अर्थात यह हमें तय करना है, कि हमें क्या सोचना चाहिए? और क्या नहीं। विचारों पर मनुष्य का नियंत्रण होने के कारण प्रलय के दिन ईश्वर हमसे हमारे विचारों का भी लेखा जोखा लेगा, जैसे हमें अपने कर्मों का हिसाब देना है।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है:

"आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है। तुम अपने दिल की बातें चाहे खोल दो, या छिपाओ अल्लाह हर हाल में उनका हिसाब तुमसे ले लेगा।" (पवित्र कुरआन २:२८४)

आइए हम अध्ययन करें, कि विचार क्या हैं? हम अपने मन में लाभकारी विचार कैसे विकसित करे और उन पर कैसे नियंत्रण रखें?

विचार क्या हैं?

- सपना क्या है? एक मनोचिकित्सक कहेगा कि दिन में हमारे मन में जो भी विचार उठते हैं, रात को वही हमें सपने में दिखते हैं।

किसी हद तक मनोचिकित्सक का यह कहना सही है, परंतु शत-प्रतिशत नहीं। ईश्वर से डरने वाले सज्जन व्यक्ति के सपने आने वाले समय की भविष्यवाणी होते हैं। और उनके समस्याओं का उपाय भी होते है। मगर वह इशारों की शक्ल में होते है। सपनों का अर्थ समझना भी एक शास्त्र है जिस पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी है। पैगंबर युसुफ (अ.स.) इस शास्त्र के ज्ञानी थे। जो विचार धीरे-धीरे हमारे मन में आते हैं और बार-बार आकर अपना अस्तित्व दिखाते रहते हैं वो भी सपनों की तरह ही है जिसका कुछ अर्थ होता है और कई कारण होते है।

- आम तौर पर १० ऐसे कारण होते हैं, जो हमारे विचारों को प्रभावित करते हैं।

१. दैनिक अनुभव से प्रभावित विचार (Thoughts of daily experience)

२. विचारों का संक्रमण (Thoughts Infection)

३. शैतानी जाल (Ditch of Evil)

४. बुरी नज़र (Evil Eye)

५. नफ्स (नकारात्मक वृत्ति) (Nafs)

६. आशीर्वाद (Blessing)

७. परीक्षा (Examination)

८. चेतावनी (Warning)

९. शाप (Curse)

१०. शैतान का आसानी से शिकार हो जाना (Being easy pray for Devil)

१. दैनिक अनुभव से प्रभावित विचार (Thoughts of daily experience)

जो कुछ भी हम देखते, सुनते और पढ़ते हैं, हमारा चेतन और अवचेतन मन इन्हें याद रखता है और यह विचार हमारे मन में घूमते रहते हैं। कुछ रचनात्मक कमी और ज़्यादती के साथ हम अपने आपको उन परिस्थितियों में महसूस करते है और कभी-कभी हम ऐसी कल्पना भी करते है कि हम इस परिस्थितियों में वह सारे काम और अच्छे तरीके से कर रहे हैं।

आपके मन का दरवाजा उन सारे विचारों, समाचारों और सूचनाओं के लिए बंद रखें, जो नकारात्मक है। क्योंकि आपकी सफलता प्राप्ति की कोशिशों में उसका कोई उपयोग नहीं है। इसी तरह सामान्य ज्ञान (General Knowledge) के लिए भी नकारात्मक विचारों पर ना बोले न सुनें, न देखें।

पवित्र क़ुरआन में ईश्वर ने कहा है,

ऐ नबी, ईमानवाले पुरुषों से कहो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें, यह उनके लिए ज़्यादा पाकीज़ा तरीक़ा है, जो कुछ वे करते हैं अल्लाह को उसकी ख़बर रहती है। (पवित्र क़ुरआन २४:३०-३१)

और पवित्र ऋग्वेद में ईश्वर कहता है,

क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया है, इसलिए सावधान रहें कि कहाँ देखना है। और अपनी नज़रें नीचे रखों और अपने पैर जोड़ कर रखें तथा ऐसे कपड़े न पहने जिससे कि आपका शरीर नज़र आए। (ऋग्वेद १९-३३-८)

ईश्वर के यह उपदेश विचारों और मन को स्वच्छ रखने के लिए हैं।

अपने जिम्मेदारी का काम ज्यादा ध्यान से करें। विश्व में जो कुछ भी हो रहा हैं उसकी जानकारी आपको होनी चाहिए और यह जरुरी भी हैं। लेकिन खबरों के महाजाल में डूब मत जाइए। क्योंकि प्रिंट मिडिया यह पैसा कमाने का बहुत ही लाभदायक व्यवसाय हैं। इस व्यवसाय से जुड़े लोग समाचार तैयार करते हैं और जानबूझकर आम जनता में सनसनी पैदा करने के लिए छोटी सी बात को भी बढ़ा-चढ़ाकर बहुत ही आक्रमक अंदाज में पेश करते हैं।

राजनेता और फिल्म अभिनेता के लिए खबरों में रहना उनके व्यवसाय का एक हिस्सा हैं। इसलिए जान बूझकर यह लोग ऐसा काम करते हैं या ऐसा कथन मीडिया के सामने प्रस्तुत करते हैं जिससे वाद-विवाद पैदा हों और यह लोग हमेशा सुर्खियों में बने रहें। इसलिए आप बेवकूफ न बने और अपना कीमती वक्त न ही राजनीति और फिल्मी समाचारों में बर्बाद करें और न ही ऐसे समाचार पढें जो मन में नकारात्मक विचार पैदा करते है, जैसे बलात्कार, सांप्रदायिक दंगे, खून, डकैती, घोटाले इ. खबरें।

२. विचारों का संक्रमण (Thoughts Infection)

हम कंपन लहर (Vibration) और उर्जा (Energy) आसपास के वातावरण से ग्रहण करते हैं। यदि हम सफल और समृद्ध लोगों की संगत में सकारात्मक भावना के साथ रहते हैं, तो हमारा मन भी समृद्ध विचारों को ग्रहण करेगा और अगर हम जातिवादि, अपराध, असफल, निराश लोगों की संगत में रहें तो हमारा मन उनकी नकारात्मक शक्ति से प्रभावित होता है। और हम भी उसी तरह से विचार करने लगते हैं। इसी प्रकार यदि हम अपना समय बार, कॅसिनो, नाइट क्लब और वैश्यालय मे बिताते हैं, तो हमारा मन तुरंत धन-प्राप्ति, शराब और औरत के अतिरिक्त कुछ और नहीं सोच सकता। यदि हम अपना समय व्यापारिक प्रदर्शनी, सेमिनार और व्यक्तित्व विकास के कोर्स और व्यापारिक सोच वाले लोगों के साथ बिताते हैं, तो हमारा मन सकारात्मक सोच, व्यापारिक विकास और धन कमाने के बारे में निश्चित रुप से सोचता है। इसलिए विचारों को संक्रमण से बचाने के लिए, नकारात्मक सोच वाले लोगों और समाज से दूर रहना चाहिए।

३. शैतानी जाल (Ditch of Evil)

- यह एक नकारात्मक भावना या एक प्रकार का अनुचित क्रोध है। बड़ी सफलता, सुख, आर्थिक लाभ और अन्य कोई कामयाबी मिलने से पहले आपको विचित्र तरीके से क्रोध आएगा। या फिर ऐसे व्यक्ति के बारे में आपके मन में घृणा पैदा होगी जो आप के सफलता का कारण हो, या फिर सफलता कि कोशिश में सम्मिलित होगा।

यह एक शैतानी चाल है जो आपकी समृद्धि को आपके ही क्रोध और दुर्व्यवहार द्वारा चुराकर दूर ले जाने का शैतान का एक तरीका है। यदि आप शैतानी गड्ढे में गिरना अथवा उसकी चाल में फंसना नहीं चाहते,

तो हमेशा धीरज और सब्र से रहने की आदत डालें। कभी भी अपना धैर्य न खोएँ, या कभी भी अपनी पत्नी, कर्मचारी, सप्लायर और ग्राहक पर भड़कें नहीं। हमेशा स्थिति का पूर्ण रुप से विश्लेषण करें, उसके पश्चात् ही कार्य करें। कभी भी क्रोध में आकर तुरंत निर्णय न लें। यदि आप को ऊपर दिए गए चार प्रकार के लोगों के लिए कोई निर्णय लेना चाहते है, तो कम से कम २४ घंटे तक प्रतिक्षा करें और उसके बाद ही अन्तिम निर्णय करें। मेरे निम्नलिखित अनुभव से आप उपर्युक्त स्थिति को समझ सकते हैं।

- एक बहुत बड़ी कम्पनी ने मुझे एक छोटे हायड्रोलिक सिलिंडर की सप्लाई के लिए बुलाया। मैं उनके कार्यालय में गया। क्रय-अधिकारी ने मुझे इंतजार करने के लिए कहा और वह अगले डेढ़ घंटे तक व्यस्त रहा। मुझे बहुत क्रोध आया और मैंने निश्चय किया कि भविष्य में इनके साथ कोई व्यापार नहीं करुंगा। मैं उनके ऑफिस से बाहर आया और उनकी फैक्ट्री के परिसर से बाहर कदम रखा ही था जब उनके ऑफिस के एक चपरासी ने मुझे पीछे से आवाज दी। मैं इतने क्रोध में था कि मैंने निश्चय किया कि उसकी आवाज़ को अनसुना करके दूर चला जाऊँ। किन्तु तभी मैंने एक पल के लिए अपने आप पर संयम रखा और वापिस आया।

  इस घटना के बाद उस कम्पनी से उस एक छोटे और मामूली आर्डर के साथ, कई सालों के लिए बड़े आर्डर भी मुझे मिलते रहे।

  मैं कभी-कभी एक ग्राहक से मिलने के लिए आठ घंटे की यात्रा भी करता हूँ, तो डेढ़ घंटे तक उनसे मिलने के लिए इंतजार करने में कोई हर्ज नहीं था। किन्तु मैंने अनुचित क्रोध को महसूस किया। यदि मैं क्रोध में बाहर चला जाता तो, मैं अपने भारी लाभ को खो देता।

- मेरा सब से बड़ा टेक्नीशियन काम बहुत ही अच्छा और क्रमानुसार तथा व्यवस्थित ढंग से करता है, लेकिन बहुत ही धीरे-धीरे। कई बार मैंने देखा कि जब काम का दबाव ज्यादा नहीं होता है, तो छोटे-मोटे काम और साफ-सफाई के बजाय वह आराम करना ज्यादा पसंद करता है। एक बार उसकी ढीली-ढीली मुद्रा से मुझे इतना क्रोध आया कि मैंने उसे नौकरी से निकालने का निश्चय कर लिया। लेकिन मैंने तुरंत निर्णय नहीं लिया और केवल उसे अनदेखा किया। उस घटना के कुछ दिन के बाद ही मुझे एक बहुत बड़ा ऑर्डर मिला जिसे मैं उस टेक्नीशियन के बिना पूरा नहीं कर सकता था।

  उस बड़े टेक्नीशियन की यह आरामदायक मुद्रा मेरे लिए कोई नई नहीं थी। मैं जानता हूँ कि मेरे कर्मचारी मेरे सामने क्या करते है और मेरे पीछे कितना काम करते हैं? किंतु एक बड़ा और लाभदायक ऑर्डर मिलने से पहले मुझे इतना क्रोध आना कि में उसे काम से निकालने की सोचने लगूं यह अनुचित और असाधारण क्रोध था जो मेरी सफलता में बाधा डालने का शैतान का एक छल था।

- मेरे व्यापारिक दौर की शुरुआत के ७ सालों में कई बार मैंने अनुभव किया कि जब कभी भी मुझे बड़ी रकम मिली थी और यद्यपी मैंने उसे गुप्त भी रखा है और कोई भी उसके बारे में नहीं जानता था, उसके बाद भी मेरे मित्रों और परिवार का व्यवहार मेरे प्रति बदल जाता था। मैं महसूस करता कि उनकी तरफ से मुझे बहुत ज्यादा परेशान किया जा रहा है।

- मैं क्रोध के कारण अपने ग्राहक के ऑफिस से बाहर आ सकता था। मैं क्रोध के कारण अपने वरिष्ठ

टेक्नीशियन को नौकरी से निकाल भी सकता था। मैं क्रोध में अपनी पत्नी और मित्रों से बहस भी कर सकता था। परंतु इन सब हालात में मन की शांति और लाभ कौन खोता था? मेरे सिवाय कोई भी नहीं। ईश्वर ने मुझे सब्र करने की बुद्धि दी, इसलिए मैं शैतान का शिकार नहीं हुआ और सुरक्षित रहा। अपने कार्य को देखें, शैतान के जाल में न फंसे। धीरज और सब्र रखने की आदत डालें, अन्यथा भाग्य आपके पास से होकर गुज़र जाएगा। शैतान बहुत धूर्त है। यदि आप अपने गुस्से को शैतान के नियंत्रण में रखेंगें, तो वह आपको कभी सफल होने नहीं देगा।

- ऐसा असाधारण क्रोध हमेशा बड़े लाभ से पहले आता है, इसलिए जब भी आप क्रोध की नकारात्मक भावना महसूस करते हों, तो धीरज रखिए, शांत मन से सोचिए और एक या दो दिन के पश्चात् ही अंतिम निर्णय लीजिए।

- अनुचित क्रोध को पूर्ण स्वच्छता द्वारा और ईश्वर की शरण लेकर नियंत्रित किया जा सकता है।

४. बुरी नज़र (Evil Eye)

- मनुष्य और जिन्न एक तरह की विषैली दृष्टि रखते हैं। जब कोई हमारी ओर प्रशंसा और ईर्ष्या भरी दृष्टि से देखता है, तो हमारे मन अथवा शरीर को बुरी नज़र लगती है। इसके कारण हम बीमार पड़ जाते हैं या अपनी सोचने की तर्क शक्ति खो देते हैं और बात-बात पर क्रोधित हो जाते हैं। कुछ समय पश्चात् विष का प्रभाव धीरे-धीरे सामान्य होने लगता है। इस समस्या से छुटकारा सब्र और प्रार्थना से मिलता है। धीरज रखने का अभ्यास करें।

  पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

- **सभी मनुष्य नुकसान में हैं, उनके अतिरिक्त जो,**
  ईश्वर में आस्था रखते हैं।
  सत्कर्म करते हैं।
  एक दूसरे को सत्य का मार्गदर्शन करते हैं।
  संयम रखते है। (पवित्र कुरआन १०३)
- इसलिए 'धीरज' उज्जवल भविष्य को बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंग है। इसे समझें और अपनी नकारात्मक भावनाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इसका अभ्यास करें।

  पवित्र कुरआन की सुरे कलम की आखरी दो आयत को बार-बार पढ़ने से भी बुरी नज़र का प्रभाव कम हो जाता है।

५. नफ्स (नकारात्मक प्रवृत्ति) (Nafs)

- नफ्स को सरल शब्दों में प्रवृत्ति या (Human Nature) या इन्सान की फितरत कह सकते है। यह तीन प्रकार की होती है।

१. नफ्से अम्मारा

२. नफ्से लावाम्मा

३. नफ्से मुतमाइन्ना

- जब नफ्स अम्माराह का प्रभाव व्यक्ति पर अधिक होता है तो वह आजाद रहना चाहता है और जीवन का भरपूर आनंद लेना चाहता है चाहे वह गलत तरीके से क्यों न हो।

- नफ्से लावाम्मा के प्रभाव में व्यक्ति हर कदम सोच समझ कर उठाता हैं और अपने कर्तव्य का पालन करने में अधिक रुची रखता है।

- नफ्से मुतमाइन्ना के प्रभाव में व्यक्ति में त्याग और बलिदान की अधिक भावना होती है। वह दूसरों के कल्याण के लिए अपना सुख और समृद्धि बलिदान करने से पीछे नहीं हटता है।

मनुष्य के इस प्रवृत्ति या इन्सान की फितरत को समझने के लिए में आप को घोड़े के उदाहरण से समझाता हूँ।

- जब घोडा बच्चा होता है तो वह आज़ाद रहना चाहता है। बस वह खाना पीना और आज़ाद घुमना चाहता है। वह किसी को अपने पर सवार होने नहीं देता है।

यह नफ्स अम्मारा का प्रभाव है।

- जब घोड़े के बच्चे को अच्छी ट्रेनींग दी जाती है और वह खुद भी बड़ा हो कर समझदार बनता है तो वह आप के सारे आदेश मानता है।

यह नफ्से लावाम्मा का प्रभाव है।

- जब आप अपने घोड़े से अधिक प्रेम करते है और उस के खाने पीने का अधिक ख्याल रखते है तो वह भी आप से प्रेम करता है और संकट के समय अपना जीवन भी आप पर कुर्बान करता है।

यह नफ्से मुतमाइन्ना का प्रभाव है।

- यह तीनों प्रवृत्तियाँ या फितरत इन्सान में हमेशा रहती हैं और उसकी जीवनशैली के अनुसार कम या अधिक होती रहती हैं।

- जब मनुष्य आराम की जीवन शैली व्यतित करता है तो वह माल और दौलत अपने ऐश व आराम में खूब खर्च करता है। तो उसकी नफ्स अम्माराह शक्तिशाली होने लगती है और इस के प्रभाव में वह जीवन का और अधिक आनंद लेना चाहता है चाहे वह गलत तरीके से क्यों न हो। और वह उसी दिशा में सोचता भी है।

अपने विचारों को पवित्र और सकारात्मक रखने के लिए ऐश व आराम की जिंदगी से बचना चाहिए।

६. आशीर्वाद (Blessing)

ईश्वर के आशीर्वाद से भी हमारे मन में विचार आते है। यह छठे प्रकार के विचार है। जब हम पूरे ध्यान से अपने सभी कर्तव्य पूर्ण करते हैं और पूर्ण एकाग्रता से ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, तो एक विशेष प्रकार की शाँत शक्ति का आभास हमें होता है इस शांत शक्ति को **सकीना** कहा जाता हैं।

जब सकीना अर्थात ईश्वरीय शक्ति हमारे शरीर में प्रवेश करती है, तो हम एक विशेष प्रकार का आनंद अनुभव करते हैं, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता हैं। सकीना में हम अपने मन और आत्मा में नीली और सफेद रोशनी की किरण महसूस करते हैं। एक आनंददायक शीतल, सिहरन, आनंदभरी खुशी की अनूभुति और हल्का सा नशा लानेवाली स्थिति प्राप्त होती है, इस परिस्थिति को स्पष्ट करने के लिए में एक उदाहरण देता हूँ। मान लो, आप मूत्र-त्याग करना चाहते हो, किन्तु अगले कई घंटो तक आप को कोई अवसर नहीं मिला। लंबे समय के पश्चात् जब आप मूत्र त्याग करते हो, तो आप गहरा संतोष और आराम महसूस करते हो, जो अनोखा है, किन्तु इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

यह सकीना का आनंद है, जिससे साधु-संत भूख, लंबे समय तक चलने वाली और थका देनेवाली प्रार्थनाएँ और कठोर जीवन का दर्द महसूस नहीं करते हैं।

- **सकीना** अवस्था को प्राप्त करने के लिए आप का अपने माता-पिता, परिवार, समाज और देश के प्रति भी अपना कर्तव्य का पालन करना होगा तथा दिल की गहराई और पूर्ण रुप से लीन होकर ईश्वर की प्रार्थना करनी होगी।

- कभी-कभी सामूहिक प्रार्थना में हम सकीना का एक छोटा-सा अंश महसूस करते हैं। यह एक शक्ति है, जो उस समूह में उपस्थित पवित्र व्यक्तियों के लिए आकाश से नीचे आती है लेकिन उनके साथ हम भी होते है इस कारण उसका असर हम पर भी पड़ता है और हम शांति और हल्का सा नशा जैसी शिथिलता महसूस करते हैं। मैं इसे शिथिलता अर्थात हल्का सा नशा कहता हूँ, क्योंकि इस दशा में हम दबाव (Mental Tension) से पूर्णतयाः मुक्त हो जाते हैं और एक थके हुए व्यक्ति की तरह हम सोना चाहते हैं।

- इस छठे प्रकार के आशीर्वाद वाले विचारों में प्रेरणा, मार्गदर्शन होता है, जो हमारा मन ईश्वर से प्राप्त करता है। ऐसे विचार हमेशा विधायक स्वरुप (Constructive in nature) के होते हैं।

७. परीक्षा (Examination)

- विचारों के सातवे, आठवे और नौवे प्रकार के विचारों के नकारात्मक प्रकार हैं। जो हमारे लिए या तो परीक्षा होते हैं या चेतावनी या अभिशाप। हम इच्छा-शक्ति के द्वारा इन्हें नज़रअंदाज भी नहीं कर सकते है। वह बार-बार हमारे मन में आते ही रहते हैं।

- परीक्षा वाले विचारों में हम जीवन खोने के खतरे, प्रियजन, समृद्धि और जायदाद आदि के खोने के भय को महसूस करते हैं। ईश्वर ऐसी कठिन स्थिति में यह देखना चाहता है कि हमारा उसकी ओर दृष्टिकोण कैसा है? कई बार लोग सुख समृद्धि की दशा में ईश्वर की बहुत प्रार्थना करते हैं और उसका आभार मानते हैं, किन्तु कठिन अथवा बुरे समय में ईश्वर की शिकायत करते हैं, तथा दूसरें स्रोतों की ओर मुड़कर

अपनी समस्याओं का समाधान ढूँढतें हैं। ऐसे व्यक्ति परीक्षा में फेल होते हैं। केवल वही सफल होते हैं, जो धीरज रखते हैं और ईश्वर को मदद के लिए हमेशा पुकारते हैं।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

'और हम ज़रूर तुम्हें ड़र, भूख, जान-माल की हानियों और आमदनियों के घाटे में ड़ालकर तुम्हारी आज़माइश करेंगे। इन हालात में जो लोग सब्र से काम लें, और जब कोई मुसीबत पड़े, तो कहें कि "हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की ओर हमें पलटकर जाना है", उन्हें स्वर्ग की ख़ुशख़बरी दे दो।' (पवित्र कुरआन २:१५५)

८. चेतावनी (Warning)

- आठवे प्रकार के नकारात्मक विचार प्रकृति की ओर से हमारे लिए गुप्त संकेत हैं, जो हमारी गलतियों के लिए हमें चेतावनी देते हैं और दुर्घटना, बर्बादी तथा पाप के बारे में चेतावनी देते है। लेकिन यह विचार गुप्त संकेत के रुप में हैं, इसलिए उनके गुप्त संदेशो को समझने के लिए हमें पूरी तरह ध्यान देना होगा तथा उनकी समीक्षा करनी होगी। उदाहरण के लिए सन २००१ में मेरे मन में अनजान नकारात्मक विचार बार-बार आते थे कि, मैं अपना व्यापार बंद करके विदेश में किसी दूसरी कम्पनी में नोकरी कर लूँ। मैं अपने नकारात्मक विचारों को समझ नहीं सका। कुछ महीनों के पश्चात् मेरे असंतुष्ट कर्मचारियों ने श्रमिक संगठन (Labour Union) की सदस्यता ले ली। मैंने उन सबको नौकरी से निकाल दिया तथा लगभग अपना व्यापार बंद कर दिया और बाद में दुबारा से शुरु किया।

अगर में अपने विचार को समझ सका होता, तो मैं उनका वेतन बढ़ा देता अथवा समझा सकता था और एक बड़ी दुर्घटना होने से बच सकती थी। लेकिन मैं अपने विचारों का विश्लेषण करने में असफल रहा और मुझे बहुत भारी नुकसान उठाना पड़ा।

कभी-कभी इन विचारों के प्रभाव स्वरुप हम उन कार्यों को करने की कल्पना करते हैं, जो नहीं होनी चाहिए अथवा वे कार्य अथवा वस्तुएँ जिन्हें हम विनाश होने के बाद कर रहे होंगे। उदाहरण के लिए, मैं अपने एक ग्राहक से मिलने के लिए अपने ऑफिस से शांत मन और उत्साह के साथ लोकल ट्रेन द्वारा चला। ट्रेन में मेरे सोचने का तरीका बदल गया, मैंने कल्पना की कि मैं अठराहवी शताब्दी में हूँ और मैं एक व्यापार हेतु जहाज़ द्वारा यात्रा कर रहा हूँ, तथा मेरा जहाज़ डूब गया। किसी तरह मैं बच गया और शत्रु देश के समुद्री किनारे पहुँच गया। कोई मुझे न पहचाने इसलिए मैंने एक भिखारी होने का नाटक किया तथा किसी प्रकार मैं अपने देश पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे आश्चर्य हुआ कि मैं इस तरह क्यों सोच रहा हूँ, गहरी समीक्षा के बाद मैंने जाना कि भारी भीड़ के कारण मैं लंबे समय से खड़ा हूँ। शुरु में, मैंने अपना ब्रीफकेस अपनी टाँगों के बीच में ज़मीन पर रखा था। जब मैं थक गया, मैं उस पर बैठ गया। और इस ब्रीफकेस में रुपए और महत्वपूर्ण दस्तावेज के साथ धार्मिक पुस्तकें भी है।

धार्मिक पुस्तक और धन का अपमान करनेवालों को समृद्धि से हाथ धोना पडता हैं। चूंकि अनजाने में मैंने उनका अपमान कर रहा था, इसलिए बदकिस्मती का पहला कदम यानि मेरे मन में नकारात्मक विचारों का धीरे-धीरे प्रवेश शुरु हो रहा था। मैं तुरंत ब्रीफकेस के उपर से उठा, ईश्वर से इस गलती पर गहरा

पश्चाताप व्यक्त किया और वे नकारात्मक विचार तुरंत मेरे मन से नष्ट हो गए।

जब हम अनिच्छापूर्वक नकारात्मक सोचना शुरु करते हैं, तो हमें अपनी दशा का विश्लेषण करना चाहिए, विचारों के संकेत को समझना चाहिए, अपने कर्म को सही करें, अपने कर्तव्य पूरे करें तब ये विचार अपने आप नष्ट हो जाएंगे।

९. ईश्वर का प्रकोप (Curse)

- ईश्वर का अभिशाप यह नकारात्मक विचार का नौंवा प्रकार है। परीक्षा अथवा चेतावनी प्रकार के विचारों में हमारे मन में नकारात्मक विचार आते हैं। लेकिन उस समय हमारे मन और शरीर पर पूरा नियंत्रण हमारे कन्ट्रोल में होता हैं, और हम बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य करते हैं और तर्क सहित सोचते हैं। किन्तु जब अभिशाप जैसे विचारों का हमारे मन में प्रवेश होता हैं, तब हम अपनी तार्किक सोच खो देते हैं तथा हमारे अपने गलत निर्णय द्वारा ही हमारा विनाश शुरु होता है।

हिंदु धार्मिक पुस्तक कहती है, *'विनाशकाले विपरीत बुद्धि'* इसका अर्थ है, विनाश से पहले सोच भ्रष्ट हो जाती है। यह ईश्वर के प्रकोप वाले नकारात्मक दशा ही है, जिसके दबाव में मन नियंत्रण में नहीं रहता और व्यक्ति गलत फैसले लेता है। ऐसे नकारात्मक विचारों से बचने का केवल एक ही रास्ता है, और वह है की हम ईश्वर के प्रकोप को निमंत्रण न दें।

१०. शैतान का आसानी से शिकार बन जाना (Being easy prey for Devil)

जब हम अपने देखने, बोलने और सुनने के बारे में लापरवाह रहते हैं (अर्थात पाप और पुण्य के बारे में गंभीरता से नहीं सोचते) अथवा जब हम नकारात्मक व्यक्तियों की संगत में रहते हैं और भोगविलास का जीवन अपनाकर पापी बन जाते हैं, तो हम शैतान के लिए आसान शिकार हो जाते हैं। उसके प्रभाव में हम अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं। मृत्यु का भय, किसी प्रिय के खोने का भय, गरीबी और अन्य सभी तरह की नकारात्मक भावनाएँ हमारे मन में जड़ पकड़ लेती हैं। शैतान का यह प्रभाव मनुष्य मात्र के लिए दुर्भाग्यपूर्ण और कठिन है। सुख शाँति और समृद्धि का विनाश जो हमारे अपने ही कर्मों के साथ आरंभ होता है वह शैतान के कारण और बढ़ता जाता है। शैतान ने ईश्वर को निम्नलिखित शब्दों में चेतावनी दी थी।

'में उन सभी को नेक रास्ते से बहकाऊंगा सिवाय उनके, जो ईमानदारी से ईश्वर पर अपनी आस्था रखते हैं।' (पवित्र कुरआन ३८:८३)

इसलिए जो लोग संपूर्ण रुप से ईश्वर पर श्रद्धा रखते हैं और उसके दिए हुए आदेशों का पालन करने के लिए संघर्ष करते हैं, वे सभी प्रकार के ड़र और नकारात्मक विचारों से मुक्त रहेंगे और शैतान के अतिरिक्त नकारात्मक प्रभाव से भी मुक्त होंगे।

नकारात्मक विचारों से बचने का धार्मिक मार्ग

(**Religious way of managing Negative thoughts**)

चिंता और नकारात्मक विचारों से मुकाबला करने के लिए, हमे ईश्वर में विश्वास रखना चाहिए तथा क्रमबद्ध (Systematic) पद्धति से काम करना चाहिए।

- पवित्र कुरआन में कहा गया है,

१.जो व्यक्ति ईश्वर के प्रकोप से ड़रकर कर्म करेगा, ईश्वर उनके लिए कठिन समस्या से बाहर निकालने का विकल्प निकालेगा।

२. ईश्वर पर विश्वास रखनेवालों पर वह ऐसी जगहों से मदद भेजता है, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है।

३. ईश्वर अपने भक्तों की सभी आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं।

४. ईश्वर जो कुछ भी निश्चित करता है, वह उसे पूरा करता है।

५. ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य निश्चित किया है। सब कुछ उसी के अनुसार घटित होता है।

(पवित्र कुरआन सूरे ६५ आयत २-३)

यदि आपने वास्तव में इन पाँच आध्यात्मिक कथनों को समझ लेते हो और इनपर विश्वास करते हो, तो आप जीवन में कभी भी नकारात्मक नहीं सोचोगे। इसे और अच्छी तरह से स्पष्ट करने के लिए मैं निम्नलिखित उदाहरण दे रहा हूँ।

व्याख्या नं १.

आपके आसपास में हजारों पक्षी हैं। आप उनकी कभी भी देखभाल नहीं करते। परन्तु यदि उनमें से किसी एक को आप पिंजरे में कैद कर लें, तो निश्चितरुप से आप रात-दिन उन्हें नियमित रुप से खाना खिलाएंगे और अच्छी तरह से उसकी देखभाल करेंगे।

इसी प्रकार जब आप ईश्वर के आदेशों का पालन नहीं करते, तो ईश्वर भी आपकी परवाह नहीं करता और न ही आपके सामाजिक-स्तर, आपके मधुर सपने और भविष्य के बारे में परवाह करता। लेकिन जब आप उसके आदेशों और निर्देशों के अनुसार अपना जीवन बिताते है अर्थात अपने आप को ईश्वर के निर्देशों में कैद कर लेते है। तो वह भी आपकी ओर विशेष ध्यान देता है। वह प्रत्येक दुःख से आपकी रक्षा करता है। वह आपका पालन-पोषण अकल्पनीय साधनों से करता है। वह आपकी सारी आवश्यकताएँ पूरी करता है। जो भी आपके लिए आरामदायक है, अगर ईश्वर आपके लिए वह निश्चित करता हैं, तो किसी भी तरीके से वह आपके पास जरुर पहुँचाता हैं। तथा आपके स्वभाव के अनुसार, ईश्वर आपका भाग्य निश्चित करता है।

व्याख्या नं २.

इसे और अच्छे तरीके से समझाने के लिए मैं इनकी संक्षिप्त व्याख्या करता हूँ।:-

- *जो व्यक्ति ईश्वर के प्रकोप से ड़रकर कर्म करेगा, ईश्वर उनके लिए कठिन समस्या से बाहर निकालने का विकल्प निकालेगा।*

अपने कर्तव्य का पालन अच्छी तरह से करें, और बाकी सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दें। कठिन समय में, जो कुछ भी सत्कर्म आप कर सकते हो, इसे करते रहो। ईश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना करें। ईश्वर कभी भी आप को निराश नहीं करेगा। वह या तो आप की मुश्किलें दूर कर देगा और यदि कोई बहुत ही अधिक बुरी स्थिति आ जाती है, तो वह इस की भरपाई पहले से भी अधिक अच्छे विकल्प से करेगा। ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम ईमानवालों की सहायता करें। (अर्थात ईश्वर को मानने वालों की ईश्वर अवश्य मदद करता है।) (पवित्र कुरआन ३०:४७)

- *ईश्वर पर विश्वास रखनेवालों पर वह ऐसी जगहों से मदद भेजता है, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है।*

आप अपनी इच्छानुसार योजना बनाओं और उसे पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ो। यदि आप ईमानदार, मेहनती और इस पुस्तक में वर्णन किए गए सफलता के सूत्रों का पालन करते हो, तो आपको धन की कमी कभी भी नहीं होगी। ईश्वर आपका पालण-पोषण ऐसे स्रोत से करेगा, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

- *ईश्वर अपने भक्तों की सभी आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं।*

ईश्वर आपकी सभी आवश्यकताए पूरी करेगा उदाहरण परिवार, घर, गाड़ी, स्वास्थ और धन इत्यादि। यदि आप उस पर पूरा विश्वास रखते हो तो ईश्वर आपकी सभी आवश्यकताएँ पूरी करेगा।

- *ईश्वर जो कुछ भी निश्चित करता है, वह उसे पूरा करता है।*

बहुत सारी बाते ऐसी हैं, जो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर हैं। उदाहरण के लिए, आपके दुश्मन ने आप की सफलता को रोकने के लिए कुछ काला जादू किया, लेकिन यदि आप ईश्वर पर विश्वास रखते हो और सकारात्मक प्रवृत्ति से अपने कार्य को करते रहते हो, सफलता के नियमों के अनुसार मार्गचयन करते हों, तो आपको संपन्न और समृद्ध होने से कोई नहीं रोक सकता है। आपको नुकसान पहुँचाने वाले शत्रु से ज्यादा अधिक शक्तिशाली ईश्वर हैं। इसलिए आपकी प्रार्थना और प्रयास के अनुसार यदि ईश्वर आपको संपन्नता और समृद्धि देना चाहता है, तो आपको संपन्न और समृद्ध होने से कोई शत्रु रोक नहीं सकता।

- *ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य निश्चित किया है। सब कुछ उसी के अनुसार घटित होता है।*

घटनाएँ उसी के अनुसार होंगी। व्यक्ति को इसे सहना करना सीखना होगा। उदाहरण के लिए मृत्यु, बीमारियाँ, दुर्घटनाएँ आदि मनुष्य के नियंत्रण से बाहर हैं। भाग्य को स्वीकार करो। इसे कोई नहीं बदल सकता है। (पवित्र कुरआन सूरे ६५ आयत २-३)

डर से कैसे लड़े? (How to fight fear?)

यदि धार्मिक उपदेशों में आप की आस्था नहीं है, तब जीवन खोने का अत्याधिक डर, जीवन-स्तर, धन आदि के खोने के डर को नियंत्रण में करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाइए।

- ऐसी कल्पना कीजिए की आपका डर सच साबित हो गया और इसे मानसिक रुप से स्वीकार करने के लिए तैयार रहो। यह आप को मन के उस तनाव (Tension) से मुक्त करेगा, जो आपके डर अथवा तनाव का कारण है।
- अपने मन को एकाग्र कीजिए और अपनी समस्या को सुलझाने वाले भिन्न विकल्पों की सूची बनाईए। जिसके कारण वह अति बुरी चीज़ या घटना जो होने जा रही है उससे बचा जा सकता है।
- विभिन्न विकल्पों की समीक्षा करें और उनमें से एक सबसे जो अच्छा है उसे चुनें।
- तुरंत उस सबसे अच्छे विकल्प को लागू करें। दूसरे सब छोड़ दे और पीछे मुड़कर न देखें। किसी भी दशा में दूसरे विकल्पों को स्वीकार न करें, जब तक आप का चुना हुआ विकल्प पूरी तरह से गलत सिद्ध न हो जाए।

और अधिक जानकारी के लिए डेल कार्नेग की "How to stop worrying and start living" पढ़ें।

नकारात्मक प्रवृत्ति से बचने के कुछ और सूत्र

(Few more tips to avoid negative feeling)

- जैसी मन में भावना होगी उसी प्रकार आप का व्यवहार (Behavior) होगा। इस कथन का विपरीत भी सत्य है। वह यह कि जैसे व्यक्ति का कार्य होगा उसी तरह की भावना उस के मन में उत्पन्न होगी। अर्थात जिस प्रकार का व्यवहार आप अपनाते हो अथवा करते हो, उसी तरह की भावना आपके मन में विकसित होगी। इसलिए एक बहादुर, आशावादी, सफल, समृद्ध व्यक्ति की तरह व्यवहार करो ताकि उसी तरह के विचार अपने आप आपके मन में विकसित हो जाए। हमेशा साफ-सुथरे रहो, अच्छी तरह से कपड़े पहनो, सुगंधित द्रव्यों से सुवासित रहो, और मिलनसार स्वभाव रखते हुए कार्य करते रहें। इससे मन में सकारात्मक विचार बनें रहेंगे।
- बीते हुए कल के बारे में मत पछताओ। आने वाले कल के सुनहरे सपने देखने में समय बर्बाद न करों। केवल वर्तमान पर पूरा ध्यान केंद्रित करो। यदि आप आज का कार्य सबसे अच्छे और हर संभव और कुशल तरीके से करते हो, तो आपका कल भी अच्छा होना ही चाहिए। जो हम आज करते हैं, उस का परिणाम अगले दिन प्राप्त होता है। इसलिए केवल वर्तमान में अपने कर्तव्य या कार्य को सबसे अच्छे और हर संभव तरीके से कुशल और ध्यानपूर्वक करें।
- जो कुछ भी हम अपने मन में बार-बार दोहराते हैं, हमारा मन इसे वास्तविक रुप में स्वीकार करता है। इसलिए अपने मन में बार-बार निम्नलिखित संदेश दोहराया करोः

'दिन प्रति दिन मैं ईश्वर की कृपा से, हर प्रकार से सफलता की तरफ बढ़ रहा हूँ।'

इस वाक्य को कागज़ के एक छोटे-टुकड़े पर लिख लो और इसे ऐसी जगह लगा दो, जहाँ आप इसे हर रोज देख और पढ़ सकते हो। इसे प्रतिदिन पढ़ें और अपने मन को यह विश्वास दिलाओ कि आप समृद्ध हो रहे हो इससे आपके मन में केवल समृद्धि के सकारात्मक विचार ही रहेंगे।

- नियमित रुप से व्यायाम करें। इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। स्वस्थ शरीर का मन भी स्वस्थ रहता है। बीमार शरीर का मन भी बीमार रहता है। बीमार मन स्वस्थ मन की तुलना में नकारात्मक विचारों की ओर अधिक आकर्षित होता है।

  व्यायाम से तनाव तथा चिंताओं के रसायनिक प्रभाव को भी बेअसर करने में मदद मिलती हैं तथा मानसिक बीमारी के खतरे को भी कम कर देता है।

- हमेशा वैद्यकीय परामर्श लेते रहें। कुछ विशेष प्रकार के विटामिन्स की कमी से मानसिक बीमारी हो सकती है। इस प्रकार की बीमारियों में व्यक्ति तेजी से नकारात्मक विचारों के तरफ आकर्षित होता है। हर सुबह खाली पेट चार गिलास पानी पीयें और उसके कम से कम पौन घंटे बाद नाश्ता करें। तीन चम्मच शुद्ध शहद, एक सेब और एक केला प्रति दिन खाएँ। यह स्वस्थ मन के लिए जरुरी हैं। पूर्ण रुप से स्वच्छ रहें। पूर्ण रुप का अर्थ है, पूर्ण रुप से। किसी भी जगह अथवा किसी भी तरह का समझौता नहीं।

- आपका शरीर, आपका भोजन, आपकी आमदनी, आपके रहने और काम करने का स्थान सभी पूर्ण रुप से साफ होने चाहिए। कमरों में हवा का आवागमन और रोशनी अच्छी होनी चाहिए। गन्दा स्थान, गन्दा व्यक्ति और अँधेरा, शैतान के लिए स्वर्ग-समान है। इनसे बचो।

- आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ रहने के लिए अपनी बगलों के बाल साफ करें तथा नाभ (Navel) के नीचे के बाल को हर पंद्रह दिन बाद साफ करें।

- टॉयलेट में अपने शरीर से मल-मूत्र अच्छी तरह से धोएं, आपके अंडरगार्मेंट में पेशाब की एक बूंद भी नहीं लगनी चाहिए।

- प्रतिदिन कुछ रुपए किसी जरुरतमंद व्यक्ति को दान दें।

- अपने घर में या आफिस अथवा कहीं भी जहाँ आप लंबे समय रहते हो, कोई भी स्थान अंधेरा, खाली और बंद न रखें। बंद, खाली और अंधेरा स्थान तुम्हारे पलंग, सोफा कम डबल-बेड़, खाली स्टोर या फॉल्स सीलिंग (False Celing) में हो सकता है। या तो इसे पूरी तरह से भर दें या फिर उनको दोनों तरफ से खोल दें। क्योंकि बंद, खाली और अंधेरे से भरा स्थान परेशानी, भय और समस्या पैदा करते है।

- अपने वर्तमान काम पर या अपनी नौकरी पर पूरी तरह ध्यान दें। यदि आप निवृत्त (Fetire) हो और आप के पास करने के लिए कोई विशेष काम नहीं है, तो अच्छी पुस्तक पढ़ें। अपने अच्छे अनुभवों को लिखें। अपने अनुभव और विशेषताएँ जरुरत पड़ने पर किसी व्यक्ति को सिखाएँ। समाज सेवा के कार्य करें, अर्थात सबसे मिलो-जुलो। अच्छे कार्य करना शुरु करें। लोगों को उसमें शामिल होने के लिए

निमंत्रण दें और अपने कार्य में सहयोग करने के लिए कहें।

- इतिहास पढ़े, महान व्यक्तियों की आत्मकथाएँ आप को प्रेरित करेंगी और कठिन समय में आप को नैतिक बल और शक्ति देंगी। ये आपके भीतर उच्चतर, महानतर और असंभव कार्यों को करने की ज्वलंत इच्छा पैदा करेंगी। इतिहास पढ़ने से आपके मन में भ्रमित करने वाली कल्पनाएँ और शांति प्रिय दुनिया की उम्मीदें खत्म हो जाएगी।

- एक बार पैगंबर मूसा (अ.स.) आश्चर्यचकित हुए और ईश्वर से पूछा,

  'हे ईश्वर! इस दीवार पर चलने वाली छिपकली को आपने क्यों बनाया?'

  ईश्वर ने उत्तर दिया "आपने यह सवाल केवल एक बार पूछा है, किन्तु इस दीवार पर बैठी छिपकली ने मुझसे यही सवाल तीन बार पूछा है कि, 'मैंने इस मनुष्य की रचना क्योंकी?"

  जब आप इतिहास पढ़ेंगे, तो आपको भी आश्चर्य होगा कि ईश्वर ने इस तुच्छ जीव की रचना क्यों की है? इतिहास नर-संहार, जाति का समूल नाश, दंगे, हमले, युद्ध, धोखाधड़ी, अन्याय और शोषण इत्यादि से भरा-पड़ा है।

  आज हमारे पास जो सुखदायी और सुरक्षित जीवन है, मानव इतिहास गवाह है, इससे पहले यह कभी संभव नहीं था। जीवन की भौतिक सुख-सुविधाएँ तथा यह शान-शौकत, जो आज हमें प्राप्त हैं, प्राचीन समय में वे राजाओं को भी उपलब्ध नहीं थीं। इतिहास का अध्ययन करने से आपके जीवन में जो सुरक्षा और सुख के कमी की जो निराशा है वह कम होगी।

  इसी तरह इतिहास का अध्ययन करने से दुनिया के राजनीतिज्ञ तथा शासकों के प्रति उम्मीदें भी कम होगी। क्योंकि इतिहास का अध्ययन करते समय आपको मालूम होगा कि यह चालबाज प्राणी समय के साथ बदलते नहीं हैं। यह मासूमों और आम जनता का नर-संहार, जाति का समूल नाश, दंगे, हमले, युद्ध, धोखाधड़ी, अन्याय और शोषण इत्यादि जो पहले से करते आए हैं, वह आज भी वहीं करेंगे और कल भी करते रहेंगे और आम आदमी के जीवन में तबाही मचाते ही रहेंगे, जैसा यह पहले से मचाते आऐ हैं।

आध्यात्मिक उपचारः (Spiritual Healing)

यदि आपके ड़र और नकारात्मक विचारों में उपर बताए गए कार्य से कुछ भी कमी नहीं आती, तो निम्नलिखित अध्यात्मिक उपचार करने की कोशिश करें।

- वजू करें, जैसा कि 'स्वच्छता' के अध्याय में वर्णन किया है।
- दाहिनी हथेली अपने ह्रदय पर रखें।
- **पद नं १**, एक बार ऊँची आवाज से बोलें, वह पद इस तरह है;
- **अऊज बिल्लाहि मिनश्शैता नीर्रजीम** (मैं धुतकारे हुए शैतान से ईश्वर कि पनाह मांगता हूँ।)

- **पद नं. २ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम** (प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है, जो सारे संसार का रब है।) एक बार बोलें।

- **पद नं. ६ सल्लल्लाहू अला मुहम्मद सल्लल्लाहु व अलैहि वसल्लम** (ईश्वर आशीर्वाद दे मुहम्मद (स.) पर। उनके परिवार को आशीर्वाद दे तथा शांति प्रदान करे।) एक बार बोलें।

- **पद नं. ७ अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मयिन्नल कुलूब** (जान लो, ईश्वर की याद से संतुष्टि और शांति मिलती है।) कम से कम १०० बार से ज्यादा बोलें।

- **अंत में पद नं.६ सल्लल्लाहू अला मुहम्मद सल्लल्लाहु व अलैहि वसल्लम** (ईश्वर आशीर्वाद दे मुहम्मद (स.) पर। उनके परिवार को आशीर्वाद दे तथा शांति प्रदान करे।) फिर बोलें (एक बार)। अपने हाथ पर फूंक मारे और अपनी छाती, चेहरे और सिर पर फेरें।

यदि आप इसे नियमित रुप से करते रहे, तो थोड़े दिनों पश्चात् आप अपने मन में शांति महसूस करोगे।

ये पद जादू अथवा चमत्कार की तरह काम करते हैं। इन पदों में हम सामान्य ढंग से ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, इसलिए सभी धर्मों के लोग इसे बिना किसी नियमों का उल्लंघन अथवा अपने विश्वास को ठेस पहुँचाए, पढ़ सकते हैं।

धार्मिक व्यक्ति होने के लाभः (Advantages of being a religious person)

मान लो, आप अपने बच्चे के साथ ट्रेन में सफर कर रहे हो और ट्रेन अपनी पूरी गति से आगे जा रही है तथा आपका बच्चा चांदी के सिक्के और पिग्गी बैंक (पैसे जमा करने का गल्ला) के साथ खेल रहा है।

बच्चा सिक्का उछालता है और गलती से सिक्का तेजी से चलती ट्रेन की खिड़की से बाहर चला जाता है। हो सकता है बच्चा रोने लगे और आप घबरा जाओ, क्योंकि आप दोनों को विश्वास है कि वह चांदी का सिक्का तो हमेशा के लिए चला गया है। क्योंकि सामान्य व्यक्ति के लिए यह असंभव है कि चलती ट्रेन से बाहर फेंका गया एक छोटा सा सिक्का ढूंढें।

लेकिन मान लो वही सिक्का गलती से पिग्गी बैंक के अंदर गिर जाता है, (तो वह उसके अंदर जमा हो जाता है।) इस अवस्था में भी बच्चा वह चांदी का सिक्का खो देता है। क्योंकि पिग्गी-बैंक को तोड़े या काटे बिना वह सिक्का आप नहीं निकाल सकते हो फिर भी न तो आप और न आपका बच्चा किसी भी प्रकार की घबराहट अथवा जरा सी भी खोने की भावना मन में महसूस नहीं करेगा। क्योंकि आप दोनों विश्वस्त हो कि वह खोया नहीं है। आज या कल वह तुम्हें वापिस मिल जाएगा। यही अंतर है, ईश्वर से ड़रने वाले व्यक्ति और उदार अधार्मिक व्यक्ति के बीच में। ईश्वर से ड़रने वाले व्यक्ति को विश्वास है कि यदि किसी की मृत्यु होती है, अथवा कोई वस्तु खो गई है अथवा कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना होती है, तो भी यह हमेशा की हानि नहीं है। मृत व्यक्ति ईश्वर के साथ दूसरी दुनिया में है, कल हम भी मरेंगे और उससे फिर मिलेंगे (दूसरी दुनिया में)। इसके विपरीत उदार व्यक्ति सोचता है कि मृत व्यक्ति हमेशा के लिए खो गया है और वह फिर कभी उससे नहीं मिलेगा।

ईश्वर से ड़रने वाला धार्मिक व्यक्ति जानता है कि हानि और लाभ ईश्वर की ओर से है। यदि आज उसे नुकसान हुआ है, तो कल ईश्वर इसकी भरपाई अधिक अच्छे साधन से करेगा। जबकि उदार व्यक्ति

सोचता है कि यदि कोई वस्तु खोई है, तो उसे स्वयं फिर कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और इसे फिर कमाना होगा। तथा हो सकता है कि दुबारा उसके लिए फिर कठिन परिश्रम करना संभव नहीं होगा उसी वस्तु को कमाने के लिए अथवा प्राप्त करने के लिए।

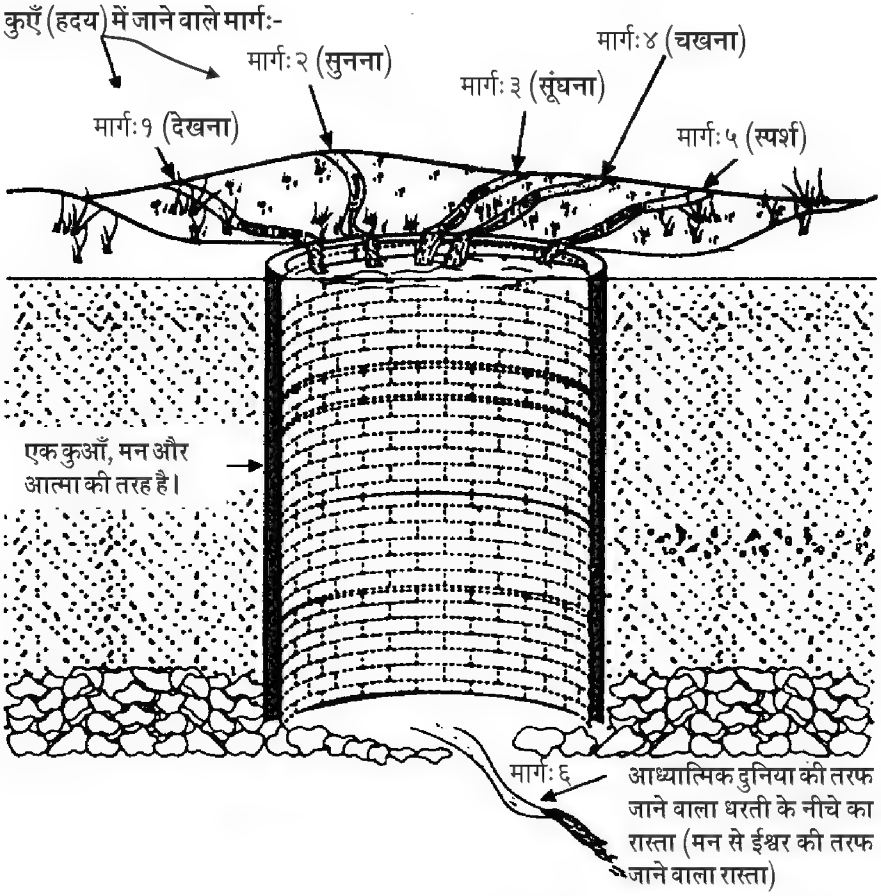
इसलिए उदारमतवादी और जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता है वह हर प्रकार कि बीमारियां, मृत्यु और दूर्घटना से बहुत ड़रता हैं। उसके विपरीत ईश्वर से ड़रनेवाला व्यक्ति आखरी सांस तक शांत रहता है।

इसलिए ईश्वर को अपने पालनहार के रुप में पहचानों जिसने एक जोडी से आपका निर्माण किया। ईश्वर पर विश्वास रखों और अगर ड़र से मुक्त सकारात्मक जीवन चाहिए तो ईश्वर पर दृढ़ आस्था रखों।

****

अध्याय - १५

प्राचीन दर्शनशास्त्र
(Ancient Philosophy)



- मनुष्य का मन और आत्मा एक कुएँ की तरह हैं। पाँच इंद्रियाँ, पाँच नालियों की तरह हैं, जो कुएँ की ओर बहती हैं। जब हम अपने इंद्रियों का प्रयोग उचित रुप से नहीं करते अर्थात उचित देखने, सुनने, खाने की ओर ध्यान नहीं देते, तब साफ पानी के बजाए गंदा पानी नालियों के माध्यम से कुएं में आता है और कुएँ के पानी को प्रदुषित करता है। अर्थात हमारा मन और आत्मा प्रदुषित हो जाती है। और आध्यात्मिक दुनिया की तरफ जाने वाला एक अंडरग्राउंड छठा रास्ता बंद हो जाता है।

- इस छठे रास्ते का बंद मार्ग खोलने के लिए, हमें पहले गंदे पानी के बहाव को कुएँ में आने से रोकना होगा, इसके बाद कीचड़ और गंदगी को कुएँ से बाहर निकालना होगा, उसके बाद ही छठे रास्ते से साफ पानी का बहाव कुएँ के अंदर आना शुरु होगा। यदि हम इसे सही रुप से साफ करें तो तब छठे रास्ते से साफ पानी इतनी भारी मात्रा में कुएँ के अंदर आ सकता है कि उमड़ कर पानी कुएँ से बाहर बहने लगे। ऐसी परिस्थिति में पाँचों रास्तों से गंदा पानी कभी भी अंदर नहीं आएगा।

- अध्यात्मिक दुनिया से संपर्क करने के लिए, सबसे पहले हमें अपनी पाँच इंद्रियों का गलत प्रयोग रोकना होगा, तथा ईश्वर ने जिस प्रकार से उनका प्रयोग करने के लिए हमें कहा है ठीक उसी प्रकार उनका प्रयोग करना होगा।

  स्त्रियों की ओर घूरना और बुरी नज़र से उन्हें देखना पाप है। अश्लील शब्दों को न सुनें, दूसरों के अपराध और कमियों को न सुनें। अश्लील भाषा न बोलें न सुनें, गाली न दें, झूठ न बोलें। दूसरों की गलतियों के बारे में न बोलें, न ही दूसरों के राज़ और कमियां इत्यादी के बारे में बात करें। जो वस्तुएँ ईश्वर द्वारा वर्जित हैं, वे न खाएँ, न पीएँ। जैसे धोखाधड़ी से कमाया हुआ पैसा और सूद की कमाई, शराब, सुअर का मांस, तथा बिना हलाल किया मांस न खाएँ। अपने जीवनसाथी के अतिरिक्त किसी दूसरे से शारीरिक संबध रखना और काम-क्रिया का आनंद लेना गलत है ऐसा न करें। यदि आप इन चीज़ों से बचते हो, तो आपके आत्मारुपी कुएं में गंदा पानी आना बंद हो जाएगा।

  छठा चैनल स्वर्ग की दुनिया से संपर्क करने वाला एक मार्ग है।

  ईश्वर ने कहा है, **"हमने उन्हें ज्ञान दिया।"** (पवित्र कुरआन, सूरह कहफ, १८:६५)

  यह वही रास्ता हैं, जिसके द्वारा ज्ञान संत और पैगंम्बरों के पास आता है। मानवजाति की सेवा करने की प्रेरणा आम आदमी को इसी रास्ते से मिलती है, और अपने भाईयों के लिए अच्छा कार्य करने की प्रेरणा भी इसी रास्ते से मिलती है।

  जीवन में सफल होने के लिए और अच्छे कार्यों में खर्च करने के लिए बहुत सारी संपत्ति प्राप्त करने के तरीके ढूंढ़ने के लिए व्यवसायिको और उद्योगपतियों ने कल्पना और योजनाओं की खोज इसी रास्ते से करनी चाहिए। (यह लेखक का व्यक्तिगत कहना है।)

- मन खाली करने के लिए हमें ईश्वर के बताए तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। अपनी आँखे बंद करके पाचों इंद्रियों का इस्तेमाल करना बंद करें, और एक ईश्वर को याद करें और ईश्वर की प्रार्थना पर अपना ध्यान केंद्रित करें। इसी को ध्यान (चिंतन) कहते हैं।

- देखने के लिए आँखें, सुनने के लिए कान और स्वाद लेने के लिए जीभ का निर्माण हुआ है। आप खाने का आनंद कान के द्वारा नहीं ले सकते हो अथवा संगीत सुनने के लिए जीभ का इस्तेमाल नहीं कर सकते। जब आप सुनने के लिए कान, देखने के लिए आँख और स्वादिष्ट खाने का मज़ा चखने के लिए जीभ का इस्तेमाल करेंगे तभी आपको उससे आनंद मिलेगा।

- ईश्वर ने मनुष्य और जिन्न की रचना उसकी भक्ति के लिए की है। (पवित्र कुरआन ५१ पद ५६) मनुष्य की आत्मा ईश्वर के भक्ति के लिए पैदा की गई है इसलिए जब मनुष्य ईश्वर की प्रार्थना करेगा, तभी उसे

जीवन में सुख प्राप्त होगा और उसकी आत्मा भी शांत और प्रसन्न रहेगी। जैसे कान से भोजन का आनंद नहीं ले सकते, उसी प्रकार आत्मा को दुनिया के मौज मज़े से कभी शांती नहीं मिलेगी।

- हम गाड़ी का उपयोग दूर के स्थान पर पहुँचने के लिए करते हैं। हम कठिन कामों को करने के लिए यंत्रों का प्रयोग करते हैं। आत्मा को भी लंबा सफर तय करना है। शरीर इसकी गाडी और शरीर ही इसके यंत्र भी है। आत्मा को इस यंत्र के द्वारा इस संसार में 'अपना उद्देश्य क्या है?' इसका पता करना है। और जिस तरह कार्य पूरा होने के बाद और मंजील पर पहुँचने के बाद मनुष्य को यंत्र और गाड़ी की ज़रुरत नहीं होती, उसी तरह जब आत्मा अपने अच्छे कर्मों से और जीवनकाल में अपनी प्रार्थना से ईश्वर को प्रसन्न कर लेता है और अपना कार्य पूर्ण कर लेती है। तो उसे शरीररुपी यंत्र और गाड़ी की ज़रुरत नहीं होती। और वह इसे त्याग देती है। मनुष्य मरने के पश्चात् ईश्वर के पास स्वर्ग में शांति से रहता है।

- ईश्वर ने इस विश्व को देवदूतों के नियंत्रण में दिया है। ईश्वर की आज्ञा से जब ज़रुरत हो तब वह बरसात करते हैं। वे माँ के गर्भाशय में पले भ्रूण में आत्मा रखते हैं, वे बीजों को उपजाते हैं और इसे पौधे के रुप में परिवर्तित करते हैं।

- इसी प्रकार ईश्वर ने इस शरीर को आत्मा के नियंत्रण में दिया है। खाने से पहले यह वर्षा शुरु करता है। (लार निर्माण की प्रक्रिया)। काम-क्रिया से पहले यह हवा शुरु करता है, जिस से संभोग इंद्रिय उत्तेजित होती है। उंगलियाँ और हाथ,पैर आत्मा के आदेश पर कार्य करते हैं।

- आत्मा के पास अपने शरीर को नियंत्रित करने की शक्ति है, इसी के साथ वह अपने चारों ओर के वातावरण को भी प्रभावित करती है, उदाहरणतः जब एक संत एक बीमार व्यक्ति को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है, तब ईश्वर की कृपा से वह बीमार व्यक्ति ठीक हो सकता है।

- उपर्युक्त दार्शनिकता को एक हजारों साल पुरानी पुस्तक से लिया गया है। जिसका नाम 'किमीया-ए-सआदत' है और उसके लेखक ईमाम गज़ाली हैं।

ईमाम गजाली की दार्शनिकता दर्शाती है कि:-

- ईश्वर ही सर्वोच्च शक्ति है।
- इस विश्व को शासित करने के लिए देवदूतों की एक यंत्रणा है।
- यह आत्मा ऐसी है कि जिसका हमारे शरीर पर नियंत्रण तो है बल्कि उसका दूसरों पर भी प्रभाव है।
- आत्मा और आध्यात्मिक दुनिया का एक दूसरे के साथ गठबंधन है और उनका संपर्क छठे मार्ग से है।

हमें धार्मिक और वैज्ञानिक शिक्षण में एक समानता मिलती है।

धार्मिक व्यक्ति ईश्वर, देवदूत और आत्मा में विश्वास रखते हैं। नास्तिक लोग ईश्वर, देवदूत और आत्मा में विश्वास नहीं रखते हैं। किन्तु इस संसार में एक परम-शक्ति है, जिसे अधार्मिक लोग अपार ज्ञान (Infinite intelligence) के रुप में समझते हैं। इसका अस्तित्व अधार्मिक लोग भी मानते हैं। वे देवदूत अथवा फरिश्ते को नहीं मानते, किन्तु वे इससे सहमत हैं कि प्रकृति इस संसार का प्रबंध व्यवस्थित ढंग से

करती हैं। वे आत्मा के अस्तित्व को नकारते हैं किन्तु अवचेतन मन के अस्तित्व और उसका हमारे और दूसरों के जीवन पर होनेवाले जादुई प्रभाव को स्वीकारते हैं।

हम विज्ञान और धर्म के बीच के विवाद को महत्व न दें, बल्कि ईश्वर, देवदूत और आत्मा या अपार ज्ञान (Infinite intelligence) , प्रकृति और अवचेतन मन का इस्तेमाल करके सफलता कैसे प्राप्त करें इस पर अपना ध्यान केंद्रित करें।

****

भाग- 2

प्रशासकीय एवं व्यापारिक कौशल-संबधी सूत्र

Laws Related to Administrative and Business Skill

अध्याय-१६
दृढ़ता
(Persistence)

- शुद्ध लोहा मुलायम और लचीला होता है और यह शुद्ध रुप में कभी-कभार ही प्रयोग किया जाता है। जब इसमें केवल ०.१ प्रतिशत कार्बन मिलाया जाता है, तो लोहे की मज़बूती (Strength) और कठोरता (Hardness) थोडी-सी बढ़ जाती हैं। ऐसा लोहा वहाँ प्रयोग किया जाता है, जहाँ मज़बूती से अधिक लचिलापन ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। ऐसा लोहा गहरे बर्तनों आदि के बनाने में प्रयोग किया जाता है। जब और ०.१ प्रतिशत से ०.२ प्रतिशत कार्बन इसमें मिलाया जाता है, तो इसकी मजबुती और कठोरता सामान्य-स्तर तक बढ जाती हैं, जो लोहा हम रोजमर्राह की जिंदगी में इस्तेमाल करतें हैं, उसमें ०.२ प्रतिशत से ०.३ प्रतिशत तक कार्बन होता है। जब फिर ०.१ प्रतिशत कार्बन लोहे में मिलाया जाता है, तो लोहे का लचीलापन कम हो जाता है और मजबूती और अधिक बढ़ जाती है। ऐसा लोहा बहुत लोड़ लेने वाले मशीनी पुर्जों में प्रयोग किया जाता है, जैसे बोल्ट, रेल के (Axle Shaft) इत्यादि। जब फिर ०.१ प्रतिशत कार्बन लोहे में मिलाया जाता है, तो ऐसा लोहा सादा कार्बन मिश्रित स्टील (Plain Carbon Alloy Steel) कहलाता है और इसका प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ इसकी जरुरत होती है। उसका इस्तेमाल रोजमर्रा की उपयोगिता में नहीं होता।

कार्बन की मामूली मात्रा लोहे की विशेषताओं पर जादुई प्रभाव ड़ालती है। यह इसे लाभदायक बनाती है या बेकार।

दृढ़ता का ऐसा ही जादुई प्रभाव मनुष्य की सफलता पर होता है। यह भी व्यक्ति को या तो लाभदायक बना देती है या फिर बेकार। दृढ़ता के बिना कोई भी व्यक्ति जीवन में सफल नहीं हो सकता।

हम सब ने कछुए की कहानी पढ़ी और सुनी है। वास्तव में इतिहास में ऐसी कोई दौड कभी हुई ही नहीं है। फिर भी दुनिया में यह लगभग प्रत्येक भाषा और संस्कृति में पढ़ाई जाती है केवल हमारे मन में दृढ़ता के महत्व को स्थापित करने के लिए।

- एक राजा ने एक षडयंत्र और विद्रोह के बाद अपनी राजगद्दी खो दी। उसका मनोबल घट गया और उसने सारी उम्मीदे छोड दी। वह एक गुफा में रहने लगा, जहाँ उसने एक चींटी को दीवार पर चढ़ने का प्रयास करते हुए देखा। चीटी बहुत कोशिश के बाद दीवार पर चढ़ने में सफल हो जाती है। राजा ने उस चींटी से सबक लिया और बार-बार खुफिया हमला करेके विद्रोहियों को हराया और अपनी राजगद्दी पुनः प्राप्त की।

ऐसी कहानियाँ सच्ची हो या ना हो, लेकिन वे हमेशा हमे पढ़ाती और याद कराती हैं कि सफलता के लिए दृढ़ता अर्थात लगातार काम करना आवश्यक है।

परीक्षा:-

- जब आप ओटो सजेशन (Auto Suggestion) के अनुसार अपनी कार्य-योजना को अमल में लाते हो तो संभव है, कि पहली कोशिश में आप सफल न हो, दूसरी बार भी नहीं, यहाँ तक कि तीसरी बार भी नहीं। सफलता पाने में लंबा समय लगता है। हर असफलता के पश्चात्, आप को उस असफलता के कारण का विश्लेषण करना होगा। अपनी कार्य-योजना को ठीक करें और बार-बार कोशिश करें। आप की कार्य-योजना, हर असफलता के पश्चात् और अधिक संपूर्ण (Perfect) हो जाएगी।

- ग्रेजुएट होने के लिए आप को २० से अधिक पेपर, दो से तीन साल के समय में पास करने होते हैं। ईश्वर भी परीक्षा लेता है और आप को भी एक धनवान और सफल व्यक्ति होने के पहले अनेक पेपर पास करने होंगे। आवश्यक योग्यता के बिना आप डिग्री (सर्टिफिकेट) प्राप्त नहीं कर सकते हो, उसी प्रकार आवश्यक योग्यता के बिना आप सफल या लखपती नहीं बन सकते हो।

  प्रकृति की परीक्षा के कुछ पेपर इस तरह हैं, ज्वलंत इच्छा, स्पष्ट लक्ष्य, आत्मविश्वास, कल्पनाशक्ति, निर्णयक्षमता, दृढ़ता, कड़ी मेहनत इत्यादि है।

दृढ़ता में कमी का कारण (Cause of poor Persistence) :-

- दृढ़ता की शक्ति का स्रोत इच्छा-शक्ति है। इच्छा-शक्ति की शक्ति का स्रोत ज्वलंत इच्छा है, और ज्वलंत इच्छा की प्रेरणा-स्रोत है सफलता पर पूरा विश्वास!

  (The motivating force of persistence is will power. The motivating force of will power is burning desire. The fuel which keeps the burning desire burning is faith that is a firm belief of success.)

- जब व्यक्ति में दृढ़ता की कमी होती है, तो उसके कुछ कारण और तथ्य है, जो ज्वलंत-इच्छा के इंधन की पूर्ति बंद करते हैं। दृढ़ता में कमी के क्या कारण है, अब हम इनका अध्ययन करेंगे।

- जिनसे लोग हताश होते है और दृढ़ता खो देते है वह कारण निम्नलिखित है:-

१. आलोचना (Criticism)

२. नकारात्मक प्रभाव (Negative influence)

३. समझौतावादी स्वभाव (Compromising nature)

४. प्रेरणादायी तथ्यों की अनुपस्थिती (Absence of motivating factor)

१. आलोचना (Criticism)

- आलोचना के डर से लोग सुरक्षित रुप से काम करते है और जोखिम नहीं लेते तथा पूर्ण रुप से कोशिश नहीं करते है। वे अपने लिए भागने का रास्ता हमेशा खुला रखते है। इसलिए उनसे ज्यादा से ज्यादा

कोशिश नहीं की जाता। वह सफलता के लिए पराभूत मन से कोशिश नहीं करते है और असफलता के पहले ही संकेत पर वह पीछे हट जाते है।

- आलोचना के डर के कारण लोग अपने जीवन के बड़े निर्णय नहीं लेते है। जैसे शादी, तलाक, संयुक्त परिवार से अलग होना, साझेदारी (Partnership) का बंटवारा इत्यादि। वे डरते रहते है, कि लोग उन्हें स्वार्थी, अहंकारी, सनकी कहेंगे। इन ड़रों के कारण ही वे समझौतावादी ज़िंदगी बिताना ज़्यादा अच्छा समझते हैं। केवल दृढ़ और सही फैसले ही सफलता लाते है, न कि असहाय व समझौतावादी ज़िंदगी जीने का तरीका।

- आलोचना के ड़र से ही लोग एक निश्चित उम्र के बाद कालिज या नाईट-स्कूल अथवा व्यवसायीक क्लास (Professional Course) में नहीं जाते हैं। वह विशेष योग्यताओं और ज्ञान (Special Knowledge) के साथ जीवन में सफल हो सकते थे, लेकिन आलोचना के ड़र के कारण वे विशेष ज्ञान नहीं प्राप्त कर सके और एक असफल व्यक्ति के रुप में रहतें है।

- आलोचना के ड़र से लोग उच्च लक्ष्य नहीं रखते है। वे ड़रते हैं कि लोग उन्हें महत्वाकांक्षी बहुत अधिक स्मार्ट कहेंगे। वे इस बात से भी डरते है, कि यदि वह असफल होते है, तो लोग हसेंगे और उनका मज़ाक उडायेंगे। इसलिए न वह ऊँचा लक्ष्य रखते है और ना तो उच्चतर सफलता प्राप्त करने के लिए कोशिश करते है। अगर किसी व्यक्ति ने बड़ी सफलता प्राप्त करने के लिए कोशिश ही नहीं कि तो बड़ी सफलता उसे कैसे प्राप्त होगी?

- इच्छा-शक्ति (Will Power) का प्रेरणा-स्रोत ज्वलंत-इच्छा (Burning Desire) है। आलोचना के डर के कारण इच्छा मन में प्रज्वलित नहीं होती है। इसलिए इच्छा-शक्ति कमजोर रह जाती है। कमजोर इच्छा-शक्ति का परिणाम कमजोर दृढ़ता पर होता है और कम दृढ़ता का नतीजा असफलता है।

निम्नलिखित उपाय आलोचना के ड़र को कुछ कम कर सकते है:-

- आलोचना के ड़र पर विजय प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विश्वास करें और याद रखे:-

  आपको अपने दोस्तों, परिवार तथा समाज की नजरों में जो आदर है वह केवल आपके अच्छे चरित्र और सत्कर्मों (Noble deed) पर निर्भर है। इज़्ज़त दिल से पैदा होती है तथा दिल और मन ईश्वर व्दारा नियंत्रित है। जब तक आपका चरित्र महान रहता है, ईश्वर आपके दोस्तों, परिवार और समाज की नज़रों में आपको कभी नहीं गिरायेगां। चाहे आपका आर्थिक-स्तर तथा आपकी योजनाऐं सफल हो या ना हों। धनदौलत, फॅशनेबल कपडे, सजा सवरा घर, महंगी कार आदि भौतिक सुविधाओं से आपके प्रति लोगों के मन में कभी आदर निर्माण नहीं होगा न ही इन चीजों के कम होने पर आपके प्रति आदर घटेगा।

- उदा. एक पुलिस आफिसर आपके घर सबसे अच्छे सूट और अत्याधिक महंगी कार में आता है। आप तुरंत उसका आदर-सत्कार करेंगे और उचित मान-सम्मान देंगे।

  उस पुलिस आफिसर के जाने के पश्चात् आपका गरीब मास्टर (Teacher) आपके घर आता है। तब हो

'आप जितना अच्छा कर सकते हो उतना अच्छा करो और लोगों की आलोचनाओं पर ध्यान न दें' इसलिए आलोचना से मत ड़रो और दृढ़ता से अपनी कोशिश करते रहो।

२. नकारात्मक प्रभावः- (Negative Influence)

प्राकृतिक रुप से मनुष्य का शरीर इतना जटिल है कि पिछले सौ सालों से यह शोध और अध्ययन का विषय है और अभी तक हम इसे पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं। मस्तिष्क और आत्मा शरीर से अधिक जटिल हैं, क्योंकि वे केवल पदार्थ से संबधित नहीं हैं, बल्कि कुछ शक्ति (Energy and Electricity) से भी संबधित हैं।

निरीक्षण और अनुभव के द्वारा दार्शनिक (Philosopher), मनोचिकित्सक (Psychiatrist) और डाक्टर केवल तथ्य और अंदाज (Facts & Figure) ही इनके बारे में बना पाए हैं। उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं;

- विचार, शक्ति (Energy) अथवा कंपन (Vibration) के ही कुछ प्रकार होते हैं। प्रत्येक प्रकार के विचार भी अलग प्रकार के कंपन अथवा तरंग की लंबाई (Wave Length) रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने मस्तिष्क के विचार के अनुसार कंपन अथवा शक्ति प्रसारित करता है। वह इसे दूसरों से भी प्राप्त करता है।

- सकारात्मक धारणा, महान-विचार और उच्च्य महत्वकांक्षा रखने वाला व्यक्ति उससे मिलने वाले हर व्यक्ति के मन में उसी प्रकार के विचार और महत्वकांक्षा दूसरों के मन में पैदा करेगा।

- नकारात्मक धारणा, विध्वंसक विचार, हताशा, निराशा और अपराधी मनोवृत्ति वाला व्यक्ति जब किसी से मिलता है तो उसी प्रकार के विचार और नज़रिया वह दूसरों में पैदा करता है।

- किसी भी प्रकार के नकारात्मक विचार तुरंत रचनात्मक कल्पना को नष्ट कर देता है। नकारात्मक विचारों से नकारात्मक व्यक्तित्व विकसित होता है और ऐसे व्यक्ति से लोग नफरत करते हैं। और नकारात्मक विचार उस व्यक्ति के अवचेतन मन (Subconscious mind) में भी जमकर बैठ जाते है।

- लालटेन में अग्नि की लौ को बचाने के लिए एक गिलास होता है। जब तक ग्लास सही सलामत रहता है, तब तक तेज हवा के झोकों में भी लौ जलती रहती है, लेकिन जैसे ही गिलास हटा दो तो जरासी फूंक से भी वह लौ बुझ जाएगी। तीव्र इच्छा शक्ति जलती लौ की तरह है इसका स्रोत विश्वास है और काच दृढ़ सकारात्मक विचार की तरह है। जलती लौ (तीव्र इच्छा) को बुझने से बचाने के लिए दृढ़ सकारात्मक विचार और नजरिया होना चाहिए। नकारात्मक सोच वाले निराशावादी, दोष निकालनेवाले, अपराधी मनोवृत्ति के लोग और वे जिन्होंने समझौता करके अपनी जिंदगी में गरीबी को स्वीकार कर लिया है और संपन्नता के लिए संघर्ष नहीं करते है ऐसे लोग इस जलती लौ को बुझाने के साधन है।

- जब तक आपका आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) का अभ्यास संम्पूर्ण नहीं होता और जब तक आपकी इच्छा शक्ति कमजोर है तब तक ऐसे लोगों से दूर रहने की सावधानी बरतें।

सकता है कि आप उनके लिए उसी प्रकार कि औपचारिकताएँ नहीं करते जो उस पुलिस आफिसर के आने पर कि थी। अपने मास्टर साहब के जाने के बाद आप विश्लेषण कीजिए कि आप दिल की गहराई से आदर किसे देते हो? यह जानने के बाद, कि वह पुलिस ऑफिसर अवैध वैश्यालयों और अश्लील फिल्में दिखाने वाले पार्लर से रिश्वत लेता है, फिर भी आपने उसका शाही सत्कार किया, लेकिन दिल से आप उससे नफरत करते हो। और अपने सज्जन मास्टर जी को आप दिल से बहुत प्यार करते हो लेकिन उनका स्वागत आपने उतने गर्मजोशी से नहीं किया।

- ऐसा आपके साथ भी हो सकता है। कोई आपकी ऐसी शानदार आवभगत नहीं करता है, जैसी वह किसी शातिर अपराधी की करता है, लेकिन लोग आप को दिल से प्यार करेंगे, यदि आप सज्जन हो और आपके कार्य महान है। आपकी असलियत लोग आपसे अधिक जानते हैं। आप स्वयं अपने बारे में इतना नहीं जानते हो जितना कि लोग आपकी असलियत जानते हैं। इसलिए लोग धन-दौलत और आपकी किसी स्टाईल को देखकर बेवकूफ नहीं बनते, केवल आपके अच्छे चरित्र के आधार पर ही आपको मन से मान-सम्मान देते हैं।

- पवित्र कुरआन में कहा है,

'ईश्वर ही केवल मान और अपमान देता है।' (पवित्र कुरआन ३:२६)

इसलिए आलोचना से मत ड़रो क्योंकि सफलता के लिए की गई कोशिश के नाकाम होने से आपका आदर कम नही होगा। बल्कि अगर आपने अपने चरित्र के नैतिक मूल्यों का दर्जा घटा दिया तो आपके प्रति आदर कम होगा।

डेल कार्नेग अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (How to stop worrying and start living) में कहते हैं, 'वही करो जिसे तुम्हारा मन सही समझता है। क्योंकि किसी न किसी तरह आलोचना तो आपकी होगी ही। यदि आप कुछ करते हो, तब भी आलोचना होगी, और यदि आप कुछ नहीं करते हो तब भी आलोचना होगी। इसलिए आलोचना कि बिल्कुल भी चिंता न करो।'

- अब्राहम लिंकन ने अफ्रीका मूल के लोगों को गुलामी से आजाद कराने का एक महान और जोखिम भरा फैसला लिया था। उनके दुश्मनों के साथ-साथ उनके मित्रों ने भी उनकी बहुत आलोचना की। डेल कार्नेग ने अब्राहम लिंकन की दार्शनिकता का हवाला देते हुए आलोचना के बारे में उनके विचार को इन शब्दों में प्रगट किया है, 'यदि आलोचना के सारे पत्रों को मैं (अब्राहम लिंकन) पढ़ने की कोशिश करूँ, जिनमें से अधिकतर का उत्तर नहीं देना चाहिए, तो यह ऑफिस मुझे बंद करना पड़ेगा। मैं अपनी क्षमता के अनुसार अच्छे से अच्छा कार्य करने की सर्वोत्तम कोशिश करुंगा, और अंत तक करता रहूँगा यह मेरा वादा रहा। यदी मेरे कामों का परिणाम मुझे अच्छा मिलता है, तो मेरे विरुद्ध जो भी कहा जाता है उसकी मुझे कोई परवाह नहीं है। यदि अंत में मैं गलत सिद्ध होता हूँ, तो देवदूत भी यदि कसम खाकर कहें कि मैं सही था, तो भी मुझपर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।'

अंत में डेल कार्नेग लिखते हैं, Do the very best you can do and then put up your old umbrella and keep the rain of criticism from running down the back of your neck.

- यदि आप स्वस्थ हो, तो जुकाम और खाँसी तथा अन्य छुआ-छूत आप को आसानी से प्रभावित नहीं करते हैं। लेकिन तब भी आप जुकाम, खाँसी और अन्य छूत की बीमारियों के न होने के लिए सावधानी

आईडियाज प्राप्त करता रहेंगा।

आखिरी देवदूत (स) ने कहा है,

परामर्श (सलाह मश्वरा) में ही समृद्धि का मूल तत्व है। (जवामाउल कलाम, मिश्कात)

उचित लोगों के साथ ही अपनी योजनाओं और कल्पनाओं के बारे में विचारविमर्श करे तथा योजनाएँ बनाऐ। उनके मत और सुझाव ध्यान से सुने उसके बाद ही अपना निर्णय लें। लेकिन लोगों को चुनने में बहुत अधिक सावधानी रखें, अन्यथा वे बडी चतुराई से आपके अवचेतन मन की सबसे निचली सतह से आपके आइडिया और योजनाएँ चुरा लेंगे और आप को निरुत्साहित भी करेंगे। इसलिए निरंतर प्रेरणा प्राप्त करने के लिए सकारात्मक सोच वाले लोगों के समूह में शामिल हों जाइयें, यदि आप उनके साथ मित्रता नहीं कर सकते तो उनके साथ रहने की कोशिश करें। उनसे आपके मन को सफलता प्राप्ति के लिए अच्छी ताकत और ऊर्जा मिलेगी तथा हमेशा दृढ़ रहने की इच्छा-शक्ति भी मिलेगी।

- जब आप अपना व्यापार शुरु करते हो, तो आप की आमदनी का ८० प्रतिशत भाग २० प्रतिशत मुख्य ग्राहकों से मिलेगा और शेष २० प्रतिशत भाग ८० प्रतिशत छोटे ग्राहकों से मिलेगा। ये ८० प्रतिशत छोटे ग्राहक आपके लिए हमेशा सिरदर्द बने रहेंगे। इसलिए सचेत रहें। यदि आपको कोई कष्टदायक (चिंतित करनेवाला) ग्राहक मिलता है जो आपकी शांत तथा सकारात्मक मन की स्थिति को भंग करता हैं और आपके लिए क्रोध, तनाव, चिंता, ड़र का कारण बनता है, तो विनम्रता से स्वयं क्षमायाचना कर अपने व्यापार से उसे अलग कर दें। यदि आपकी गुणवत्ता, सेवा, और विज्ञापन आदि बहुत अच्छे हैं, तो ईश्वर कभी भी आपको बेकार बैठने नहीं देगा। आपको हमेशा भरपूर रोज़गार (काम) मिलेगा।

ईश्वर कहता है,

'नेक और ईमानदार व्यक्ति हमेशा ताड़ के वृक्ष की तरह फूले-फलेंगें।' (पवित्र बायबल, पीएस १२-१२)

अपने मन की शांती और अपने हृदय की इच्छा की जलती लौ को सुरक्षित रखने की सावधानी बरते। कभी भी विचलित न हों। क्योंकि क्रोध, चिंता और बेतुके विषय आपको आपके दृढ़ प्रयास से दूर करते हैं, आपका ध्यान अपने लक्ष्य से हटाते हैं। हर एक के लिए अपने मन का द्वार खुला न रखें। केवल उसी व्यक्ति को चुनें जो आपकी सफलता की ओर जानेवाली दृढ़ कोशिश में मददगार हो और आपकी सफलता की राह में सहायक हो।

दृढ़ता (Persistence) में वृद्धि कैसे होती है?

नीचे दिए हुए तथ्यों कि उपस्थिति से दृढ़ता में कमी होती है।

- आलोचना करने वाले लोगों की उपस्थिति और आलोचना का डर।
- गरीबी के प्रति सचेत तथा नकारात्मक मानसिकता रखने वाले लोगों का साथ।
- ऐसी मानसिकता जो पराजय, गरीबी तथा कष्टों को अपनी जिंदगी का हिस्सा मानकर स्वीकार करते है

और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्ष नहीं करते हैं।

- प्रेरणादायक, शक्तिशाली, साहसी तथा धन के प्रति सचेत लोगों से कोई संबध न रखना।

ऊपर बताए गए चार तथ्यों की अनुपस्थिति से दृढ़ता बढ़ती है। और दृढ़ता बढ़ाने वाले और कुछ मार्ग नीचे दिए है।

१. ज्वलंत-इच्छा सभी प्रेरक तथ्यों का मूल स्त्रोत है। ज्वलंत-इच्छा को विकसित करने के लिए, आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के नियमों का पालन करना चाहिए। आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के द्वारा मन में श्रद्धा और विश्वास का निर्माण होता है।

२. दृढ़ विश्वास रखो कि आप सफलता प्राप्त कर सकते हो और धनी बन सकते हो। तथा सफल होने के लिए किए गए संघर्ष में ईश्वर आपकी सहायता करेगा इस प्रकार के विचार से दृढ़ता बढ़ती है।

३. ईश्वर की निरंतर नियम से प्रार्थना करें। उसकी मदद और संपन्नता-समृद्धि के आशीर्वाद से आपका स्वभाव बदल जाएगा, तथा आप स्वभाव से ही धन के प्रति सचेत रहने वाले बन जाओगे। आप समृद्धि और सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी कोशिश में सकारात्मक सोच रखने वाले तथा अपने इरादे पर मज़बूती से जमें रहने वाले सक्षम व्यक्ति बन जाओगे। ईश्वर गिफ्ट वौचर्स के रुप में धन नहीं भेजता है। ईश्वर आपके व्यक्तित्व और स्वभाव को बदलता है जिससे आपको समृद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

४. हमेशा प्रेरणादायी स्त्रोतों के संपर्क में रहें। जैसे प्रेरणादायी पुस्तकों का पठन, आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) को बार-बार ध्यान में रखते हुए अपनी कामयाबी पर भरोसा रखना और प्रेरणादायी लोगों की संगत में रहना। यह समृद्धि तथा सफलता प्राप्त करने के मूलभूत तथ्य हैं।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

'ऐ लोगों! तुम ईश्वर पर विश्वास रखते रहो, ईश्वर से डरते रहो और उन्ही के साथ रहो जो सच्चे हैं। (पवित्र कुरआन ९-११९)

'और उनके साथ झुको जो (पूजा, प्रार्थना और उसकी आज्ञा में) झुकते है।' (पवित्र कुरआन २-४३)

'उनकी संगत में न रहो जो ईश्वर के आयतों का (आदेशों का) मजाक उडाते हैं।' (पवित्र कुरआन २-४३)

इस प्रकार के अनेक श्लोक है। क्योंकि प्राणि मात्र अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होता है। यदि कोई व्यक्ति पवित्र (धार्मिक) व्यक्ति की संगत में रहता है, तो निश्चित तौर से पवित्रता और धार्मिकता ग्रहन करता है तथा विकसित करता है। यदि कोई व्यक्ति धन के प्रति सचेत और समृद्ध व्यक्तियों की संगत में रहता है तो निश्चित रुप से उसके चरित्र व व्यक्तितत्व में धन के प्रति सर्तकता विकसित होती है तथा ऐसा चरित्र विकसित होता है जो समृद्धि के लिए आवश्यक है। इसलिए उन व्यक्तियों के बारे में सावधान रहिए, जिनसे आप मिलते हो, बात करते हो तथा दोस्ती करते हो।

ऐसा कहा गया है कि कुछ समुदाय के लोगों के खून में ही व्यापार होता है, जैसे मारवाडी, गुजराती और यहूदी (Jews) इत्यादि। परन्तु ऐसा नहीं है। कोई भी धन के प्रति सतर्कता अपने खून में लेकर जन्म नहीं

लेता है। सच्चाई यह है कि उनका पारिवारिक वातावरण, समाज और संस्कृति में संपत्ति की चिंता सतर्कता और अधिक पाने की चाह रहती है। इसलिए ऐसे लोग वातावरण और संस्कृति के संपर्क में आने के बाद पैसो के प्रति सजग हो जाते है।

'समय' सभी जख्मों को भर देता है। यह सब जख्मों को भरनेवाला ही नहीं, बल्कि सब अच्छी भावनाओं को समाप्त करनेवाला भी है। यह जोश, ऊँची महत्वकांक्षा और ज्वलंत इच्छा इत्यादि सब को समाप्त करता है तथा दबा देता है। ज्वलंत इच्छा की लौ को जलाए रखने के लिए प्रेरित और साहसी लोग सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। लेकिन ऐसे लोग आमतौर पर आसानी से उपलब्ध नहीं होते है। सामान्यतः ऐसे लोग अत्याधिक व्यस्त रहतें हैं और उनके पास नए संघर्ष करने वालों के लिए समय नहीं होता है। ऐसे मामलों में आत्मा को प्रेरित करने वाली पुस्तकें (Self-Motivational books) ही केवल प्रेरणा का स्त्रोत है। अच्छी पुस्तकों को पढ़ने की आदत ड़ालिए। अपनी व्यक्तिगत एक छोटी सी लायब्रेरी रखिए। प्रत्येक महीने कुछ अच्छी पुस्तकें खरीदिए तथा उनको धीरज से पढ़े। अपने प्रिय पदों (पंक्तियों) तथा ऐसे पैराग्रॉफस को भी रेखांकित कीजिए जो आपके लिए महत्वपूर्ण हों। तथा उन पुस्तकों को सँभाल कर रखें।

एक समय के पश्चात जब आप उन पुस्तकों को सरसरी नजर से भी देखोगे और रेखांकित तथा निशान लगे विषय को पढ़ोगे तो आपको वह संम्पूर्ण विषय याद आ जाएगा, जिसे आपने पढ़ा था। इस प्रकार आप महत्वपूर्ण जानकारी को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

जब मैंने अपना कैरियर शुरु किया, तब केवल पुस्तकें ही मेरी साथी और शिक्षक थी। उनसे मुझे इतना लाभ हुआ कि उनके महत्व को बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं। अध्यात्मिक (धार्मिक) और व्यापारिक ज्ञान अधिकांशतः मैंने पुस्तको को पढ़ने से ही प्राप्त किया है।

पुस्तके जो पढ़नी चाहिएं अथवा मैंने पढ़ी हैं, उनकी सूची 'विद्वान लोगों से कुछ सीखें' नामक अध्याय में दी गई है।

धीरज :- (Patience)

धीरज और दृढ़ता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सफलता के लिए संघर्ष करते समय धीरज रखें। कभी धीरज न खोएँ। क्योंकि सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने और चोटी पर पहुँचने में कभी-कभी लंबा समय लगता हैं।

संत कबीर ने कहा है;

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होए
माली ड़ाले सौ घड़ा, ऋत आए फल होए।
इसका अर्थ है,

माली चाहे कितना भी ज्यादा पानी डाले, वह समय से पहले फल नहीं प्राप्त कर सकता, फल अपने मौसम में ही पैदा होते हैं। पेड़ अपने प्राकृतिक मौसम के दौरान ही फल पैदा करेंगे।

उसी प्रकार हर व्यक्ति की तरक्की के लिए एक नैसर्गिक समय होता है। विभिन्न व्यक्तियों के कोशिश और मेहनत के परिणाम स्वरुप उनकी तरक्की में फर्क होता है। लेकिन सारे मनुष्य मात्र और हम एक रात में ही लक्षाधीश नहीं बन सकते। उसके लिए निश्चित समय जरुर लगेगा।

हमे प्रकृति को समझना चाहिए। हमें इसके साथ सहयोग करना चाहिए और धीरज रखना चाहिए तथा धैर्यपूर्वक सफलता के लिए अपने संघर्ष को जारी रखें।

अंत में अखिल विश्व का निर्माता ईश्वर कहता हैं;

'ऐ लोगों! वे जो (मेरे आदेशों पर) विश्वास करते हैं, धीरज रखें, तथा प्रार्थना से मदद लें। क्योंकि ईश्वर उनके साथ होता हैं, जो धीरज रखते हैं।' (पवित्र कुरआन २-१५३)

विश्वव्यापी समृद्धि के लिए प्रार्थना (Prayer for Universal Prosperity)

मेरा व्यापार अत्याधिक नव-निर्माण (Innovative) और तकनीकी (Technical) है। कभी-कभी काम के बोझ अथवा दूसरी समस्याओं के कारण मैं अत्याधिक निराश हो जाता या और काम करने की रुचि नहीं रहती तथा इस प्रकार के व्यापार व जीवनशैली से छुटकारा पाने के रास्ते ढूँढना शुरु कर देता था।

मेरे एक दोस्त दिलावर अब्बास चौगले ने मुझे सुबह की अपनी रोजमर्रा की प्रार्थना में, विश्वव्यापी समृद्धि और शांति के लिए दुआ को शामिल करने को कहा। क्योंकि जब व्यक्ति दूसरों की समृद्धि और भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है, तब देवदूत भी प्रार्थना करने वाले लोगों को सफलता और समृद्धि प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना करते है। (हदीस)

मानवजाति की शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करना ही कम समय में और जल्द से जल्द समृद्धि पाने का रास्ता है। अपनी समृद्धि के लिए कि हुई दुआ नामंजूर हो सकती है, लेकिन जब देवदूत हमारी समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं, तो यह कभी-कभार ही ईश्वर द्वारा नामंजूर होती है।

उस दिन से मैंने नियमित रुप से ऐसी प्रार्थना करनी शुरु कर दी और पूरे विश्व के लिए ईश्वर से समृद्धि माँगने पर मुझे स्वयं व्यक्तिगत रुप से ताकत व शांति मिली। असंभव तथा उच्च कार्यों की प्राप्ति के लिए शक्ति और धैर्य मिला। अब मैं हिम्मत और जोश के साथ रोजमर्रा की जिंदगी के जटिल और कठिन समस्याओं का सामना बगैर किसी कष्ट के करता हूँ।

पवित्र बाइबल में ईश्वर कहता है

'मनुष्य केवल रोटी (पैसा कमाने के लिए) पर ही नहीं जीता है।' (पवित्र बाइबल Matt ४-४)

'किसी दूसरे को ऐसे ही प्यार करो जैसा कि तुम अपने आप को करते हो।' (पवित्र बाइबल John १५-१२)

'कृपया एक दूसरे से मधुरता और स्नेह से रहो।' (पवित्र बाइबल Rom १२-१०)

जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है। (ऋग्वेद १०:११७:६)

यदि हम सक्रिय रुप से मनुष्यजाति की समृद्धि में योगदान नहीं दे सकते, तो कम-से-कम हम ईश्वर से उनके लिए प्रार्थना और दुआ तो करें।

दृढ़ता का अत्याधिक प्रभावशाली उदाहरण

नेपोलियन हिल के Think & Grow Rich सुप्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है;

हजरत मुहम्मद (स.) (ए.डी ५७०:६३२) का जन्म एवं पालन-पोषण मक्का के माननीय कुरैशी परिवार में हुआ था। २५ वर्ष की उम्र में उन्होंने एक आदरणीय विधवा हजरत खदीजा के साथ साझेदारी में व्यापार शुरु किया जो आज के समय के आयात निर्यात के व्यापार जैसा था। उनकी ईमानदारी, उनकी बुद्धिमत्ता ने हजरत खतिजा को इतना अधिक प्रभावित किया कि उनके सामने शादी का प्रस्ताव रखा और फिर दोनों ने शादी कर ली। ३७ वर्ष की उम्र तक वह एक सफल व्यापारी एक प्यार करने वाले पिता तथा पति बने रहे। जब उनकी जिंदगी में धन-दौलत, समाज में आदर मान, सुखद पारिवारिक जीवन सब कुछ था, तब आप के पवित्र धार्मिक मन ने महसूस किया कि संसार में अधिकतर लोगों की जीवन-शैली असभ्य है, और यह जीने का सही तरीका नहीं है। ज्ञान और मार्गदर्शन का कोई स्त्रोत नहीं था। इसलिए वह अक्सर पहाड़ की चोटी पर जाया करते, और हिरा नाम की गुफा में कई दिनों के लिए मौन रह कर एक ईश्वर की भक्ति करते थे। ४० साल की उम्र में हजरत जिब्राईल (अ.स.) एक दिन प्रगट हुए और पवित्र कुरआन के पदों को उनके सामने जाहिर किया। ईश्वर के इस संदेश को मनुष्यजाति में प्रचार करने की जिम्मेदारी आप को मिली।

हजरत मुहम्मद (स.) के पास जो कुछ भी था ईश्वर का आदेश लोगो तक पहुँचाने के लिए खर्च कर दिया। १३ सालों तक वह मक्का के लोगों को धार्मिक उपदेश देते रहे, लेकिन फिर भी केवल ८० व्यक्तियों ने इस्लाम को स्वीकार किया। इन १३ वर्षों में उनके अनुयायिंओं को मारा गया, जुल्म अत्याचार किया गया और हर मुमकिन तरीके से उन्हें सताया गया। हजरत मुहम्मद (स.) ने अपने अनुयायियों को दूसरे स्थान पर बसने की आज्ञा दे दी। मगर वह स्वयं हर दु:ख दर्द सहन करने के बाद भी मक्का में ही रहे तथा अपने मिशन को पूरा करने के इरादे पर अटल रहे।

अंत में जब मक्का के प्रभावशाली लोगो ने उनकी हत्या की योजना बनाई, तो वह पास के एक शहर मदीना में (Migrate) हो गए लेकिन वह कभी भी निराश नही हुए थे और अपने पक्के इरादे के साथ अपने धार्मिक कर्तव्य को जारी रखा। परिणाम स्वरुप अगले दस वर्षों में पूरा अरब उनके विचारों से सहमत हो गया और ईश्वर के संदेश को स्वीकार कर लिया।

हम हजरत मुहम्मद (स.) के जीवन में प्रशंसनीय इच्छा-शक्ति, दृढ़ता और धीरज देखते हैं। यह एक उज्जवल और प्रेरणादायक सीख हैं उन व्यापारियों और साहसी तथा जोखिम उठाने वालों के लिए जिन्हें जीवन में अभी सफलता प्राप्त कर अपनी मंजिल मिलनी बाकी है।

****

अध्याय - १७

व्यापार प्रशासन

(Business Adminstration)

परिचयः-

- हजारों मील की यात्रा एक कदम से शुरु होती है। परंतु वह एक कदम अगर गलत दिशा में बढ़ जाए तो क्या होगा? तब दो हजार मील की यात्रा भी, इच्छित लक्ष्य पर पहुँचने में सहायता नहीं करेगी। इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति गलत प्रबंध-नीति (Business Policy) के साथ साम्राज्य अथवा बड़ा संगठन नहीं बना सकता। केवल लक्ष्य की जानकारी ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि सही रास्ते की जानकारी भी आवश्यक हैं। ताकि लक्ष्य तक उचित समय पर पहुँचा जायें; इससे पहले कि बहुत देर हो जाय।

- अकेले व्यक्ति की कई व्यक्तिगत सीमाएँ होती हैं। एक बड़ा संगठन अथवा एक बड़ी, स्थायी और लाभ कमाने वाली कंपनी एक व्यक्ति के कंधों पर नहीं खड़ी हो सकती। इसके लिए टीम-वर्क (सामुहिक प्रयास) आवश्यक है। इसलिए यदि कोई भारी मात्रा में धन कमाना चाहता है तो उसे टीम बनाने और उसका नेतृत्व करने आना चाहिए।

- अनेक उच्च-शिक्षित, विद्वान और योग्य व्यक्ति प्रशासन-संबधी कौशल की कमी (Lack in administrative Technique) के कारण अपनी योग्यता को पूरी क्षमता से प्रयोग नहीं कर पाते। वह जिंदगी में अकेले ही मेहनत करते रहते है और जितनी संम्पत्ति (धन) उन्हें मिलना चाहिए उससे कम कमाते है। अगर उन्होंने लोगों को नौकरी पर रखकर ज्यादा लोगों की सहायता से बिज़नेस बड़ी मात्रा में फैलाया होता तो आज वह बहुत अधिक नफा कमा सकते थे।

- व्यापार करना भारी मात्रा में धन जोड़ने का एक सबसे अच्छा विकल्प है। कोई भी नौकरी में चाहे कितनी भी ऊँची तनख्वाह प्राप्त करता हो, लेकिन फिर भी वेतन की एक सीमा तो रहती ही है। जबकि व्यापार में तरक्की की कोई सीमा नहीं होती और यह रिटॉयरमेंट (सेवा-निवृत्ती) अथवा मृत्यु से खत्म नहीं होती।

- व्यापार यदि उचित ज्ञान, सावधानी, सिद्धांत के साथ व्यवस्था-पूर्वक किया जाय तथा व्यावसायिकता और धार्मिकता के नियमों का पालन करते हुए किया जाय, तो व्यक्ति अपनी कोशिश का मधुर फल अर्थात सफलता प्राप्त करता है। अन्यथा वह अपने माता-पिता द्वारा कमाई गई समृद्धि को भी खो देता है अथवा यदि कोई तनाव और चिंताओं को नियंत्रित नहीं कर पाता है, तो वह युवावस्था में ही बीमार हो जाता है।

- व्यापार प्रशासन और प्रबंधन एक विशाल विषय है। इसे समझने के लिए तीन साल के कोर्स की आवश्यकता है; जैसे एम.एस.एस.अथवा एम.बी.ए.इत्यादि। इसे कुछ पृष्ठों में वर्णन करना मुश्किल है, लेकिन फिर भी हम इसके कुछ मूल और महत्वपूर्ण पहलुओं को दोहरायेंगे।

सरलता के लिए हम, इस विषय को तीन भागों में बाँटते है।

प्रथम वर्ग में हम संगठन के व्यावसायिक सिद्धांतो (Business Policy) पर चर्चा करेंगें।

द्वितीय वर्ग में हम प्रशासनिक तकनीक पर चर्चा करेंगे, जिसे एक साहसी व्यापारी अथवा मैनेजर को अपने अधीन काम करने वाले पदाधिकारियों के साथ कारोबार (व्यवहार) करते समय अपनाना चाहिए।

तृतीय वर्ग में हम चर्चा करेंगे कि एक व्यक्ति को एक लीडर अथवा एक समर्थ प्रशासक बनने के लिए अपने आप में क्या गुण विकसित करने चाहिए।

****

अध्याय - १८

संगठन के सिद्धांत

(Principle of Organisation)

- जैसा कि हमने आत्म-निर्देश (Auto Suggestion) के अध्याय में पढ़ा है, कि व्यक्तिगत स्तर पर सफलता प्राप्त करने अथवा भारी मात्रा में धन कमाने के लिए एक स्पष्ट और निश्चित लक्ष्य (Goal) आवश्यक है। व्यक्तिगत स्तर पर जो सत्य है संगठन के स्तर पर भी यही नियम लागू है। एक संगठन जो लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, उसका स्पष्ट और विशेष रुप से वर्णन करना चाहीए, तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य को इसके बारे में मालूम होना चाहिए। तभी बिना समय और धन को बर्बाद किए उस प्रयास पर ध्यान केंन्द्रित कर सकते हैं, जो लक्ष्य (Goal) को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

- एक निश्चित लक्ष्य का यही महत्व है किंतु यह एक कठिन प्रश्न है कि, किसी संगठन या कंपनी को कौन सा लक्ष्य चुनना चाहिए ? इस प्रश्न का निश्चित उत्तर देने के बजाय हम इसका अध्ययन करें कि कुछ बड़े संगठनो ने कौनसे लक्ष्य और सिद्धांत चुने हैं, जिसके कारण वह अपने क्षेत्र में प्रभावशाली हुए। इस विषय में हम कम्प्यूटर और सॉफ्टवेयर की विशाल कंपनी IBM का अध्ययन करेंगे।

आई. बी. एम. कम्पनी के सिद्धांत : (The Policies of IBM Company)

थोमस जे.वॉटसन ने सन १९१४ में IBM की स्थापना की। शुरु में वे बूचर-स्केलस और घड़िया बनाते थें, और 'कॅम्पयूटिंग टॅब्यूलेटिंग ॲन्ड रिकॉर्डिंग कंपनी' के नाम से जानी जाती थी। उस समय उनके पास केवल कुछ सौ कर्मचारी थें। आज वह कम्पयूटर निर्माण में अग्रणी हैं, ४००००० से अधिक कर्मचारी उनके पास हैं, तथा उनकी बिक्री (Turnover) ५० बिलियन डॉलरर्स से अधिक हैं। दुनिया के प्रत्येक देश में IBM की शाखाऐं और ऑफिस हैं।

उनकी असीमित सफलता का रहस्य उनके सिद्धांत है जो निम्नलिखित हैं:-

- कंम्पनी के प्रत्येक सदस्य का आदर और सम्मान होना चाहिए।

  Every individual of the company must be respected.

- प्रत्येक ग्राहक को सबसे अच्छी तथा हर संभव सेवा दी जानी चाहिए।

  Every customer must be given the best possible service.

- सर्वश्रेष्ठ Quality के लिए हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए ।

  Excellence and superior performance must be pursued.

प्रथम सिद्धांतः-

कर्मचारी किसी भी संगठन की सबसे महत्वपूर्ण पूँजी होते हैं। कर्मचारियों के साथ वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार की भरपाई आर्थिक तौर पर नहीं की जा सकती। कर्मचारियों को हमेशा अपने साथ रखने के लिए, कंपनी के सिद्धांत और नीति मानवता और सम्मान पर आधारित होने चाहिए।

IBM कालिजो और विश्वविद्यालयों से सबसे अच्छे विद्यार्थी चुनती है। उसके बाद उनको अपने व्यापार तथा कार्यों के साथ-साथ अपने सिद्धांतों और नीतियों के बारे में भी सबसे अच्छी और हर संभव ट्रेनिंग देती है। उनके सिद्धांत केवल क्लास में ही नहीं पढ़ाये जाते, बल्कि उनके संगठन के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उन सिद्धांतो का आचरण भी किया जाता है। उनके यहाँ वरिष्ठ अधिकारियों के लिए खास भोजन कक्ष, खास टॉयलेटस, गाड़ियों के लिए अलग से पार्किंग नहीं होती बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ आदरपूर्वक एक समान व्यवहार किया जाता है।

द्वितीय सिद्धांतः-

IBM की सफलता का दूसरा रहस्य उनकी सेवानीति (After Sales Service) है। इस नीति ने IBM को असीम सफलता दी है। रोजमर्रा की जिंदगी में हम देखते हैं, कि कम्पनियाँ तकनीकी रुप से निचले दर्जे के उत्पाद (Low Quality Product) के बावजूद, अपनी प्रतियोगी के साथ, अपनी प्रतियोगी के श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले उत्पादों की अपेक्षा बेहतर व्यापार कर रहीं हैं। यह उनकी बेहतर सेवा के कारण है।

इस समय (२००७) में भारत में लगभग १२ ऑटोमोबाईल कंपनियाँ हैं। और उनमें से अनेक के पास नामी ब्रॉड के साथ विदेशी सहयोग (Collaboration) है। लेकिन ग्यारह कंपनियों की मिलाकर बिक्री भी बारहवी कंपनी की ४० प्रतिशत बिक्री के बराबर भी नहीं है। वह बारहवी कंपनी है मारुति उद्योग। क्योंकी मारुती उद्योग समुह के सर्विस सेंटर भारत देश के हर कोने में है।

आज कल मोबाईल फोन आम चीज़ है। यहाँ तक कि हाथगाड़ी खींचने वाले तथा रिक्शा चलानेवालों के पास भी मोबाईल फोन है। किंतु अधिक तर लोग नोकिया कंपनी के मोबाइल का ही प्रयोग करते हैं। यह इस कारण नहीं कि नोकिया की गुणवत्ता, पेनासोनिक, सॅमसंग, सोनी एरिक्सन इत्यादी की तुलना में बेहतर है, लेकिन यह इसलिए है कि नोकिया के कल-पुर्जे हर गली के नुक्कड पर आसानी से मिल जाते हैं।

इसलिए किसी भी व्यापार की सफलता का एक रहस्य अच्छी सेवा नीति (Good after sales service) है।

तृतीय सिद्धांतः-

जंगल में सबसे शक्तिशाली प्राणी ही जीवित रह पाते है। (Only the Fittest Survive) यह नियम केवल जंगल के लिए ही नहीं है, बल्कि सीमेंट कंक्रीट के जंगल (शहर) पर भी लागू होता है। समय के साथ केवल वह कंम्पनियाँ शेष रहती हैं और वही तरक्की करती हैं, जो श्रेष्ठता के लिए प्रयास करती है। उसके लिए गुणवत्ता में श्रेष्ठता, कम खर्च में उत्पादन, तथा तकनीकी श्रेष्ठता, सेवा में सर्वोत्तम, बिक्री बढ़ाने की तकनीक, इत्यादि आवश्यक है तथा श्रेष्ठता के लिए यह प्रयास कर्मचारियों की भर्ती और

ट्रेनिंग से शुरु होना चाहिए। कम्पनी का सामाजिक या मानसिक वातावरण ऐसा बनाया जाय कि प्रत्येक व्यक्ति जानता हो कि किसी की भी नोकरी पक्की नहीं है अर्थात अगर अच्छा काम करोगे तो नोकरी बाकी रहेगी। कम्पनी में पदों (Post) की तरक्की तथा आर्थिक लाभ प्राप्ति (Payment Increments) वरिष्ठता पर निर्भर नहीं होती, बल्कि यह कठिन परिश्रम पर निर्भर होती है, यानी जो अधिक परिश्रम करेगा उसे अधिक लाभ मिलेगा। सफलता के सामान्य नियम के अनुसार आप में हमेशा श्रेष्ठ रहने की कामना से ही आप अपने कार्य में सफलता पुर्वक आगे बढ सकते है।

IBM और सैकड़ों दूसरी कंपनियों ने कर्मचारियों का सम्मान, सर्वोत्तम ग्राहक सेवा, श्रेष्ठता के लिए प्रयास इन तीन सिद्धांतों का पालन करते हुए असाधारण सफलता प्राप्त की है। अगर आप भी इन तीन सिद्धांतो का पालन करेंगे तो आप भी महान सफलता प्राप्त कर सकते है।

For more knowledge read "The I.B.M way" by Buck Rodgers, Published by USB Publisher.

****

अध्याय - १९

नेतृत्वशैली तथा प्रशासकीय तकनीक

(Leadership style and administrative techniques)

परिचय

- यह पुस्तक उन नौजवान साहसी व्यापारियों के लिए लिखी गई है, जो नया व्यापार शुरु कर रहें हैं। इसलिए इस पुस्तक में लिखे गए सलाह मश्वरे भी उनसे संबधित है।

- जिनको व्यावसायिक प्रशासन (Business Administration) का ज्ञान नहीं वह अपने स्वभाव और अनुभव के अनुसार अपने कर्मचारियों पर नियंत्रण रखते है। कभी वह नर्मी से पेश आते है कभी वह सख्ती से पेश आते है। कभी वह कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते है, कभी उनको ड़ाँटते है। राजकीय व्यक्ति की तरह परिस्थीति जैसी होती है उद्योगपति वैसे अपना रवैया बदलते है।

साधारणतः नए उद्योगपति इस प्रकार की गल्तियाँ करते है।

- वे हर कर्मचारी पर संपूर्ण नियंत्रण चाहते हैं।

- किसी को वे बहुत नज़दीक से निरीक्षण करते हैं और किसी को अत्याधिक छूट दे देते हैं।

- जो लक्ष्य वे प्राप्त करना चाहते हैं उसे गोपनीय रखते है या फिर बहुत थोडे से अपने नजदीकी सहयोगियों को ही इसके बारे में बताते हैं।

- मानवीय रिश्तों (Human Relation) से संबधित उनके निर्णय एक तरफा होते हैं। इसका अर्थ है, यदि वे किसी को आज्ञा देना चाहते हैं, तो वे उसको हुक्म देते है। यदि वे किसी को अधिकार देना चाहते हैं, तो वे अधिकार सौपते हैं। दूसरा व्यक्ति सिर्फ सुनने कि भूमिका निभाता है और वह नहीं जानता कि उसका अधिकारी उसके साथ इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहा है?

- वे सबके सामने खुले में किसी भी कर्मचारी को ड़ाटतें हैं।

- अगर किसी ने अपना काम कुशलता से किया, तो वे प्रशंसा नहीं करते हैं और यदि वे करते भी हैं, तो गुप्त-रुप से और वे भी बहुत कम शब्दों में।

- निर्णय लेने, लक्ष्य-निश्चित करने, कुशलता (Performance) की समीक्षा करना, कुशलता (Performance) के स्तर को निर्धारित करना इत्यादि में कर्मचारियों और सहयोगिता को शामिल नहीं किया जाता हैं। यह अकेले अधिकारी (बॉस) द्वारा ही किया जाता है।

- जहाँ तक धन का सम्बन्ध है, वह कर्मचारियों व सहयोगियों के लिए अपनी मुठ्ठी हमेशा बंद रखते हैं तथा अपने स्वंय के लिए और परिवार के लिए बहुत अधिक खर्च करते हैं।

- वह हमेशा अपने कर्मचारियों को अपने से तुच्छ (Inferior) समझते हैं।

- इन गलतियों और कमियों के कारण अच्छे सहायकों तथा सहयोगियों की उपलब्धि नये व्यापारियों के लिए हमेशा एक समस्या रहती है। और अधिकांश समय उसे स्वंय काम करना पड़ता है। इसलिए उसे महत्वपूर्ण कार्य (Important productive work) के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता है।

- उद्योग में मेरे २५ वर्ष के अनुभव तथा ज्ञान के अनुसार, जो मैंने बहुत सारी पुस्तकों से प्राप्त किया, प्रशासनिक-तकनीक (Administrative Technique) जो डॉ. केन्नथ बलनार्ड ने लिखा है, वह अत्याधिक प्रभावशाली है। उस तकनीक-ज्ञान तथा मेरे विचारों का सारांश निम्नलिखित हैं।

प्रशासन कि तकनीकः-

- अपने अधिनस्थ सहयोगियों से अधिकतम उत्पाद प्राप्त करने के लिए आप जो उन पर किस प्रकार से नियंत्रण करते हो और उनके साथ कैसा व्यवहार करते हो, यही नेतृत्व-शैली(Directing Behaviour) है। नेतृत्व के अधिकांशतः दो प्रकार हैं तानाशाही (Dictatorship) और लोकतांत्रिक (Democratic)। तानाशाही अथवा निर्देशित व्यवहार (Directing Behavior) में लीडर लोगों को बताता है कि, उन्हें क्या करना है? कैसे करना है? कहाँ करना है? कब करना है? और फिर नजदीक से कार्ययोजना का अमल किस प्रकार हो रहा है इसका निरीक्षण करता रहता है। लोकतांत्रिक अथवा सहयोगी व्यवहार (Supporting Behavior) में लीडर लोगों की समस्याऐं सुनता है, उनके प्रयासों में उन्हें सहायता करता है, मार्गदर्शन, सहयोग तथा निर्णय लेने में उनकी सहायता करता है।

  Dr. Kenneth Blanchard चार प्रकार की नेतृत्व-शैली का समर्थन करते हैं, जो तानाशाही और लोकतांत्रिक शैली दोनों से मिल कर बनी हैं।

  चार नेतृत्व शैलियाँ हैः-

१.निर्देश देनेवाली शैली (Directing)

२. शिक्षा देने वाली शैली (Coaching)

३. सहयोग देने वाल शैली (Supporting)

४. अधिकार सौंपने वाली शैली (Delegating)

निर्देश नेतृत्व-शैली तानाशाही नेतृत्व-शैली की तरह ही है।

- शैक्षिक नेतृत्व-शैली में नेता सहयोगियों को एक निश्चित सीमा तक ही निर्देश देता है, लेकिन वह

अपने निर्णय का तर्कसहित व्याख्या भी करता है। सहयोंगियोंसे सुझाव माँगता है और कार्य पूरा करने में सहायता करता है।

- सहयोगी नेतृत्व-शैली में लीडर अपने सहयोंगियों के प्रयास में और काम को पूरा करने में सहयोग देता है। निर्णय लेने में वह उनको शामिल करता है, तथा उनके साथ जिम्मेदारी में भागीदार बनाता है। संक्षेप में, वह उनको आत्मनिर्भर बनने के लिए (Train) करता है।

- अंतिम नेतृत्व-शैली अधिकार अथवा जिम्मेदारी सौपने की है। इसमें लीडर अपने सहयोगियों को निर्णय लेने की जिम्मेदारी तथा समस्याओं के समाधान की ज़िम्मेदारी सौंपता हैं।

कब कौन सी नेतृत्व-शैली चुननी चाहिए?

- कोई भी एक नेतृत्व शैली सभी स्थिति में और सभी लोगों के लिए अनुकूल नहीं बैठती है। मैनेजर (नेता) हर कर्मचारी और सहयोगियों के लिए कोई विशेष नेतृत्व शैली चुनने के लिए सहयोगियों की गुणवत्ता (Competence) और व्यक्तित्व (Personality) का विश्लेषण करता है। इसका अर्थ है एक ही मैनेजर को विभिन्न व्यक्तियों के लिए उनके विकास (Knowledge and experience) के स्तर के अनुसार विभिन्न नेतृत्व-शैली को चुनना होगा।

सहयोगियों के विकास के स्तर का क्या अर्थ है?

उद्योग में हम किसी व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व की दो विशेषताओं के अनुसार कार्य सौंपते हैं। उसकी कार्य-कुशलता (Competence) और वचनबद्धता (Commitment)। व्यक्ति की कार्य-कुशलता यानि कार्य को कुशलता पूर्वक करने कि उसकी क्षमता, योग्यता, ज्ञान, अनुभव, शिक्षा, ट्रेनिंग इत्यादि के द्वारा प्राप्त की जाती है। वचनबद्धता का अर्थ है कि एक व्यक्ति कितनी गंभीरता तथा ईमानदारी से जिम्मदारी निभाता है। वचनबद्धता भी दो तथ्यों पर निर्भर करती है; विश्वास और प्रेरणा।

जिस व्यक्ति में कार्य संतोषजनक रुप से पूरा करने का भरोसा नहीं है, वह उस काम को करने से बचेगा। वह जिम्मेदारी से बचने के बहाने ढूँढ़ेगा। जो व्यक्ति पूर्ण रुप से उत्साहित नहीं है, वह भी मुख्यतः खाली समय बितायेगा और जितना आवश्यक है उतना ही कार्य करेगा। ताकि उसे नौकरी से निकाला न जा सके। इसलिए हम किसी व्यक्ति की पहचान उसकी कार्य कुशलता तथा वचनबद्धता से ही करते है।

किस योग्यता एवं वचनबद्धता के स्तर के लिए कौन-सी नेतृत्व-शैली चुननी चाहीए?

हम कर्मचारियों कि योग्यता तथा वचनबद्धता के आधार पर उन्हें चार स्तर में बाँट सकते हैं।

१.स्तर I = कम योग्यता, उच्च वचनबद्धता। (Low competence, High commitment)

२.स्तर II = कम योग्यता, कम वचनबद्धता। (Some competence, Low commitment)

३.स्तर III = उच्च योग्यता, अस्थिर वचनबद्धता। (High competence, Variable commitment)

४.स्तर IV = उच्च योग्यता उच्च वचनबद्धता। (High competence, High commitment)

जिनमें कम योग्यता तथा कम वचनबद्धता है उनके बारे में क्या?

सरकारी संगठनों के अतिरिक्त लोग इन्हें नौकरी पर नहीं रखते हैं। एक जोखिम उठाने वाला साहसी उद्योगपति अपने संघर्ष के प्रारंभिक समय में बेकार बोझ क्यों उठाएगा?

- पहले स्तरें के लोग उत्साही (जोशीले) और नए सीखने वाले होते हैं। कंपनी में आने वाले इन नए लोगों का अनुभव और कौशल बहुत कम होता है, तथा कंपनी की प्राथमिकताएँ, नीतियाँ और व्यापार करने का तरीका नहीं जानते हैं। इसलिए इनके लिए आरंभिक निर्देशित नेतृत्व-शैली प्रयोग की जाती है।

- दूसरे स्तर के लोग वे हैं, जो थोड़े समय तक काम करने के और कुछ कौशल प्राप्त करने के पश्चात् उनकी गलतफहमी दूर हो जाती है अथवा वह निराशा का शिकार हो जाते हैं। नए लोग अपने कार्य को उत्साह के साथ शुरु करते हैं, लेकिन कुछ समय पश्चात् वे निराश हो जाते हैं कि यह काम को सीखना कठिन है या कठिन परिश्रम करने के पश्चात् वेतन कुछ अधिक नहीं मिलने वाला है अथवा बहुत ही कम है।

  ऐसे लोगों के लिए शैक्षिक अर्थात सिखानेवाली शैली सबसे अच्छी है, जो निर्देशित व्यवहार शैली के स्तर से उच्च है तथा सहयोगी शैली से निम्न है।

- तीसरे स्तर के लोग वह है, जिन्होने पर्याप्त कौशल, योग्यता और वचनबद्धता प्राप्त की, लेकिन किसी वजह से अकेले फैसले और जोखिम उठाने से ड़रते हैं। वह उच्च अधिकारियों से कुछ सुरक्षा (Guidence) चाहते हैं, कि वे सही राह पर हैं और वे आगे जा सकते हैं।

  ऐसे लोगों के लिए सहयोगी-शैली सबसे अधिक अनुकूल होती है।

  चौथे स्तर के लोग उच्च योग्यता वाले और उच्च वचनबद्धता वाले होते है। इनके लिए अधिकार अथवा जिम्मेदारी सोंपने वाली नेतृत्व शैली सब से उचित है।

- निम्नलिखित दो उदाहरणों द्वारा, मैं सोचता हूँ, कि मैं आप के सामने नेतृत्व की चार शैलियों की व्याख्या करने में सक्षम होऊँगा तथा विकास की चार स्थितियों को भी अधिक स्पष्ट रुप से बताने में समर्थ होऊँगा।

पहला उदाहरणः-

१.जब कोई नया साहसी उम्मीदवार घुड़सवारी सीखना शुरु करता है, तो सिखाने वाला, उसे हर मोड़ पर बताता है, कि कैसे काठी पकड़ते है? कैसे चढ़े? उसे क्या करना चाहिए? और क्या नहीं करना चाहिए? यह निर्देश (Directing) नेतृत्वशैली है और उम्मीदवार विकास की प्रथम श्रेणी अर्थात पहले स्तर में है।

२.उम्मीदवार घोड़े पर बैठने और उसे पकड़ने की मूल कला सीखता है। वह महसूस करता है कि यह आसान कार्य नहीं है। उसका उत्साह घटने लगता है। उसका भ्रम टूट जाता हैं। तब ट्रेनिंग देने वाला (शिक्षक) उम्मीदवार को और अधिक कौशल प्राप्त करने के लिए शिक्षित करता है, जैसे दौड लगाना,

कूदना इत्यादि तथा उसके उत्साह और विश्वास को बढ़ाता है। दूसरे स्तर में वह केवल निर्देश ही नही देता बल्कि उसकी प्रशंसा भी करता है, उसकी समस्याओं को सुनता है, उसके विचारों को जानता है और तकनीक की व्याख्या करता है। इस शैली में कुछ अधिक निर्देश शैली तथा कुछ कम सहयोगी शैली का समावेश होता है और इसे ही शैक्षिक (Coaching) नेतृत्व शैली कहते है और उम्मीदवार विकास के दूसरे स्तर में है।

३. जब एक उम्मीदवार पर्याप्त कौशल प्राप्त कर लेता है, तब कोच (शिक्षक) सहयोगी (Supporting) नेतृत्व शैली अपनाता है। उदाहरण के लिए, जेकपॉट टूर्नामेंट अथवा पालो (Polo) खेल जीतने के लिए उम्मीदवार और शिक्षक आपस में मिलजुल कर कौशल नीति (Strategy) निश्चित करते हैं। जिसके अनुसार उम्मीदवार अपनी योजना पर अमल करने वाला है और शिक्षक निर्णय प्राप्त करने में मदद करता है।

इस शैली में शिक्षक निर्देशक कम और सहयोगी अधिक होता है। निर्णय लेने में वह उम्मीदवार को शामिल करता है। यह नेतृत्व शैली सहयोगी (Supporting) है। और उम्मीदवार विकास के तीसरे दर्जे में होता है।

४. जब उम्मीदवार एक विशेषज्ञ (Expert) बन जाता है, तो शिक्षक उसे ज़िम्मेदारी सौंप देता हैं। वह कह सकता है, "उस जेकपॉट ट्रॉफी की तरफ देखो, मैं इसे अपने मेज पर देखना चाहता हूँ जाओ और इसे प्राप्त करों।" यह अधिकार (Delegating) सौपने वाली नेतृत्व शैली है और उम्मीदवार विकास की चौथे स्तर में है।

दूसरा उदाहरणः-

१. जब एक नया उत्साही विदयार्थी क्रिकेट सीखने आता है, तो शिक्षक उसे प्रत्येक वस्तु का निर्देश देता है। जैसे बेट कैसे पकड़ा जाय? गेंद कैसे पकड़ा जाय? और विकेट के सामने क्रिज के अंदर कैसे खड़ा होना होता है? इत्यादि।

शिक्षक निर्देशित (Directing) नेतृत्वशैली प्रयोग में लाता है। वह कहता है, कैसे किया जाए? क्या किया जाए? इत्यादि तथा विदयार्थी विकास की पहले स्तर में है।

२. जब विदयार्थी मूल कौशल (Basic Technic) सीख लेता है तो वह महसूस करता है कि क्रिकेट एक कला है और कठिन तकनीक है। उसका भ्रम कम हो जाता है। उसका मनोबल और जोश घटने लगता है। तब उसका शिक्षक उसके मनोबल व आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करता है तथा क्रिकेट की बेहतर तकनीक सिखाता है। जैसे की तेज गेंद कैसे फेंकी जाए या उसका सामना कैसे किया जाए? अथवा गुगली को विभिन्न प्रहारों से कैसे जोर से मारा जाय? कैसे दौडा जाय और सबसे महत्वपूर्ण अपने को चोट आदि से कैसे बचाया जाय इत्यादि। शिक्षक निर्देश देता है, उसके साथ-साथ सही मोड पर प्रशंसा भी करता है। खिलाडी की बात सुनता है। गेंद फेंकने और प्रहार करने इत्यादि में सामने आने वाली समस्याओं की व्याख्या करता है। और उसपर चर्चा करता है और उसके मनोबल को बढ़ाने, रुचि को पैदा करने की कोशिश करता है। यह शैक्षिक नेतृत्व शैली है। शिक्षक निर्देशित अधिक और सहयोगी

नेतृत्व शैली कम प्रयोग करता है तथा विदयार्थी विकास के दूसरे स्तर में है।

३. जब खिलाड़ी कॉलेज, यूनिवर्सिटी, राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलने में सक्षम हो जाता है तो शिक्षक और खिलाड़ी आपस में मिलजुल कर रण नीति (Strategy) निश्चित करते हैं। वे प्रतिद्वंदी टीम (Opposite team) की योग्यता की समीक्षा करते हैं। उनकी विशेषताएँ, उनकी कमियाँ-कमजोरियाँ, पिच की दशा, उन्हें बेटिंग पहले करनी चाहिए अथवा फिल्डिंग लेनी चाहिए इन सभी मुद्दों पर चर्चा करते हैं और रण नीति निश्चित करते है।

शिक्षक खिलाडी को निर्णय लेने में सहयोग करता है। ऐसी दशा में शिक्षक निर्देश कम देता है और निर्णय लेने में सहयोग अधिक करता है। यह सहयोगी नेतृत्व शैली है तथा खिलाडी विकास की तीसरे स्तर में है।

४. जब खिलाडी सुनील गावस्कर की तरह हो जाता है, तो शिक्षक अपनी टाँग मेज पर फैलाकर कहता है, "मैं इस वर्ल्ड कप को अपनी मेज पर चाहता हूँ, जाओ और उसे प्राप्त करो और उसे कैसे प्राप्त करना है यह तुम तय करो।"

शिक्षक अधिकार सौंपने की नेतृत्व शैली अपनाता है और खिलाड़ी विकास के चौथे स्तर में है।

हमे नेतृत्व-शैली कैसे प्रयोग करनी चाहिए?

- मान लो आप उच्च सक्षम एवं योग्य और पूर्ण रुप से जिम्मेदार व्यक्ति को अपने संगठन में ऊँची तनख्वाह देकर नौकरी पर रखते हो। इस पुस्तक के सिद्धांत के अनुसार एक नये और कम्पनी के कामों से अपरिचित व्यक्ति से निर्देशित (Directing) नेतृत्व शैली प्रयोग होनी चाहिए। इसलिए आप नजदीक से उसे निर्देश देना और परखना शुरु करते हों। वह उम्मीदवार आप के बारे में क्या सोचेगा।

  वह सोच सकता है, कि 'यह बेवकूफ आदमी मेरे जैसे योग्य और अनुभवी व्यक्ति के पीछे-पीछे एक बच्चे की तरह घूम रहा है। इसे मुझ पर कोई विश्वास नहीं यह कितनी निराशजनक बात है यह।'

  उसी उच्च सक्षम एवं योग्य जिम्मेदार व्यक्ति को यदि आप जिम्मेदारी सौंपते हो और अपने सिद्धांत के अनुसार उसे अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अकेला छोड़ देते हो, तब वह क्या सोचेगा?

  वह सोचेगा, 'यह बेवकूफ मुझे नज़रअंदाज कर रहा है', इसने मुझे इतने ऊंचे वेतन पर नौकरी पर रखा और इसे इसकी बिल्कुल परवाह नहीं के मेरा और मेरे काम का कुछ ख्याल करें। वह मुझे नज़र अंदाज कर रहा है।

- इस प्रकार कोई भी नेतृत्व शैली आप प्रयोग करते हो, तो उसका नतीजा उसके विपरीत होता है। तब आप क्या करोगे?

  आपको अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ बातचीत करके, आपको उसे जागरुक करना होगा अर्थात आप को उसे समझाना होगा की, आप उसके साथ कौनसी नेतृत्व शैली उपयोग करेंगे और क्यों।

  नये कर्मचारी को मालूम होना चाहिए कि उसके कंपनी के साथ अनजानेपन के कारण उस के साथ

निर्देशित नेतृत्व शैली का प्रयोग किया जा रहा है, और जैसे ही उसे जानकारी प्राप्त हो जाएगी, उसे जिम्मेदारी सौंप दी जाएगी।

इसलिए एक मैनेजर को मानसिक रुप से किसी भी प्रकार की नेतृत्व-शैली प्रयोग करने के लिए तैयार होना चाहिए। उसने कर्मचारी के विकास का स्तर परखना चाहिए और उसी प्रकार कि नेतृत्व शैली का प्रयोग करना चाहिए। फिर उसने कर्मचारियों के साथ वार्तालाप करके इस बात से सहमत करना है कि उनके लिए किस प्रकार कि नेतृत्व शैली का प्रयोग किया जा रहा है और क्यों? कर्मचारी और मैनेजर दोनों को इसकी पूर्वकल्पना होनी चाहिए।

एक ही व्यक्ति के लिए विभिन्न स्थितियों में विभिन्न नेतृत्वशैली

- अब एक बार फिर क्रिकेटर का उदाहरण लेते हैं। शिक्षक ने सुनील गावस्कर को विकास के चौथे दर्जे के लिए ट्रेंड किया है और क्रिकेट टुर्नामेंट जीतने के लिए उसके साथ अधिकार सौंपने की नेतृत्व शैली प्रयोग की और कहा, 'उस ट्रॉफी को देखो, मैं इसे अपने मेज पर चाहता हूँ। जाओ और इसे जीत कर लाओ।'

- अब मान लो वही खिलाड़ी (सुनील गावस्कर) उसी शिक्षक (ट्रेनर) से बॉक्सिंग सीखना चाहता हैं। क्या ट्रेनर बॉक्सिंग टूर्नमिंट जीतने के लिए शुरु से ही वही नेतृत्व शैली प्रयोग करेगा?

  क्या वह फिर मेज पर अपनी टाँग फैलायेगा और गावस्कर से कहेगा 'उस माइक टाइसन की ओर देखो, मैं उसका नीचे का जबड़ा अपनी मेज पर चाहता हूँ, जाओ उसे उखाड़ लाओ।'

- यदि वह ऐसा कहता हैं, तो मुझे पूरा विश्वास है गावस्कर अपने दोनों जबड़े खो देगा। शिक्षक (कोच) उसी विदयार्थी के साथ विभिन्न स्थितियों में शुरु से वही नेतृत्व शैली प्रयोग नहीं कर सकता हैं।

  शुरु में शिक्षक गावस्कर को निर्देश देगा, तब उसे खेल के लिए ट्रेंड करेगा, फिर उसे मदद करेगा तथा जब गावस्कर बॉक्सिंग में माहीर (Expert) हो जाऐगा उसके बाद उसे अधिकार सौंपेगा।

- इसी प्रकार एक मैनेजर को अलग-अलग कार्यों के लिए उसी एक व्यक्ति के साथ भिन्न भिन्न प्रकार की नेतृत्व शैलीयाँ प्रयोग करनी पड़ती है, और उसके विकास के स्तर के अनुसार भी अलग-अलग कार्य के लिए भिन्न भिन्न नेतृत्व शैलियाँ प्रयोग करता है।

अंतिम शब्द (Last word)

६० वर्ष उम्र का बुद्धिमान व्यक्ति मैंने जो वर्णन किया है उसीप्रकार किसी से भी बिना सीखे व्यवहार कर सकता है तो इस पुस्तक में नया क्या है?

- मूलतः यह पुस्तक नौजवान साहसी व्यापारियों के लिए लिखी गई है। यह प्रभावशाली मानवीय संबधों और मार्गदर्शन के लिए केवल याद रखने का एक संदेश है, एक पथ प्रदर्शक है। २०-३० वर्ष की आयु में सामान्यतः युवा पीढ़ी में महान अलेक्झेंडर की तरह उत्साह और विश्वास होता है। उन्हें अपने ऊपर

जरुरत से ज्यादा विश्वास होता है, वे अकेले अपने विचारों और दर्शन के अनुसार पूरी दुनिया को जीतने का भरोसा रखते हैं। जब वे ऐसा कर रहे होते हैं तो कभी-कभी वे मानवीय संबधो की हद पार कर जाते हैं, इसके कारण अत्याधिक हानि और विनाश होता है। तथा इसे सही करने का वक्त भी निकल जाता है।

मैंने कुछ उदाहरण देखे हैं, जिसमें नौजवान व साहसी पुत्रों ने जरुरत से ज्यादा विश्वास के कारण अपने पिता द्वारा स्थापित संगठनों को नष्ट कर दिया।

इसलिए यदि आप महत्वाकांक्षी और साहसी हो, तो जिंदगी में सभी सफलता आप को मिले ऐसी मेरी शुभकामना है। यदि इस पुस्तक में वर्णन की गई दार्शनिकता से आपका गहरा मतभेद है, तो अपने बढ़ते कदमों पर नज़र रखें, क्योंकि ये दार्शनिक विचार समय-समय पर खरे उतरे हैं तथा व्यापार-प्रबंधन के जानकारों द्वारा सही ठहराए गए हैं।

****

अध्याय - २०
सफल लीडर कैसे बने?
(How to be a Successful Leader)

- एक सफल लीडर बनने के लिए दो महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

१) लोग आप को पसंद करें।

२) लोग आप का आदेश मानें।

प्रशंसा कैसे प्राप्त करें? (How to get admired?)

लोग आपको पसन्द करें, इसके लिए निम्नलिखित बातों की ज़रुरत है।

१) लोगों का स्वभाव (मानसिकता) (Psychology) समझे और उसके अनुसार व्यवहार करें।

२) अपने चरित्र और स्वभाव को और अच्छा बनाएं।

मनोविज्ञान क्या हैं? (What is human Psychology)

अच्छे तरीके से व्यापार चलाने के लिए हमें मानव स्वभाव के बारे में कम से कम कुछ तथ्य जरुर मालूम होने चाहिए। वे निम्नलिखित है।

१) प्रत्येक व्यक्ति के लिये संसार में किसी भी अन्य वस्तु की तुलना में वह स्वयं सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

२) वह स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है।

३) उस में प्रशंसा की बहुत चाह है।

४) इन्सान मन से बड़ा ही कृतघ्न हैं।

उपर्युक्त तथ्यों की विस्तृत व्याख्या निम्न प्रकार से की गई है:-

स्वंय को सबसे महत्वपूर्ण समझना:- (Self Importance)

मनुष्य सबसे अधिक महत्व अपने आप को ही देता है। उस के सर में होने वाला हलका सा दर्द उस के लिए विश्व के किसी भाग में मरने वाले हजारों लोगों से अधिक महत्वपूर्ण है।

एक टेलीफोन कंपनी द्वारा जब टेलिफोन की बातचीत का विश्लेषण किया गया तो यह मालूम हुआ कि सबसे अधिक समान्यतः बार-बार दोहराने वाले शब्द मैं, मेरा, मुझे है। प्रत्येक व्यक्ति अपने बारे में बात करना सब से अधिक पसन्द करता है।

श्रेष्ठता:- (Superiority)

संसार में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष दूसरों से स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। गोरे व्यक्तियों का विश्वास होता है कि उनका जन्म अफ्रीकन और आशियाई लोगों पर राज्य करने के लिये हुआ है। इस तथ्य के अंतर्गत यूरोपियों ने कोशिश भी की और किसी सीमा तक पूरे संसार को अपने नियंत्रण में रखने में सफल भी हुए। जापानी अपने आप को यूरोपियों से श्रेष्ठ समझते हैं। जापानियों ने अपना पूरा तकनीकी साहित्य अपनी भाषा में लिखा है और यदि एक जापानी लड़की यूरोपियन के साथ डांस करती हैं, तो वे क्रोधित हो जाते हैं। अफगान के लोग समझते है कि असली खान केवल वे ही हैं। और भारत के खान नकली हैं। इसाई समझते हैं कि पवित्र कुरआन पवित्र बायबल से संकलित की गई थी इसलिए केवल उनका विश्वास और मार्ग ही उचित है। मुसलमान समझते हैं कि दूसरे सब लोग गुमराह हैं।

हिन्दु सभी मासांहारी को मलेच्छ कहते है जिसका अर्थ है गन्दे लोग। ब्राम्हण अपने को दूसरे सबसे श्रेष्ठ समझते हैं तथा धार्मिक शिक्षा और ज्ञान को सिखाना अपना अधिकार समझते हैं।

इस प्रकार इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को किसी भी तरह से दूसरे लोगों से अधिक श्रेष्ठ तथा अधिक पवित्र समझता है।

इसमें कुछ भी गलत नहीं है। यह मानवीय स्वभाव है। हमें बस इसे याद रखना है कि अगर कोई घमंड से बात करता है तो यह उस की गलती नहीं है, बल्कि यह उस स्वभाव के साथ पैदा हुआ है।

प्रशंसा की चाह :- (Craving for recognition)

गोपाल ने एक हीरे की अगूँठी खरीदी और उसे अपनी अँगुली में पहन लिया। लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए जब कभी भी वह बात करता अपना हाथ और उंगली हवा में लहराता, कि लोग उस सुंदर अगूँठी को देख सकें और उसकी प्रशंसा करें लेकिन किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

गोपाल इतना अधिक निराश हुआ कि उसने अपने घर को आग लगा दी। पड़ोसी पानी की बाल्टियाँ लेकर आग बुझाने के लिए दौड़ते हुए आए। गोपाल उनके बीच में खड़ा हो गया और अपनी उंगली से निर्देश देना शुरु किया, पानी यहाँ ड़ालों, वहाँ आग बुझाओ, वगैरह-वगैरह।

इस बीच एक पड़ौसी ने उसकी अगूँठी को देखा और एकाएक कहा "अरे गोपाल तुम्हारी अगूँठी तो बहुत खुबसूरत है।" गोपाल ने कहा "मेरे दोस्त! अगर तुमने यह मुझे पहले कहा होता, तो मैं अपने घर को आग न लगाता।"

यह एक चुटकुला है, लेकिन इससे मानवीय स्वभाव पूर्ण रुप से समझ में आता है।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जो मुश्किल से अपने परिवार की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करता है। और ३५० Sq.ft के किराये के एक छोटे से फ्लैट में अपने छह बच्चों के साथ रहता है। किसी तरह उसकी आमदनी बढ़ गई। कल्पना करो, उसने इस अतिरिक्त धन का क्या किया है? क्या उसने अपने बच्चों को बेहतर स्कूल में भेजा। एक फ्लैट अथवा वर्कशाप खरीदी? नहीं। उसने एक शानदार और मंहगी कार खरीदी?

अनुमान लगाओ, क्यों?

मनुष्य को प्रशंसा की प्रबल इच्छा होती है। वह पहचान मिले और सम्मान मिले और लोग उसे जानें पहचानें, इसके लिए वह पागल हो जाते हैं। लोग दिखावे के लिए आधुनिक व फैशनेबल कपड़े पहनते हैं। अपने फ्लैटस और बंगलों को जरुरत से ज्यादा सजाते हैं। पार्टियों में अत्याधिक खर्च करते हैं। महंगी कारें खरीदते और परम्परावादी समाज में अति आधुनिक जीवन शैली अपनाते हैं। केवल अपनी अलग पहचान बनाने के लिए, इन सब का कारण पहचान, पहचान और केवल पहचान, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं।

वास्तव में वे चिल्ला-चिल्ला कर कहना चाहते हैं, 'मेरी ओर देखो, मैं सबसे अधिक आधुनिक, सबसे ज्यादा उन्नत, सबसे अधिक सुसंस्कृत, सबसे अधिक समृद्ध व्यक्ति, हर तरह से तुम्हारे से बेहतर हूँ!' लेकिन वे शर्मा जाते हैं और केवल अपनी वस्तुंओं का प्रदर्शन करके अपने मन का संदेश भेजते हैं।

यदि आप अपने संगठन में ऐसे व्यक्ति को नौकरी पर रख रहे हो, तो उसे पहचानो और दिल खोल कर उसकी प्रशंसा करो। अन्यथा अपनी पहचान प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी जला ड़ालेगा। मेरा विश्वास करो, मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ।

एहसान फरामोश (कृतघ्नता) (Ungratefulness)

क्या आप जानते हो कि इस संसार के महान निर्माता ईश्वर अपने उत्पाद के बारे में क्या कहता हैं? वह पवित्र कुरआन में कहता है।

'मैं निश्चित तौर पर कहता हूँ कि इन्सान अपने ईश्वर के प्रति एहसान फरामोश है।'

(पवित्र कुरआन १००:६)

ईश्वर से ज्यादा मनुष्य के स्वभाव को और कौन जानता है?

एक बार हजरत ईसा ने दस कुष्ठ रोगियों का इलाज किया। जैसे ही वे स्वस्थ हो गए, वे खुशी से उछल पड़े और वहाँ वे भाग गए। कुछ समय पश्चात् उन दस में से केवल एक वापिस आया और हजरत इसा को धन्यवाद दिया। दूसरे नौ ने कभी उनका आभार नहीं माना।

हम न तो हजरत ईसा हैं और न ही हम कोढ़ियों के इलाज जैसा कोई महान कार्य करते है। इसलिए दस में से एक भी वापिस नहीं आएगा और न ही हमें धन्यवाद देगा। यह मानव स्वभाव है। इसलिए हमें लोगों से आभार की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

- ईश्वर कहते हैं;

'आपके बीच में लोगों का एक समूह होना चाहिए, जो लोगों को सही रास्ता बताए और उन्हें गलत काम करने से रोके। केवल वे जो यह करेंगे, वही सफल होंगे।' (पवित्र कुरआन ३:१०४)

हालांकि मानव स्वभाव में अनेक कमियाँ हैं, फिर भी दोनों जहान (इस लोक और परलोक) में अपनी सफलता के लिए, हमें उन लोगों के समूह में रहना चाहिए, जो हमेशा दूसरों का अच्छा करते हैं, हमेशा अच्छे कार्यों के लिए सीख देते हैं और उनकी गलतियों के बारे में उनको सावधान करते हैं।

- अब मानव स्वभाव के बारे में हमें कुछ जानकारी हो चुकी है। अब हम पढ़ेंगे कि हम लोगों के प्रिय और सफल नेता कैसे बनें?

लोगों पर प्रभाव किस तरह डालें? (How to Influence people?)

- **समझदारी से बात करें (Logical Talking)**

लोगों से व्यवहार करते समय कुछ महत्वपूर्ण सूचना निम्नलिखित है।

ईश्वर कहता है,

- **ऐ मुहम्मद उनको तर्क तथा बुद्धि के साथ उपदेश दो।** (पवित्र कुरआन १ ६:१ २ ५)
- **हमेशा आप भाषण सद्भावना के साथ दें।** (पवित्र बायबल कोल ४:६)
- **आपका वार्तालाप हमेशा बिना लालच के हो।** (पवित्र बायबल हेब १ ३:५)

समझदारी और सद्भावना के साथ बात करना लोगों की प्रशंसा पाने की ओर पहला कदम है।

- **कभी अपमान न करें (Never Condemn)**

जब आप किसी व्यक्ति कि निंदा करते हो, तो आप सीधे सीधे उसकी श्रेष्ठता (Superiority) को चुनौती देते हो, और यह नकारात्मक प्रशंसा है। यह उनके मौलिक स्वभाव के विपरीत है, इसलिए लोग तीव्रता से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वे अपने पक्ष की रक्षा करते हैं, चाहे वे गलत ही क्यों न हों, क्योंकि यही एक रास्ता है, जो उनके अहं (Ego) को बचाता है। यदि आप उसके लाभ और सुधार के लिए निंदा करते हो, तब भी वह इसका दूसरा अर्थ निकालेगा। वह निराश, नफरत से भरा, हठधरम और जिद्द में रहता है। वह इस घटना को अपने मन में रखेगा और भविष्य में जब भी अवसर मिलेगा तो बदला लेगा। यदि आप चाहते हो कि कोई आप से नफरत न करे, तो किसी की भी निंदा अथवा अपमान न करें।

- **लोगों की प्रशंसा करें (Appreciation)**

लोगों की प्रत्येक सफलता अच्छे काम तथा अच्छे प्रदर्शन की ईमानदारी और दिल से प्रशंसा करें। चापलूसी और प्रशंसा में अंतर है। चापलूसी अथवा झूठी प्रशंसा से लोगों में झुँझलाहट पैदा करती है, जबकि जायज़ प्रशंसा उन्हें खुशी की नई ऊँचाई पर पहुँचा देता है। लोग उन्हें पसंद करते हैं, जो उनके कठिन परिश्रम की कीमत को समझते हैं।

- **मुस्कराता चेहरा (Smile)**

यह चीनी कहावत है कि, जिस आदमी के चेहरे पर मुस्कराहट न हो उसे दूकान नहीं खोलनी चाहिए।

जब आप मुस्कराते हो, तो आप अप्रत्यक्ष रुप से कह रहे होते हो कि मैं आप को पसंद करता हूँ।

आपने मुझे खुश कर लिया।

मैं आपको देखकर खुश हूँ। इत्यादि।

आपके इस भाव से दूसरा व्यक्ति बहुत खुश होता है और सकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। संपूर्ण प्रक्रिया एक मित्रता का वातावरण बनाती है।

पालतु पशुओं में सबसे अधिक कुत्तों को पसंद किया जाता है, लेकिन क्यों?

क्योंकि वे बहुत ज्यादा खुशी प्रकट करते हैं, जब वे अपने मालिक से मिलते हैं। इसलिए मालिक भी किसी अन्य जानवर से अधिक उससे प्यार करते हैं।

इसलिए आप भी मुस्कराओ और जब भी किसी से मिलो अपनी अच्छी भावनाएँ प्रकट करो। यदि आप ऐसा करते हो तो मेरा ऐसा कहने का अर्थ नहीं है कि लोग आप को अपने पालतू कुत्ते की तरह प्यार करेंगे, मेरा कहने का यह अर्थ है कि वे आप को बिना मुस्कराहट के रुखे चेहरे वाले लोगों से अधिक पसंद करेंगे।

मुस्कराहट रिश्तों के बीच की दूरियों को दूर कर देती है। यह अपनेपन और भाईचारे का वातावरण पैदा करती है। सामान्यतः लोग उन्हें पसंद करते हैं और अपना सहयोग उत्साहपूर्ण देते हैं, जिनके चेहरे पर वास्तविक मुस्कराहट रहती है। इसलिए जोश और मुस्कराहट के साथ लोगों का स्वागत करें।

- **बातचीत (वार्तालाप) कैसे करें: (Conversation)**

यदि आप किसी को बातचीत से प्रभावित करना चाहते हो, तो उस से बात करते समय ऐसा विषय चुनो, जो उसके लिए दुनिया में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो। आप जानते हो कि दूसरे व्यक्ति के लिए दुनिया का सब से अधिक महत्वपूर्ण विशेष क्या है? यह उस का खुद का व्यक्तित्व है। हर आदमी सब से अधिक अपने बारे में बात करना चाहता है। इसलिए अगर आप किसी को प्रभावित करना चाहते हो तो उसे अपने बारे में बात करने दो और उसी की बात गौर से सुनो।

अपनी शब्दावली से 'मैं' 'मुझे' 'मेरा' 'मुझको' यह शब्द हटा दें, और उनकी जगह 'तुम' 'तुम्हारा' इत्यादि शब्दों का प्रयोग करें।

अगर कोई व्यक्ति घंटो आप से बात करे और आप उसकी बात को ध्यान से सुनते हो, तो वह आप को पसंद करेगा, क्योंकि धैर्यपूर्वक उनको सुनना उन्हें महत्ता की अनुभूति प्रदान करता है। वे सोचते हैं कि कम-से-कम कोई तो इस दुनिया में है, जो उनकी उपलब्धि और उनकी ओर ध्यान देता है।

- **नाम में क्या है? : (What is in name?)**

सबसे अधिक मधुर आवाज जो किसी के कान के लिए अगर है, तो वह है उसका नाम। जब कोई किसी को उनके नाम से पुकारता है और इसका सही उच्चारण करता है तो लोग सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसलिए यदि आप किसी के दिल में अपनी जगह बनाना चाहते हो, तो उसका नाम याद रखो

और उसका सही रुप से उच्चारण भी करो।

- **उच्च चरित्र व नम्र स्वभाव रखना। : (Have noble character and soft nature)**

आप किसी को एक बार बेवकूफ बना सकते हो, लेकिन आप किसी को हर समय बेवकूफ नहीं बना सकते। केवल अभिनय करके आप लंबे समय तक अपने मित्रों और साथियों के सामने अपना व्यक्तित्व पवित्र और आदरणीय नहीं रख सकते हो। अंततः लोग एक-न-एक दिन नकाब के पीछे के असली चेहरे को पहचान लेंगे। यदि आप समाज में स्वीकृति और प्रशंसा चाहते हो, तो मौलिक रुप से महान चरित्र और मधुर स्वभाव अपनायें।

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है,

'ऐ मुहम्मद तुम महान चरित्र के हो।' (पवित्र कुरआन ६८:४)

'ऐ मुहम्मद आपका स्वभाव कोमल और मधुर है, यही वजह है कि आपके साथी आप को छोड़ कर नहीं जाते हैं।' (पवित्र कुरआन ३:१५९)

लोग आपका अनुकरण कैसे करेंगे? : (How to get Followed?)

- यदि लोग आप को पसंद भी करते हैं प्यार भी करते हैं, फिर वे आप की आज्ञा नहीं मानते, अथवा आपका निर्णय मंजूर नहीं करते हैं। तो कैसे आप उन पर नियंत्रण रखोगे और अपना अनुयायी बनाएंगे?

प्रभावशाली नेतृत्व के लिए कुछ टिप्स इस तरह हैं।

- कॉलिज में आप इतना कठिन परिश्रम से अध्ययन क्यों करते हो? आप अपने ऑफिस अथवा वर्कशॉप में इतना कठिन परिश्रम क्यों करते हो?

- आप इतने कठिन परिश्रम से अध्ययन करते हो, क्योंकि आप व्यावसायिक कोर्स (Professional courses) में दाखिला पाने तथा आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो। आप अपने ऑफिस अथवा वर्कशॉप में कठिन परिश्रम करते हो, ताकि आप हर प्रतियोगी को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ो।

आप की एक ज्वलंत इच्छा थी इसलिए आपने कठिन श्रम किया। वह चीज जिसने आप को कठिन परिश्रम करने के लिए विवश कर दिया था वह ज्वलंत इच्छा थी और यही सफलता का रहस्य है।

यदि आप दूसरे व्यक्ति के मन में ज्वलंत इच्छा जाग्रत करने में समर्थ हो जाते हो, तो वह आप की उम्मीद से ज्यादा कड़ी मेहनत करेगा। उसे धकेलने अथवा फुसलाने की ज़रुरत नहीं पड़ेगी। यदि आप चाहते हो कि आप के सहयोगी कठिन श्रम करें, तो उनमें इच्छा जाग्रत करो।

यदि आप अपने सहयोगियों में उत्पादकता में कमी, कुशलता में कमी, अथवा उत्साह में कमी पाते हो तो उनके सामने चुनौती रखों। अथवा ऐसा वातावरण पैदा करो कि उनके सामने चुनौती हो। ऐसा

वातावरण पैदा करो कि उनके बीच में आगे बढ़ने की प्रतियोगिता हो। उन्हें स्वयं ऊंचा लक्ष्य चुनने में मदद करें, उन्हें उसे पूरा करने में मदद करें और जब वह उसे पाले तो आप उन की दिल खोल कर प्रशंसा करें, उन्हें सम्मानित करें।

- कर्मचारी जब महसूस करते हैं कि उनके अच्छे कामों की ओर कोई ध्यान नहीं देता है, और कोई उनकी प्रशंसा नहीं करता है, लेकिन जैसे ही कोई गलती होती है, तो उन्हें हर एक के सामने तुरंत अपमानित किया जाता है। तो उनका दिल टूट जाता है और उनका उत्साह खत्म हो जाता है।

  अच्छे कार्यों को नज़र अंदाज करना और सबके सामने कर्मचारी की गलतियों के लिए उन पर भड़कना और उनका उपमान करना यह कुछ गंभीर गलतियां हैं जो एक लीडर मालिक या मेनेजर करता है।

- आदर्श लीडर अपने सहयोगियों की प्रशंसा करने के बहाने ढूंढता रहता है और यदि वे गलतियाँ करते हैं, तो उन्हें अपनी गलतियाँ सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

- एक प्रभावशाली लीडर अपने कर्मचारी को अपने केबिन में बुलाता है अथवा जहाँ कोई उनकी बातचीत न सुन सके और फिर उसका ध्यान अप्रत्यक्ष रुप से उसकी गलतियों की ओर दिलाता है। एक अच्छा नेता दूसरों की आलोचना करने से पहले अपनी स्वयं की गलती के बारे में बात करता है।

- एक अच्छा लीडर सीधे तौर पर (प्रत्यक्ष रुप से) आर्डर देने के बजाय प्रश्न पूछता है। उदाहरण के लिए, यदि उसका पेन जमीन पर गिरता है, तो सीधा ऑर्डर देने यानि 'इसे उठाना' यह कहने के बजाय वह पूछेगा, 'क्या आप मेरा पेन उठा सकते हो?' इसी काम के लिए पहली क्रिया सीधा आदेश था। लेकिन दूसरी क्रिया भी आदेश है लेकिन विनती के रुप में थी, अथवा मेहरबानी के स्वरुप में थी। किसी को भी सीधे आदेश का पालन करना पसंद नहीं है हर एक को दूसरे के ऊपर मेहरबानी करना पसंद है क्योंकि इससे उनका महत्व बढ़ता है। इसलिए सीधे आर्डर देने के बदले प्रश्न पूछें।

- एक अच्छा लीडर बिना किसी शर्म अथवा संकोच के अपनी गलती स्वीकार करता है।

- एक योग्य और समर्थ लीडर अपने कर्मचारियों को प्रेरित करता है, उत्साहित करता है और आसानी से उन्हें अपनी गलती को सुधारने में मदद करता है।

कुछ असामान्य उपदेश :

५०० बी.सी. में लाओ त्सू (Lao Tzu) एक चीनी दार्शनिक था। उसने चीन के राजनीतिज्ञों और शासकों के लिए 'ताओ टी चींग' (Tao Te Ching) नाम की एक किताब लिखी। कई लेखकों ने उसका अँग्रेजी में अनुवाद किया है। जॉन हईडर ने इनको संकलित और संक्षिप्त करके एक सरल और सुंदर पुस्तक ताओ ऑफ लीडरशीप (Tao of Leadership) शीर्षक से प्रकाशित की है। ताओ ते चिंग से कुछ थोडे से दार्शनिक विचारों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है।

लाओ त्सू कहते हैं, 'एक लीडर को एक दाई अथवा नर्स की तरह काम करना चाहिए।'

एक नर्स बच्चे का जन्म कराने में मदद करती है, वह कोशिश करती है कि प्रसव दर्द (Labour pain) कम से कम हो और बच्चे को सुरक्षित बाहर लाने की कोशिश करती है। हालांकी दाई अथवा नर्स का कार्य बहुत ही जटिल और महत्वपूर्ण है, लेकिन जब बच्चे का जन्म हो जाता है, तो माँ कहती है, 'मैंने बच्चे को जन्म दिया है।' कोई भी दाई अथवा नर्स का नाम नहीं लेता है।

इसी प्रकार एक लीडर को भी कार्य को पूरा करने की अपने अनुयायियों के दिल में तीव्र इच्छा पैदा करनी अथवा जगानी चाहिए। फिर कार्य सरल करें और काम करने में सहायता करें। जब काम पूरा हो जाय, तो अनुयायियों और सहायकों को कहने दें कि, यह काम हम ने किया है। एक लीडर को अकेले काम पूर्ण होने का श्रेय (Credit) नहीं लेना चाहिए।

जब एक लीडर अच्छे काम का श्रेय स्वयं नहीं लेता है और आर्थिक व्यवहार में ईमानदार और नेक रहता है, तो आदर-मान तथा समृद्धि दोनों उसकी ओर खींची चली जाती हैं।

नम्र, समझदार, निर्लोभी, आवभगत करने वाला और सेवा भावी आदि गुणों के कारण ही लीडर को श्रेष्ठता प्राप्त होती है।

Greatness comes from knowing how to be lowly, empty, receptive and of service.

आक्रमक, उत्तेजित, जरुरत से ज्यादा अभिनय करने वाला, उददंड और हठी व्यक्ति, जोशीले भावुक तथा सनकी लोगों का नेतृत्व कभी नहीं कर सकता। ऐसे लोगों के समूह का नेतृत्व करने के लिए लीडर को विनम्र, सेवा भाव होना ही चाहिए, जब एक नदी पहाड़ी से नीचे आती है, तो यह जोश में और तेज बहाव में होती है, लेकिन जब वह नदी शांत स्वीकार करनेवाले सागर से जाकर मिलती है तो वह समुद्र के अनुरुप ही अपने को ढ़ाल कर शांत और मौन हो जाती है।

एक बुद्धिमान लीडर हमेशा सेवा भावी, समर्पित और दूसरों की बात को ध्यान से सुनने वाला होता है। एक समूह में जिस में कर्मचारी या अनुयायी बहुत ज्यादा उत्तेजित होते है। लीडर या मॅनेजर पहले सब की बात सुनता है। वह खुद उत्तेजित नहीं होता है। और सब को शान्तिपूर्वक बाते समझाता है। अगर लीडर बुद्धिमान है और उसके तर्क में सुझाव में दम होगा तो लोग धीरे-धीरे उसकी बात की महत्ता को समझते पहचानते है और आखिर में उस का हर आदेश मानते हैं। जैसे उत्तेजित नदी समुद्र में समा जाती है उसी तरह उत्तेजित लोगों की सोच भी बुद्धिमान और शांत लीडर की तरह समझदारी वाली हो जाती है।

यदि लीडर स्थिर, और दरमियानी रास्ते चलने वाला, नम्र स्वभाव, सेवाभावी वृत्ति रखनेवाला, समझदार और अनुकरणशील होगा तभी लीडर की जागरुकता कर्मचारियों की जागरुकता पर नियंत्रण कर सकती है।

यदि हम किसी चीज को अधिक और अधिक, बार-बार करने का प्रयत्न करें, तो उसका प्रभाव पूर्ण विपरीत होता है अथवा विरुद्ध गुणधर्म प्रकट होते है।

उदाहरण के लिए, अधिक खूबसुरत होने के बहुत अधिक संघर्ष में व्यक्ति बदसूरत दिखलाई देता है। जीवन के प्रति अधिक मोह मृत्यु के भय को बढ़ा देता है। इसलिए हमारा नज़रिया मर्यादा में होना चाहिए तथा बीच के रास्ते पर चलना चाहिए और हमें अति (Extreme) से बचना चाहिए।

- एक लीडर को शांत रहना चाहीए। तथा घमंड और अहंकार से दूर रहना चाहिए। उसे Grounded और Centered होना चाहिए, तब ही वह प्रभावशाली रुप से सनकी व अनियमित लोगों के साथ तथा मुश्किल हालात में काम करने में समर्थ होगा।

- Grounded का अर्थ है उसके पैर पूर्णतयाः जमीनपर होने चाहिए। उसने स्वयं की भावनाओं से प्रभावित हो कर या दूसरों के शब्दों के दबाव में काम नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो हम क्या कह रहे है और क्या कर रहे है नेता को उसकी पूरी जानकारी होनी चाहिए। अपनी योग्यता क्या है और हम किस योग्य है उसका हमें ज्ञान रहना चाहिए।

- Centered का अर्थ है कि किसी भी प्रकार की स्थिति में मन का एक संतुलन बनाये रखना। यहाँ तक कि काम क्रोध और झगडे के बीच में भी, जोश (Excitement) और भावना (Emotion) में भी उस संतुलन को बनाए रखना चाहिए और यही Centered होना है। जो व्यक्ति Centered तथा Grounded नहीं है, वह जोश भरी भावना और उत्तेजना के दबाव में बहक जाता है। वह निर्णय लेने में गलती करता है अथवा यहाँ तक कि मानसिक और शारीरिक रुप से बीमार भी हो जाता है।

- नियमित रुप से मौन क्रिया (Meditation) के लिए हमेशा इतना समय दीजिए की मन से भावनाएँ निकल जाएँ और मन (मस्तिष्क) शांत हो जाए।

- अत्याधिक ऑर्डर देनेवाला, निर्देश, हस्तक्षेप, नाटक करनेवाला व्यक्ति समूह ग्रुप में बुद्धि का नाश करता है। इससे आप तार्किक सोच (Logical thinking) तथा वास्तविक सूझ-बूझ में रुकावट भी होती है।

  यदि आप स्वयं को जानना और सुधारना चाहते हो, तो साधना (Meditation) करने की कोशिश कीजिए। सरल शब्दों में साधना का यह अर्थ है कि हम विश्राम की मुद्रा में अपना पूरा ध्यान अपने स्वयं के मन पर केद्रिंत करें तथा किसी भी चीज के बारे में न सोचे न ही अपनी पाँचों इंद्रियों में से किसी का प्रयोग करें।

- रॉन हालैंड अपनी पुस्तक Talk & Grow Rich में शांत रहने कि सलाह देते हैं। प्रति दिन कम से कम ३० मिनट तक मौन के लिए वह ऐसे कमरे में बैठने की सलाह देते हैं, जिसमें से आवाज़ न गुजर सके। उस कमरे में इलेक्टॉनिक घड़ी लेकर बैठें, जिस में अंको के अनुसार समय मालूम होता है। यह बहुत कठिन है कि दिमाग (मन) को ३० मिनट तक विचारों से रिक्त रखा जाए, इसलिए केवल एक मिनट के लिए कुछ भी न सोचने की कोशिश करें, फिर अगले मिनट के लिए कुछ भी न सोचने की कोशिश करें। फिर अगला मिनट और इस प्रकार करते जाएँ। इस प्रकार से ३० मिनट पूरे करें। मौन बैठना और कुछ भी न सोचना, मन में अपने आप चल रही बेकार की बातों को सोचने से रोकता है। इस प्रकार के शांत मन से हम अवचेतन मन तथा छठी इंद्रिय (Sixth sense) और ईश्वरीय अंतप्रेरणाद्वारा प्रस्तुत किए गए विचार स्पष्ट रुप से सुन और समझ सकते है।

- ईश्वर की ओर पूर्ण रुप से ध्यान लगाकार प्रार्थना करना साधना और मन को खाली करने का एक बहुत प्रभावशाली प्रकार है। यह मन और आत्मा को पवित्र करती है। धार्मिक और शारीरिक लाभ के लिए इसे प्रति दिन कम से कम आधा घंटा करें।

- एक सज्जन पुरुष श्रीमान बी.के पंत ने सन १९५९ ई में अपनी कंपनी शुरु की। उनके पास २५० से अधिक कर्मचारी थे और सन १९७५ तक अत्याधिक उन्होंने अच्छी तरह से काम किया। कंपनी को और अधिक विस्तार करने के लिए, उन्होंने सन १९७५ में बैंक से १५ लाख कर्जा लिया। फिर अचानक उनकी कंपनी में मज़दूरों की समस्या शुरु हो गई, जिसके कारण उन्हें बहुत ज्यादा आर्थिक हानि हुई तथा उनकी कंपनी बीमार (Sick Unit) घोषित कर दी। अगले २५ वर्षों तक वह टैक्स नहीं भर सके, न ही कर्मचारियों को समय पर तनख्वाह दे पाये। न लेनदारों (Material Suppliers) का समय पर पैसा चुका पाये।

जिन कर्मचारियों ने उन्हें दिवालिया होने की ओर धकेला था, शिकारी कुत्तों की तरह तनख्वाह बढ़ाने, बोनस और समय पर पैसा पाने के लिए वह अगले २५ साल तक उन के पीछे पड़े रहे।

मैंने जब उनके परिसर में व्यापार करना शुरु किया था, मेरी आमदनी इतनी कम थी कि मैं उनकी मदद नहीं कर सका। निःसहाय-सा केवल उन्हें देखा करता और जीवन के कटु अनुभव से सीख सीखता। वह सज्जन पुरुष और उनकी योग्य पत्नी मेडम गीता पंत धीरज से मानसिक यंत्रणा सहती और किसी तरह इस असहनीय दुःख को उन्होंने २५ वर्षों तक सहन किया। उनकी बेटी अनुपमा डाक्टर बनने के पश्चात् अमेरिका गई, धन का प्रबंध किया और बैंक का कर्ज़ा चुकाया, कर्मचारियों और सरकार का बकाया पैसा चुकाया तथा अपने माता-पिता को आखिरकार समय की चक्की में पीसने से बचा लिया।

जब मैं श्रीमान पंत की जिंदगी और नेतृत्व शैली का विश्लेषण करता हूँ, तो लाओ त्सू (Lao Tzu) द्वारा सुझायी गई नेतृत्च-शैली का समर्थन करता हूँ। श्रीमान पंत कभी-कभार ही कठोर बोलते हैं। वे हर एक की सुनते हैं, लेकिन उन्होंने कभी भी अपना आपा नहीं खोया और अपने सिद्धांतो पर समझौता किए बिना अपनी लढ़ाई जारी रखी।

अपने जीवन में हम उस समय निःसहाय हो जाते हैं, जब कभी अपने परिवार के सदस्यों, समाज और कर्मचारियों के साथ आमनासामना हो जाता है या बात बिगड़ जाती है। सत्ता और ताकत का प्रयोग करके या सीधे-सीधे झगड़ने से स्थिति और खराब हो सकती है। लाओ त्सू का तरीका ही ऐसी स्थिति को हल करने का एक रास्ता है।

ऐसी अनेक दार्शनिकताएँ, सिद्धांत और प्रबंधन के सिद्धांत हैं। कौन-सी अधिक प्रभावशाली है? किस का हमें अनुसरण करना चाहिए? इस प्रश्न को हम अपने ईश्वर से पूछते हैं या उन पर छोड़ देतें हैं, देखें, वह क्या कहते हैं?

'कभी उम्मीद मत छोड़ो और चिंता मत करो, यदि तुम वास्तव में ईश्वर पर विश्वास करने वाले हो, तो केवल तुम ही सफल होओगे।' (पवित्र कुरआन 3-139)

एक दूसरे स्थान पर वह कहता है,

'ईश्वर सभी मुश्किलों से आज़ादी का रास्ता बनाते हैं उनके लिए जो ईश्वर पर विश्वास रखते हैं। वह उनको ऐसे सूत्रों से खिलाते हैं, जहाँ से कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। वह उनकी सभी जरुरतें पूरी करता है।' (पवित्र कुरआन 65-23)

- सृष्टि का विधाता कहता है,

सभी प्राणि हानि में है, सिवाय उनके जो मुझमें विश्वास रखते हैं, जिनके कार्य महान हैं। जो सही रास्ता चलते है। और सब्र (धीरज) से काम लेते है। (पवित्र कुरआन 103: 1-3)

ईश्वर पर विश्वास, मानवता और धीरज यह जीवन में सफलता के कुछ अत्याधिक महत्वपूर्ण राज़ हैं। यदि आप आगे बढ़ना चाहते हो तो व्यापार में भी इन्हें अपनाना सीखो।

इसलिए आप किसी भी सिद्धांत का अनुकरण कर सकते हो। जिस किसी को भी आप व्यापार को व्यवस्थित करने और अधीनस्थ कर्मचारियों को नियंत्रित करने के लिए पसंद करते हो। लेकिन ध्यान में रखो कि वह सिद्धांत मानवता के अनुसार होने चाहिए और जो ईश्वर की दयादृष्टि और आर्शीवाद को भी आमंत्रित करनेवाले हो।

****

अध्याय-२१

निर्णय लेने की प्रक्रिया

(Decision Making)

- एक बूढा आदमी तथा उसका युवा बेटा, अपने गधे के साथ पड़ौसी शहर की यात्रा पर चल दिए। जब वे एक छोटे से गाँव से गुजरे, लोगों ने उन पर हँसना शुरु कर दिया और कहा, इन बेवकूफों को देखो, इनके पास गधा है, लेकिन उस पर सवार होकर नहीं जा रहे हैं। यह सुनकर उस बूढ़े आदमी ने अपने पुत्र को गधे पर सवार होने को कहा।

  जब वे अगले गाँव से गुज़रे, तो कुछ लोगों ने फिर हँसना शुरु किया और कहा कि, इस लड़के को जरा भी समझ नहीं है, बेचारा बूढ़ा आदमी पैदल चल रहा है और वह गधे की सवारी कर रहा है। यह सुनकर वह लड़का नीचे उतर गया और बूढ़ा गधे की सवारी करने लगा।

  जब वह दूसरे शहर से गुज़रे और लोगों ने बूढ़े बाप को गधे पर सवार देखा, तो हंसने लगे और कहा कि, बाप के दिल में बिल्कुल दया नहीं है, बेचारा लड़का पैदल चल रहा है और वह स्वयं गधे की सवारी का आनंद ले रहा हैं। यह सुनकर उस बूढ़े आदमी ने अपने बेटे से अपने साथ गधे पर बैठने को कहा। गधे के लिए दोनों का बोझ बहुत अधिक था। जब वे दूसरे लोगों के बीच में से गुजरे, तो उनमें से कुछ ने फिर उन पर व्यंग्य कसा और कहा कि वे इस बेचारे जानवर को जान से मार रहे हैं और इनके मन में गधे के लिए कोई दया नहीं हैं।

- वह बूढ़ा आदमी और लड़का यह तय नहीं कर सके कि अब क्या करें? अंततः उन्होंने एक लंबा लकड़ी का ख़म्बा लिया, उससे गधे की टाँगे बाँध दी, और उसे अपने कंधो पर उठा लिया। जब वे एक पुल को पार कर रहे थे, तो एक बहुत बड़ी भीड़ ऐसे अजीब दृश्य को देखने के लिए इकट्ठी हो गई। उनका शोरगुल, हँसने और व्यंग्य कसने के कारण गधा भयभीत हो गया और अपने आप को आजाद करने की कोशिश करने लगा और इस दौरान नदी में गिर पड़ा और डूब गया।

- यह एक काल्पनिक कहानी है, जो हमें स्कूल में पढ़ाई गई थी। लेकिन सच तो यह है कि यह काल्पनिक नहीं है। यह घटना सैकड़ों बार हमारे चारों ओर दुहराई जाती है। केवल पात्र (Characters) अलग होते हैं।

  श्रीमान जाधव एक सज्जन पुरुष थे। वह ऑफिस में एक क्लर्क के रुप में काम किया करते थे। उसके मित्र ने उन्हें सेल्समेन की नौकरी करने के लिए प्रेरित किया और कहा कि उस काम में कमीशन बहुत मिलता है, और उसे काम को छोड़ देने को कहा, जो वह करते थे। जाधव अपने मित्र के अनुसार पक्की नौकरी छोड़ कर सेल्समन की नोकरी करने लगा। लेकिन जाधव सेल्समन के रुप में सफल नहीं हुए।

  इसलिए उसके माता-पिता ने उसे लोखंड के सामान कमीशन के आधार पर छोटे वर्कशॉप्स को बेचने के लिए कहा, जो उसने किया लेकिन उनका फल (Profit) उसें उनकी उम्मीद के अनुरुप नहीं मिला।

उनकी पत्नी उन्हें अदयावत शुद्ध (Precision) और कीमती टूल्स (Tools) बेचने के लिए प्रेरित किया और उसके लिए बडे उद्योगपतियों से संपर्क करने को कहा। जाधव ने वह भी किया लेकिन अभी भी सफलता उसकी उम्मीद के अनुरुप नहीं थी।

अंततः जाधव ने बड़ी संख्या में स्टील की छड़े, सीमेंट, बालू तथा ईंटें बिल्डर्स को सप्लाई करने का निश्चय किया। इस नए कारोबार में उसे अपना भुगतान और लाभ नियमित रुप से तब तक मिलता रहा जब तक प्राजेक्ट चलता रहा। प्राजेक्ट के पूरा होने पर श्री जाधव को बिल्डर से कभी भी अपना आखिरी भुगतान नहीं मिला। जाधव ने बहुत कोशिश की तथा कानूनी और गैरकानूनी दोनों तरीकों से अपना भुगतान प्राप्त करने का पूरा प्रयास किया लेकिन अंत में उसे अपना आखिरी भुगतान नहीं मिला आखिर में सप्लायर्स का भुगतान करने के लिए जाधव को अपना फ्लेट बेचना पड़ा। जाधव ने गधे के स्थान पर अपना फ्लेट और भाग्य गँवा दिया।

- इसलिए सफल होने के लिए आप को अपना स्वयं का दृढ़ निर्णय लेना होगा और लोग कितनी ही आलोचना करें उस निर्णय पर अटल रहना होगा। प्रत्येक व्यक्ति के पास राय (सलाह) की एक अच्छी खासी संख्या होती है जिन्हें वह उन लोगों में बांटते रहते है जो उन्हें स्वीकार करते है। अगर आप दूसरों के विचारों अथवा आलोचना से प्रभावित होते हो और निर्णय बदलते हो, तो आप अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो सकते हो और न ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हो।

संसार में सभी सफल व्यक्तियों में जल्दी और दृढ़ निर्णय लेने की आदत हैं तथा इसे बदलने में वे लंबा समय लेते हैं। इसके विपरीत सभी असफल व्यक्ति फैसला लेने में लंबा समय लेते हैं और इसे बहुत जल्दी बदल देते हैं।

निर्णय कैसे लिया जाय? (How to make a Decision)

निर्णय अथवा फैसला लेने के चार चरण है:

१. सबसे पहले हमें समस्या का स्पष्ट रुप से और पूरी तरह विश्लेषण करना होगा। वह, यह है कि समस्या क्या है और हमें फैसला क्यों लेना है? यदि हम फैसला नहीं लेते हैं, तो फिर क्या होगा?

२. उसके बाद हमें विषय के बारे में सब आंकड़े (Figure) तथा तथ्य (Facts) इकट्ठे करने होंगे। तथ्य इकट्ठे करने में हम अक्सर गलतियाँ करते हैं। हम केवल उन तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो हमारे स्वभाव और मानसिकता के अनुरुप होते हैं। हम उन सभी सत्य और आंकड़ों को नकार देते हैं, जो हमारी सोच (मानसिकता) के विरुद्ध होते हैं। जबकी विशेषज्ञ यह सुझाव देते हैं, कि हमें तथ्यों को ऐसी ईमानदारी से इकट्ठा करना चाहिए, जैसे कि हम किसी दूसरे के लिए कर रहे हैं। डेल कार्नेग कहते है, यदि एक व्यक्ति सत्य को निष्पक्ष तरीके से प्राप्त करने में अपना समय खर्च करता हैं तो उसकी सारी परेशानियाँ ज्ञान की रोशनी में अपने आप कम हो जायेगी।

३. तीसरे चरण में हमें सभी संभव विकल्पों को लिख लेना चाहिए।

४. चौथे चरण में हमें सबसे अच्छा संभव विकल्प चुनना चाहिए और बिना पीछे मुड़े उस पर अमल करना चाहिए।

कुछ टिप्पणीयाँ (Few Comments)

१. एक समस्या पर लगातार सोचने से एक सीमा के पश्चात केवल गलतफहमी और परेशानी पैदा होती है। एक समय आता है जब उसके बाद और अधिक खोज और सोच हानिकारक हो जाती है। एक निश्चित समय के पश्चात हम दृढ़तापूर्वक किसी संभव विकल्प का निश्चय करें और कभी पीछे मुड़ कर न देखें।

२.क्या कोई वास्तव में उपर दिए गए चार चरणों का अनुकरण करता है? केवल बहुत कम और सफल व्यक्ति ही इन्हें करते हैं। आम व्यक्तियों में इतना अधिक धैर्य नहीं होता है। लेकिन वास्तव में समस्या को भली-भांति परिभाषित करना, आधा समाधान होता है। जैसे कोई अच्छा चित्र किसी बात को समझाने के लिए १००० शब्दों से ज्यादा प्रभावशाली होता है। इसी तरह समस्या को लिखना और उसके जवाब के बारे में सोचना यह योजनाबद्ध और स्पष्ट मार्ग है। ऐसा करने से मन बार-बार उसी चिंताओं अथवा परेशानी के बारे में नहीं सोचता है। तथा निर्णय अधिक स्पष्ट व सही रुप से और शीघ्रता से लिया जा सकेगा।

३. यदि हम नियमों का पालन करते हैं तो क्या हमारा निर्णय हमेशा सही होगा?

नहीं, ऐसा कोई उत्तम सिद्धांत नहीं है, जिसके द्वारा फैसला हमेशा सही होगा। लेकिन, यदि हम समस्या का विश्लेषण करते हैं, इसके अनेक संभव समाधानों के बारे में सोचते हैं, एक को चुनते है और दृढ़ता से इस पर कार्य करते हैं, फिर यदि हमारा फैसला गलत ही क्यों न हो, तब भी इस से अनुभव तो प्राप्त होता ही है। अगली बार हम निर्णय लेने में अधिक परिपक्व हो जाते है। जीवन सीखने की एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया हैं। कोई भी पूर्ण रुप से दोषरहित पैदा नहीं होता है। हमारे गलत निर्णय और कटु अनुभवों के द्वारा हम स्वंय में सुधार करते रहते हैं।

४.इसलिए प्रत्येक स्थिति में जब विषय हमारे जीवन से संबधित हो, तो निर्णय हमारा अपना और व्यक्तिगत होना चाहिए? हमें दूसरों से उपदेश, राय, परामर्श लेना चाहिए। लेकिन हमें वही करना चाहिए, जो हमारी सोच में, हमारे लिए सबसे अच्छा विकल्प हैं। हमें दृढ़तापूर्वक अपना स्वयं का फैसला लेना चाहिए और उसपर अमल करना चाहिए।

- कुछ कहावते जो याद रखी जा सकती हैं वह इस तरह है;

सफलता उनके लिए है, जो हिम्मत रखते हैं और इसके लिए संघर्ष करते हैं।

"Success is for those who dare and struggle for it."

अपना कर्तव्य अपनी योग्यता अनुसार सबसे अच्छी तरह करो और बाकी सब ईश्वर पर छोड़ दो।

"Do your duty best and leave the rest for God."

ईश्वर साहसी लोगों को पसंद करता है।

"God likes courageous people."

ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद स्वयं करते हैं।

"God helps those who help themselves."

कुछ कठिन फैसले:- (Few Crucial Decisions)

तीन सबसे अधिक कठिन फैसले जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में लेने पड़ते हैं वह इस प्रकार है;

१. शिक्षा (Education)

२. विवाह (Marriage)

३. व्यापार या व्यापार में साझेदारी (Business Partnership)

शिक्षा :- (Education)

ईश्वर ने इस दुनिया में हर किसी को किसी न किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए बनाया है तथा उनके उद्देश के अनुसार उन्हें एक विशेष योग्यता दी है। एक घोड़ा एक व्यक्ति का बोझ उठा सकता है और लंबी दूरी तक तेज़ गति में दौड़ सकता हैं। बैल अधिक समय तक गाडी खींच सकता है। एक ऊंट कई दिनों तक बिना पानी के रेगिस्तान में यात्रा कर सकता हैं। ईश्वर ने घोड़े को सवारी के लिए बनाया इसलिए उसे दौड़ने का गुण दिया। बैल को खेती-बाड़ी के लिए बनाया इसलिए उसे ताकत के साथ हल चलाने का गुण दिया। ऊंट को रेगिस्तान में सवारी के लिए बनाया इसलिए उसे उस वातावरण के लिए विशिष्ट गुण दिए।

इसी प्रकार ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति को इस दुनिया में एक विशिष्ट उद्‌देश्य के लिए बनाया है और उस व्यक्ति को उस उद्‌देश्य के अनुसार एक विशेष योग्यता दी है। हर एक आदमी को अपनी योग्यता को पहचानना चाहिए और योग्यता, उद्‌देश्य अथवा कर्तव्य के अनुसार ही उसे इस दुनिया में अपना पेशा (Profession) चुनना चाहिए।

हर व्यक्ति का स्वभाव बचपन में ही स्पष्ट होता है। माता-पिता को उन स्वभावों को सकारात्मक रुप से विकसित करना चाहिए और अपनी पसंद और इच्छाएँ बच्चे पर थोपनी नहीं चाहिए।

जब माता-पिता को यह मालूम हो जाए कि उनके बच्चे का तकनीकी (Technical) स्वभाव है, या वह कलाकार स्वभाव का है और बच्चा भी अपने स्वभाव अथवा रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त करना पसंद करता है, जैसे इंजीनियरिंग, मार्केटिंग, या अभिनय इत्यादि, तो दोनों (माता-पिता और बच्चा) को स्थिति का विश्लेषण करना चाहिए और व्यवसायिक परामर्श (Vocational guidance) ले और यदि इसमें कोई नकारात्मक तथ्य नहीं है, तो बच्चे को उसकी पसंद के अनुसार शिक्षा दिलवानी चाहिए।

इस पहले निर्णय में दोनों (माता-पिता और बच्चा) जुडे हुए हैं। बच्चे अथवा माता-पिता द्वारा लिया गया एक गलत फैसला बच्चे के कैरियर को पूरी तरह नष्ट कर देता है।

विवाह (Marriage)

शादी का महत्वः- (Importance of Marriage)

- ईश्वर कहते हैं,

  'पत्नी पति का वस्त्र है और पति पत्नी का वस्त्र है।' (पवित्र कुरआन २-१८७)
- एक दूसरे स्थान पर ईश्वर कहते है,

  'उसने तुम्हारे (पति-पत्नी के बीच) में प्रेम और दयालुता पैदा की।' (पवित्र कुरआन ३०-२१)

  हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा,

  'शादी नज़रें नीची रखती है और व्याभिचार से बचाती हैं।' (कानजुल अम्माला)

  पैगंबरोने ब्रम्हचर्य का निषेध किया है।

- हिंदू-धार्मिक पुस्तकों के अनुसार,

  'अच्छी पत्नी ईश्वर का महानतम वरदान है।'

  उपर दिए गए सभी पद विवाह के महत्व की ओर संकेत करते हैं।

- नेपोलियन हिल कहते हैं, व्यक्ति जो कुछ भी करता है, स्त्री को प्रसन्न रखने के लिए करता है।

  उदाहरण के तौर पर, एक अविवाहित एक अच्छा फ्लेट लेता है या एक शानदार कार खरीदता है ताकि उसकी गर्लफ्रेंड प्रभावित हो। एक विवाहित पुरुष अधिक से अधिक धन कमाता है और अपने जीवन स्तर को ऊंचा रखने का प्रयास करता है ताकि उस का परिवार और विशेषरुप से उस की प्यारी पत्नी खुश हो जाए। अपनी पत्नी को प्रसन्न करने की यह इच्छा व्यक्ति को दूसरों से अधिक धन कमाने वाले व्यापार तथा जीवन के हर हिस्से में अच्छे से अच्छा बनने की ओर प्रेरित करती है।

  इसके विपरीत यदि विवाहित जीवन में कडवाहट है, तो सबसे पहले अच्छे से अच्छा बनने की प्रेरक-शक्ति कम हो जाती है। गलत जीवनसाथी अथवा विवाह से व्यक्ति का पूरी तरह से नैतिक-पतन हो जाता है। इस प्रतियोगिता के युग में जहाँ केवल अत्याधिक स्वस्थ अथवा फिट व्यक्ति ही जीवित रह सकते हैं वहाँ एक हतोत्साहित अथवा हताश व्यक्ति मानसिक शांति के बिना कैसे आगे बढ़ सकता है अथवा सफल भी कैसे हो सकता है?

  संपूर्ण जीवन में तथा व्यापार में असफलता का मुख्य कारण है विवाहित जीवन में असफलता।

शादी में कौन-कौन सी सावधानी बरतनी चाहिए?

- शादी की पहली सावधानी यह है कि, लड़का और लड़की दोनों एक दूसरे को पसंद करते हों। आखिरी पैगंबर हज़रत मुहम्मद (स.) कहते है,

'शादी में दूल्हा-दुल्हन दोनों की पसंद और इच्छा अनिवार्य हैं।' (हदीस)

पवित्र कुरआन में कहा गया हैं,

पवित्र लोग निम्नलिखित शब्दों में ईश्वर का वरदान मांगते हैं,

'हे ईश्वर। मेरी पत्नी और बच्चों को हमारी आँखो का सुख (ठंडक) बनाओ।'

(पवित्र कुरआन २५:७४)

अर्थात पत्नी और बच्चों को देखकर आनंद का अनुभव करना यह भी ईश्वर का एक वरदान है। और इस के लिए प्रयास करना चाहिए।

- जब कभी भी पति-पत्नी एक दूसरे को देखें उन्हें प्रसन्नता का अनुभव होना चाहिए, खुशी महसूस होनी चाहिए। यही विवाह के साथ व्यापारिक जीवन में भी सफलता के लिए जरुरी है।

- जीवन-साथी चुनते समय दूसरा मुख्य तथ्य जो व्यक्ति को याद रखना चाहिए, वह दूसरे व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है? क्योंकि As the twig is bent the tree will be.

पारिवारिक संस्कार स्वभाव में कूट-कूट कर भरे होते हैं। एक बच्चा जो धार्मिक, सहनशील, उत्साही, आशावादी और शिक्षित संस्कार वाले परिवार में पला-बड़ा होगा, तो ये गुण उसे विरासत में मिलते हैं। यदि आप अपने घर में ऐसे संस्कार चाहते हो, तो जीवन-साथी उसी के अनुसार चुनें।

कभी-कभी चेहरे की सुंदरता, कामेच्छा और प्रेम की स्वाभाविक भावना के कारण लोग जल्दबाजी में फैसले लेते हैं, और गलत जीवन-साथी चुन लेते हैं। तथा वह यह सोचते हैं, कि वह वैसा ही अच्छा संस्कारी होगा, जैसा अच्छा दिखाई देता है। लेकिन ऐसा कभी होता नहीं है, क्योंकि कैक्टस के पौधे पर गुलाब कभी नहीं खिलते। निःसंदेह दिल और प्यार की भावनाओं का शादी में बहुत महत्व है, लेकिन फिर भी दिमाग को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, इसलिए जल्दबाजी में निर्णय लेने की राय कभी नहीं दी जाती।

- जीवन में व्यक्तिगत स्तर पर पहला निर्णय शिक्षा और दूसरा महत्वपूर्ण निर्णय है शादी। इसलिए शादी का निर्णय लेते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें।

१. प्रस्ताव रखने वाले परिवार को परखें, आपके जीवनसाथी का व्यक्तित्व आकर्षक होना चाहिए, अथवा कम-से-कम स्वीकार करने योग्य तो होना ही चाहिए।

२. उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे सही जानकारी प्राप्त करें।

३. उसके चरित्र और शिक्षा के बारे में सही जानकारी प्राप्त करें।

४. अगर आपको अपना जीवनसाथी पसंद न हो तो अपने परिवार और मित्रों के जोर देने पर उनके वश में न आएं और हां न कहें। अपना स्वयं का तर्क सहित और दृढ़ निर्णय लें और एक खुशहाल ज़िंदगी की ओर आगे बढ़ें।

- २५ वर्ष यह विवाह के लिए उचित समय है। यह ३० वर्ष की उम्र से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। क्योंकि जब आप ५० से ५५ साल की उम्र के होंगे तब आपके बच्चों की शिक्षा पूरी हो जानी चाहिए और व्यापार में जोखिम उठाना शुरु कर देना चाहिए। आप ५५ और ६० साल के बीच की उम्र में अपने बच्चों पर निर्भर नहीं होंगे और वह उनके व्यापारिक-कार्यों में उनको उत्साहित कर मार्गदर्शन करेंगे।

इसके विपरीत जब आपके बच्चे आपकी रिटायरमेंट की उम्र होने पर अपनी शिक्षा पूरी करेंगे तो आप उन पर निर्भर हो जाओगे। इस दशा में न तो आप उन्हें जोखिम लेने के लिए कह सकते हो, न ही वे ऐसा करने की हिम्मत करेंगे। वे जरुरत से ज्यादा सतर्क (Over-Cautious) हो जाते हैं। ज़रुरत से ज्यादा सतर्कता व्यापार करनें की मूल-प्रवृत्ति को मार देती है और सफल होने के अवसर बंद कर देती है।

इसलिए २५ वर्ष की उम्र होने तक विवाह करें। ताकि जब आपकी ५५ वर्ष की आयु हो तब तक आपकी संतान पूरी तरह सक्षम हो जाए।

अपनी भावनाओं के प्रति सावधान रहें (Beware of your Emotions)

मनुष्यों में अनेक प्रकार की भावनाएँ होती हैं, जैसे उदास होना, प्रेम, क्रोध, अत्याधिक ड़र के दबाव में आत्मनियंत्रण खोना इत्यादि। ये भावनाएं कमियाँ अथवा कमजोरियाँ नहीं है, बल्कि मनुष्य जाति को स्वस्थ, सक्षम और बचे रहने के लिए आवश्यक हैं। यदि कोई व्यक्ति इन भावनाओं के दबाव में आकर गलत निर्णय लेता है, तो यह उसकी अपनी गलती हैं, मानवीय स्वभाव की गलती नहीं है।

उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति क्रोध के आवेश में दूसरे व्यक्ति को मार देता है, तो वह इसलिए दया का पात्र नहीं हो सकता कि वह होश में नहीं था। उसे अपने अपराध की सजा भोगनी ही होगी, क्योंकि यह उसका अपराध कि वह अपनी भावनाओं को वश में नहीं रख सका।

इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति (विवाह, साझेदारी, अथवा संबध तोडने के विषय में गलत फैसला लेता है) तो वह अपनी भावनाओं को दोष नहीं दे सकता हैं। यह उसकी गलती हैं कि वह उनको वश में नहीं रख सका। वह लापरवाह रहा, इसलिए भावनाओं पर उसका नियंत्रण नहीं रहा, इसलिए भावनाएँ उस पर हावी हुई।

आओ हम अपनी भावनाओं को समझे: (Let us understand our emotions)

- मान लो पाषाण-युग (Stone age) में एक जोड़ा अपनी गुफा के बाहर घूम रहा था। अचानक एक भड़ियों के झुंड ने उन पर हमला कर दिया। बचाव में पुरुष मारा गया। औरत को भागने का और बचने का अवसर मिल गया और वह जीवित रही। जब उसे यह मालूम हुआ कि उसका प्रेमी मारा गया है, तो उसे इतनी उदासी और पीड़ा हुई कि वह कई दिनों तक अपनी गुफा के एक कोने में बैठी रही।

भेड़ियों के झुंड ने कुछ दिनों तक दावत का आनंद उठाया, अगली शिकार का इंतजार किया और फिर आगे बढ़ें। यदि वह औरत उदासी (Nervousness and depression) में जकड़ी नहीं होती और अपने

को कई दिनों तक गुफा में बंद न रखती तो वह भी मारी जाती।

यह उदासी (Nervousness and depression) ही थी जिसने उसकी जिंदगी को बचाया।

- वह अकेली औरत एक दूसरा पति ढूंढ रही थी। अचानक पति के स्थान पर एक गोरिला प्रगट हो गया। उसे इतना ड़र लगा कि वह अपने शरीर पर से नियंत्रण खो बैठी और एक मूर्ती की तरह हो गई या बेहोश हो गई। उसकी खामोशी के कारण गोरिला उसे देख ना सका और बिना कोई नुकसान पहुँचाए वह चला गया। ड़र के दबाव में बेहोशी या शरीर के निष्क्रिय होने ने उसकी जिंदगी बचा ली।

वह भाग्यशाली पैदा हुई थी। जब वह एक दूसरा साथी ढूँढ रही थी, उसे जेम्स बॉंड मिल गया। जैसा कि जेम्स की आदत है, जब वह उससे प्यार कर रहा था, तो अचानक एक दूसरे भेडियों के झुंड ने उन पर हमला किया। गलत समय पर बाधा पड़ने से जेम्स के साथ वह भी गुस्से में भड़क उठी। दोनों भेड़ियों पर टूट पड़े। गुस्से में आदमी की शक्ति दुगुनी हो जाती हैं। इसलिए दोनों भेड़ियों से असली नायक-नायिका की तरह लड़े और उन्हें भगा दिया।

इस बार क्रोध या गुस्से ने उनके प्राण बच गए।

हमारे भारत देश में एक पारसी समुदाय है। वे ईरान से आकर शुरु में कच्छ (गुजरात) में बस गए थे। सामान्यतः वे ईमानदार, परिश्रमी, शिक्षित, शांति-प्रेमी, पूर्णतावादी और आर्थिक रुप से संपन्न होते हैं। लेकिन कई सदियों से वे एक गलती कर रहे हैं। वे हमेशा शादी अपने समुदाय में ही करते हैं, जिसके कारण उनकी बीमारी से लड़ने की शक्ति प्रभावित हो गई है। वृद्धावस्था में उनकी अधोगति (Degeneration) दूसरे भारतीयों की अपेक्षा तेज़ी से होती है।

मनुष्य जाति का इस अधोगति से बचाने के लिए ईश्वर ने प्रेम की भावना की रचना की है। प्रेमी और प्रेमिका इस प्रेम की भावना के प्रभाव में जब होते हैं तो वह मानसिक रुप से अंधे हो जाते हैं। उन्हें अपने प्रेमी और प्रेमिका में कोई दोष नज़र नहीं आता और यह भावना इतनी शक्तिशाली है की दोनों एक दूसरे को पाने के लिए जात, धर्म और हर चीज़ को बलिदान कर सकते है। यहाँ तक कि अपनी जान की भी परवाह नहीं करते और अपने प्रेमी या प्रेमिका को पाकर रहते हैं।

इस भावना के कारण मनुष्य-जाति बची है, फलती-फूलती है और शारीरिक रुप से स्वस्थ रहती हैं।

यदि लोग प्यार में दिमागी तौर पर अंधे न हुए होते और दिमाग से तर्क-सहित सोचें तथा प्रस्ताव रखने वाली पार्टी को हर दृष्टिकोण से जांचते तो, फिर वे हमेशा अपनी माँ की पसंद से उसके परिवार अथवा समुदाय के अंदर ही शादी करते और मनुष्य जाति में वही कमज़ोरी होती, जो पारसियों में होती हैं, यानि वृद्धावस्था में असामान्य अधोगती (Degeneration)।

प्रेम की भावना बुरी नहीं है। यह मनुष्य जाति को बचाती है। सृष्टि का रचनाकार, जिसने इस प्रेम के सॉफ्टवेयर को बनाया है, उसने सावधानियाँ भी बताई हैं, जिन्हें अपना कर ये मनुष्य जाति भावनाओं के जाल में न फसे। पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता हैं।

'ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति से कहो, अपनी नजर नीचे रखे।' (पवित्र कुरआन १९:३३:८८)

इसका अर्थ है, विपरीत लिंग की ओर घूर कर न देखे।

पवित्र ऋग्वेद कहता हैः-

'क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया हैं, इसलिए सावधान रहें कि, कहाँ देखना हैं। और अपनी नज़र नीची रखें तथा अपने पाँव ढक कर रखे और तैयार होते समय ऐसे कपड़े पहने, जिससे कोई तुम्हारा शरीर न देख सके।' (पवित्र ऋग्वेद ०८:३३:१९)

पवित्र कुरआन कहता है,

'पवित्र स्त्रियां अपनी छाती को ढ़क कर रखें और अपने गहने न दिखाएँ।'(पवित्र कुरआन ३३:५९)

विरुद्ध लिंग को आकर्षित करने वाले कपड़े पहनना ही केवल सुंदर दिखने का तरीका नहीं हैं। चरित्र की महानता, सादगी और पवित्रता भी व्यक्ति को सुंदर बना सकती हैं। पवित्रता की कोशिश और विपरीत-लिंग के व्यक्ति से अनावश्यक मेलजोल को कम या नहीं करना हमें गलत-व्यक्ति के साथ प्रेम में पड़ने से बचा सकता हैं।

इसलिए संयोग से यदि तुम्हें प्रेम के प्रभाव में पड़कर शादी का गलत निर्णय लेना पड़ता हैं, तो भविष्य में, विवाहित-जीवन के साथ-साथ व्यापार में भी गलत शादी के कारण तकलीफ और असफल होने का दोष आप पर होगा। उस समय आप अपनी भावना अथवा भाग्य को दोष मत दीजिए। भावनाएँ मनुष्य जाति की रक्षा और समृद्धि के लिए हैं, यह आप हो, जो उनका गलत प्रयोग करते हो।

साझेदारी (Partnership)

जब कम्पनियाँ मुनाफा (Profit) कमाना शुरु करती हैं तो १० में से ८ साझेदारी वाली कंपनियों के साझीदारों में वादविवाद शुरु हो जाता है और आखिर में वह बंद हो जाती है।

सामान्यतः व्यापारिक क्षेत्र में अफ्रीका की नदियों की अपेक्षा अधिक घड़ियाल हैं। यदि आप जवान हो, और एक वरिष्ठ व्यापारी के साथ साझेदारी में व्यापार शुरु करते हो, या उस के चलते कारोबार में शामिल होते हो, तो वह जवान, कर्मठ, शिक्षित तथा आपके जैसे प्यारे युवा के साथ व्यापार करना बहुत पसंद करेगा। लेकिन अंत में जब व्यापार स्थापित हो जाएगा और लाभ कमाना शुरु हो जाएगा, तो वह आपको पूरी तरह निगलने की कोशिश करेगा। इसलिए जहाँ तक संभव हो अपने से अधिक परिपक्व तथा श्रेष्ठ व्यक्ति के साथ साझेदारी में बंधने से बचें।

यदि आपको किसी की निष्ठा और ईमानदारी के बारे में आप को जरुरत से ज्यादा विश्वास है और आप उसके साझीदार बनना चाहते हो, तो एक कानूनी समझौता पत्र (Legal Agreement) बनायें तथा इसमें व्यापार के हरएक पहलू को लिखे और व्यापार समाप्त करने की दशाएँ और शर्ते भी लिखें। यानि साझेदारी समाप्त करने की शर्ते भी लिखी रहनी चाहिए।

ईश्वर कहता है,

जब तुम किसी के साथ धन-संबधी व्यापारिक व्यवहार करो, तो इसे लिख लिया करो और इसमें दो गवाह बनाओ। (पवित्र कुरआन २:२८२)

क्योंकि जब धन संबधी विषय उठते है तब सज्जन और ईमानदार व्यक्ति भी स्वार्थी हो जाता है। दूसरा मनुष्य की स्मरण-शक्ति बहुत कमजोर और चयनात्मक हैं। आदमी यह याद नहीं रखता कि क्या और कितना उसे देना है लेकिन उसे यह जरुर याद रहेगा कि किससे कितना लेना है। और वह हमेशा फायदे का एक बड़ा हिस्सा लेना चाहता हैं।

एक सज्जन पुरुष के वायदे की कीमत एक कागज के टुकड़े जितनी भी नहीं हैं। इसलिए कभी मौखिक वचन पर विश्वास न करें। हमेशा कोई भी साझेदारी शुरु करने से पहले एक व्यापारिक-अनुबंध (Agreement) जरुर बनाएँ।

साझेदारी वाले कारोबार में कैसे सफल हो? (How to succeed in partnership)

रॉन-हॉलैंड ने फिल्म के करोड़पति अभिनेता काऊबॉय रॉय रॉजर के शब्दों को अपनी किताब Talk & Grow Rich में लिखा हैं। वह लिखते है कि रॉय रॉजर कहते है कि, ५०:५० प्रतिशत की साझेदारी में प्रत्येक साझीदार को ९० प्रतिशत जिम्मेदारी लेनी चाहिए और उसके अनुसार काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। तथा अपने सांझीदार से केवल १० प्रतिशत काम करने की उम्मीद चाहिए। यह ९०:१० के सिद्धांत के रुप में जाना जाता है। यह सिद्धांत दोनों साझीदार के बीच पूरी और सही विचारधारा और समझ देता है। यह सिद्धांत किसी भी तरह की व्यवसायिक साझेदारी में काम करता है तथा तकलीफ देह वैवाहिक संबधों को भी सुधार सकते है।

यह सिद्धांत ही केवल उस विचार से लड़ने और बचाव का तरीका है, जो लोगों के मस्तिष्क (मन) में लगातार घूमता रहता हैं। जैसे, वह (मेरा पार्टनर)उतना कठिन परिश्रम क्यों नहीं करता हैं जितना मैं करता हूँ? वह इतनी जल्दी क्यों नहीं आता जितनी जल्दी मैं? वह नए ग्राहकों से क्यों नहीं मिलता अथवा बनाता हैं? वह इतनी अधिक छुट्टियाँ क्यों लेता है या घर जल्दी क्यों जाता हैं? वह इतना अधिक क्यों नहीं बेचता है अथवा जैसा मैं करता हूँ? इत्यादि।

ये विचार दोंनो साझेदारों के मस्तिष्क (मन) में आते हैं और साझेदारी को तोड़ने का कारण बनते हैं। इसलिए दोंनो साझेदार ९०:१० के सिद्धांत के बारे में जानें इसका अनुकरण करने में सहमत हों तथा व्यापार में सफलता और समृद्धि के लिए रोजाना की जिंदगी में इसके अनुसार कार्य करें।

इसलिए साझेदारी वाले व्यापार में स्पष्ट, तर्कसहित, अच्छीतरह विचार-विमर्श किये हुए तथा मज़बूत फैसले के साथ काम करना और आगे बढ़ना आवश्यक हैं।

****

अध्याय-२२
सौदा तय करने की कला
(Art of Negotiation)

समय की देरी का जाल :- (Delay Trap)

नौसेना से सेवा-निवृत्त होने के पश्चात् अत्यंत सज्जन पुरुष केप्टन गामिनी ने श्रीलंका में अपना स्वंय का व्यापार स्थापित करने का निश्चय किया। वह भारत से मशीनरी खरीदना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने एक अत्यंत चतुर व्यापारी और कमीशन एजेंट श्री.लखानी से संपर्क किया।

केप्टन गामिनी एक नए प्रकार का व्यापार करने की योजना बना रहे थे। वह नारियल के रेशों के अत्यंत महीन कण का निर्यात गल्फ तथा भूमध्य सागरीय देशों को करना चाहते थे। रेशे के महीन कण को जब रेत के साथ मिलाए जाते हैं तो वह रेत पानी या नमी को रोकने में समर्थ हो जाती हैं। इस तरह रेगिस्तान की बंजर रेत (जमीन) भी रेशे मिलाने से उपजाऊ जमीन में बदली जा सकेगी और इसे खाद की तरह भी प्रयोग किया जा सकता हैं। रेशे के इन महीन कणों को खुले रुप में निर्यात नहीं किया जा सकता है। क्योंकि वे जहाज़ में बहुत ज्यादा स्थान (Space) घेरते हैं। इसलिए वह ऐसी कॉम्पेंटींग मशीन चाहते थे, जो इन्हें चारों तरफ से दबा कर बड़े बंडल के आकार में बना दें।

लखानी ने केप्टन गामिनी को नए कारोबार में लगने वाले प्रत्येक स्तर की मशीन तथा उनके (Quotation) प्रस्तुत किए और आवश्यक सामान भी, केवल विशेष प्रकार की कॉम्पेक्टिंग-मशीन को छोडकर, जिसकी रुपरेखा (Design) और निर्माण मैं (लेखक) करता हूँ। जिसके लिए उसने केप्टन गामिनी को मेरा परिचय दिया।

जब केप्टन गामिनी सभी मशीनों और आवश्यक सामान का आर्डर देने और अंतिम निर्णय लेने के लिए, चार दिन के टूर पर भारत आया, तो लखानी ने उनका किसी अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति की तरह शानदार स्वागत किया। पहले दिन लखानी ने दोपहर के खाने के लिए उन्हें अपने घर पर ले गया। दूसरे दिन वह उन्हें मुंबई के देखने-योग्य मुख्य स्थल दिखाने ले गया और भेट (Gift) देने की वस्तुओं को खरीदने में उसकी मदद की। तीसरे और चौथे दिन विशेष उद्देश से बनाई गई मेरी कॉम्पेक्टिंग मशीन के डिज़ाईन और मेरे कन्सेप्ट (Concept) की जाँच-परख करते हुए भाव आदि तय करने अथवा मसौदा तय करने की दृष्टि से वे मुझसे मिले।

उन्होंने मेरे फायदे (Profit) की अंतिम बूंद तक भी निचौड़ लीया और कम-से-कम भाव में सौदा तय करा दिया। उस धूर्त लखानी ने शुरु में केप्टन गामिनी को भोजन तथा मुंबई दिखाने और व्यक्तिगत खरीददारी में व्यस्त रखा तथा आखिरी दो दिन मेरे साथ सौदा-तय करने तथा मोल भाव आदि में व्यस्त रखा। उसने ये सब इस तरह से योजना बनाई थी कि केप्टन गामिनी ने श्रीलंका के लिए रवाना होने के सिर्फ एक घंटा पहले मेरे आर्डर पर हस्ताक्षर किए और एडवांस दिया।

जब केप्टन गामिनी ने महसूस किया कि उसे देरी हो रही है तथा उनकी उड़ान छूट सकती हैं, तब लखानी

ने उनके सामने अपना स्वंय का भाव (Quotation) रखा। केप्टन गामिनी को एयरपोर्ट पर पहुँचने की जल्दी थी, क्योंकि उनकी जहाज़ की उड़ान छूट जाती तो उनके दूसरे निर्धारित कार्यक्रम रदद हो जाते, इसलिए वे लखानी द्वारा प्रस्तुत भाव (Quotation) पर अधिक ध्यान नहीं दे पा रहें थे। लखानी द्वारा प्रस्तुत भाव (Quotation) बहुत अधिक थे, फिर भी केप्टन गामिनी के पास मोल-भाव करना और मुंबई के अन्य सप्लायर्स से मिलने के लिए उतना समय नहीं था। इसलिए उन्होंने असहाय होकर बिना मोल-भाव किए लखानी के ऊँचे दामों के आर्डर पर हस्ताक्षर कर दिए और वह भारत से चले गए।

शिष्टाचारवश मैंने एअ्रपोर्ट तक उनका साथ दिया। टैक्सी में मुझसे केप्टन गामिनी ने उस ऑर्डर के बारे में बहुत अधिक निराशा व्यक्त की, जो उन्होंने लखानी को दिया था।

धूर्त और धोखेबाज व्यापारी कैसे व्यापार करते हैं, उसका यह एक अच्छा उदाहरण है। वे समय व्यतीत करते हैं और व्यापार की स्थिति में इस हद तक देरी कर देते हैं कि दूसरी ओर के व्यक्ति के पास सिवाय हस्ताक्षर करने के कोई दूसरा विकल्प नहीं रहता हैं।

इसलिए यदि किसी सौदे को अंतिम रुप देने के लिए आप के पास अधिक समय नहीं है, तब भी इतना समय तो आपके पास होना ही चाहिए कि, अगर आप पहले पार्टी से मोल-भाव करते समय अगर असफल हो जाते हो तो अन्य पार्टियों से मोल-भाव करने के लिए भी आपके पास समय हो।

समय और पैसे खर्च करा कर फंसानाः (Resources Investment trap)

श्री.अय्यर ने मेरी शर्तों को मानते हुए मुझे एक Hose Crimping मशीन का ऑर्डर दिया। २५ प्रतिशत एडवांस और बाकी धनराशी माल देने के पहले, यह मेरी शर्त थी। ऑर्डर के पूरा होने पर श्री.अय्यर अपने टैक्निशयन को साथ लेकर आया और मशीन की पूर्ण रुप से जाँच की। उसने कुछ छोटे-मोटे बदलाव के लिए कहा और दो दिन के पश्चात् बाकी के पेमेंट देकर माल ले जाने का वादा किया।

मैंने वह सब बदलाव किए और मशीन को परीक्षण (Inspection) तथा भेजने के लिए तैयार रखा। मैंने भी अपने माल के सप्लायर्स के पैसे देने के बारे में योजना बनायी। मैंने कई सप्लॉयर्स को दो दिन के बाद भुगतान करने का वायदा भी किया।

श्री.अय्यर दो दिन के पश्चात आए, फिर जाँच-परख की और मशीन को स्वीकार कर लिया, लेकिन जब भुगतान का समय आया, तो उन्होंने मुझे शेष रकम का ५० प्रतिशत ही केवल दिया और दूसरे ५० प्रतिशत के लिए मुझसे ३० दिन का समय मांगा।

मैं बुरी तरह परेशान हो गया, क्योंकि उस पेमेंट की मैंने अनेक योजनाऐं बनाई थी। यहाँ तक कि मैंने कई सप्लायर्स को भुगतान करने का वायदा भी किया था। न तो मैं उधार देने को तैयार था और न ही भुगतान का ५० प्रतिशत वापिस करने की इच्छा थी, जो मुझे अय्यर ने दिया था। आखिरकार अय्यर जीत गया और उधार पर मशीन ले गया। जैसा कि वायदा किया था, अय्यर ने बाकी का भुगतान मुझे ३० दिन के बाद कर दिया। लेकिन मैंने पहले भी इसी तरह की स्थिति में बहुत अधिक नुकसान उठा चुका हूँ। लोग वादा करके भूल जाते है और उन की बाकी रकम देने की नीयत नहीं होती है।

सौदा तय करने वालों की ऐसी रणनीति होती है कि वे आपका समय और पैसा इस हद तक खर्च करते हैं कि आप अगर न भी कहो तो आप को नुकसान होगा। यदि अय्यर ऑर्डर देते समय ३० दिन के उधार के लिए कहता तो मैं कभी भी सहमत नहीं होता, लेकिन जब उसने मेरा इतना समय और धन मशीन बनाने में खर्च कर दिया और फिर मुझे उधार के लिए कहा तो मुझे मज़बूरी अथवा असहाय हालत में देना पड़ा।

सौदा तय करनेवालों की इस प्रकार नियोजित चाल से सावधान रहें, और समय और कुछ धन खोने के लिए तैयार रहें नहीं तो जैसे मैंने कई बार बहुत पैसा गवांया वैसे ही आप भी धन गवाएंगे।

भावनात्मक दबावः-(Emotional Blackmail)

उधार लेने और फिर धोखा देने की दूसरी युक्ति भावनात्मक दबाव हैं। इस प्रकार में ग्राहक बिना अधिक मोल-भाव किए, आपके सामान के दाम को स्वीकार कर लेता है और आप को एडवांस दे देता है।

फिर जबकि आप उसके ऑर्डर पर काम कर रहे होते हो या माल तैयार कर रहे होते हो, तो वह कई बार आप के पास काम की प्रगति को जाँचने के लिए आएगा और आप के साथ अच्छी मित्रता कायम करने की कोशिश करेगा। कभी-कभार वह अपनी आर्थिक-संपन्नता बता कर प्रभावित करने की कोशिश भी करेगा, और आप को कई ऑर्डर देने की संभावना और अपने व्यापार का स्वच्छ और ईमानदार तरीका भी बताएगा।

अंततः माल लेने की तारीख पर उस की अच्छी दोस्ती के आधार पर, जो उसने आपके साथ कायम की है, वह कुछ दिनों या हफ्तों के लिए उधार के लिए मदद माँगेगा। यदि आप उसे उधार देते हो, तो उसके बाद आपको महसूस होगा कि यह दो पैरों वाला प्राणी कितना धूर्त है! यह स्वभाव और रुप बदलने में कितना शातिर हैं कि गिरगिट भी इसके मुकाबले में कुछ नहीं है। उधार लेने के बाद वह आप से सौ झूठे वादे करेगा और आप आखिर में उस पैसे को भूल जाओगे।

इसलिए नए ग्राहक के साथ गहरी मित्रता को अधिक न बढ़ाएँ, क्योंकि फिर आप भावनात्मक दबाव में आकर एक अनुचित प्रस्ताव का इन्कार नहीं कर सकोगे। ऑर्डर लेने में इन्कार करना और व्यापार नहीं करना धोखेबाजों के साथ नुकसान का जोखिम उठाने की अपेक्षा अधिक अच्छा हैं। सन १९९० और २००० के बीच इस प्रकार के लोगों को उधार देने के कारण मैंने १० लाख का नुकसान उठाया है और अभी भी कभी-कभी उनके जाल में फंस जाता हूँ। मेरी गलतियों से सीख लें और इन गलतियों को न दोहराएं।

मोल-भाव करने का आनंदः-(The Pleasure of Bargaining)

श्री.पटेल हमारे नियमित ग्राहक हैं, और बहुत अधिक मोल-भाव करने वाले व्यक्ति हैं। हर नई मशीन खरीदते समय वह बहुत मोल-भाव करते हैं और कम-से-कम १० से १५ प्रतिशत छूट लेते हैं।

एक बार उन्हें एक विशेष प्रकार का मशीन का पुर्जा चाहिए था। बाज़ार से खरीदकर, उनको बेचने के स्थान पर मैंने अपने मित्र संजय से कहा कि, कम-से-कम दाम पर श्री पटेल को सामान सप्लाई कर दे।

संजय ने उन्हें बिल के साथ सामान भेज दिया। भुगतान करते समय पटेल ने १० प्रतिशत छूट काट कर चैक भेज दिया। मुझे और संजय, हम दोनों को यह बात बहुत बुरी लगी, लेकिन हम चुप रहे। कुछ महीने बाद पटेल को फिर दूसरी प्रकार के पुर्जे की जरुरत थी। मैंने संजय से पटेल के साथ अपने स्वयं के तरीके से सौदा करने को कहा। इस बार संजय ने उन्हें २५ प्रतिशत दाम बढ़ाकर सामान भेज दिया। इस बार भी श्री पटेल ने १० प्रतिशत छूट काटकर चेक भेजा मगर इस बार लेन-देन के व्यापार में दोनों (संजय और पटेल) खुश थे, क्योंकि संजय ने १५ प्रतिशत लाभ पाया था और पटेल ने १० प्रतिशत की छूट पायी थी।

अनेक लोगों की मानसिकता और आदत छूट (Discount) माँगने की होती है। उन्हें मोल-भाव करने में आनंद और संतुष्टि मिलती हैं। वे समझते हैं, कि छूट लेकर वे सप्लायर के लाभ का एक छोटा हिस्सा ले जाते हैं, और उन्होंने जो सामान खरीदा है वह बहुत किफायती है। हमारी संस्कृति में अधिकांश लोंगों की ऐसी मानसिकता है। इसलिए यदि आप कोई उत्पाद बेचते हो अथवा सेवा देते हो, तो ग्राहक की मानसिकता को ध्यान में रखें और अपनी कीमत इस प्रकार रखें कि आप उन्हें अच्छी तरह मोल-भाव करने और अच्छी छूट देने का आनंद और संतुष्टि दे सको।

मोल-भाव में सतर्कताः (Precautions in Bargaining)

श्री.इफ्तेखार खान १९९२ से मेरा मित्र हैं। वह मुझ से Hose Crimping मशीन खरीदना चाहता था। वह जानता था कि उस मशीन की कीमत मैंने २,३४,००० रु रखी है और मोल-भाव करने के पश्चात् मैं १० प्रतिशत छूट देता हूँ। जब वह मेरे ऑफिस आया, मैंने उसका स्वागत किया, उसे कॉफी इत्यादि पिलाई तथा बिना उसके कहे, मैंने उसे मशीन की कीमत पर १० प्रतिशत छूट दी।

ऑर्डर को अंतिम रुप देते समय वह कीमत और १० प्रतिशत छूट पर संतुष्ट नही था। लगभग एक घंटे तक इस बारे में उसने मेरे साथ बहस की। यहाँ तक कि मैंने उसे अपने बिल भी दिखाए और दूसरे ग्राहकों से ऑर्डर-कापी भी दिखाई लेकिन वह सहमत नहीं हुआ तथा १० प्रतिशत और छूट देने के लिए कहता रहा और बगैर मांगे एडवांस भी दे दिया। क्योंकि वह मेरा दोस्त था, इसलिए मैंने अपनी लागत मूल्य (Manufacturing cost) पर ही उसे मशीन बनाकर दे दी।

इसलिए अपनी ओर से पूरी छूट देने का प्रस्ताव रखने की गलती कभी न करें। शुरु में केवल २ से २.५ प्रतिशत की छूट दें और उस के बाद ग्राहक को दाम कम कराने का आनंद लेने दे। अन्यथा कम से कम दाम भी उसे संतुष्ट नहीं करेगा।

किसी वस्तु का मुल्य कैसे निर्धारित करते है?:- (Pricing the Product)

भारत की जानी-मानी जूतों की कंम्पनियाँ अपने जूतों के मूल्य इस तरह लिखती है ४९.९९ रुपये, ९९.९९ रुपये। इसी प्रकार पर्सनल कम्पूयटर, एयर कंडीशनर्स, मोबाईल फोन्स, टी.वी इत्यादि भी अपूर्ण अंक की मूल्य पर्ची अपने माल पर लगाते हैं। जो अगले पूर्ण अंक से बहुत थोड़ी कम होती हैं। वे एक पैसा अथवा कुछ थोड़े रुपएँ ही क्यों कम करते हैं? क्या वह बहुत ध्यान से अपने माल का मुल्य जोड़ते हैं और बिल्कुल वही मूल्य ग्राहक से लेते है। और राशिमूल्य को पूरा करने के लिए एक पैसा भी दाम नहीं

बढ़ाते है? नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं है।

वस्तु का मूल्य ग्राहक के मानसिकता के अनुसार निश्चित किया जाता है। सामान्यतः यदि कोई उत्पाद बाजार में १०० रुपए में उपलब्ध हैं, तो इसकी बनाने की लागत (कीमत) केवल ३० से ५० रुपए तक होगी, शेष ५० से ७० रुपए विज्ञापन, मुख्य व्यापारी, उप-व्यापारी, थोक-व्यापारी, खुदरा व्यापारी, का मुनाफा होता है।

मूल्य इस प्रकार निश्चित किया जाता है, कि यदि वह उंचा भी हैं तो भी किफायती दिखाई देता हैं तथा यह ऐसा प्रभाव डालता है कि इसकी बहुत अच्छी तरह बिल्कुल सही गणना की गई है और कम-से-कम दाम रखा गया हैं। यदि आप भी विक्रेता हो, तो आकर्षक मूल्य-निर्धारण की कला सीख लो और यदि आप खरीदने वाले हो, तो किसी भी आँकड़े से बेवकूफ मत बनो। मूल्य का विभिन्न प्रतियोगियों के मूल्य से तुलना करो, मोल-भाव करो और फिर उसे खरीदो।

****

अध्याय - २ ३

आसान बिक्री का राज़

(The Secrets of Easy Sales)

अच्छी बिक्री सफल व्यापार की कुंजी है। अच्छा विक्रेता होने के लिए आपको ग्राहकों के बारे में अनेक तथ्य तथा आँकड़े (Facts & Figure) जानना और ध्यान में रखना बहुत जरुरी है। बिक्री के नियमों को भी ध्यान में रखकर उसके अनुसार अपना नज़रिया भी बदलना होगा।

ग्राहक और बिक्री के बारे में जानकारी-:

१. ग्राहक को बहुत सारा धन लूटने का अवसर अथवा पैसा निकालने का एक साधन न समझो। ग्राहक वह है जिस के साथ आप तरक्की करोगे। और आप की यह कोशिश होनी चाहिए के व्यवहार पूरा होने के बाद दोनों को लाभ हो।

२. आपका उत्पादन या माल इस्तेमाल करने के पश्चात ग्राहक को जो अच्छी भावना और लाभ मिलेगा, ग्राहक उसीकी खरीदारी करता है। अन्यथा ग्राहक को आपमें कोई रुचि नहीं है। इसलिए बेहतर बिक्री के लिए ग्राहक को मिलने वाले लाभ और अच्छी भावना को सबसे उभार कर ग्राहक के सामने रखना चाहिए।

३. लोगों को स्वयं खरीदी करना बहुत पसंद है और उनको जबरदस्ती खरीदी करने के लिए प्रेरित करने वाले बिल्कुल पसंद नहीं है। वे स्वंय से खरीदी करना पसंद करते है। (उदा. लोग सेल्समन से चीजे खरीदने के बजाय मॉल से खरीददारी करना ज्यादा पसंद करते है) इसलिए लोगों को खरीदी करना कैसे पसंद आएगा आप इस बात को अच्छी तरह समझ लें।

४. आपके मन के विचार वास्तविकता में परिवर्तित होंगे। इसलिए यदि आपका नज़रिया सकारात्मक है और सौदे को अंतिम रुप देने और मोल-भाव की कल्पना सकारात्मक हैं, तो आप की अपेक्षा के अनुसार आप को ऑर्डर मिलेगा। इसी प्रकार यदि आपके मन में शक, अविश्वास और ग्राहक द्वारा इन्कार की भावना है, तो अधिकांशत उसी प्रकार से इन्कार ही आपको मिलेगा।

बिक्री (Sales) और क्रय-विक्रय (Marketing) एक विस्तृत विषय है। अनेक डिग्री और डिप्लोमा कोर्स इस विषय के लिए रचे गए हैं। इसे कुछ पृष्ठों में संकलित नहीं किया जा सकता हैं। नीचे हम केवल कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों से आपको परिचित कराते हैं।

पूर्व-बिक्री योजनाः- (Pre-Sales-Planning)

१. ग्राहक से मिलने से पहले उसके बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करनें की कोशिश करें।

२. उसकी आवश्यकताओं के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करें।

३. अपने मन में ग्राहक से मिलने से लेकर ऑर्डर मिलने तक जो कुछ भी होने वाला है, उसकी सकारात्मक

सोच के साथ कल्पना करें। जैसे कि जब आप ग्राहक से मिलने गए तो उसने आपका मित्रतापूर्वक स्वागत किया, बात-चीत अच्छे वातावरण में हुई। और जो सौदा तय हुआ था या जो ऑर्डर आप को मिला उससे दोनों को लाभ होगा। और यह सब (Auto-Suggestion) के माध्यम से अपने मन में कल्पना करे और इस विचार को मन में बार-बार दोहराए।

४. अपने उत्पाद और सेवा के बारे में पूर्णरुप से जाने।

विक्रय प्रक्रियाः- (The Selling Process)

१. स्वीकार करने योग्य, आकर्षक और स्वस्थ व्यक्तित्व के लिए अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हों।

२. ग्राहक से सकारात्मक नज़रिये से मिलें, जैसा कि आत्म निर्देश (Auto-Suggestion) द्वारा आप ने पहले अभ्यास किया था।

३. उससे उसकी ज़रुरत के बारे में पूछे और उसे ध्यानपूर्वक से सुनें।

४. पहले सप्लॉयर्स ने जो माल या सेवा उसे दी थी, उससे वह क्यों संतुष्ट नहीं है यह जानने की कोशिश करें। उससे पूछें कि वह आप से क्या उम्मीद रखता है? और उसकी समस्याओं को समझे।

५. ग्राहक की शारीरिक और मानसिक दशा को पढ़े और समझने की कोशिश करें। (चित्तवृत्ति (Psychology), मन की असली हालत, बात का तरीका, सोचना, बैठने का तरीका, उसका दृष्टिकोण, आदि) उसके विपरीत ना जाएं तथा उसकी चित्तवृत्ति के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश करें।

६. ग्राहक की समस्याओं को ईमानदारी से सुलझाने की कोशिश करें। ग्राहक के हृदय में सावधानी पूर्वक तर्क-सहित तथा कलात्मक रुप से इस भावना का विकास करें कि खरीदने का निर्णय उसका अपना है। आप उस पर दबाव नहीं डाल रहे हो अथवा उसने अगर आप का माल या सेवा खरीदी तो उस को लाभ होंगे और वह अच्छा महसूस करेगा। (याद रखें, कोई भी किसी के दबाव में खरीदना पसंद नहीं करता हैं, लेकिन स्वंय से खरीदी करना सभी पसंद करते हैं।)

इस कारोबार और बातचीत में आप का दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि पहले ग्राहक का लाभ हो फिर आप का लाभ हो।

७. यदि आप उसकी समस्या को हल नहीं कर सकते हो तो उसे वहाँ का पत्ता या स्त्रोत बताओ, जहाँ उसकी समस्या का समाधान हो सकता है, और उसके ऑफिस से बाहर आ जाओ।

८. यदि एक ग्राहक आपको चुनता है और आपके साथ व्यापार करने की इच्छा रखता है, तो आप उसके निर्णय की प्रशंसा करो। उसे कम-से-कम जोखिम का विश्वास दिलाएं, अपने उत्पाद की सबसे अच्छी गुणवत्ता और शीघ्र सेवा का भरोसा दिलाएँ, और वास्तव में उसपर अमल करें। आप प्रत्येक व्यक्ति को हर समय बेवकूफ नहीं बना सकते। यह दुनिया बहुत छोटी है और आपकी असलियत हर एक के सामने आ ही जाएगी। इसलिए कभी-कभी-कभी धोखा न दें।

९. आप के और ग्राहक के बीच जो सौदा हुआ है उसको अच्छी तरह लिख लें। जैसे ग्राहक पैसा कैसा देगा,

गारंटी या वॉरंटी के बारे में, आप को ऑर्डर में क्या-क्या देना है, पैकिंग और उसको भेजने का खर्चा इत्यादि। ऑर्डर और सप्लाई का कार्य-सम्पादन करते समय थोड़ी-सी भी गलतफहमी आपके और ग्राहक के संबधों को बर्बाद कर देगी।

बिक्री के बाद :- (After Sales)

१. ग्राहकों के संपर्क में रहें, यह जानने कि कोशिश करें कि वे आपका उत्पाद खरीदने के पश्चात् वे कैसा महसूस करते हैं?

२. उत्पाद में अथवा सेवा में समस्याएँ आना संभव है। इससे घबराएँ नहीं, बल्कि ईमानदारी से इन्हें हल करने की कोशिश करें, ग्राहक आप की ईमानदारी को महसूस करेंगे।

३. यदि ग्राहक संतुष्ट हैं, तो उसके साथ अच्छे संबध बनाने की कोशिश करें और उनसे यह विनती करें कि वह अपने मित्रों को भी आप से माल खरिदने के लिए प्रेरीत करें।

याद रखें एक संतुष्ट ग्राहक द्वारा दिया गया संदर्भ (Reference), एक प्रभावशाली विज्ञापन की अपेक्षा आपको ज्यादा ऑर्डर दिलवाऐगा।

****

अध्याय-२४
ज्यादा मासूम मत बनों
(Don't be too Innocent)

एक शांत राहगीर कुत्तों से सुरक्षित गुज़र जाता हैं। कुत्ते अधिकांशत उत्तेजित को ही भोंकना और काटना पसंद करते हैं। इसी प्रकार व्यापार क्षेत्र में भी अनुभवी व्यक्ति अपना व्यापार शांति से करते है और सुरक्षित रहते है। अधिकांश बड़े व्यापारी, नए और जोशीले व्यापारियों को धोखा देना तथा लूटना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि यह प्यारा-सा बच्चा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता हैं। यहाँ तक कि यदि उसका धन और माल जबरदस्ती ले भी लिया जाए, तो केवल हजारों में से एक ही ऐसा होता है, जो अपने शारीरिक बलबूते पर अपना धन जबरदस्ती निकलवाता हैं। दूसरे तो नम्रता से फरियाद करते हैं, नीची आवाज में गाली देते हैं, और चुपचाप से चले जाते हैं। भारतीय न्याय भी इनकी मदद नहीं करता हैं, क्योंकि न्याय का निर्णय तो अगली पीढ़ी के आने के बाद ही होगा।

इसलिए मध्यम और बड़े व्यापारियों में छोटे और नए व्यापारियों को फंसाने कि बहुत प्रवृत्ति दिखाई देती है। वह छोटे और नये व्यापारियों का भव्य-स्वागत करते हैं, अच्छा व्यापार देते हैं, उनसे वे पैसो का लेन देन भी करते है। और साथ-साथ अधिक से अधिक उधार लेने की कोशिश करते हैं। नये व्यापारियों से बड़ा उधार लेने के बाद वे अपनी बात करने का ढंग बदल देते हैं। अब उनके व्यापार में मित्रता कम और कठोरता अधिक होती है। इस स्थिति में नया व्यापारी जाल में फंस जाता हैं। उसे अपनी सेवा और माल कम-से-कम दामों पर देना पड़ता हैं तथा लंबे समय के लिए उधार भी। यदि किसी कारण वह अपनी सेवा और सप्लाई बंद कर देता है, तो उसका बाकी का धन भी डूब जाता है।

इसलिए कभी भी मासूम न बनें रहें। हमेशा जाने कि दुनियाँ और व्यापार में क्या हो रहा है? तथा उसी के अनुसार अपनी व्यापारिक-नीति बनाएँ।

मैं अपने कुछ अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद हैं, कि इनसे आपको अवश्य लाभ मिलेगा।

लिखित दस्तावेज़ की महत्ता :-

सन १९८६ में मैं एक छोटी कंम्पनी 'जनरल हाइड्रौलिक' में डिजाईन इंजीनियर के रुप में काम करता था। में डिजाईन के साथ-साथ हायड्रौलिक प्रेसेस के निर्माण (Manufacturing) की देख-रेख (Supervision) भी करता था। हम 'नोबल इंजीनियरिंग वर्कस' कंपनी से बड़ी मात्रा में फॅब्रिकेशन और मशीनिंग का काम कराके लेते थे।

'नोबल इंजीनियरिंग' के मालिक जसवंत सिंह और उसेके बेटे बलबीर सिंह से मिलने जाता तो वह हमेशा मेरा भव्य स्वागत किया करते थे। मेरे साथ उनका व्यवहार बहुत मित्रतापूर्ण था। सन १९८७ में जब मैंने अपनी नोकरी छोड़ दी और कन्सलटेंन्सी शुरु की तो, मुझे बी.एम.पटेल के लिए हायड्रौलिक प्रेसेस के निर्माण (Manufacturing) और डिजाइन करने का काम मिला।

श्री.जसवंत सिंह हमेशा मुझे कहते थे, कि जब कभी भी मैं अपना काम शुरु करुँ, वे सब प्रकार से मेरी सहायता करेंगे। मैं जसवंत सिंह के पास गया और उसे अपने नए ऑर्डर को पूरा करने में मदद करने के लिए कहा, जो मुझे श्री.पटेल से मिला था। उसने दिलोजान से मेरा स्वागत किया और पूरा सहयोग देने का भरोसा दिलाया। उसने ५०-५० की साझेदारी का प्रस्ताव भी रखा। क्योंकि न तो मेरे पास वर्कशॉप थी और न ही धन, इसलिए मैं सहमत हो गया।

मेरे साथ जसवंत सिंह का व्यवहार इतना अच्छा और सौम्य था कि मैं साझेदारी के कानूनी एग्रीमेंट के लिए पूछने की हिम्मत नहीं कर सका। मैंने उसके नाम पर ऑर्डर ले लिया। हमने सफलतापूर्ण मशीन का ऑर्डर पूरा किया और श्री.पटेल को सुपुर्द कर दी। श्री.पटेल ने हम से कहा के हम उसे मशीन की कीमत से ज्यादा का बील दें और वह (श्री.पटेल) हमें बिल के हिसाब से पैसा देंगे। मगर चेक पास होने के पश्चात् बिल में लगाई हुई अतिरिक्त रकम को श्री.पटेल को वापस देना होगा। मैं और जसवंतसिंग इस बात पर राजी हो गए।

चेक मिलने तक जसवंत सिंह और उसका बेटा बलबीर सिंह हमेशा मुझे यकीन दिलाते रहे कि वे श्री. पटेल को तुरंत ऊपर की नकद राशि वापिस कर देंगे और मुझे मेरे हिस्से का लाभ दे देंगे और हम तुरंत अगली मशीन बनाना शुरु कर देंगे। लेकिन जैसे ही भुगतान चुका दिया गया, उनके बात करने का लहज़ा बदल गया। अब वे (जसवंत सिंह और बलबीर सिंह) श्री.पटेल को उपर की अतिरिक्त राशी लौटाने से पहले उनसे अगली मशीन के लिए एडवांस चेक चाहते थे और मुझे भी जोर दिया कि तुम्हारा हिसाब साल के आखिर में करेंगे या बाकी सभी ६ मशीनों का ऑर्डर पूरा करने के बाद करेंगे।

मैं बहुत निराश हो गया। मैंने दृढ़ता-पूर्वक अपने लाभ और श्री.पटेल के नकद राशि की माँग जसवंत सिंह से की, लेकिन उन्होंने मेरा अपमान किया और गाली देना शुरु किया। मैं शारीरिक रुप से बहुत कमजोर हूँ, इसलिए मैंने उनके साथ झगड़ा करने की हिम्मत नहीं की, न ही मेरे पास कोई कानूनी दस्तावेज़ था। मैं निःसहाय था और इसलिए कुछ भी नहीं कर सका। मैंने श्री.पटेल को सारी सच्चाई बता दी। श्री.पटेल एक सज्जन व्यक्ति था। हालाँकि मैं उनका धन वापिस करने के लिए जिम्मेदार था, तो भी उन्होंने इसकी माँग नहीं की, क्योंकि वह समझ चुके थे कि मुझे धोखा दिया गया था।

अपनी जिंदगी के इस पहले व्यापारिक सौदे में मैंने अपना लाभ गँवाया था। मैंने श्री.पटेल का धन भी खोया था, और सप्लायर्स के भुगतान की जिम्मेदारी भी मुझपर आन पड़ी थी। जिन्होंने मेरे भरोसे पर माल उधार दिया था। मैंने एक सज्जन पुरुष के वायदे पर विश्वास किया और बहुत कुछ खोया।

मेरी आप सभी को यह नसीहत हैं कि, मौखिक वचनबद्धता और वायदों पर विश्वास न करें। हमेशा एक कानूनी दस्तावेज़ बनाएं। यदि आप साझेदारी में व्यापार शुरु करते हो, तो उसके साथ के सभी दूसरे पहलुओं को भी निश्चित करों। जैसे कि अलग होने की दशा में कंपनी का नाम और टेलीफोन नंबर आदि किसके पास रहेंगे। क्योंकि अलगाव होने के लंबे समय के बाद भी आर्डर और पूछताछ पुराने पत्ते, नाम, और फोन नंबर पर ही आते रहते हैं।

व्यापार में मित्रता:-

मेरे एक मित्र श्री.विरदी की एक इंजीनियरिंग वर्कशाप है, और मशीनिंग (Machining) का काम ठेके (Labor work) पर करता है। वह पूर्णतय: एक सज्जन पुरुष है। उन्होंने अपने नए ग्राहक और मित्र के लिए सन १९८५ में सात लाख के बैंक लोन के लिए गारंटर (ज़ामिन) की हैसियत से हस्ताक्षर किए। उसका मित्र अपना कर्जा नहीं चुका सका, इसलिए पैसा लगाने वाले अपने धन के लिए श्री.विरदी को निचोड़ने लगे। दोस्ती में सिर्फ एक कानूनी कागज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्होंने बहुत अधिक धन खोया और साथ ही दु:ख भी सहन किया।

इसलिए व्यापार या उद्योग में दोस्ती के संबध न लाए। जोखिम वाली स्थिति में उसी वक्त निर्णय न ले, थोडा समय सोचने के लिए जरुर लीजिए। अपने से बड़ों की राय लें और फिर निर्णय लें।

कोई भी नुकसान करके बिक्री नहीं करता (No one sells at loss)

सन १९८९ ई.में मैंने हिंदुस्तान एलौइ मॅन्युफॅक्चरिंग कं.लि.को बहुत सारे Extrusion presses मशीनों की सप्लाई की थी। एक दिन मैं उनके ऑफिस (फोर्ट-मुंबई) में अपनी पेमेंट लेने के लिए गया। चैक लेने के बाद मैं यूं ही वी.टी स्टेशन की ओर चल कर जा रहा था। उस वक्त एक टेक्सी मेरे पास आई और रुक गई। टैक्सी ड्राईवर ने मुझ से पूछा, महाशय क्या आप इस अरब यात्री को यह समझा सकते हो कि यह टैक्सी अहमदाबाद नहीं जा सकती है। मैंने उस अरबी पहनावे वाले यात्री से पूछा, क्या मामला हैं? उसने कहा, वह अभी दुबई से अपने मित्र के घर शादी में शामिल होने आया हैं लेकिन उसके फ्लैट में ताला लगा हुआ है, तथा उसके पड़ोसी ने कहा हैं कि शादी अहमदाबाद में हैं, इसलिए वे सब वहाँ चले गए हैं। अब मुझे अहमदाबाद तुरंत पहुँचना हैं। शादी में हाजिर होने के बाद मुझे फिर रात बारा बजे की उड़ान से दुबई लौटना है। मेरे पास समय नहीं है और यह टैक्सी-ड्राइवर कहता हैं कि वह अहमदाबाद जाना नहीं चाहता हैं। मैंने उसे कहा कि टैक्सी को केवल मुंबई की सीमा के अंदर ही चलाने की आज्ञा दी गई हैं। अहमदाबाद ५०० कि.मी.दूर हैं और वहाँ तक जाने का परमिट टैक्सी के पास नहीं है। अरबी मनुष्य ने कहा, महोदय आप जरा टैक्सी में आ सकते हैं। मैं आपसे एक मेहेरबानी चाहता हूँ। में सहमत हो गया और उसके साथ टैक्सी में बैठ गया। उसने स्टीरिओ कैसेट प्लेअर और एक घड़ी का बॉक्स खोला और मुझे कहा, मैं ये उपहार दुबई से अपने मित्र के लिए लाया हूँ, अब न तो मैं शादी में शामिल हो सकता हूँ और न ही इन्हें वापिस ले जा सकता हूँ। क्या आप इनको बिकवाने में मेरी मदद कर सकते हो, क्या आप इन्हें खरीद सकते हो? मैंने कहा, कीमत क्या हैं? उसने कहा ये १२००० रुपये के मूल्य के हैं।

मैंने कहा, मेरे पास इतने अधिक पैसे नहीं हैं। उसने पूछा, आपके पास कितने पैसे हैं? मैंने अपने ब्रीफकेस को परखा और पाया केवल ३००० रुपये हैं। मैंने कहा, अफसोस! मेरे पास केवल ३००० रुपये हैं। उसने कहा, क्या तुम कुछ और इंतजाम कर सकते हो? मैंने कहा अफसोस संभव नहीं हैं। मैंने टैक्सी से बाहर कदम रखा ही था, कि उसने यकायक कहा, ठीक है, महाशय यह स्टीरियों ले लो। मैं आश्चर्यचकित था और खुश भी। एक विदेशी स्टीरियों कैसेट प्लेयर १२००० की कीमत का वह मुझे केवल ३००० रुपये में मिल रहा था। मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने उसके हाथों में ३००० रुपए दिए स्टीरियों लिया और घर की ओर तेजी से चला।

घर जाकर जब मैंने पार्सल खोला और स्टीरिओ चलाया, तो मेरे पांव तले ज़मीन खिसक गई। यह नकली दिल्ली निर्मित कैसेट प्लेयर था, मुश्किल से उसकी कीमत ८०० रु थी।

- मेरे एक मित्र श्री.शमीम ने एल्युमिनियम की कुछ वस्तुएँ सस्ते दामों पर खरीदी,बाद में मालूम हुआ कि वह चुराई हुई थी। पुलिस ने शमीम को चुराया हुआ माल खरीदने के जुर्म में गरफ्तार कर लिया और तीन दिन के लिए जेल में बंद रखा। कुछ रुपयों की बचत के लिए उसने हजारों रुपए पुलिस वालों की मुट्ठी गर्म करने में खर्च कर दिए और उसकी बदनामी भी हो गयी।

- अपने व्यापार की शुरुआत में, मैं व्यक्तिगत रुप से दुकानों पर जाया करता था और वाल्व (Valve) पम्प (Pump) और दूसरी सहायक वस्तुएँ खरीदता था। एक दिन कजाफ इंजीनियरिंग कं. नागदेवी स्ट्रीट में कुछ हायड्रौलिक फिटिंग्स खरीदने गया। खरीददारी करने के बाद मैं यूँही मस्जिद स्टेशन की ओर जा रहा था, तब एक काम की तलाश में फिरनेवाला लड़का मेरे पीछे आया और उसने मुझ से कहा, 'क्षमा करे महाशय! जब मैं पीछे मुड़ा उसने कहा 'यह एक Scientific Calculator है। क्या आप इसे खरीदना चाहते हो?' मैंने कहा 'सॉरी! मुझे नहीं चाहिए।' और फिर स्टेशन की ओर चलना शुरु कर दिया। लेकिन वह मेरा पीछा करता रहा और बोला 'महाशय मैं आपको सस्ते में दूँगा।' मैंने कहा 'सॉरी मेरे पास ऐसा ही केलक्युलेटर है।' मैंने चलना जारी रखा पर उसने मेरा पीछा करना न छोड़ा। उसने कहा, 'बहुत मेहरबानी होगी, यदि आप इसे खरीदते हैं, क्योंकि मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं है और मेरे बच्चे भूखे हैं।'

जब उसने ऐसा कहा, मैंने एक पल के लिए सोचा और कहा 'मैं तुम्हें अच्छी कीमत नहीं दे सकता, तुम किसी ओर को देखो।' उसने पूछा, 'आप कितना दे सकते हो? इस वैज्ञानिक केलक्युलेटर की कीमत बाजार में ५०० रुपये हैं।' मैंने कहा 'मैं तुम्हे केवल ५० रु दे सकता हूँ।' उसने कहा '५० बहुत कम है क्या आप १०० रु.दे सकते हो?' मैंने कहा 'सॉरी! यह मेरा आखिरी प्रस्ताव है।' इसी कीमत पर उसने केलक्युलेटर मुझे दे दिया। मैंने केलक्युलेटर को जाँचा कुछ गणनाएं भी कीं और उसे ५० रुपए दे दिए। मैं खुश होकर स्टेशन की ओर मुड़ा, लेकिन तभी उसने कहा 'मैं इसे पैक करता हूँ आप मुझे १० रुपए और दीजिए।' मैंने कहा '५० रुपया यह मेरा आखिरी दाम है।' और उसे पैक करने के लिए केलक्युलेटर दे दिया। उसने उसे पैक किया और मुझे दे दिया। मैंने खुशी से अपना ब्रीफकेस खोला केलक्युलेटर का पैकेट उठाया और उसमें रख दिया और घर जाने के लिए खुशी ट्रेन पकड़ी। मुझको हिसाब-किताब नहीं करना था मगर मैं इतना खुश था के बगैर कारण के भी में केलक्युलेटर का इस्तेमाल करना चाहता था। मैंने ब्रिफकेस में से पैकेट खोला। मैं उस पल की अपनी हालत का वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता। पार्सल में केवल कागज़ के पुठ्ठे थे और उसमें कोई केलक्युलेटर नहीं था। उस जालसाज ने मुझे दिन की रोशनी में नहीं लूटा था। बल्कि मैं अपने गलत सिद्धांत की वजह से ठगा गया था।

बाज़ार में कोई भी चीज़ सस्ते में या मुफ्त में नहीं मिलती। कोई भी ऐसा बेवकूफ नहीं हैं कि नुकसान में वस्तुएँ बेचे और यदि आप सोचते हो कि ऐसे बेवकूफ हैं, तो हाँ, हैं, और वह आप और मेरे जैसे लोग हैं।

हमेशा ईमानदार रहें, केवल बेचने में ही नहीं, बल्कि खरीदने में भी और व्यापार के हर काम में ईमानदारी बरतें। **ईमानदारी सबसे अच्छी व्यापारिक नीति हैं।**

****

भाग- 3

अच्छे कार्यों के प्रति नियम
Laws Related to Noble Deeds

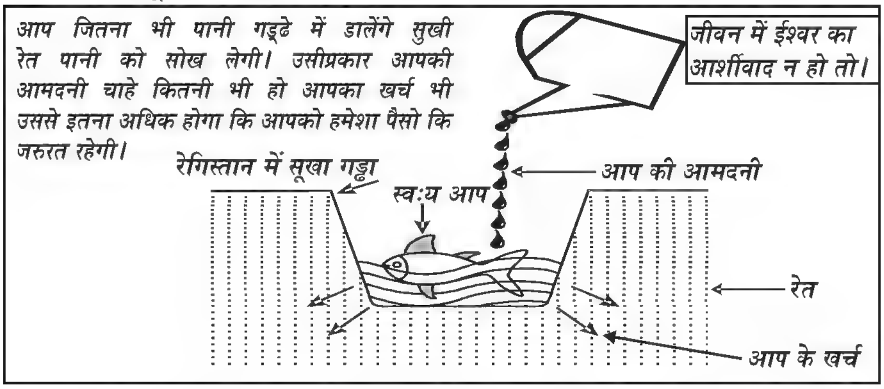
अध्याय-२५
महान कर्म (सत्कर्म) का महत्व
(Importance of Noble Deeds)

सैकड़ों विद्यार्थी प्रति वर्ष अर्थ-व्यवस्था (Finance Management) में मास्टर की पदवी लेते हैं, लेकिन उनमें से कितने वास्तविक रुप से धन के मालिक बनतें हैं? बहुत थोड़े से! कोई भी अरबपति नहीं बना, क्योंकि फायनान्स (Finance) के हेर-फेर को जानने से ही कोई धनी नहीं बनता।

वास्तव में आर्थिक-समृद्धि बहुत अधिक मात्रा में धन जमा करने से कुछ अलग हैं। जिस प्रकार हम मनुष्य पदार्थ (Matter) और शक्ति (Energy) का मिश्रण हैं, अर्थात शरीर और आत्मा। इसी प्रकार समृद्धि और अच्छी आर्थिक-स्थिति भी पदार्थ (Matter) और शक्ति (Energy) का एक संतुलन हैं। पदार्थ यानि संपत्ति और शक्ति यानि ईश्वरी कृपा। इसलिए आर्थिक समृद्धि सिर्फ संपत्ति नहीं है। मेरा कहने का अर्थ क्या हैं यह मैंने निम्न उदाहरण द्वारा समझाने की कोशिश करुँगा।

1. रेगिस्तान में एक मछली :-

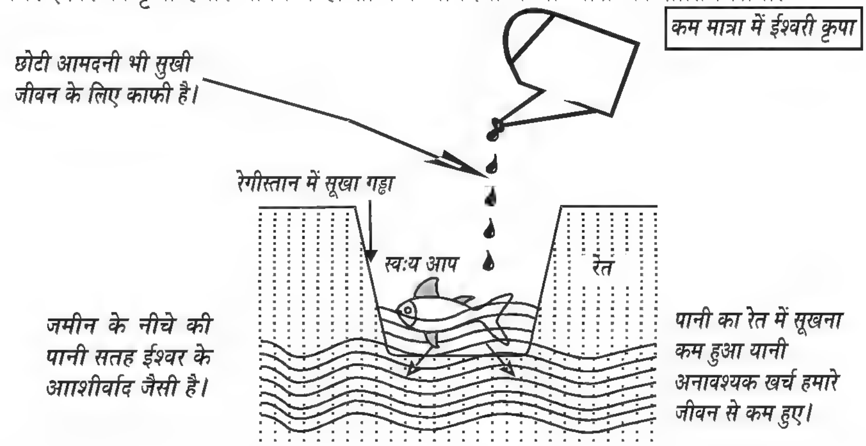
ऐसा समझो कि रेगिस्तान (Desert) में एक गडढा है। उसमें एक बाल्टी भरके पानी और एक मछली को छोड़ दो। जितना भी पानी आप इसमें ड़ालते हो, वह रेत पानी को सोख लेगी और मछली हमेशा कुछ और पानी की बूँदो के लिए तड़पती रहेगी।



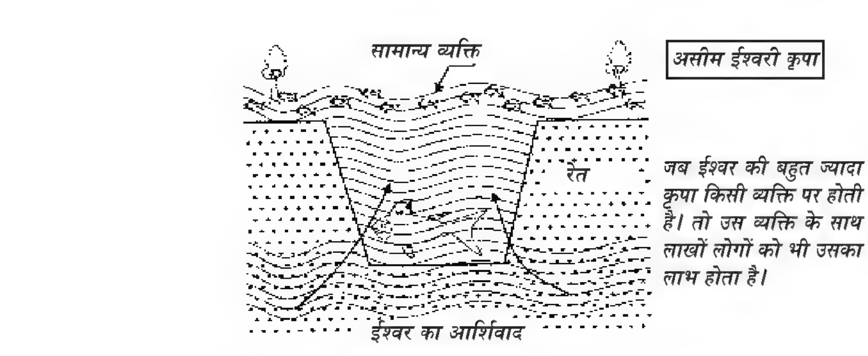
अब मान लो, जमीन के नीचे, पानी की सतह (Water level below ground) बढ़नी शुरु हो जाती हैं। यद्यपि यह गडढें के तल से एक इंच भी बढ़ती है तो भी मछली कुछ आराम महसूस करेगी। ड़ाला हुआ पानी लंबे समय तक रहेगा, इससे पहले कि गडढे की दीवारों की तरफ की रेत द्वारा सोखा न जाए। पानी की सतह और अधिक ऊपर बढ़ने से, मछली का और आराम बढ़ जाएगा और ड़ाला हुआ पानी तुरंत गडढे की दीवारों को नहीं सोखेगा।

यदि पानी की सतह काफी ऊँचे-स्तर तक बढ़ती हैं, तो पानी ड़ालने की जरुरत भी नहीं होगी।

अगर ईश्वर की कृपा हमारे जीवन में हो तो कम आमदनी में भी व्यक्ति को शांति मिलेगी।



यदि यह प्राकृतिक झरना (Fountain) बन जाता है, तो मछली के साथ-साथ कई और जीव-जंतुओं को भी इससे लाभ होगा।



मनुष्य भी उस मछली की तरह हैं। पानी हमारी आमदनी है और सूखी रेत हमारे खर्चे। जिस प्रकार रेत उसमें ड़ाला हुआ सब पानी सोख लेती हैं, इसी प्रकार हमारे खर्चे और जीवन-स्तर इतना ऊंचा हैं कि हमारी आमदनी हमेशा खर्चों से कम होती है और हमें हमेशा पैसों कि जरुरतें होती है। ज़मीन के नीचे का जलस्तर ईश्वर के वरदानों की तरह हैं। जब यह मनुष्य के जीवन को स्पर्श करते हैं, तो हम थोड़ा आराम महसूस करते हैं। जैसे आशीर्वाद बढ़ता है, हमारा आराम भी बढ़ता हैं। इसी प्रकार हमारे मन की शांति जीवन में संतुष्टि, इच्छा की पूर्ति तथा संपूर्ण-समृद्धि और समाज में मान-सम्मान हमारी आमदनी से अधिक ईश्वर के आशीर्वादों पर निर्भर करता है।

सामान्यतः हमारे कर्म इतने महान नहीं होते हैं कि हम पूर्णतयः आर्शीवादों में डूब जाएं और संसार की परेशानियों से छुटकारा पा लें। लेकिन संत और धार्मिक व्यक्ति ऐसे होते है जिन पर ईश्वर की कृपा से वर्षा

होती है। इसलिए यह लोग बिना किसी नियमित आमदनी के वास्तव में अनाथाश्रम चलाते हैं और सेकड़ों लोगों को भोजन खिलाते हैं। यह ईश्वर का वरदान है, जिससे उन पर धन की वर्षा होती है और उनको यह सब करना संभव होता है।

इसलिए मन तथा आत्मा की शांति के लिए और पर्याप्त समृद्धि के लिए, ईश्वर का वरदान हमारी ऊंची मासिक आमदनी की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

मैं लिमिटेड कंपनियों के कुछ चैयरमन को जानता हूँ, जिनकी मासिक आमदनी वर्ष (२००६ में) १० लाख रुपयों से अधिक थी। लेकिन कई फ्लेटस और बंगलो का किराया, दर्जनों घर के नौकरों का वेतन, फॉइव-स्टार क्लब में आए दिन होने वाली पार्टिया, तथा विदेशों में घूमना-फिरना आदि खर्च के कारण वह लाखों रुपयों का वेतन भी उनके लिए काफी नहीं होता था। वे असंतुष्ट, परेशान, अशांत चिंतित रहते हैं और कुत्ते की तरह लपलपाती जीभ लिए धन के पीछे भागते थे।

मैं कुछ थोड़े-से सज्जन परिवारों को जानता हूँ, जिनकी मासिक आमदनी केवल दस से पंद्रह हजार रुपए है। लेकिन वे जिंदगी के हर क्षेत्र में खुशी और समृद्धि में भरपूर हैं। इन दो प्रकार के परिवारों में इतने बड़े अंतर का कारण है-ईश्वर का आशीर्वाद। ईश्वर का आशीर्वाद केवल उन लोगों के जीवन को स्पर्श करता है, जो उसपर विश्वास रखते हैं और जिनके कर्म महान होते हैं।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है:

जो भी सही काम करेगा चाहे पुरुष हो या स्त्री और मेरे में भी विश्वास रखता है, हम उन्हें इस दुनिया में पवित्र और आरामदायक जीवन देते हैं और मृत्यु के बाद उनके महान कर्मों का फल देते हैं। (पवित्र कुरआन 16:97)

यदि वे बाइबल,तौरात, और दूसरे धार्मिक ग्रंथो का अनुकरण करेंगे, तो समृद्धि आकाश से उन पर बरसेगी। और एक समूह तो उनमें से सही-राह पर चलने वाला है, लेकिन उनमें से अधिकांश बुरे आचरण अथवा कर्म करने वाले हैं। (पवित्र कुरआन सूरे मायदा 66)

२. बगैर चौथे पहिये की गाड़ी:-

समृद्धि प्राप्त करने के लिए, साधन और अवसर स्पष्ट और संपूर्ण तथा आसानी से नहीं मिलते। उन के मिलने में हमेशा कुछ रुकावटें और समस्याऐं होती हैं। मनुष्य जीवन भर, इन रुकावटों और समस्याओं को सुलझाने के लिए संघर्ष करता है, लेकिन ९५ प्रतिशत लोग असफल रहते है।

उदाहरण के लिए, जो लोग पोस्ट-ऑफिस, रेलवे अथवा स्कूल आदि में नौकरी करते हैं। उनकी जीवन-शैली नीरस (Monotonous) होती है। वह काम करने सुबह नौ बजे जाते हैं, किसी तरह काम करके या बिना काम किए वह अपना समय व्यतीत करते हैं और शाम को घर वापिस आते हैं। सालों साल उनका यही क्रम (सिलसिला) चलता है। यहाँ तक कि अपनी नौकरी के अंत तक उनका जीवन-स्तर अधिक बदलता नहीं हैं। वह समय की चक्की (Tread mill) पर चलते रहते हैं और जीवन के अंत तक लगभग उसी जगह पर रहते हैं।

कुछ ऐसा ही छोटे उद्योगपति के बारे में होता है, छोटे होटलों तथा जनरल स्टोर आदि। यहाँ तक कि एक

पीढ़ी (Generation) के बाद भी उनका स्तर वही रहता है।

निम्नलिखित उदाहरण द्वारा उनकी दशा की व्याख्या अच्छी तरह हो सकती है।

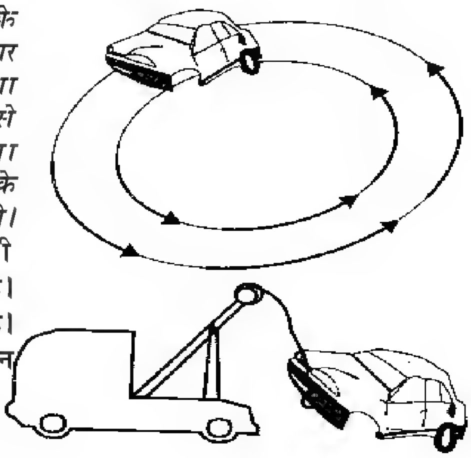
मान लो, एक कार का आगे का पहिया गायब है। यदि ड्राईवर इस कार को चलाता है, वह आगे जाना चाहता है, लेकिन वह गाड़ी एक सर्कल की कक्षा में घूमती रहेगी। कितना भी ईंधन लगे या समय लगे वह सर्कल की दशा में ही घूमती रहेगी।

आगे बढ़ने का एक ही तरीका है, या दूसरा टायर लगाया जाये या तो फिर इसे रस्सी या जंजीर से खींचा जाये। कार में एक दूसरे टायर को लगाना, अपने आप को सुधारना है जैसे मन में ज्वलंत-इच्छा पैदा करना, सकारात्मक नज़रिया अपनाना, स्थिरता (Persistence), कठिन परिश्रम, व्यापारिक-प्रशासन सीखना, सही रास्ते पर चलना और ईश्वरीय प्रतिशोध को आमंत्रित न करना तथा उन प्रार्थनाओं को नियमित रुप से करना जो विशेष रुप से समृद्धि को बढ़ाती हैं।

कार को रस्सी से खींचना ईश्वर की प्रार्थना द्वारा उस की मदद लेना है।

जिस तरह गायब टायर को लगाए बिना अथवा रस्सी से खींचे जाने के बिना कोई भी गाडी आगे नहीं बढ़ सकती उसी प्रकार सफलता के सिद्धांत के अनुसार आदतें सीखे बिना तथा ईश्वर के आशीर्वाद को निमंत्रण दिए बिना कोई व्यक्ति जिंदगी में आगे नहीं बढ़ सकता।

कार का एक टायर न होने के कारण कार एक ही जगह गोलाकार स्थिति में घूमती रहेगी। चौथा टायर लगाए बिना या चैन से खींचें बिना आगे नहीं जा सकती। इसी प्रकार हर एक मनुष्य के जीवन में हमेशा कुछ कमी रहेगी। चौथा टायर यानि आपकी सकारात्मक और दृढ़ कोशिश है। खींचकर ले जाने की सेवा ईश्वरी कृपा है। इन दोनों चीजों के सिवा आप जीवन में सफल नहीं हो सकते।



३. अंधे भिखारी और श्री शंकरजी:-

चार आदमी अपनी रोजी-रोटी भिक्षा माँगने के द्वारा कमाया करते थे। माँ पार्वती को उन पर दया आई और अपने पति श्री शंकर जी से उन्हें अमीर बनाने की प्रार्थना की। श्री.शंकर जी ने कहा, गरीबी इनके भाग्य में हैं,वे अमीर नहीं हो सकते हैं।

माता पार्वती के निरंतर आग्रह पर श्री शंकर जी ने उन्हें सोने को किसी रुप में देने का निश्चय किया। शंकर जी ने लकड़ी के तख्तें को सोने में बदला और उसे उस रास्ते के बीच में रख दिया, जहाँ से ये चार आदमी रोज जाया करते थे।

वें गरीब आदमी अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए अपने भीख माँगने के तरीके को हर दिन बदला करते थे। उस दिन उन्होंने निश्चय किया कि आज वे अंधे आदमियों की तरह भीख माँगेंगे। इसलिए उन्होंने अपनी आँखो पर कपड़े की पट्टी बाँध ली और भीख माँगने के लिए चल दिए।

वे उसी रास्ते पर गए, जिस रास्ते से रोज जाते थे और वहाँ सोने के तख्ते पड़े थे, लेकिन आँखों पर पट्टी बाँधे रहने के कारण वे सोने के तख्ते के उपर से गुजर जाते हैं और जिंदगीभर गरीब ही रहते है।

अवसर को समझने की दूरदृष्टि और बुद्धि हमें ईश्वर के सिवाय कोई नहीं दे सकता। अपने आसपास के समाज में लाखों रुपया कमाने के अवसर रहते हैं लेकिन सिर्फ ३ या ५ प्रतिशत लोग ही उसका पूरापूरा इस्तेमाल करते है। बाकी ९५ प्रतिशत लोग अंधे लोगों कि तरह रहते हैं और मौके को नज़रअंदाज कर देते है। अपने मार्ग में बिखरे हुए अवसर को प्राप्त करने का ज्ञान प्राप्त करने और उससे फायदा उठाने के लिए हमें ईश्वर पर भरोसा रखना ही चाहिए और महान कर्म करके और प्रार्थना करके हमें ईश्वर को प्रसन्न रखना ही होगा।

४. बदल गया भाग्य:-

पैगंबर मूसा (अ.स) के समय में एक वृद्ध पति-पत्नी निःसंतान थे। उन्होंने पैगंबर मूसा (अ.स) से विनंती कि वह ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमें एक बच्चे का वरदान दे। पैगंबर मूसा (अ.स) ने ईश्वर से वृद्ध पति-पत्नी के संतानप्राप्ति के लिए प्रार्थना की, लेकिन ईश्वर ने कहा 'उनके भाग्य में बच्चा नहीं हैं'। पैगंबर मूसा (अ.स) ने ईश्वर का यह संदेश उस वृद्ध पति-पत्नी को दे दिया।

कई सालों बाद, पैगंम्बर मूसा उसी घर की ओर से जब गुज़र रहे थें, तो उन्होंने उस वृद्ध पति-पत्नी के घर में कई बच्चे खेलते हुए देखे। उन्हें आश्चर्य हुआ, जब पैगंम्बर मूसा ने उनसे पूछा, कि उन्हें ये बच्चे कैसे प्राप्त किए? उन्होंने कहा 'एक संत हमारे घर आया और रोटी के लिए पूछा तथा कहा कि जितनी रोटियाँ हम उसे देंगे, उतने ही बच्चे हम प्राप्त करेंगे। हमने उसे सात रोटियाँ दी और हमारे यहाँ सात बच्चे पैदा हुए।'

पैगम्बर मूसा (अ.स) आश्चर्य चकित थे। वह माउंट सिनाई पर ईश्वर से पूछने गए और कहा, 'ऐ ईश्वर! तुमने कहा कि उनके नसीब में बच्चा नहीं है, लेकिन अब उनके यहाँ तो बच्चे आधे दर्जन से अधिक हैं, यह कैसे हुआ?'

ईश्वर ने उत्तर दिया, मूसा मैं तुम्हें जवाब बाद में दूँगा, पहले मेरे लिए एक काम करके आओ। मुझे मनुष्य के माँस के एक टुकड़े की ज़रुरत हैं। पास के नगर में जाओ और उसे मेरे लिए लाओ।

पैगंबर मूसा (अ.स) नगर में गए और हर किसी से पूछा, लेकिन किसी ने उनकी मदद नहीं की। वापिस आते हुए रास्ते में उन्होंने एक झोपड़ा देखा, जो नगर की सीमा पर था। उसके अंदर उन्हें एक संत मिला, जो वहाँ रहता था। पैगंबर मूसा की विनती पर संत ने केवल माँस का एक टुकड़ा ही नहीं दिया, बल्कि उसने अपने शरीर के हर हिस्से से एक टुकड़ा दिया। पैगंबर मूसा (अ.स) पहाड़ी पर गये और इसे ईश्वर के सामने रखा। ईश्वर ने कहा, मूसा तुम भी मनुष्य हो, तुम स्वयं मुझे माँस दे सकते थे, लेकिन न तो तुमने ऐसा किया न किसी और लोगों ने सिर्फ उस संत ने यह किया। वह मुझे इतना प्यार करता है कि जब मैंने एक टुकड़े के लिए कहा, तो उसने अपने शरीर के प्रत्येक हिस्से से एक टुकड़ा दिया। अब यदि वह मुझे कुछ चीज़ के लिए कहता है, तो मैं उसे कैसे इन्कार कर सकता हूँ? ।

- ईश्वर को किसी का भाग्य बदलने के लिए कुछ भी असंभव अथवा कठिन कार्य नहीं करना हैं। जो उसे करना है, वह सिर्फ कहना है 'हो जा!' और भाग्य उसके अनुसार बदल जाता है। वास्तव में हम स्वयं अपने भाग्य को निश्चित करते हैं तथा नियंत्रित करते हैं, ईश्वर केवल न्याय करता है तथा हमारे कार्यो और कर्मों के अनुसार न्याय देता है। (हमारा भाग्य निश्चित करता है।)

इसलिए अच्छे भाग्य और संपन्नता के लिए हमारा चरित्र, हमारा व्यवहार, हमारे कर्म और हमारी जीवन-शैली ऐसी होनी चाहिए कि ईश्वर हमारी प्रार्थना को इन्कार न कर सके।

आखिरी धार्मिक पुस्तक कहती हैं,

'ईश्वर किसी को कष्ट नहीं देता हैं, मनुष्य दुःख और कठिनाई अपने स्वयं के कार्य और कर्मों के कारण प्राप्त करता हैं।' *(पवित्र कुरआन 2-286)*

५. आखिरी सहाराः-

- सन 1995 और 2002 के बीच का समय भारत में औद्योगिक मंदी का दौर था। मैं हायड्रौलिक मशीनरियों का उत्पादन (निर्माण) करता हूँ। जब एक कम्पनी अपनी निर्माण क्षमता का विस्तार करना चाहती है अथवा नया कारखाना शुरु करना चाहती है, तो वे मशीनरी और इक्यूमेंटस हमसे खरीदती है। मंदी के दौर में, जब कंपनी का अस्तित्व कायम रखना यही एक चुनौती होती है, उस समय कोई भी हमसे मशीनें नहीं खरीदता है। इसलिए मंदी के दौर में हायड्रोलिक मशीनरी का उत्पाद करने वाले निर्माता बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

- मैं अच्छे लाभांश पर कार्य करता हूँ और अपने कर्मचारियों को उचित वेतन देता हूँ और हर साल उन्हें उचित बढ़ोतरी देता हूँ, लेकिन मंदी के दौर में, मैं केवल कर्मचारियों को व्यस्त रखने के लिए, शून्य लाभांश के आधार पर ऑडर्स लिए और २ साल तक उन्हें बढ़ोत्तरी नहीं दे सका। उन्होंने सोचा कि मैं बदल गया हूँ और उन्हें नज़रअंदाज कर रहा हूँ, इसलिए वे यूनियन में शामिल हो गए। यूनियन का नेता धूर्त था। वह मुझपर समझौता करने के लिए दबाव ड़ालने लगा तथा जल्दी धन कमाने के लिए मेरे विरोध

में कोर्ट में केस फाईल कर दिया और दस लाख से अधिक का दावा किया।

- (1995 से पहले) दो बार मैंने २५०० टन की क्षमता के जेक्स M/S Middle East Foundation Group Dubai को सप्लाई कर चुका था। जिन्हें वे पुल और ऊंची इमारतों की Foundation की जाँच के लिए प्रयोग करते थे। उन्होंने, तीसरी बार ३८ लाख रुपयों का ऑर्डर बुक किया। बैंक में लेटर ऑफ क्रेडिट (LC) खोलने में समय लगता है और उन्हें जॅक बहुत जल्दी चाहिए थे। इसलिए इस बार उन्होंने कहा, कि यदि में सहमत हूँ, तो वे भुगतान बैंक के जरिए करेंगे। मैं सहमत हो गया और उनके लिए जेक्स बनाए। लेकिन दुर्भाग्य से जिस प्रोजेक्ट के लिए वे ये इक्यूपमेंट खरीद रहे थे, वह प्रोजेक्ट रद्द हो गया। इसलिए उन्होंने ३८ लाख रुपयों की कीमत का मेरा ऑर्डर भी रद्द कर दिया।

- मंदी के कारण मैंने शून्य लाभांश पर बहुत सारे ऑर्डर लिए, लेकिन यूनियन की समस्याओं के कारण कर्मचारियों के धीरे काम करने और मेरे गलत कीमत लगाने की वजह से मुझे अनेक मशीनों में भारी नुकसान उठाना पड़ा। जब धन आना कम हो गया तो जो भी पैसा आता उसे मैंने सप्लायर्स को भुगतान करने के बजाय अपने स्टाफ और कर्मचारियों का वेतन दे दिया। इस प्रकार सप्लायर्स का बकाया भुगतान लगभग ५० लाख रुपयों तक जा पहुँचा।

- मैं जाल में फंस गया था। इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। राजनीतिक नेता और सरकारी अफसरों के प्रभाव का प्रयोग करने के बावजूद यूनियन लीडर किसी भी तरह मानने को तैयार नहीं था।

  मैंने मिडिल ईस्ट फॉउंडेशन ग्रुप (दुबई) को ऑर्डर स्वीकार करने की बहुत प्रार्थना की, लेकिन वे स्वयं भी आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहे थे, इसलिए उन्होंने खेद प्रगट किया। माल सप्लाई करने वाले मुझे परेशान कर रहे थे। उनके शब्द थे 'कुछ भी करो पर हमारा भुगतान करो।'

- २००२ मेरी फैक्टरी कि कीमत ज्यादा नहीं थी, इसलिए फैक्टरी बेचकर भी में अपना कर्जा नहीं उतार सकता था। अगर मैं अपना लम्बा-चौड़ा फ्लैट भी बेच देता, तो मैं उसी तरह के दूसरे फ्लैट का किराया देने में समर्थ नहीं था। छोटा फ्लैट और निम्न-स्तर का जीवनमान मेरे परिवार की प्रतिष्ठा व विश्वास बर्बाद कर देता, इसलिए ऐसा करने की भी मैं हिम्मत नहीं कर सका।

- इन चिंताओं ने मेरा वजन २० प्रतिशत कम कर दिया। मैं बहुत ही कमजोर शरीर का हूँ। मेरा वजन केवल ५२ किलो था, जो तब घटकर ४२ किलो हो गया था। जब मैंने पाया कि मेरे लिए सभी द्वार बंद हैं, तो मैं ईश्वर की ओर मुड़ा।

- अगले चार महीनों तक मैंने ईश्वर की हर नमाज़ के बाद मन से प्रार्थना की, तब दयालु प्रभू ने मेरे ऊपर दया की। एक सुहानी सुबह मुझें M/s. Middle Eastm Foundation Group Dubai से फोन आया कि वे उसी ऑर्डर को पक्का कर रहे हैं और ३८ लाख रुपये की कीमत के जेक्स अर्थात माल उठा लेगें।

- मैंने जेक्स सप्लाई किया और भुगतान भी प्राप्त कर लिया। मेरे कर्मचारियों को समझ में आ गया कि कोर्ट में दायर किए गए मुकदमें में कर्मचारियों का विवरण गलत और गुमराह करने वाला था। उनके

यूनियन-लीडर द्वारा मुकदमा दायर करना केवल पैसा वसूल करना था। यह उनके लिए लाभदायक नहीं होगा। वे सहमत हो गए और मैंने उन्हें उनके बकाया राशि से २० प्रतिशत अधिक भुगतान किया और उन्हें नौकरी से अलग कर दिया।

- फिर मैंने अपने सप्लायर्स से कहा कि अब मेरी दो समस्याएँ हल हो गई हैं और उनका भुगतान भी होगा, क्योंकि मेरी आर्थिक स्थिति सुधर गई है। अब मुझे समय दो मैं आप सभी का पैसा चुका दूँगा। मगर कईयों ने मुझे दु:ख भी बहुत दिया था और अपनी सप्लाई भी रोक दी थी। अगले दो वर्षों में मैंने सब बकाया रकम चुका दी।

आज भी जब उन बुरे दिनों की याद आती है तो मैं काँप उठता हूँ।

इस विनाश से ईश्वर के सिवाय कोई भी मुझे पूर्ण रुप से बचा नहीं सकता था और वास्तव में उसने ही मुझे बचा लिया।

प्रत्येक व्यापारी के जीवन में ऐसा समय जरुर आता है, जब वह समय के एक ही झटके में राजा से भिखारी हो सकता है। यह ईश्वर ही है, जो हमारे सिर पर पगड़ी कायम रखता है और हमें बेईज़्ज़त होने से बचाता है।

व्यापार में ईश्वर की कृपा को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है। उसे अपने व्यापार में साझीदार की तरह समझना चाहिए और उसका हिस्सा उसे देना चाहिए, और यह हिस्सा दान के रुप में तथा सहायता के रुप में हैं।

(सन 2007 में जब अगले ऑर्डर के लिए में दुबई गया था, तब M/S Middle East Foundation Group Dubai से यह बात मालूम हुई के जिस जॅक्स का ऑर्डर उन्होंने नामंजूर करके बाद में मंजूर किया था उसी जॅक्स का प्रयोग उन्होंने दुनिया की सबसे ऊँची बिल्डिंग (Burj Dubai) की Foundation टेस्टिंग (जांच) में किया था।)



220 TON CAPACITY ANGLE SHEARING PRESS



100 TON CAPACITY STAMPING/ MARKING PRESS



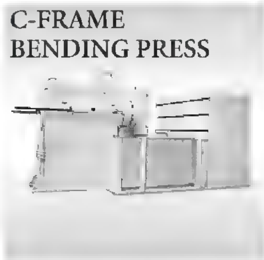
75 TON NOTCHING PRESS



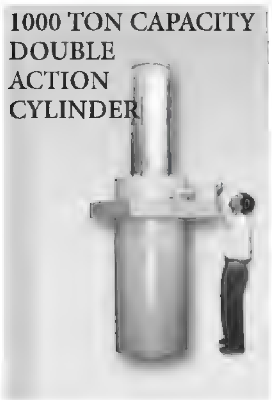
75 TON HOLE PUNCHING PRESS



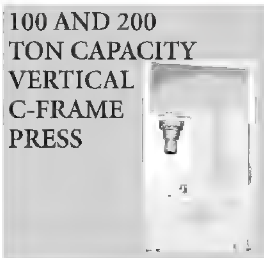
HORIZONTAL CUM VERTICAL BENDING PRESS



C-FRAME BENDING PRESS



1000 TON CAPACITY DOUBLE ACTION CYLINDER



100 AND 200 TON CAPACITY VERTICAL C-FRAME PRESS



HOSE CRIMPING MACHINE (Up to 3 inch)



2500 TON HYDRAULIC JACK

←

(Export order of this Jack got cancelled and re-confirmed after four months. Foundation of world's tallest building "Burj Dubai" has been tested by M/s. Middle East foundation group, using our said exported Jacks.)

Machinery Manufactured by Author Q.S.Khan

www.hydraulicpresses.in

६. दुर्भाग्य और समृद्धि हानि के कुछ उदाहरण (Few example of misfortune and lose of prosperity)

उदाहरण १:-

सरकार की आयात-निर्यात की नीति में परिवर्तन के साथ यथार्थ उपकरणों (Precison tools) का आयात आसान हो गया और मि.खन्ना (अध्याय-१ का उदाहरण ४) ने अपना व्यापार खो दिया। उनके बेटों को मशीनें बनाने के व्यापार में कोई रुचि नहीं थी, इसलिए उनके मशीनें बनाने के व्यापार में वह शामिल नहीं हुए। बढ़ती उम्र के कारण मि.खन्ना स्वयं भी निर्माण-कार्य के व्यापार को और आगे जारी नहीं रख सके। नए उद्योग में उनके बेटे भी कुछ अधिक नहीं कमा सके। उच्च जीवन-स्तर की आदत ने उनके जीवन को कम आमदनी से दयनीय (Miserable) बना दिया। मि.खन्ना की ब्रेन हेमरिज के कारण मृत्यु हो गई। एक परिवार जिसने मध्यम वर्ग से जीवन शुरु करके उच्च-स्तर को छुआ मगर फिर मध्यम जीवन स्तर पर आ गया।

उदाहरण २:-

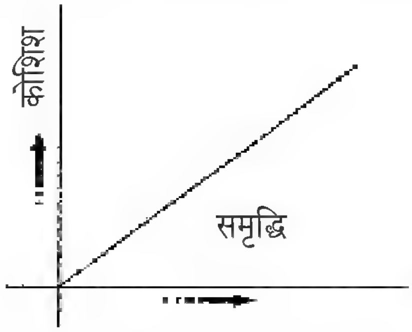
श्री.मुजावर एक अध्यापक और एक विद्वान हैं। वह कोल्हापुर के पास एक छोटे-से गाँव के गरीब परिवार के निवासी थे। उन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन किया और विद्वान बन गए। उन्होंने बहुत प्रशंसा पायी और भारत के प्रधान मंत्री से पुरस्कार प्राप्त किया।

उनका इकलौता बेटा रियाज़ पढ़ाई में अच्छा नहीं था। मि.मुजावर ने अपनी ओर से पूरी कोशिश की लेकिन अपने बेटे को नहीं पढ़ा सके। लगातार की मारपीट ने रियाज़ को और बिगाड़ दिया। वह दसवी कक्षा भी पास नहीं कर पाया। वह अपने पिता से नफरत करता था। प्यार में पड़ कर उसने शादी की और साँगली में अपने ससुराल वालों के साथ बस गया। आज वह एक छोटी-सी जनरल दुकान चलाता है। एक मध्यम-वर्गीय परिवार के मि.मुजावर ने थोड़े समय के लिए समृद्धि प्राप्त की और फिर अपनी पुरानी जगह पर आ गये, जो गरीबी है।

उदाहरण ३:-

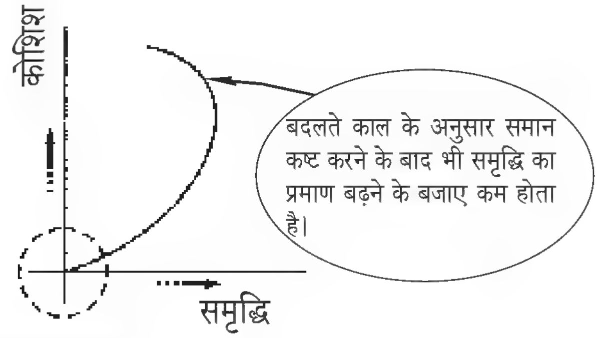
श्री.वेंकटेश अय्यर एक तीव्र गति से काम करनेवाला व्यक्ति था। पढ़ाई तथा स्पोर्टस में सबसे अच्छा होने के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा था। उन्हें अच्छी नौकरी मिली, बहुत तेजी से प्रगति की और अल्प समय में एरिया मार्केटिंग मैनेजर बन गये। उन्हें उँची तनख्वाह के साथ-साथ कंपनी की ओर से बँगला और कार तथा ड्रायवर मिला। वह हमेशा टूर पर रहते थे, वह अति महत्वाकांक्षी, लगातार सिगरेट पीने वाले तथा बहुत ही शराब पीते थे। एक दिन एक हाथ में सिगरेट और दूसरे हाथ में शराब का गिलास लिए वह पार्टी में फर्श पर लड़खड़ा कर गिर पड़े और ४० साल की छोटी-सी उम्र में ब्रेन हेमरेज से उनकी मृत्यु हो गई। तथा अपने पीछे घर में पत्नी, दो छोटे बच्चों को छोड़ गये, जिनका आमदनी का कोई ज़रिया नहीं था। बहुत ही कम समय में समृद्धि का आनंद लेने के पश्चात् अचानक उनका परिवार गरीबी में रुपांतरित हो गया।

व्यापार के जो सिद्धांत कॉलिज और यूनिवर्सिटिज (विद्यापीठ) में पढ़ाए जाते हैं, यदि सही तरीके से उन्हें प्रयोग में लाया जाए। तो उनके अच्छे परिणाम मिलते है और आपकी तरक्की आपकी मेहनत के अनुसार होगी।



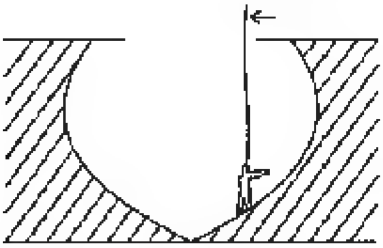
Graph No. 1

उपर्युक्त उदाहरण यह स्पष्ट करते है, कि कई बार कई उदाहरणों में एक निश्चित समय के पश्चात् समृद्धि प्राप्त करने में कमी आती है, या समृद्धि की प्राप्ति स्थिर हो जाती है अथवा लोग अपनी पहले वाली स्थिति में आ जाते है। अर्थात उनका परिवार अपनी उसी आर्थिक-स्थिति पर आ जाते हैं, जहाँ से उन्होंने समृद्धि प्राप्त करना शुरु किया था।



Graph No. 2

ग्राफ (चित्र नं २) को एक गड्ढे के रुप में कल्पना कीजिए जैसे कि ग्राफ नंबर ३ में दर्शाया गया है। मैं इसे गरीबी का गड्ढा कहता हूँ। लोग कठिन परिश्रम करते हैं, एक निश्चित सीमा तक उन्नति करते हैं लेकिन अगर वे अपने जीवन में सफलता के सूत्रों का पालन नहीं करते हैं, और महान कर्मों तथा चरित्र को जीवन में नहीं रखते हैं, तो गरीबी के गढ्ढे में गिर जाते है।



९५ प्रतिशत लोग इस गरीबी के गड्ढे में फंस जाते है और वही लोग उपर आते है जो ईश्वर की रस्सी का सहारा लेते है। इसलिए अच्छे कर्म किए बिना सफलता आसान नहीं है।

Graph No. 3

नियम बनाने वाला तथा इस सृष्टि का मालिक कहता हैं,

वे जो ईश्वर में विश्वास रखते हैं, वे ऐसा सहारा थामे हुए हैं, जिसकी पकड़ कभी टूटेगी नहीं।

(पवित्र कुरआन २-२५६ सारांश)

इसलिए जो गरीबी के गड्ढे में गिरने से बचना चाहते है उन्हें ईश्वर को हमेशा याद रखना चाहिए।

७. **क्या आप गरीबी की जंजीरों में बंधे हो?**

सड़ना (Decay) तथा विनाश (Destruction) एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। एक लोहे की पुरजे (Part) को खुले स्थान में छोड़ दों। इस में जंग लगना शुरु हो जाएगा और एक समय के पश्चात लोहा मिट्टी में बदल जाएगा। एक दुर्ग (Fort) को जितना संभव हो उतना मज़बूत बनाओ और उसे बिना देखरेख के छोड़ दो। उसकी दीवारों और बुनियादों में पेड़ और झाड़ियाँ उग आएँगी तथा कुछ सालों में यह भडभड़ा कर गिर जाएगा।

इसी प्रकार यदि समृद्धि की भी उचित देखरेख तथा सही तरीके से उसे सुरक्षित न रखा जाए, तो यह नष्ट हो जाएगी और उसका स्थान गरीबी ले लेगी। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसलिए हर आदमी गरीबी से प्रभावित हो सकता है, अगर वह बेफिकर हो जाए तो।

जब एक कुत्ता पागल हो जाता है, तो लोग उसे मार डालते हैं। जब एक शेर आदमखोर हो जाता है, तो सरकार उसे मार देती है। जब तक वे संसार में शांति और मेल-मिलाप से रहते हैं, वे जीवित रहते हैं। जब वे संसार को हानि पहुँचाने लगते है तो, वे समाप्त कर दिए जाते हैं। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया हैं।

ईश्वर ने इस संसार और मानव समाज की रचना की है। वह व्यक्तिमात्र (इन्सानों) से उसे उससे कहीं अधिक प्यार करता है, जितना माँ अपने नवजात शिशु से करती हैं। समाज में लाखों लोग ऐसे हैं, जो पूर्ण रुप से सज्जन है और ईश्वर से डरने वाले हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश आर्थिक-रुप से अधिक समृद्ध नहीं हैं। ईश्वर किसी को आर्थिक समृद्धि के आधार पर प्यार नहीं करता है, बल्कि उसकी इन्सानियत और प्रभु-भक्ति के आधार पर ही प्रेम करता है और समाज में मध्यम-वर्ग के लोग और गरीब अधिक हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के अंदर अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की आदत होती है। अच्छी आदत अथवा अच्छा स्वभाव व्यक्ति को मनुष्यता एंव समाज के प्रति अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रेरित करता है। जबकि बुरा स्वभाव उसे श्रमिक-वर्ग (निम्न वर्ग) को दबाने और उस पर राज्य करने के लिए भड़काता है। भारी धन इकट्ठा करना और अपने सभी साथी प्रतियोगियों को मात देना तथा उनमें ईर्ष्या था हीनता

की भावना पैदा करना, यह कार्य भी दृष्ट प्रवृत्ती मनुष्य से करती है।

यह मानव-मात्र की कमजोरी है कि वह आसानी से प्रभावित होता है। जब वह देखता हैं कि एक साथी जो उसके बराबर है लेकिन उससे अधिक धन-दौलत रखता है तो वह निराश और ईर्ष्यालु हो जाता है। यह भावना दर्दनाक है तथा यह मन की शांति को छीन लेती है। इस ईर्ष्या की आग में वह उस सुख-समृद्धि का भी आनंद नहीं लेता है, जो ईश्वर ने उसे प्रदान की है। ईश्वर जिनसे प्यार करता है उनमें अधिकांश गरीब और मध्यम वर्ग के लोग है। ईश्वर उनके हृदय में ईर्ष्या का दर्द नहीं चाहता इसलिए वह उनके कारणों को ही नष्ट कर देता है। जिस प्रकार कांटनेवाले खूंखार कुत्ते को हमेशा जंजीरों में जकड़ कर कैद में रखा जाता है, इसी प्रकार अधिक बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति जो आम लोगों पर राज्य करना चाहते है, भारी मात्रा में धन इकट्ठा कर अपने सहयोगियों के ऊपर अपने श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहता है, ईश्वर उन्हें हमेशा गरीबी की जंजीरों में जकड़ कर रखता है। क्योंकि वह ईर्ष्यां का कारण बन कर दूसरें लोगों के मन में दर्द पैदा करता है। चाहे वह किसी भी साधन से समृद्धि प्राप्त करता है, वह जितनी तीव्रता से समृद्धि प्राप्त करता है, उतनी तेजी से धन-दौलत खो भी देता है।

इसलिए समृद्ध और धनवान होने के लिए, सबसे पहले हमें अपनी बुराईयों को दबा कर नियंत्रण में रखना चाहिए। नम्र और शिष्ट रहो। अपने धन को छिपाने की कोशिश करो। गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों को प्रभावित करने तथा अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए उनके सामने अपने धन और शक्ति का प्रदर्शन मत करो। शांतिप्रिय और निर्दोष लोगों की तकलीफ का कारण कभी भी मत बनों।

महान (पुण्य के) कर्मों के बिना निरंतर (स्थायी) समृद्धि असंभव हैं।

८. पाप (Sin):-

अब्दुल्लाह सेठ अपनी सोसायटी में सबसे अधिक धनवान व्यक्ति था, उसका कई माल-गोदाम, टिम्बर की दुकानें तथा घर बनाने के सामान को सप्लाई करने का व्यापार था। वह इतना अधिक धन कमा रहा था, कि उसने गिनना छोड़ और यहाँ तक कि इसके बारे में चिंतित होना भी छोड़ दिया।

उसके एक दोस्त ने उसे वैश्यालय (Brothel) से परिचित कराया। उस वातावरण ने उसे बहुत आकर्षित किया और वह उनका नियमित ग्राहक बन गया। डॉंस के समय अब्दुल्लाह सेठ अपनी मनपसंद डॉंसर्स को हजारों रुपयों के उपहार दिया करता था। एक बार एक ऐसा दूसरा ग्राहक उसके सामने आया, जो उससे अधिक उपहार डांसरों को देने लगा। इससे अब्दुल्लाह की अहं-भावना को ठेस लगी। वह इस गलतफहमी में था कि उसके बराबर दानशील कोई नहीं है।

प्रत्येक मुजरे में मारवाडी समाज का वह ग्राहक, डॉंसर्स को सेठ अब्दुल्लाह के उपहार से अधिक उपहार दिया करता था, और यह बात अब्दुलाह को परेशान करती थी। क्रोधित अब्दुल्लाह ने हजार रुपए का नोट निकाला, उसके अंदर तंबाकू रखा, इसे सिगरेट की तरह गोल किया और उसे सिगरेट कि तरह जला कर पीना शुरु किया। यह उस पर अपना प्रभाव जमाना था कि यह रुपया और पैसा उसके लिए कोई कीमत नहीं रखता। मारवाड़ी यह विश्वास करतें हैं कि धन लक्ष्मी होती है अर्थात समृद्धि की देवी और वे उसका निरादर कभी नहीं करते हैं। इसलिए मारवाड़ी ग्राहक ने अपनी हार स्वीकार कर ली और

मान लिया की अब्दुल्लाह से अधिक दानशील उस वेश्यालय में कोई और नहीं हैं।

पवित्र गीता कहती है, समय परिवर्तनशील है। इसका अर्थ है कि समय हमेशा बदलता है, और यही अब्दुलाह के साथ हुआ। अव्यवस्था के कारण, उसका व्यापार और जायदाद टुकड़े-टुकड़े होनी शुरु हो गई। एक दिन उसके माल गोदाम और सभी दुकानें बिक गईं और वह दिन भी आ पहुँचा कि उसके पास कुछ भी नहीं था। न पैसा न जायदाद और उसके सभी बच्चों और रिश्तेदारों ने उसे त्याग दिया।

सोसायटी के पुराने लोगों ने उस अब्दुल्लाह सेठ को रास्तों पर भीख मांगते हुए देखा है जो कभी अपने अहंकार के कारण किसी को सलाम नहीं करता था।

पाप समृद्धि के जहाज़ को डुबा देता है। धन को स्थायी रखने की लिए पाप मत करो।

ईश्वर ने मानव की रचना किस उद्देश्य के लिए कि है?

अपनी प्रार्थना के लिए! यक्ष अथवा देवदूतों की कोई आवश्यकताएँ नहीं होती हैं। उनके अपने जीवन में एक ही वस्तु है और वह प्रार्थना है! उनकी प्रार्थना इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, जितनी हम मनुष्यों की है, क्योंकि हमारे अपने जीवन में अनेक ज़रुरते हैं और उनको पूरा करने में हम व्यस्त रहते हैं। इस व्यस्त जीवन में से प्रार्थना के लिए समय निकालना बहुत बड़ी बात है।

धार्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं:-

१. मैं (ईश्वर) हर बुरे (गलत) रास्ते से नफरत करता हूँ। *(पवित्र बायबल PS ११९:१२८)*

२. मनुष्य को नम्रता पूर्वक सही रास्ते पर चलना चाहिए। *(पवित्र ऋग्वेद १०:३१:२)*

३. ईश्वर उद्दंड और अभिमानी व्यक्ति को पसंद नहीं करता हैं। *(पवित्र कुरआन ४:३६)*

४. ईश्वर किसी पर भी उसकी सहन-शक्ति से अधिक ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता है। प्रत्येक व्यक्ति ने जो कमाया है अथवा अच्छा कर्म किया है, उसका फल भी उसी के लिए है और जो बुरा कर्म किया है उस का फल भी उसी पर है। इसलिए हम प्रार्थना करते है, कि हे प्रभू! जो हम से भूल अथवा गलतियाँ हो जाएँ उसे क्षमा करे। (पवित्र कुरआन २:२८६)

५. जो कुछ भी तुम करोगे उसी के अनुसार तुम्हें फल मिलेगा। (यर्जुवेद २३:१५)

६. हे सर्वशक्तिमान प्रभु! अपनी अज्ञानता के कारण हम गलत राह पर जाते हैं और फल भुगतते हैं। कृपया हमारा मार्गदर्शन करें और हमारी सहायता करें। (ऋग्वेद ७:८९:३)

७. इस धरती पर और आकाश में जो कुछ भी हैं, वह सब ईश्वर का ही हैं। वह बुरे कर्म (पाप) करने वालों को सजा देता है और जो अच्छी राह पर चलते हैं उन्हें आर्शीवाद देता है।
(पवित्र कुरआन ५३:३१)

८. हर सांस जुआरी को अभिशाप देती है, उसकी पत्नी उसे त्याग देती हैं और जुआरी को कोई एक पैसा भी उधार नहीं देता है। ओ जुआरी खेती कर और जुआ खेलना छोड दे, तथा जो कुछ भी तुम खेती द्वारा कमाते हो उसमें संतुष्ट रहो। (ऋग्वेद २१४:३४:३)

९. शराब पीने वाले अपने ऊपर से नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसी क्रियाएँ करते हैं जो (हे ईश्वर) आपको क्रोधित करती हैं। हे ईश्वर! आप भी इस प्रकार के लोगों की मदद नहीं करते हों।
(पवित्र ऋग्वेद २१४:१४)

१०. जो कुछ भी तुम करते हो, वह दो फरिश्ते रिकॉर्ड करते है और लिखते है। कयामत के दिन अर्थात न्याय के दिन तुम इस रिकॉर्ड-बुक को देखोगे। (पवित्र कुरआन ८२:१०-१२ सारांश)

११. हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब से छोटा कर दिया, सिवाय उन लोगों के जो श्रेष्ठ कर्म करते रहें, और उनके लिए कभी समाप्त न होने वाला पुरस्कार हैं। (पवित्र कुरआन ९५:५-६)

१२. शराब पीना, जुआ खेलना, पाँसे, पत्थर फेंक कर (भविष्य जानना) इत्यादि सब गलत काम हैं और शैतान द्वारा उकसाये हुए हैं। इनसे दूर रहो, इसलिए कि तुम्हें समृद्धि प्राप्त होगी।
(पवित्र कुरआन ५:९०)

१३. न्याय के दिन अर्थात कयामत के दिन तुम एक छोटे से छोटे पाप को भी अपने कर्म के रिकार्ड में लिखा देखोगे। और इसी तरह अगर तुमने एक छोटासा अच्छा कर्म किया होगा उसे भी वहाँ लिखा पाओगे। (पवित्र कुरआन ९९:७-८)

१४. उस ईश्वर से डरो और बुराई से बचो। (पवित्र बायबल प्रोव्ह ३७)

ज्ञान की पुस्तकें क्या कहती हैं?

निम्नलिखित वस्तुएँ गरीबी लाती है;

१. घरों में मकड़ी के जाले।

२. झूठी कसमें खाना।

३. व्याभिचार (अपने जीवनसाथी को छोड़ अन्य के साथ काम-क्रिया करना।)

४. सूर्यास्त के तुरंत पहले और बाद में सोना।

५. किसी भिखारी को खाली हाथ लौटाना, विशेषकर सूर्यास्त के बाद।

६. रिश्तेदारों के साथ दुर्व्यवहार और पड़ोसियों को कष्ट देना।

७. अपने बच्चों को अभिशाप देना।

८. अपने माता-पिता तथा शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार करना।

९. सूर्योदय के पश्चात सोना।

१०. खाने योग्य वस्तुओं का निरादर करना।

११. धार्मिक पुस्तकों का अपमान करना।

९. प्रार्थना :- (Prayer)

एक विनाशकाय तूफानी लहर चट्टान से टकराती है और तितर-बितर हो कर बिखर जाती है, और वापिस आकर सागर में मिल जाती हैं, लेकिन चट्टानों को कुछ नहीं होता। इसके विपरीत अगर पानी की बूँद-बूँद उसी चट्टान पर अगर एक लंबे समय तक लगातार गिरती रहे तो उसमें छेद कर देती है।

इसी तरह एक छोटी-सी लेकिन नियमित प्रार्थना भाग्य-निर्माण पर गहरा प्रभाव डालती है। लेकिन हम केवल घोर-संकट के समय ही ईश्वर को याद करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, व्रत रखते हैं, दान देते है और सभी अच्छे काम करते हैं, और जैसे ही तकलीफें समाप्त हो जाती हैं, हम फिर अपने पहले वाली उद्देश्यविहीन जीवन-शैली की ओर मुड़ जाते हैं।

हम सबको अपने बचपन में प्रार्थना करना सिखाया जाता है। हमें इसे हमेशा करना चाहिए, क्योंकि केवल ईश्वर ही हमारी और हमारे उत्तराधिकारियों की समृद्धि बढ़ाने वाला हैं। हमें हर रोज छोटी सी प्रार्थना जरुर करनी चाहिए। यह बर्बादी को रोकती तथा उस से बचाती है, जो हमारी जिंदगी में शायद आने वाली थी।

आखिरी पैंगम्बर ने कहा,

'ईश्वर कहता है, ऐ लोगों, मेरी प्रार्थना में लगे रहो और मैं तुम्हें समृद्ध बनाऊँगा और तुम्हारे दुखों का अंत कर दूँगा। और यदि तुम ऐसा नहीं करते हो, तो जीवन में मैं (ईश्वर) न तो तुम्हें कभी फुर्सत का समय दूँगा और न कभी मैं तुम्हारे पैसो की परेशानी दूर करुंगा'

(इब्ने माजा ४१०७)

इसलिए हमें हमेशा ईश्वर की प्रार्थना करते रहना चाहिए और दुआ मांगते रहना चाहिए।

'इंद्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामानि जीवा ज्योतिर शीमहि॥'

हे ईश्वर! हमें धर्म की शिक्षा (Knoweldge) दें ताकि हमें इस जीवन में ही तेरा सच्चा ज्ञान प्राप्त हो। (अथर्ववेद १८:३:६७)

हे सर्व शक्तिमान प्रभु। मुझे अपना रास्ता दिखाओ, अपनी राह मुझे सिखाओ।

(पवित्र बाइबल PS २५:०४)

पवित्र आध्यात्मिक पुस्तके क्या कहती हैं?

१. जो ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता है, वह उसका शत्रु हैं। ईश्वर अपने दुश्मनों का सब नष्ट कर देता है, जो उनके पास है। (ऋग्वेद २-१२-५)

२. वह महान आत्मा है, संपूर्ण और संपन्न है। वह अपने पैगम्बरों को उपदेशों के साथ भेजता है, जो गरीबों में खुशहाली और सम्पन्नता लाती है। धन उस प्रभु की कृपा से ही कमाया जाता है और उसके अभिशाप से ही नष्ट हो जाता है। (ऋग्वेद)

३. सर्वशक्तिमान ईश्वर उन को अपनी कृपा से संपन्न करता है, जो उसकी भक्ति करते हैं। वह

तेजस्वी सूर्य का भी मालिक है। वह मानवीय रिश्तों को बनाए रखता है। वह आदरणीय है। वह दानशील है। वह उनका ख्याल रखता है, जो अपने घरों में उसकी प्रार्थना करते हैं।
(ऋग्वेद २-१-७)

४. हे ईश्वर! हमें रास्ता बता, हमारा सही मार्गदर्शन कर जिसमें हमारा कल्याण हो।
(यजूर्वेद १-१-७)

५. हे ईश्वर! आप सज्जन पुरुषों पर ही कृपा करते हैं। यही आपकी विशेषता है। (ऋग्वेद १-१-६)

६. वे जो नियमित रुप से प्रार्थना करते है, तथा दूसरों की मदद में दान देते हैं, ईश्वर में विश्वास रखते हैं, कयामत के दिन में उनको हम शीघ्र ही महान पुरस्कार देंगे। (पवित्र कुरआन ४-६२)

७. प्रार्थना शर्मनाक और अन्यायपूर्ण कर्मों से बचाती है। (पवित्र कुरआन २९-४५)

८. हे लोगों! तुम्हारी धन-दौलत और तुम्हारे बच्चे तुमको ईश्वर के ध्यान से हटा न दें। यदि तुम ऐसा करते हो, तो नुकसान तुम्हारा ही होगा। (पवित्र कुरआन ६३-०९)

९. जो कुछ मैंने(ईश्वर) तुम्हें दिया है इस का आभार मानो। बदले में, मैं तुम्हें अधिक-से-अधिक दूँगा। यदि तुम मेरी नाशुक्रि करोगे, तो मेरी सज़ा कठोर है। (पवित्र कुरआन १४:०७)

१०. यदि तुम्हारा एक ईश्वर पर सच्चा विश्वास है तो केवल तुम ही सफल होओगे।
(पवित्र कुरआन १४-०७)

११. सौभाग्यशाली वे हैं जो मेरे रास्ते पर चलते है। (पवित्र बाइबल Prove ८ ३)

१२. अमर जीवन ईश्वर का ही उपहार है। (पवित्र बाइबल Prove ८ ३)

१३. सत्यनिष्ठ ईमानदार व्यक्ति पाम-वृक्ष की तरह फूलते फलते हैं। (अर्थात केवल ईमानदार ही सबसे अधिक समृद्धि प्राप्त करेंगे।) (पवित्र कुरआन १२-१२)

ज्ञान की पुस्तके क्या कहती है?

ज्ञान की पुस्तकों के अनुसार निम्नलिखित वस्तुएँ समृद्धि को बढ़ाती है:

१. माता-पिता के प्रति बेहतर व्यवहार करें।

२. नियमित प्रार्थना और दान देना।

३. ईमानदारी से व्यापार का संचालन करना।

४. सुबह जल्दी उठना (सूर्योदय से पहले)।

५. अच्छा सामाजिक जीवन गुजारना।

६. भौतिक जीवन (Materialistic life) की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक महत्व देना, तथा ईश्वर में विश्वास रखना।

७. धन कमाते समय धैर्य रखना।

८. अतिथियों का आदर-स्वागत करना।

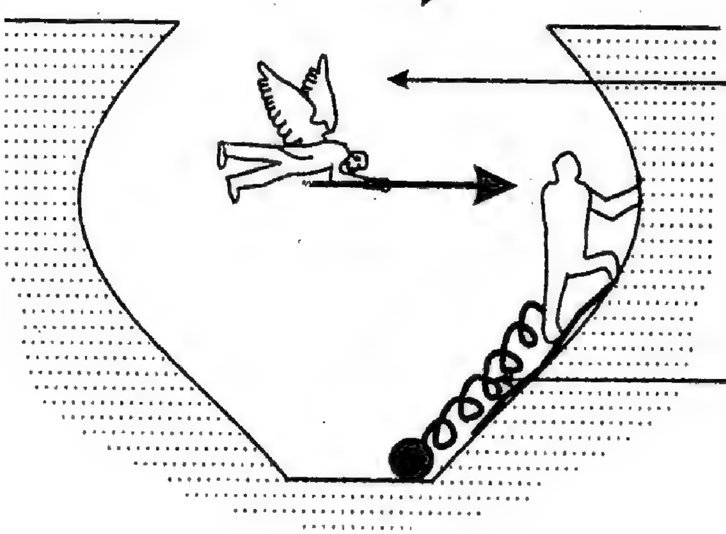
९. धार्मिक ग्रंथो का आदर करना।

१०. अपने परिवार के साथ उदारता से व्यवहार करना।

११. ईश्वर का कृतज्ञ रहना।

१२. अन्न का आदर करना और इसे बर्बाद न करना।

१०) गरीबी के कारणों का संक्षिप्त रुप में अहवाल:



गरीबी का गड्ढा
जो कोई सफलता के लिए सही दिशा में कोशिश नहीं करता वह इस गड्ढें में गिर जाता है।

अज्ञानी परिवारवालें, जाति और वंशद्वेषी समाज, ईर्ष्या करने वाले दोस्त या दुश्मन, दूसरे पर अत्याचार करने वाले लोग, कुदरती विपदा व्यक्ति को गरीबी के गड्ढे में कैद रखती है।

नकारात्मक स्वभाव, ज्ञान की कमी, बुरी आदतें, बुरे लोगों का साथ, ईश्वर का शाप और क्रोध, व्यक्ति को हमेशा गड्ढे के नीचे बंध कर रखते हैं।

ऊपर दिए गए चित्र का स्पष्टीकरण

गरीबी और उसे स्थिर रखने वाले तथ्यः-

१) गरीबी का गड्ढा-

यह एक प्राकृतिक नियम है कि जो कोई अपनी मानसिक और शारीरिक कोशिशों से अपनी सफलता और समृद्धि कायम रखने और बढ़ाने के लिए मेहनत नहीं करेगा और ईश्वर की कृपा का सहारा नहीं लेगा वह गरीबी के गड्ढे में गिरता हैं और उसमें ही फंसा रहता है।

२) नकारात्मक स्वभाव-

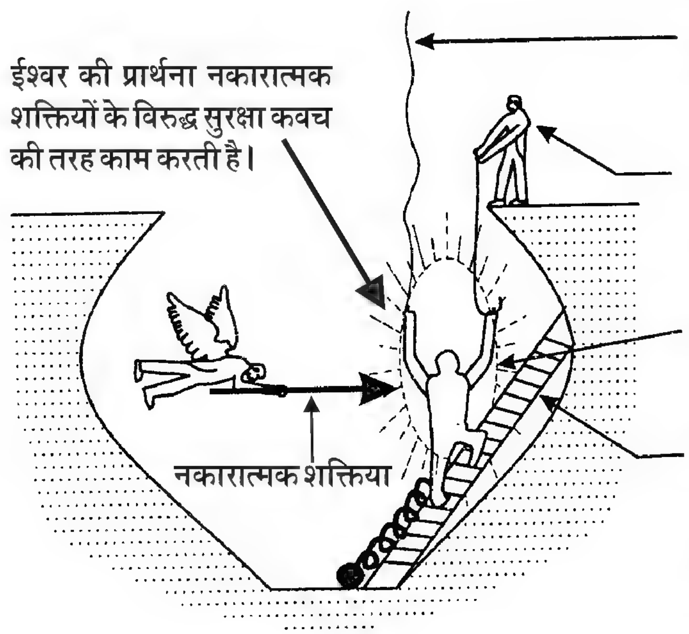
जिन लोगों का स्वभाव निम्नलिखित प्रकार का हैं वह गरीबी की जंजीर में हमेशा जकड़े रहते हैं।

- धन और संसाधनों को बर्बाद करना।
- बुरा स्वभाव यानि दूसरों को दुख देना और दूसरों का अपमान करना।
- पाप करना और ऐसी आदतें रखना जिससे ईश्वर का प्रकोप आप पर हो जाए।
- पुश्तैनी से चलती गरीबी और संकटों से बाहर आने की कोशिश, ज्ञान और इच्छा में कमी।

३) गरीबी निर्माण करनेवाले बाहरी प्रभाव तथा तथ्य-

- असभ्य समाज या शहर में रहना।
- बुरे लोगों का साथ।
- जन्म के स्थान, जाति और धर्म के आधार पर लोगों के हाथों नुकसान उठाना।
- रिश्तेदार या दोस्तों की दुश्मनी और जलन का शिकार होना।

११) सफलता के कारणों का संक्षिप्त अहवाल-



ईश्वर की डोर (मदद)।

जो इसका आधार लेते है वह कभी भी गरीबी के गड्ढें में नहीं गिरते। (इसलिए ईश्वर पर भरोसा रखो उसकी आज्ञा का पालन कीजिए। पाप करके उसके क्रोध को आमंत्रित न करें।)

धार्मिक और श्रद्धालु लोगों के आशीर्वाद (दुआ) और सकारात्मक सोच रखने वालों के साथ से गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने में हमें मदद मिलती हैं।

साफ मन, साफ शरीर, साफ भोजन, साफ सुथरा कार्य करने की जगह, साफ और ईमानदारी से कमाया हुआ धन, इससे बुरी चीजों से दूर रहने का संरक्षण मिलता है।

दान देना और मानवता के लिए पैसे खर्च करना यह गरीबी के गड्ढें से बाहर निकालने में सीढ़ी की तरह सहायता करते हैं और व्यक्ति सफलता की तरफ तेजी से बढ़ते हैं।

ऊपर दिए गए चित्र का स्पष्टीकरण:-

संपन्नता और सफलता में बढ़ोत्तरी होने के कारण-

१) दान और समाजसेवा इन दो रास्तों से मानवजाति कि सेवा करने से समृद्धि तेजी से बढ़ती है। यह पुण्य के कार्य गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने में सीढी जैसा कार्य करते हैं।

२) सफलता के लिए प्रार्थना करने से आमदनी में बढ़ोत्तरी होती है। संपूर्णतः तन, मन, धन (व्यवहार) में साफ रहने से दृष्ट प्रवृत्ति और बुरे लोगों से हमारा संरक्षण होता है।

३) ईश्वर पर पूरी निष्ठा रखकर और उनके आदेशों का पालन करके उसकी रस्सी को पकड़े रहने से समृद्धि स्थिर रहती है और व्यक्ति गरीबी के गड्ढें में गिरने से बचता है।

४) सकारात्मक सोच रखनेवाले व्यक्तियों का साथ और मातापिता तथा अन्य साधुसंतो की दुआ से सफलता और समृद्धि का कठिन सफर आसान और सहज बन जाता है। और गरीबी के गड्ढे से बाहर आने में भी मदद मिलती हैं।

****

अध्याय-२ ६

दान

(Donation)

- मान लो, आप अपनी पत्नी और छोटी बेटी के साथ व्यापारिक-टूर पर अथवा छुट्टियाँ मनाने एक अजनबी देश में गए हो। जब आप खरीदारी करते हुए सड़क पर चल रहे थे तभी अचानक कुछ डाकू आ पहुँचे और आपको लूटना शुरु कर दिया। तब आस-पास के लोगों से आप क्या उम्मीद रखते हों? याद रखो आप वहाँ पर बिल्कुल अजनबी हो। न तो वहाँ की सरकार को आपने टैक्स अदा किया है और न ही वहाँ आपने किसी के लिए कुछ किया है। इसलिए लोग आपको बचाने के लिए अपनी जान-जोखिम में क्यों डालें?

  अगर स्वयं की रक्षा करते हुए, आपकी मृत्यु हो जाती है और आपका शरीर खून से लथपथ जमीन पर पड़ा है। आवारा कुत्ते आपके शरीर को क्षत-विशत कर रहे हों, तो आप उस समाज से, वहाँ के लोगों से क्या उम्मीद रखतें हों?

  उस समाज के लोग आपका दाह-संस्कार करने में अपना धन और समय क्यों खर्च करेंगे? वे न तो आप के मित्र हैं और न हीं रिश्तेदार।

  डाकू अगर आपकी पत्नी और बेटी को वेश्यालय में बेचने के लिए ले जाएं तो वहाँ के प्रभावशाली व्यक्तियों और कानून तथा व्यवस्था से आप क्या उम्मीद करते हो? क्या वे आपके परिवार का गलत लोगों से बचाव करेंगे? आपने न तो उनकी सरकार को टैक्स दिया है और न ही उनकी मानव अधिकार संस्था को कोई चीज़ दान दी हैं। वे आपके परिवार की रक्षा के लिए आगे क्यों आऐं?

  आप दूसरों से जो उम्मीद रखते हो, क्या आपने अपनी जिंदगी में किसी हताश निराश व्यक्ति के लिए इसी स्थिति में कुछ किया हैं?

  वास्तव में मनुष्य-मात्र बहुत अधिक स्वार्थी है। हम दूसरों से तो बहुत अधिक उम्मीद रखते हैं, लेकिन जब अपनी बारी आती है, तो दूसरी ओर देखने लगते हैं।

- शेर जंगल का राजा है। बहुत थोडे-से जानवर हैं जो उसकी ताकत को चुनौती देते हैं। केवल इसलिए नहीं कि शेर बहुत शक्तिशाली है, बल्कि इसलिए कि वे अनुशासित परिवार में रहते हैं। नर शेर कभी कभार शिकार करता हैं। वह अपना सारा ध्यान अपनी सत्ता को घुसपैठियों और दूसरे शेरों से बचाने में केंद्रित करता है। शेरनी शिकार करती है, अपने परिवार के सभी सदस्यों को खिलाती है और अपने शिकार को बाँट कर खाती है।

  शेर के बच्चों को सभी शेरनियों द्वारा स्तनपान कराया जाता है। जंगल का एक अलिखित कानून है कि 'जो सबसे अधिक तंदुरुस्त है, वही वहाँ जीवित रहता है।' (Only fittest will survive)। परंतु शेरो के परिवार में, जो शेरनी अनुकूल नहीं है अथवा बीमार है, वह भी जिंदा रह सकती हैं। दूसरे जानवरों के बच्चे उनके माता-पिता के मरते ही भूख से मर जाते है, लेकिन शेर के बच्चे नहीं मरते। वे माता-पिता को खो

देने के बाद भी अपने शेर के परिवार में रहते हैं। शेर परिवार के सभी सदस्य उस अनाथ बच्चे को प्यार करेंगे और सभी शेरनियाँ उसे अपना दूध पिलाती हैं। पारिवारिक जीवन का यह एक नमूना है जिसे ईश्वर ने शेर जाति के लिए बनाया है। ईश्वरने मानव-मात्र के लिए इससे अधिक अच्छा तरीका बनाया था, परंतु हम मनुष्य स्वार्थी हैं, हम सियार की तरह अकेली और धूर्ततावाली जिंदगी को प्राथमिकता देते हैं।

- ईश्वर ने हमारी रचना की और उसके बाद ऐसा नहीं कहा कि, **"जाओ और एक संयुक्त परिवार के सभासद की तरह रहो"**, किंतु उसने कहा, **'मानव समाज मेरा परिवार है। प्रत्येक व्यक्ति मेरे परिवार का सदस्य है।'** (हदीस)

  कयामत के दिन ईश्वर एक आदमी से पूछेगा, **'मैं भूखा प्यासा था, तूने मुझे भोजन नहीं खिलाया। मैं बीमार था, तूने मेरा ख्याल नहीं रखा।' वह आदमी कहेगा 'हे ईश्वर, आपने इस संसार की रचना की है, तुम कैसे भूखे और बीमार हो सकते हो?' ईश्वर कहेगा, 'फलां फलां व्यक्ति भूखा था, या बीमार था, क्या तुमने उनको खिलाया था और उसकी सेवा की थी? यदि तुमने उन्हें खिलाया होता और उनकी सेवा की होती, तो तुम मुझे उनके पास पाते।'** (बुखारी)

  हम अपनी संकुचित मानसिकता के कारण एक विशाल परिवार की कल्पना भी नहीं कर सकते। परंतु यह इतना आवश्यक है कि प्रभु ने इसे नज़र अंदाज करना अपराध और पाप कहा है।

- ऋग्वेद में ईश्वर कहता हैं **'यदि कोई व्यक्ति अपनी कमाई अकेले खाता है, वह पाप खाता है।'** (ऋग्वेद १०-११७-६)

  इसका अर्थ है, यदि कोई व्यक्ति अपनी कठिन मेहनत की कमाई अकेले खाता है और दान नहीं करता तो यह किसी से लूटे अथवा चुराए हुए धन को खाने के बराबर है।

- ईश्वर ने उस व्यक्ति को इस्लाम धर्म से बाहर किया है, जो अपनी कमाई का कुछ हिस्सा गरीबों को नहीं देता है। (जकात नहीं देता)

  ईश्वर ने अपनी दिव्य पुस्तक पवित्र कुरआन में लगभग १५० बार कहा है कि दान करो (जकात दो)। अध्याय ९ के ६० वे पद में उसने निम्न उद्देश्यों के लिए दान की रकम खर्च करने का आदेश दिया है;

१. गरीबों की मदद (जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है)

२.ज़रुरतमंद की मदद (आदरणीय लेकिन समाज के निम्न वर्ग के लोग)

३.उन लोगों का वेतन जो दान इक्कठ्ठा करने और बाँटने का कार्य करते हैं।

४. लोगों को महान (पुण्य) कार्यों के लिए आकर्षित करना।

५. दासों (Slaves) को आज़ाद करना।

६. उन लोगों को मुक्त करना जो कर्ज़ के जाल में फसें हुए हैं।

७. उन लोगों की मदद करना जो यात्रा के दौरान अपना धन खो चुके है।

८. ईश्वर के संदेश का प्रचार करना। (पवित्र कुरआन ९-६०)

- विश्वास धर्म का आधार और बुनियाद है। धार्मिक विश्वास बगेर देखे ईश्वर के अस्तित्व पर दृढ़ता पूर्वक विश्वास रखना है साथ ही स्वर्ग, नरक, देवदूत तथा कयामत के दिन पर भी विश्वास रखना है। वह भी बिना किसी शारीरिक सबूत के।

  यदि ईश्वर, नरक और स्वर्ग प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे तो ईश्वर पर विश्वास का कोई लाभ नहीं होगा। यह ईश्वर पर विश्वास उसकी प्रार्थना और मुक्ति प्राप्त करने के अवसर का अंत होगा। इसलिए ईश्वर के अस्तित्व और उससे संबधित अन्य वस्तुओं को सिद्ध करने के चमत्कार नियमित रुप से नहीं होते।

- मान लो एक बच्चे के माता-पिता दोनों की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है और ईश्वर उस अनाथ को पालना चाहता है। इसे वह कैसे करेगा? देवदूत दूध की बोतल अपने हाथ में लेकर नीचे कभी नहीं आएंगे। बल्कि इसके स्थान पर ईश्वर उस अनाथ के किसी सगे संबधियों की आमदनी बढ़ायेगा और उसके ज़रिए उस अनाथ का पालन-पोषण करेगा।

  इसी प्रकार यदि किसी सोसायटी में एक बूढ़ी और गरीब विधवा है, जिसकी आमदनी का कोई साधन नहीं है। उसके लिए भोजन स्वर्ग से नीचे धरती पर नहीं आएगा। बल्कि ईश्वर उस विधवा के संबधियों की आमदनी बढ़ायेगा और उनके जरिए उस विधवा का पालन-पोषन करेगा। इसलिए हर व्यक्ति की आमदनी में ईश्वर का भेजा हुआ अतिरिक्त पैसा भी होता है जो असहाय लोगों की मदद के लिए होता है। यदि एक व्यक्ति अपनी कठिन मेहनत की कमाई अकेले खाता है, तो वह उस कमाई को भी खा रहा है, जो ईश्वर ने किसी अनाथ और विधवा के लिए भेजी है। इसलिए अपनी कमाई अकेले खाना एक अनाथ और विधवा का धन खाने के बराबर ही है, जो ईश्वर ने उनके लिए भेजी है। इसलिए अपने कमाए धन को बिना किसी को बाँटे खाना, दूसरों की कमाई को खाने के बराबर है। यह धोखा है यह एक अपराध है। इसमें कोई संदेह नहीं है की यह पाप की कमाई खाने के बराबर है। ऋग्वेद में भी यही कहा गया है, और ऐसे व्यक्तियों को कुरआन के अनुसार धर्म से बाहर निकाल देना चाहिए।

आखिरी देवदूत ने भी कहा है;

> **'मुझे खुश रखने के लिए समाज के दुर्बल जनों की सहायता करो। क्योंकि ईश्वर तुम्हें उन्हीं लोगों की वजह से मदद करता है और उन्हीं लोगों कि वजह से तुम्हें समृद्धि मिलती है।'**
>
> (मस्नद अहमद १९८/५ अबु दाउद एच २५९१, १८३/७ तिर्मिजी अल जिहाद १७५४)

अपनी अतिरिक्त आमदनी का कम-से-कम २.५ प्रतिशत हर वर्ष दान करें। (हदीस)

- ईश्वर जालिम नहीं है। वह इन्सानो से एक माँ की अपेक्षा ९९ प्रतिशत अधिक प्यार करता है। वह ऊँची आमदनी कमाने पर २.५ प्रतिशत दंड (Fine) नहीं लगाता है। बल्कि जो लोग अपनी बचत का २.५ प्रतिशत धन जो की गरीबों का हक यह उन को दे देते है तो ईश्वर दानी पर अपनी खास कृपा करता है। दानी व्यक्ति को ईश्वर निश्चित रुप से समृद्धि देता है। वह उसे बीमारी दुर्घटना तथा गलत रास्ते पर धन

की बर्बादी से बचाता है। वह उसकी समृद्धि को कई गुना बढ़ाता है और हमेशा उसे संपन्न रखता है तथा कभी भी उसे गरीब नही बनाता।

- यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जैसे जैसे हमारी परोपकार की भावना बढ़ती है, ईश्वर हमारी जिंदगी के स्तर में भी वृद्धि करता है। मेरे व्यक्तिगत अनुभव से आप इस बात को समझ सकते है।

किसी तरह मैंने एक हजार स्के.फीट (१००० Sq. f) का फ्लैट खरीदा। मेरी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि में फ्लैट की सजावट पर और अधिक पैसा खर्च कर सकूँ। फर्श बहुत ही बदसूरत था और में तीव्रता से इसे बदलना चाहता था। लेकिन मैंने पाँच साल इसी तरह हताशा में बिताए।

जेम्स नामक एक मेरा गरीब कर्मचारी शादी करने वाला था। उसने मुझसे कुछ कर्जा मांगा। उसने मेरा पहले का कर्जा वापिस नहीं किया था इसलिए मैंने उसे नया कर्जा देने से इन्कार कर दिया।

जेम्स शादी करने के लिए इतना बेकरार था कि उसने रुपया उधार देने वाले एक व्यक्ति से संपर्क किया और प्रतिमाह ५ प्रतिशत व्याज पर कर्ज लेने के लिए सहमत हो गया। ब्याज बहुत अधिक था। मैंने महसूस किया कि जेम्स वह कर्ज कभी भी चुका नहीं पाएगा। कर्ज चुकाने के लिए उसे अपना मकान अथवा अपने परिवार के गहने बेचने पड़ेंगे।

हालाँकि मेरी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी, किसी तरह मैंने उसे फिर भी धन उधार देने का प्रबंध किया। उस घटना के कुछ दिनों के पश्चात मैंने अपने फ्लैट में सुंदर कारपेट लगवाया। कारपेट की कीमत मार्बल टाईल्स के तुलना में केवल १० प्रतिशत ही थी। मैं उसे पहले दिन ही खरीद सकता था जब मैंने वह फ्लैट खरीदा था। लेकिन एक सुंदर भौतिक सुख-सुविधाओं से भरपूर फ्लैट का आनंद मेरे भाग्य में नहीं था, इसलिए जमिन पर कारपेट लगाने का ख्याल भी मेरे दिल में न आया और मैं एक सुंदर मार्बल वाले फ्लैट के केवल सुनहरे सपने देखता रहा। लेकिन इस कर्ज़ देने की घटना के बाद जब ईश्वर ने मेरा भाग्य बदला तो मुझे उस पैसो की तंग हालात में भी भौतिक सुख सुविधाएँ, शान-शौकत और खूबसूरत कारपेट दे दिया जो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

- जब पैगम्बर मूसा (अ.स.) पर्वत पर ईश्वर से धर्म आदेश प्राप्त करने के लिए गए तो सामीरी ने लोगों को बछड़े की पूजा करने के लिए प्रेरित किया। जब पैगंम्बर मूसा ईश्वर के धर्म आदेशों के साथ वापिस आए और उन्होंने लोगों को बछड़े कि पूजा करते देखकर वह इतने अधिक क्रोधित हुए कि वे शिलालेख जिस पर ईश्वर के आदेश लिखे थे, फेंक दिए तथा जो बछड़े कि पूजा कर रहे थे उन सबको स्वयं को मारने की आज्ञा दी। लेकिन मूसा को मुख्य देवदूत जिब्राईल द्वारा कहा गया था कि सामीरी को मृत्युदंड न देना। क्योंकि सामिरी बहुत ही दानी है।

(ईमाम गजाली द्वारा लिखित कीमियाए सादात, शराफत का महत्व और इसका आशीर्वाद, पृष्ठ नं ५८५)

उपरोक्त किस्सा यह सूचित करता है कि दान देना कितना पुण्य का काम है। ऐसा दानी व्यक्ति कितना मूल्यवान होता है। ईश्वर ऐसे व्यक्ति द्वारा किए गए घोर अपराध को भी क्षमा कर सकता हैं।

- दान देना गरीबी के गड्ढे से बाहर निकलने की एक सीढ़ी है। यह कठिन परिश्रम से कमाई हुई समृद्धि को

लंबे समय के लिए सुरक्षित रखने का सबसे अधिक विश्वसनीय साधन है। यह ईश्वर की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने का एक सबसे अधिक निश्चित साधन है। दान देना दोनों जहान (लोक-परलोक) के लिए सफलता का बीमा हैं। इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि अपनी आमदनी का एक छोटा सा हिस्सा समाज के गरीब लोगों को नियमित रुप से दिया करें।

ईश्वर ने उन लोगों के चरित्र की अनेक विशेषताओं का वर्णन किया है जिनके लिए स्वर्ग निश्चित है। वह उनकी विशेषताओं में से एक का वर्णन निम्न शब्दों में करता हैं

वह (भिखारी) जो खुल कर मांगते हैं और (वह समाज के गरीब किन्तु माननीय लोग) जो चुप रहते है, पवित्र लोगों की आमदनी में दोनों का हिस्सा होता है। (पवित्र कुरआन ५१:१९)

इसका अर्थ है की महान व्यक्ति अपनी आमदनी में से गरीबों को दान देते है अथवा महान व्यक्ति नियमित रुप से दान करते हैं।

- मैंने अपनी बी.ई (मैकनिकल) की डिग्री १९८३ में ली और ७६ % मार्क प्राप्त किए। मैंने अपनी इंजीनीयरिंग की शिक्षा वालचंद कॉलिज ऑफ इंजीनियरिंग (सांगली) में पूरी की। यद्यपि मेरा शैक्षिक रिकॉर्ड बहुत अच्छा था, फिर भी मैं अत्याधिक कमजोर सेहत और व्यक्तित्व की वजह से कही काम नहीं प्राप्त कर सका। कुछ समय के लिए में बेकार रहा, तब असहाय हो कर मैंने एक छोटी-सी वर्कशॉप में नौकरी कर ली, जब कि मेरी कक्षा के साथी ४००० रु वेतन और अन्य लाभ ले रहे थे, मैं केवल १३५० रुपए वेतन पा रहा था। मेरा भाग्य उस वक्त बदला, जब मैंने छोटे बच्चों के लिए रात की क्लास शुरु करने का निर्णय लिया। मेरे पड़ोसी और मैंने हर महीने १५०-१५० जमा करके, एक व्यक्ति को ३०० रुपए वेतन दिए और वह शाम को एक घंटे का समय निकाल कर सोसायटी के गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए कहा। इसके बाद मेरे पिता और मैंने अपनी जन्मभूमि बलरामपुर (यूपी) में एक स्कूल शुरु किया। जिस में कुरआन पढ़ाया जाता है।

आज तक वह रात की क्लास एक स्थानीय ट्रस्ट द्वारा एक बड़े पैमाने पर विधिवत चलाई जाती है, और अकेला हमारा परिवार उस जन्मभूमि वाले स्कूल की आर्थिक व्यवस्था करता है। इन दोनों स्कूलों में लगभग १२० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

सन १९८३ में मैं बेरोज़गार था, और २००६ में मेरी कंपनी का टर्नओवर मुंबई शहर की हायड्रोलिक प्रेस मैन्युफ्रेक्चर्स इंडस्ट्री वर्ग की कंपनियों में सबसे अधिक था। निःसंदेह यह समृद्धि प्रभु की कृपा द्वारा ही थी। लेकिन मेरे मतानुसार वह कृपा दान और समाज-सेवा द्वारा प्राप्त हुई थी।

दान देना ईश्वर को बहुत पसंद है, क्योंकि यह धोखा, चोरी, शोषण, अत्याचार, घोर पापों के विपरीत हैं।

- पवित्र पैंगम्बर हज़रत मुहम्मद (स) ने कहा एक व्यक्ति अकेला यात्रा कर रहा था, रास्ते में उसे प्यास लगी, वह एक कुँए में उतरा और पानी पीया। जब वह ऊपर आया, तो उसने एक कुत्ते को देखा, जो प्यास बुझाने के लिए गीली मिट्टी खा रहा था। वह आदमी दुबारा नीचे कुँए में उतरा और अपने चमड़े के मोज़ो में पानी भरा, मोज़ो को अपने दाँतों में दबाए ऊपर आया और प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया।

पवित्र पैंगम्बर ने कहा ईश्वर ने उसकी मानवता के इस कर्म को स्वीकार किया और उसे स्वर्ग में प्रवेश होने का आदेश दिया। पवित्र पैगम्बर के साथी आश्चर्य चकित थे, उन्होंने पूछा हे ईश्वर के देवदूत! क्या हम जानवरों की सेवा कर के भी ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकते हैं? पैंगम्बर ने कहा हाँ तुम किसी भी जीवित प्राणी की सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हो।' (बुखारी २३६३, मुस्लिम २२५५)

(उपर दिया हुआ हदीस संक्षिप्त में है, पूरे हदीस में पैंगम्बर ने अग्नि से निर्मित जीन्न और राक्षसों को शामिल नहीं किया है।)

- यदि हम गहराई से किसी भी धर्म की पुस्तक का अध्ययन करें, तो हमें मालूम होगा कि ईश्वर-रचित प्राणियों की सेवा और मानवता यह ईश्वर को प्रसन्न करने का बहुत महत्वपूर्ण तरीका है और यह आधेमन से उद्देश-रहित किए गए धार्मिक कर्मकांडो से अधिक महत्वपूर्ण है।

- एक इंजीनीयर जो हवाई जहाज का डिजाइन बनाता है और फिर उसका निर्माण करता है, वह पायलट का लायसेंस नहीं प्राप्त कर सकता है। लेकिन वह व्यक्ति जो उड़ना सीखता है और उसमें कुशल होता है वह लायसेंस प्राप्त कर सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इंजिनियर जहाज के बहुत करीब होता है क्योंकि वही जहाज को बनाने वाला है, लेकिन यदि एक इंजीनियर जहाज उड़ाने में गलती करता है तो सैकड़ों निर्दोष लोग मारे जाएंगे।

इसी प्रकार निःसंदेह एक संत अथवा धार्मिक व्यक्ति ईश्वर के नज़दीक होता है, लेकिन यदि ऐसा व्यक्ति अगर अपनी बुराईयों पर नियंत्रण करने में असफल होता है और उसने भारी रकम प्राप्त कर ली तो वह धार्मिक व्यक्ति भी निर्दोष लोगों की जिंदगी और समाज के विनाश का कारण बन सकता है।

नियमित रुप से और ईमानदारी से धन कमाना और बुद्धिमत्ता से खर्च करना एक जहाज उड़ाने के समान है। जब एक पायलट उड़ान में विशेषज्ञ हो जाता है, तभी उसे पायलट का लायसेंस मिलता है। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति बुद्धिमत्ता से खर्च करने में एक्सपर्ट हो जाता है तो वह ईश्वर से अमीर बनने का लायसेंस प्राप्त करता है।

बुद्धिमत्ता से धन खर्च करने का अर्थ है कि धन को वहाँ खर्च करना, जहाँ इसकी ज़रुरत है। वह व्यक्तिगत कल्याण के लिए भी है और समाज के कल्याण के लिए भी है। ईश्वर को समाज-कल्याण और निरपराध लोगों की चिंता रहती है। इसलिए जो समाज की भलाई के लिए धन खर्च करता है, उसे शीघ्र ही अमीर बनने का लायसेंस मिल जाता है।

यह संपूर्ण विश्व ईश्वर का परिवार है। ईश्वर बहुत खुददार है। जो कुछ तुम उसके परिवार के लिए करते हो, वह तुम्हारा एहसानमंद नहीं रहेगा, बल्कि तुम्हारे किए उपकार का कहीं अधिक अच्छा बदला आपको देगा। हमेशा अपनी क्षमतानुसार मानवता की सेवा करने के लिए संघर्ष करें। आप को भारी-रकम दान करने की जरुरत नहीं है, बल्कि हमेशा अपनी आमदनी का एक छोटा-सा हिस्सा ज़रुरत मंद लोगों के लिए दान करें। नियमित रुप से दान करें। अपना दान अपने परिवार के नज़दीकी व्यक्ति से शुरु करें और फिर पड़ौस में। गुप्त रुप से दान करें, इसे किसी को बताएँ नहीं। अतिरिक्त लाभ का २.५ प्रतिशत प्रति वर्ष ज़रुरतमंद को अवश्य दान करें।

आध्यात्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं?

१. वे दुखों से कभी छुटकारा नहीं पायेंगे, जो किसी गरीब अथवा अनाथ को खाना नहीं खिलाता हैं और अकेले खाते हैं, जबकि उन के पास खाना अत्याधिक होता हैं। (पवित्र ऋग्वेद १०:११७-२)

२. दानी (व्यक्ति) अमरता को प्राप्त करता है। विनाश, डर और दुःख उसके जीवन को छूते भी नहीं हैं। दान किया हुआ धन इन दानियों को संसार और स्वर्ग में सुख प्रदान करता है। (पवित्र ऋग्वेद १०:१९७:८)

३. खुशी से दान देनेवाले से ईश्वर प्यार करता है। (पवित्र बायबल, २ कॉर, ६-७)

४. जब तक तुम वे चीजें ईश्वर की राह पर खर्च नहीं करते हो, जो तुम्हें प्रिय हैं, तुम नेकी की राह पर नहीं पहुँच सकते। जो कुछ भी तुम देते हो, ईश्वर उसे जानता हैं। (पवित्र कुरआन ३:१२)

५. वह व्यक्ति जो गरीब और ज़रुरतमंद की मदद करने के लिए दान करता है, वह उदारवादियों में से एक है। उसे हमेशा लाभ प्राप्त होता है और उसका शत्रु उसका मित्र बन जाता है। (पवित्र ऋग्वेद १०:११७:२)

६. सच्चे श्रद्धालु वे हैं जो अपने कठिन-समय में भी दान करते हैं, जैसे समृद्धि की दशा में। वे अपने क्रोध पर नियंत्रण करते हैं और लोगों को क्षमा कर देते हैं। ईश्वर उनको पसंद करता है, जो दूसरों पर कृपा करते हैं। (पवित्र कुरआन ३:१३४)

७. उनके लिए बड़ी दुःख और तकलीफ हैं, जो अनाथों को धक्का देकर बाहर निकालते हैं और गरीबों को खाना खिलाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं, और जो ब्याज लेते हैं। (उधार दिए हुए धन पर) (पवित्र कुरआन १०७: २-४)

८. ईश्वर उनकी समृद्धि में वृद्धि करता है, जो दान देते हैं। और उन लोंगों की समृद्धि कम करते हैं, जो ब्याज लेते हैं। (उधार दिए हुए धन पर) (पवित्र कुरआन २:२७६)

९. ईश्वर एक है, वह दयालु लोगों पर कृपा करता है। (पवित्र कुरआन १:८४:७)

****

अध्याय-२७

ततफीफ

(Tatfeef)

ततफीफ का उचित अर्थ क्या है?

ततफीफ का अनुवाद विद्वानों ने पवित्र कुरआन के अध्याय नं.८३ के पद नं.१ में इस तरह किया है। 'कठोर सजा है, उन लोगों के लिए जो कम तौलते हैं।' वास्तव में किसी के पास ततफिफ के अर्थ के लिए सही शब्द नहीं हैं, इसलिए उन्होंने इसका अनुवाद 'कम तौलने' के अर्थ में किया हैं। वास्तव में ततफीफ का विस्तृत अर्थ है, जिसमें निम्नलिखित शामिल है।

- ततफीफ में वे सब शर्ते और स्थितियाँ सम्मिलित हैं जिनमें मनुष्य जब प्राप्त करने की स्थिति में होता है तो, वह पूरा और संम्पूर्ण रुप से प्राप्त करता है या आनंदित होता हैं, या किसी भी तरह जबरदस्ती लेता हैं या माँग करता है या अधिकार जमा कर लेता है और यह लेने वाली चीज़ें उसका धन, पदार्थ या सेवाएँ हो सकती है।

- लेकिन जब वह देने की स्थिति में होता है अर्थात जब उसे देना होता हैं, तो उसका दृष्टिकोण अलग होता है। वह कम देता है, वह धोखा देता हैं, वह चोरी करता हैं, वह कम तौलता हैं, वह अपनी सेवा भी पूर्ण रुप से नहीं देता है, जिसका उसने वादा किया है। न ही वह अपना कर्तव्य पूरा करता है, जिसके लिए वह जिम्मेदार है और जिसके लिए उसने धन आदि भी लिया है। और धर्म के अनुसार ततफीफ घोर पापों में से एक पाप हैं।

- पिछले तीन दिनों से इतनी गर्मी पड़ रही थी कि मदाअेन शहर का प्रत्येक व्यक्ति राहत पाने के लिए बेचैन था। उन्होंने अपने शहर की बाहरी सीमा पर ठंडी हवा के साथ एक काला बादल आते देखा। पूरा शहर बादल के नीचे कुछ शांति पाने के लिए दौडा। जब सभी लोग कुछ ठंडी फुहारें पाने की उम्मीद में बादल के नीचे इक्ट्ठे हो गए, तो जोर की गड़गड़ाहट के साथ उन पर आग बरसनी शुरु हो गई, और उस शहर का प्रत्येक व्यक्ति मार दिया गया।

  ईश्वर द्वारा दी गई ऐसी कठोर सज़ा के अनेक कारणों में से एक कारण 'ततफीफ' था।

- 'मदाअेन' सऊदी अरब और सीरिया के बीच एक स्थान है। ईश्वर ने पैगम्बर शोएब (अ.स.) को वहा लोगों को सिखाने और मार्गदर्शन के लिए भेजा था।

  जब पैगम्बर शोएब (अ.स) उन्हें उपदेश देते, तो वह पूछते, 'शोएब, क्या तेरी नमाज़ तुझे यह सिखाती है कि हम उन सभी मुर्तियों को छोड़ दें जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते थे? या यह कि हमको अपने कमाए हुए माल में अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने का कोई अधिकार नहीं? बस तू ही तो एक उदार और सच्चा आदमी रह गया है! (पवित्र कुरआन ११:८७)

उपरोक्त पद का अर्थ है कि वह लोग एक ईश्वर की पूजा करने के आदर्श विचार और आर्थिक व्यवहार के धार्मिक उपदेश से अत्याधिक झुंझलाए और क्रोधित थे।

- आर्थिक व्यापार अर्थात व्यापार में धन के बारे में दिए जाने वाले उपदेश से क्रोधित होने का कारण यह था, कि वे सब व्यापारी थे अथवा किसी-न-किसी तरह व्यापार से जुड़े थे। और जब कभी भी वे व्यापार में आर्थिक लेन-देन करते, वे बेईमानी किया करते थे। वे अक्सर कम देते थे, घटिया अथवा खराब माल बेचते और जब कभी भी खरीदते तो सबसे अच्छे की उम्मीद रखते। वे निर्दोष लोंगों को धमकी भी दिया करते और अपने इलाके से गुज़रने वाले कारवाँ के लोगों को लूटते थे।

- ईश्वर ने निम्नलिखित शब्दों में उन्हें दोषी ठहराया है;

तबाही है डंडी मारनेवालों के लिए जिनका हाल यह है कि जब लोगों से लेते हैं तो पूरा-पूरा लेते हैं, और जब उनको नापकर या तौलकर देते हैं तो उन्हें घाटा देते हैं। क्या ये लोग नहीं समझते कि एक बड़े दिन (कयामत के दिन) ये उठाकर लाए जानेवाले हैं? उस दिन जबकि सब लोग सारे जहान के रब के सामने खड़े होंगे। (अर्थात कयामत के दिन सब को अपने कर्मों का हिसाब देना है।) (पवित्र क़ुरआन ८३:१-६)

ईश्वर ने कहा;

उन्होंने पैगम्बर शोएब (अ.स) को नज़रअंदाज कर नामंज़ूर कर दिया, तो शोएब (अ.स) ने कहा, "मेरा रब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।" उन्होंने उसे झुठला दिया, आख़िरकार छतरीवाले दिन (बादल वाले दिन) का अज़ाब उनपर आ गया, और वह बड़े ही भयानक दिन का अज़ाब था। (पवित्र क़ुरआन २६:१८९)

दूसरे लोगों को सावधान करते हुए ईश्वर ने कहा;

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हम तबाह कर चुके हैं जिनके लोग अपने जीवन-व्यापार पर इतरा गए थे। सो देख लो, वे उनके निवास-स्थान पड़े हुए हैं जिनमें उनके बाद कम ही कोई बसा है, आख़िरकार हम ही वारिस होकर रहे। (पवित्र क़ुरआन २८:५८)

- अपने पास की लॉयब्रेरी से प्राचीन सभ्यताओं के बारे में पुस्तकें पढ़ो। उनमें से किसी भी पुस्तके में यह नहीं लिखा मिलेगा कि अनेक प्राचीन सभ्यताएँ ईश्वर के प्रकोप के कारण बर्बाद हुईं। लेकिन जब आप उनको पढ़ोगे तो महसूस करोगे कि और किसी से नहीं, ईश्वर के प्रकोप से ही वे बर्बाद हुए थे, जिस प्रकार हूद, आद, समूद तथा मदाऐन सभ्यता का विनाश हुआ था। जिनका पवित्र क़ुरआन, बाइबल तथा तोरात में विस्तार से वर्णन किया गया है।

ततफीफ के उदाहरण

- आप ने एक व्यक्ति को निश्चित शर्तों और हालात (Terms & Condition) पर काम के लिए रखा, और उन शर्तों के अनुसार उसकी सेवाएँ ली। लेकिन जब आपको उसे वेतन देना था, तो आप देरी करते हो, पैसा काटते हो, और उसे सताते हो और अगली बार (Next time) उसका काम कम दर पर प्राप्त

करने के लिए ऑर्डर पूरा होने पर भी उसका कुछ रुपया-पैसा रोक कर किसी-न-किसी तरह उसे फंसाऐं रखने की कोशिश करते हो। ऐसा करके एक नौकरी देने वाले मालिक के रुप में आपने 'ततफीफ' यानि एक घोर अपराध किया है।

अंतिम प्रेषित (स.) ने कहा;

'मजदूरों का मेहनताना (मज़दूरी) उनका पसीना सूखने से पहले दे दो।'(इब्ने माजा)

- आप एक कंपनी में कर्मचारी (Worker) के रुप में कार्यभार सँभालते हो। आपके काम के बदले में और जो जिम्मेदारियाँ आप उठाओगे उस के एवज में कंपनी आपका वेतन निश्चित करती है। जब आप का तनख्वाह लेने का समय आता है, तब आप एक-एक पैसा गिनकर लेते हो, लेकिन जब आपका काम करने का वक्त होता हैं, तो आप पूरे ८ घंटे काम नहीं करते हो। वादे के अनुसार आप अपना सभी काम नहीं करते हो। जिन शर्तों और दशाओं (Terms & Condition) पर आपने एग्रीमेंट किया था, उसके अनुसार अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते हो, इस तरह से आप ततफीफ करते हो, जो एक घोर अपराध है।

- ईश्वर ने आपको हर रोज प्रार्थना करने के लिए कहा। ईश्वर आपको कभी भी हवा, पानी, सूर्य की रोशनी और भोजन इत्यादि देना बंद नहीं करता है। लेकिन जब प्रार्थना करने की आपकी बारी आती है, तो आप चोर-रास्ता चुनते हो। या आप ईश्वर की प्रार्थना करते ही नहीं हो, या फिर संक्षिप्त रुप में करते हो। यह और कुछ नही बल्कि ततफीफ हैं।

ईश्वर ने कहा,

तबाही है उन नमाज़ पढ़नेवालों के लिए जो अपनी नमाज़ में ग़फ़लत बरतते हैं, जो दिखावे का काम करते हैं और साधारण ज़रूरत की चीज़ें (लोगों को) देने से कतराते हैं।

(पवित्र कुरआन १०७:४)

- आप सर्वोत्तम गुणवत्ता का उत्पाद देने का वादा करते हो और आर्डर लेते हो, लेकिन कुछ अतिरिक्त लाभ के लिए आपने माल की गुणवत्ता में काट-छांट की और सर्वोत्तम उत्पाद नहीं दिया। यह आपने ततफीफ किया है।

- आप एक व्यापारी हो। आप किसी वस्तु का निर्माण नहीं करते हो, लेकिन आप जानते हो कि कौनसा उत्पाद घटिया अथवा नकली है। फिर आप उसे असली और सर्वोत्तम गुणवत्ता के रुप में बेचते हो। जानबूझकर आप ग्राहकों से सच्चाई छिपा रहे हो। आप उनके साथ धोखा कर रहे हो, इसलिए आप पाप कर रहे हो। यह 'ततफीफ' हैं।

आखिरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (अ.स.) ने कहा;

'धोखेबाज हम में से नहीं हैं। (हदीस)

इसका अर्थ है कि ऐसे लोग मुसलमान नहीं हो सकते हैं। उनके लिए नरक निश्चित है।

- आप अपने पारिवारिक जीवन में, अपनी पत्नी से संपूर्ण और संतोषजनक सेवा और लाभ लेते हो। लेकिन जब उसके प्रति अपने कर्तव्य को पूरा करने का समय आता है, तो आप उसे संतोषजनक रुप से नहीं करते हो। यह ततफीफ है, एक घोर धार्मिक अपराध।

ईश्वर ने कहा,

'पत्नी के साथ दयालुता से रहें।' (पवित्र कुरआन ४:१९)

आखरी पैगम्बर ने कहा;

'तुम में से वही सर्वोत्तम हैं, जो अपने परिवारों के लिए सबसे अच्छे हैं।' (हदीस तिरमीजी शरीफ)

एक दूसरे स्थान पर वे कहते हैं,

'अपनी पत्नी के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करें।' (सहीह बुखारी)

ततफीफ के द्वारा कमाया हुआ या बचाया हुवा धन अभिशापित धन है। ऐसे धन को अपनी मेहनत की कमाई में न मिलायें। क्योंकि यह नष्ट हो कर ही रहेगा। और जब यह नष्ट होगा तो आप की सारी समृद्धि को भी नष्ट कर देगा। और ऐसा धन कमाने या ततफीफ करने पर आप को नर्क की सज़ा भी हो सकती है।

इसलिए यदि आप दोनों जहान में सफलता चाहते हो तो ततफीफ से बचने की भरपूर कोशिश करो।

****

अध्याय-२८
वर्जित धन
(The Prohibited Money)

- आप प्रतिदिन सुबह पर्याप्त मात्रा में मलत्याग करते हो। क्या आप इसकी एक छोटी-सी मात्रा खा सकते हो? केवल एक ग्राम मात्र?

आपको उबकाई आने जैसा महसूस होगा। इसलिए इसे हम दूध में मिला देते हैं। यदि हम इसकी छोटी-सी मात्रा दूध के भरे हुए टँकर में मिला दें, तो फिर क्या आप इसे पी सकते हो? नहीं! चलो, मैं आपको एक और विकल्प देता हूँ। किसी जानवर के मल की थोड़ी-सी मात्रा बहुत अधिक दूध में मिला दें, तो क्या आप हजम कर सकते हो?

क्या.....? आपने कहा, 'आप मल नहीं खा सकते हो!' हे ईश्वर! आप सिद्धांतवादी हो, आप अंधविश्वासी हो, आप में लचीलापन नहीं है, आप समय के साथ बदलते नहीं हो और आप पिछड़े हुए हो।

- सन २००४ और २००५ के बीच में महाराष्ट्र राज्य में १५०० से अधिक किसानों ने आत्महत्या की और हर साल वे यह करते हैं। किसान आसानी से हार मानने वाले नहीं होते है। वह अकाल, बाढ़, कड़ी ठंड, और किसी भी तरह की परेशानी से उनकी इच्छा शक्ति कमजोर या टूट नहीं जाती। वह इन सबका मज़बूत धैर्य से सामना करते है। लेकिन एक चीज़ उन्हे कमजोर कर इतना तोड़ देती है कि वह जीवन से अधिक मृत्यु को अपनाना बेहतर समझते हैं। ऐसा कौनसा दुर्भाग्य, घोर संकट, अथवा बोझ है जिसने उनकी इच्छा शक्ति को तोड़ डाला।

वह कर्ज़ का ब्याज़ है।

- सरकार ने उनको कर्ज़ा पूर्ण रुप से अच्छे उद्देश्य और इस विश्वास के साथ दिया कि उनकी जिंदगी में समृद्धि-खुशहाली आ जाए। लेकिन दुर्भाग्य से सरकारी अफसरों ने अपनी पढ़ाई के सालों में केवल अर्थशास्त्र की किताबों को पढ़ा और याद किया था। लेकिन वह यह नहीं जानते थें कि वह ईश्वर क्या कहता है जो मूल रुप से संसार की अर्थ व्यवस्था को नियंत्रित करता है।

किसानों ने भी कर्ज इस विश्वास के साथ लिया था, कि दिए हुए समय में मूलधन ब्याज-सहित चुका देंगे, लेकिन वे भी ईश्वर के नियम से अनजान थे। अपने को फाँसी पर लटकाने से पहले उन्होंने धन को बचाने और कर्ज़ा चुकाने की हर संभव कोशिश की होगी। वे भूखे रहे होंगे, पुराने कपड़े पहने, अपने बच्चों और पत्नी पर कम-से-कम खर्चा किया होगा। उन्होंने खून-पसीना जलाकर कड़ी मेहनत से कमाकर पैसा इकट्ठा किया होगा। और जब वे ब्याज के कारण कर्ज के बढते अभिशाप से किसी भी तरह नहीं बच सके, तो उन्होंने जीवन के बजाय मौत को गले लगा लिया। उन्होंने जीवन के इस युद्ध से हार कर आत्महत्या कर ली। और हर साल १५०० से अधिक किसान महाराष्ट में आत्महत्या करते हैं।

- श्री.पटेल सोसायटी में एक धनी और माननीय व्यक्ति थे। अपने व्यापार से अच्छी खासी कमाई करते थे। उनकी इकलौती लड़की थी जिसका नाम तृप्ति था। अपनी लड़की के लिए अच्छा वर (Groom) मिलने पर उसने भारी दहेज देने की पेशकश की। उसे बहुत अच्छे प्रस्ताव मिले और उसने अपनी बेटी की शादी में भारी दहेज दिया और शादी के बाद उसकी बेटी अपने पति के साथ ससुराल में रहने लगी।

  वास्तव में श्री.पटेल ने वह दहेज का रुपया बैंक से अपने फ्लैट को गिरवी रख कर कर्जा लिया था। उसने सोचा कि वह अपने व्यापार की आमदनी द्वारा धीरे-धीरे यह कर्जा चुका देगा। लेकिन श्री पटेल के स्वास्थ की खराबी और व्यापार में मंदी के कारण व्यापार में घाटा शुरु हो गया। वह कर्जे की किश्तें समय पर नहीं चुका पा रहे थे। धीरे-धीरे बैंक वालों ने अपना धीरज खो दिया और धमकी दी कि कर्जा लौटाने में यदि देरी हुई तो फ्लैट पर कब्ज़ा लेना पड़ेगा।

  फ्लैट के चले जाने के तनाव में श्री.पटेल को दिल का दौरा पड़ गया, लेकिन वह बच गए। जब तृप्ति को सच्चाई मालूम हुई तो उसे अति दु:ख हुआ कि उसके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए उसके माता-पिता ने अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी।

  अब उसके सामने एक बड़ा प्रश्न था कि वह बढ़ते हुए कर्जे को कैसे चुकाए ताकि उस के माता पिता को बेघर होने से बचाया जा सके। आखिरकार उसने एक अविश्वसनीय फैसला लिया। अपने पति की आज्ञा से वह अपने बीमार परेशान माता-पिता की सेवा करने के लिए वापिस आ गई, लेकिन गुप्त रुप से उसने अपने माता-पिता को बेघर होने से बचाने के लिए और कर्जा चुकाने के लिए वैश्यावृत्ति करना शुरु कर दिया। (गुप्तता के लिए नाम परिवर्तित किए है।)

- अकबर ने एक निश्चित समय के लिए एक पठान (अफगानिस्तानी) से कर्जा लिया लेकिन समय पर नहीं चुका सका। हर शाम वह पठान अकबर के घर आया करता और अपने पैसे का तकाज़ा करता। जब अकबर ने उससे पैसे देन के लिए कुछ समय माँगा, तो पठान ने कहा, अपनी पत्नी को मेरे घर बर्तन माँजने और खाना बनाने के लिए भेज दो। इस तरह से आप कम-से-कम कुछ ब्याज तो अदा करोगे।

  बचपन में, मेरे दोस्त मुझे बताया करते थे कि जैसे ही अकबर की पत्नी पठान के घर में प्रवेश करती, वह अन्दर से तुरंत दरवाजा बंद कर देता था। आप कल्पना कर सकते हो कि शारीरिक रुप से तगड़ा साहूकार अपने कर्ज़दार की खूबसूरत पत्नी के साथ बंद दरवाजे के पीछें क्या करता होगा? और ऐसा अक्सर होता था।

- सन १९९० में जब मैं वरली में रहता था, उस समय प्रोफीट (लाभ) के अतिरिक्त रकम जो मेरे घर में रखी हुई थी उसे मैंने बैंक में फिक्स डिपॉझिट (F.D) कर दिया। कुछ महीनों के बाद मुझे अपने व्यापार के लिए धन की अतिआवश्यकता पड़ी। इसलिए में (F.D) तुडवाने बैंक गया। बैंक मैनेजर ने कहा (F.D) जब तक संपन्न न हो जाए, तुडवाओ मत। मैं आपको जमा रकम का ७५ प्रतिशत तक की राशि उधार देने की सुविधा करता हूँ। बैंक मैनेजर ने मुझे (Over Draft Facility) दे दी। और मैंने बैंक से अपनी जरुरत के अनुसार धन निकाल लिया तथा अपने व्यापार में लगाया। उस तारीख से चार वर्ष तक मेरे उस बैंक खाते में कभी जमा राशि नहीं रही। वह खाता हमेशा उधार (Debit) में ही रहा। जब में भांडुप रहने गया

और अपना खाता बंद करना चाहा, तो मेरे पास ओवर-ड्राफ्ट की राशि चुकाने तथा वह खाता बंद कर देने के पैसे तक नहीं थे। आखिरकार मुझे वह (F.D) तोड़कर ही बैंक से ली हुई रकम चुकानी पड़ी।

- सन २००१ में मैंने ऐसे ही २४ प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज की दर से सिटी बैंक से व्यापार के उद्देश्य से कर्जा ले लिया। शुरु में असुरक्षित कर्ज़ का ब्याज बहुत अधिक था। इस कर्ज का मुझे हर महीने की १८ तारीख को मासिक किश्त चुकानी थी।

  यह आश्चर्यजनक बात थी कि हर महीने की पहली और सात तारीख के बीच मेरे पास अपने कर्मचारियों की तनख्वाह और सप्लायर्स को उनके माल का रुपया देने के लिए काफी धन होता था। लेकिन १८ तारीख को ज्यादातर मेरे बैंक खाते में धनराशि इतनी कम होती थी कि मुझे सिटी बैंक की मासिक किश्त चुकाने के लिए अपने दोस्तों से उधार लेने पड़ता था।

  आज चार साल बाद (२००५) जब मैं मन में विश्लेषण करता हूँ, तो मैं महसूस करता हूँ कि यह ब्याज देने के कारण मुझे ईश्वर की मदद नहीं मिल रही थी और १८ तारीख को मेरा बैलेंस शून्य रहता था। क्योंकि ब्याज़ लेने और देने वाले दोनों पर ईश्वर की नाराज़गी रहती है।

- Talk & Grow Rich के लेखक श्री.रॉन हॉलंड कहते हैं, लोग बैंक से कर्ज लेते हैं और सोचते है कि दूसरे लोगों के रुपए से अपना साम्राज्य बना सकते हैं। लेकिन जब वह अपने आप को उधार के जाल में फंसा पाते हैं, तो वे कहते हैं, Knowing what I know now, I would not borrowed the money in the first place. यानि मैं अब जो जानता हूँ अगर यह में पहले जानता होता तो में कभी भी रुपया उधार नहीं लेता। श्री.रॉन हॉलंड अपने पाठकों को राय देते हैं कि जब तक संभव हो, कर्जा न लें। और यदि आवश्यक हो, तो केवल उतना ही लें, जितना आप किसी भी समय बिना किसी कठिनाई के चुका सके। वह यह भी कहते है, Do not use money as a substitute for brain. Try to use energy and efforts instead of money.

एक अखबार की रिपोर्ट: (A Newspaper Report)

समाचार पत्र 'दि टाइम्स ऑफ इंडिया' के बॉम्बें टाईम्स वर्ग में २४ जनवरी २००६ को खबर छपी कि ब्रिटेन में व्यक्तिगत कर्ज़ा (Personal Loan on Credit Card) एक ट्रिलियन पौंड के स्तर को पार कर चुका है। इसका अर्थ है कि ब्रिटेन के प्रति व्यक्ति पर औसतन २४००० पौंड का कर्जा हैं। और इस कारण ब्रिटेन की आधी जनसंख्या धन की कमी के कारण होने वाली मानसिक बीमारी के लक्षणों से पीड़ित हैं।

१९ वी शताब्दी में ग्रेट ब्रिटेन के लोगों का पूरी दुनिया पर साम्राज्य था। जो सागर की लहरों पर राज्य करने का दावा करते थे और पूरे संसार को सभ्यता का पाठ पढ़ाते थे, अब उधार के जाल में फंसें हैं। एक शताब्दी पहले हर व्यक्ति के पास बैंक-खाते में औसतन २४००० पौंड से अधिक होता होगा। अब हर व्यक्ति पर औसतन २४००० पौंड का उधार हैं। उनकी संपन्नता को क्या हुआ?

ब्याज के दलदल में उन की संपन्नता डूब गई।

आखिरी पैगम्बर ने कहा,

'ईश्वर ने उन सबको अभिशाप दिया है, जो ब्याज के रुपए का लेन-देन करते हैं।' (हदीस)

जो भी क्रेडिट कार्ड का प्रयोग करता है और व्यक्तिगत कर्ज लेता है, ब्याज की अच्छी खासी रकम चुकाता है। इस ब्याज का यह अभिशाप है, जिसने ब्रिटिश लोगों के जमा-खाते को प्रति व्यक्ति २४००० पौंड उधार-खाते में बदल दिया। अत्याधिक होशियार, अत्याधिक आधुनिक, अत्याधिक सुसंस्कृत होते हुए भी कोई ईश्वर के अभिशाप से सुरक्षित नहीं रह सकता है। जो भी उसके आदेश का पालन नहीं करता है, उसे सज़ा होगी ही।

आध्यात्मिक कथनः (Devine Versed)

- किसानों के उदाहरण से, तृप्ति और अकबर के हालात से आप समझ सकते हो कि कर्ज़ पर ब्याज के कारण हर व्यक्ति को दु:ख सहना पड़ता है, इसलिए ईश्वर ने इसे वर्जित कर दिया है।

- ईश्वर ने ब्याज लेना और इसे देना, दोनों को वर्जित माना है। और उसने उन सबको अभिशाप दिया है, जो ब्याज के लेन-देन में सम्मिलित हैं। कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित किया है, कभी भी लाभदायक नहीं होगी।

- पवित्र कुरआन कहता है:

ईश्वर ब्याज के धन को घटाता है और उस धन को बढाता है, जिससे दान किया जाता है। ईश्वर अहसानफरामोश और पापियों को नहीं चाहता है। (पवित्र कुरआन २:२७६)

पवित्र ऋग्वेद कहता है,

हे ईश्वर, तुम उनकी संपत्ति को नुकसान पहुँचाते हो, जो उधार दिए धन पर अधिक और अधिक लाभ (ब्याज) लेते हैं। (पवित्र ऋग्वेद ३:५३:१४)

पवित्र कुरआन कहता है,

हे ईश्वर में विश्वास रखने वालों, ईश्वर से ड़रो और ब्याज का धन कितना भी महत्वपूर्ण और अच्छा क्यों न हो, उसे भूल जाओ, नहीं तो सावधान रहो, ईश्वर और उनके देवदूत तुम्हारे विरुद्ध जंग घोषित कर देंगे। यदि तुम पश्चाताप करते हो, तो तुम्हें मूलधन लेने का अधिकार है। न तो तुम्हें किसी को नुकसान पहुँचाना चाहिए, न किसी को तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहिए। (पवित्र कुरआन २:२७८-२७९)

- मानो, किसी धार्मिक-स्थान जैसे मस्जिद, मंदिर अथवा चर्च में फर्श पर थोड़ी-सी मात्रा मल की है। तब पुजारी कोई समझौता नहीं करेगा और जब तक फर्श साफ नहीं हो जाता, किसी भी हालत में प्रार्थना-पूजा नहीं करेगा। इसी प्रकार रोज़ी-रोटी के लिए ईमानदारी से धन कमाना एक महान पूजा का कार्य है। यह पूर्ण रुप से साफ और पवित्र होना चाहिए। पूर्ण रुप से किसी भी बेईमानी से मुक्त, किसी ततफीफ और कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित बताया है, उससे मुक्त होनी चाहिए। इसलिए कभी भी समझौते

की दिशा में न जाए।

- समृद्धि केवल ईश्वर की कृपा से ही मिलती है। ईश्वर की कृपा कभी भी हमारे उपर नही बरसेगी यदि हम उसके निर्देश को नज़र-अंदाज करते हैं अथवा कोई भी कार्य जो वह कहता है उसके विरुद्ध करते हैं।

- किसानों द्वारा चुकाया गया ब्याज रुपया नहीं था, बल्कि उनका खून था। यह रुपया भूखे/बीमार रह कर, और बिना किसी सुख-सुविधा और आराम का लाभ लेते बचाया हुआ पैसा था। तृप्ति और अकबर की पत्नी द्वारा चुकाया गया ब्याज व्यापार का लाभ नहीं था। बल्कि वह धन उन्होंने अपना शरीर बेचकर कमाया था।

  बैंक का रुपया सामान्यतः साफ सुथरा होता है, लेकिन ब्याज जो वे लेते हैं अथवा कमाते हैं वह साफ-सुथरा नहीं हो सकता बल्कि वह धन किसानों अथवा तृप्ति जैसे लोगों द्वारा चुकाया हुआ धन होता है। जो किसी का खून या इज़्ज़त बेचकर कमाया हुआ होता है।

- यदि आप ऐसे अपवित्र धन अपना व्यापार चलाने के लिए लेते हो, जिसका आधार ईमानदारी है, सत्यनिष्ठा, दान, ईश्वर के ड़र और आज्ञा पर निर्भर है, तो क्या आपको विश्वास है कि इससे आपको लाभ होगा? इससे मुझे लाभ नहीं हुआ हैं। इससे किसानों को लाभ नहीं हुआ और न ही यह श्री.पटेल के लिए लाभदायक रहा। इससे कभी किसी ऐसे व्यक्ति को भी लाभ नहीं होगा, जो ईश्वर और उसके आशीर्वाद पर निर्भर करता है।

- जोंक और दूसरों के सहारे जीने वाले जीव दूसरों का खून चूसकर जीवित रहते हैं। इसी तरह वैश्याएं और चोर, डाकू प्राचीन काल से है। वे जीवित रहे और अपने व्यापार में भी फूले-फले। इसका अर्थ यह नहीं होता है कि उन पेशों से कमाया हुआ धन भी समृद्धि का एक रास्ता है। बल्कि हम सभी जानते है कि, यह रास्ता सीधा नर्क की ओर जाता है।

  ईश्वर कहता है,

  'ऐ मोहम्मद! इनकी धन-दौलत को न देखो, न ही इनके बच्चों को देखकर आश्चर्य-चकित होओ। ईश्वर इनको ये वस्तुएँ इस दुनिया में सजा देने के लिए ही देता है।' (पवित्र क़ुरआन ९-५५)

  यह पद संकेत करता है कि ईश्वर गलत लोगों को अधिक और अधिक धन देकर सज़ा देता है। यदि आपको कोई संदेह है, तो उनसे पूछो जिनका इन्कम टैक्स के अधिकारीयों द्वारा पीछा किया जाता है अथवा गुंडो द्वारा वसूली (Extortion) किया जाता है। अथवा वे जो बहुत अच्छा उँचा जीवन-स्तर बनाये रखने की कोशिश करते है, जबकि उन की कोई निश्चित आमदनी नहीं होती।

  ब्याज के रुपए का व्यापार और ब्याज के रुपयों द्वारा किया गया व्यापार प्रत्यक्ष रुप से अनेकों को लाभदायक दिखाई दे सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यह सुख-समृद्धि का रास्ता है। ईश्वर से डरने वाले अर्थात ईश्वर में आस्था रखने वाले सज्जन व्यक्ति के लिए यह गरीबी का रास्ता है।

- आप दूध से भरे टैंक में मल के एक छोटे से अंश से भी बहुत नफरत करते हो। आप वह दूध पीना नही

चाहते। इसी प्रकार अपनी आमदनी में अपवित्र धन की एक छोटी सी राशि से भी नफरत करो। इसे कभी भी स्वीकार न करो। अपनी ईमानदारी की कमाई में इसे कभी भी मिलाओं नहीं। ऐसा करना मौलिक सिद्धांत (Fundamentalism) या असहनीय (Intolerance) नहीं है। यह ईश्वर के प्रति श्रद्धा है, उसकी आज्ञा का पालन है।

- शारीरिक रुप से पवित्र बनो, मानसिक रुप से पवित्र बनो,आत्मिक रुप से पवित्र बनो और आर्थिक रुप से भी पवित्र बनो। संत कोई आकाश से उतर कर नहीं आते हैं। वे हम लोगों की ही तरह साधारण व्यक्ति होते है, लेकिन वे कठिन परिश्रम करते हैं, वे संघर्ष करते हैं, वे ईश्वर की मदद माँगते हैं। और निरंतर कोशिश के द्वारा अपने को अंदर और बाहर से स्वच्छ रखते हैं। इसके बाद अगर वे नही भी चाहे, तब भी मान-सम्मान और धन-संपत्ति उनके पीछे चलती है और उनके पैरों के नीचे रहती हैं।

आपके साथ यह क्यों नहीं हो सकता है? धन के पीछे मत दौड़ो। अपने सिद्धांतो से कभी समझौता मत करो। सही राह पर चलने के लिए संघर्ष करो और यदि आप ऐसा करते हो, तो केवल इस संसार में ही सफलता प्राप्त नही करोगे, बल्कि मृत्यु के पश्चात के जीवन में भीआप सफल रहोगे।

****

अध्याय-२९
समृद्धि का बीमा
(Insurance of Prosperity)

- इस पुस्तक के प्रारंभ में हमने समृद्धि अर्जित करने में मन कि भूमिका के बारे में अध्ययन किया था। एक निश्चित सीमा तक अगर हम अपने मन की स्थिति सकारात्मक बनाएँ रखे, और जीवन में पुण्य के काम रहते रहे और पाप से बचते रहे तो जो समृद्धि हमने कमाई है वह बहुत समय तक बाकी रहती है।

- आपने समृद्धि के लिए अपना संघर्ष बहुत दीन-दशा से शुरु किया होगा। आपने लगातार कोशिश और ईश्वर की प्रार्थना के साथ सफलता प्राप्त की होगी। अब इस स्थिति में, यह आपके लिए आवश्यक है कि आप अपनी उस दीन-दशा को याद रखे, जहाँ से आपने सफलता का सफर शुरु किया था। तथा अपनी कड़ी-मेहनत और ईश्वर की कृपा को भी याद रखें, जिसके द्वारा आपने सफलता प्राप्त की। इससे आप में आत्मविश्वास, आस्था, दृढ़ता, इच्छा-शक्ति बढ़ेगी और आप लगातार और सफलता पाने के लिए कोशिश करते रहेंगें। इससे आप के हृदय में सफलता पाने की जो ज्वलंत इच्छा है वह और बढ़ेगी। इससे जो मज़बूत आत्मविश्वास और सकारात्मक विचार आपके मन में होंगे उसकी ऊर्जा दूसरों को भी मिलेगी और उनको भी इस से लाभ होगा।

- सफलता प्राप्त करने के बाद, यदि आप स्वयं को ऊँची सोसायटी के लोगों की संगत में शामिल करते हो तो, वहाँ सैकड़ों लोग आप से अधिक समृद्ध, अमीर, खुबसूरत और आकर्षक होंगे। उनकी संगत में आप स्वंय को बहुत छोटा महसूस करोगे। एक आम व्यक्ति होने के कारण द्वेष, ईर्ष्या, हीनता की भावना, जल्दी धन कमाने का उतावलापन, अमीर बनने के लिए शॉर्टकट अपनाना और इस प्रकार की सभी भावनाएँ आपके हृदय में धीरे-धीरे बढ़ती जायेगी।

- उसका तुरंत असर यह होगा की आपके मन कि ज्वलंत इच्छा बुझ जाएगी। इससे सच्चाई, विश्वास, दृढ़ता, सकारात्मक सोच और क्रमबद्ध सोचने की क्षमता नष्ट हो जाती है। धनी सोसायटी के सभी सदस्य दृढ़-इरादे वाले अथवा लगातार संघर्ष करने वाले नहीं होते है, बल्कि उनमें से कुछ अपने पिताओं द्वारा कमाई हुई संपत्ति के उत्तराधिकारी होते हैं और इसे धीरे-धीरे, धन बर्बाद कर रहे होते हैं। कुछ ने यह धन गलत तरीके से कमाया होता है। इस लिए वह इस समृद्धि के थोडे समय के लिए ही मालिक होते है। ईश्वर कहता है, **'मैंने उन्हें सजा देने के लिए समृद्धि दी है'** (पवित्र कुरआन ९:५५)। उनमें से कुछ अमीर और प्रसिद्ध परिवारों से होते हैं, लेकिन बर्बादी की प्रक्रिया में होते हैं।

- ऐसे लोगों कि संगत से आपका कभी फायदा नही होगा। जितनी जल्दी संभव हो, उनके साथ से बचें। साहसी व्यक्तियों, संघर्ष करनेवालों, आशावादी सोचनेवालो तथा आपकी तरह कठिन संघर्षवालों का समूह बनाओं और उसमें शामिल हो जाओ।

- आपकी सभी समस्याएँ केवल आपकी अपनी कोशिश और ईश्वर की कृपा से ही सुलझेंगी। वे समस्याएँ किसी के भी प्रभाव से, दोस्ती और ऊँची सोसायटी के लोगों की सिफारिश द्वारा न कभी सुलझी है और न ही सुलझेगी।

- कोई भी नुकसान में व्यापार नहीं करता है। जो कोई भी आपके कठिन समय में आपकी मदद करेगा, वह बाद में उससे ज्यादा लाभ आप से लेगा जितना आप पर उसने खर्च किया था। इसलिए बेहतर है कि उनसे दूर रहो।

- अपने दिन की शुरुआत ईश्वर की प्रार्थना से करें। प्रार्थना के अंत में कहें, हे ईश्वर! मैं कैसी दीन-दशा में था, यह आपकी कृपा ही है, जिससे मैंने यह प्राप्त किया। और इससे भी ऊँची स्थिति प्राप्त करने के लिए बुद्धि दे, शक्ति दें और अपनी कृपा-दृष्टि से मेरी मदद करें।

उपर दिए गए वाक्य पुनः दोहरायें और अपनी पहले की दीन स्थिति को याद करें, इससे आपके मन में दूसरे रईस और प्रसिद्ध लोगों की संपत्ति देखकर आपके मन में उतना धन पाने की इर्ष्या या कड़वाहट की भावना उत्पन्न नहीं होगी। और आपके ह्रदय में ज्वलंत इच्छा हमेशा जलती रहेगी। आप अपनी समृद्धि की यात्रा को कभी भी नहीं रोकोगे, और न ही आप की कड़ी मेहनत से कमाया हुआ धन कभी बर्बाद होगा।

ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

'मेरा शुक्रिया अदा करो उसके लिए, जो मैंने तुम्हें अपनी कृपा से दिया हैं। उसके बदले में मैं तुम्हें और अधिक समृद्धि दूँगा। यदि तुम इनकार करते हो, तो वास्तव में मेरी सज़ा बहुत गंभीर है।' (पवित्र कुरआन १४:०७)

मैं ईश्वर को उसकी अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद देता हूँ। (पवित्र बायबल कोर ९:१५)

सब कुछ देनेवाले ईश्वर को हमेशा धन्यवाद दें। (पवित्र बायबल एपी एच ५:२०)

इसलिए अपनी समृद्धि को हमेशा के लिए सुरक्षित रखने रखने के लिए नियमित रुप से ईश्वर का आभार माने और उसका शुक्र अदा करते रहे।

****

अध्याय - ३०

स्वच्छता

(Cleanliness)

जब आप एक शीशे के रॉड को ऊनी कपडे पर रगडते हो, तो उसमें स्थायी विद्युत-धारा (Static current) आ जाती है। फिर उसी रॉड को कागज के टुकडों पर घुमायें। उस समय कागज के टुकड़ों में अपने आप (Negative static current) निर्माण होगा और कागज के टुकड़े काच के रॉड पर चिपक जायेंगे।

यदि आप अमीर और प्रसिद्ध होते हो, तो चाहे आप का स्वभाव कितना भी मधुर हो, आप के शत्रु जरुर पैदा हो जाएँ। ऐसी स्थिति में आप सड़क पर स्वतंत्र रुप से चल नहीं सकते हो। ये साधारण तथ्य हैं, जिन्हें हम प्रतिदिन अपने जीवन में देखते हैं।

तब भी ऐसा ही घटित होता है, जब हम सही राह पर चलते हैं अथवा धार्मिक और पवित्र हो जाते हैं। जिस प्रकार इस संपूर्ण संसार में पवित्र आत्मायें और शक्तियाँ हैं, उसी प्रकार दुष्ट आत्मायें और शक्तियाँ भी हैं। जब हम नेक राह पर चलते हैं, तो वे हमारे दुश्मन हो जाते हैं। उनका उद्देश्य हमको मारना नहीं होता है, बल्कि हमें शारीरिक और मानसिक रुप से नेक-राह पर चलने से हमारा ध्यान हटाना होता है। और वे कभी भी हमें गरीबी के खड्डे से बाहर निकलने नहीं देना चाहते हैं।

जिस प्रकार हम चोरों और शत्रु से अपनी रक्षा करते हैं, उसी प्रकार हमें दुष्ट शक्तियों से भी अपना बचाव करना चाहिए। उनसे सुरक्षित रहने का सबसे प्रभावशाली तरीका है संपूर्ण रुप से स्वच्छ रहना,और अपना दिन अथवा काम के शुरु करने से पहले ईश्वर से प्रार्थना करके रक्षा और समृद्धि के लिए मदद माँगना।

स्वच्छता के बारे में आध्यात्मिक पुस्तकें क्या कहती हैं?

- **हे मोहम्मद! अपने कपडे साफ (स्वच्छ) रखें।** (पवित्र कुरआन ७४-४)
- **पैंगम्बर मोहम्मद ने कहा, स्वच्छता आधा धर्म हैं।** (जन्नत कि कुंजी पेज नंबर ३)
- **पाक साफ व्यक्ति के अतिरिक्त कोई भी इसे (पवित्र कुरआन) को स्पर्श न करें।** (पवित्र कुरआन ५६-७९)

मानसिक स्वच्छता: (Cleanliness of mind)

अगर विभिन्न जाति के लोगों को और कुछ ब्राम्हण जाति के लोगों को एक साथ करके आप से पूछा जाए कि इनमें से सिर्फ ब्राम्हणों को पहचानो, तो अधिकांश मामलों में आप उनके चेहरो के तेज से पहचान लेते हो कि ब्राम्हण कौन हैं। प्रार्थना और स्वच्छ भोजन ब्राम्हणों को बुद्धिमान बनाता है और उनके चेहरे चमकते हैं।

इसलिए हमेशा स्वच्छ रहने के लिए अधिक से अधिक सावधानी बरतें और स्वच्छ भोजन खायें। मेरे अपने व्यक्तिगत मतानुसार, संपूर्ण मानसिक और शारीरिक स्वच्छता के लिए आप को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- शाकाहारी बनें। यदि यह संभव नहीं हैं, तो सिर्फ मच्छी और घर में पकाया हुआ हलाल मांस यही तक अपना आहार नियंत्रित रखें। होटल में कभी-भी मांसाहारी भोजन न खाएँ।

- मांसाहारी होटलों में शाकाहारी भोजन खाने से भी बचें।

- शराब, नशा लाने वाली सारी चीज़े पीना बंद करें। कोई भी वस्तु जिसे ईश्वर ने वर्जित किया है, कभी आप का भला नहीं करेगी। यदि आप तनाव कम करने के लिए शराब पीते हो, तो उसके स्थान पर योगा अथवा भक्ति करनें की कोशिश करें।

- GI-GO, कंम्प्यूटर शब्दावली विज्ञान में इसका अर्थ है Garbage in-Garbage out। इसका अर्थ है की अगर आपने कंम्प्युटर को गलत फीडिंग दिया तो रिजल्ट भी गलत ही मिलेंगे। यही दार्शनिकता आपके लिए भी काम करती है। यदि आप धोखेबाज़ी, बेईमानी और किसी के शोषण द्वारा धन कमाते हो, ऐसे धन से खरीदा हुआ खाना खाने से आपके और आपके परिवार के मन में कभी भी रचनात्मक और पवित्र विचार पैदा नहीं होंगे। आप और आपका परिवार ऐसे धन से खरीदा खाना खाने के बाद केवल धोखा, बेईमानी और सब प्रकार की बुराईयों के बारे में ही सोच सकते हैं। जैसा आप बोओगे वैसा ही काटोगे। इसलिए कभी न सोचे कि धोखाधडी से कमाए हुए पैसों से सुख संपत्ति बढ़ेगी अथवा हमेशा रहेगी। गलत तरीके से कमाया हुआ खाना खाने से कोई भी आध्यात्मिक कवच दुष्ट आत्मा से आप की सुरक्षा नहीं करेगा।

- व्यापारिक लेन-देन में मोल-भाव करना और टैक्स बचाना आप का जन्माधिकार है, लेकिन इसके अतिरिक्त पूर्णतयः ईमानदार रहें।

  अपने खाने के बारे में बहुत ही सावधानी रखें चाहे लोग आप को अंधविश्वासी अथवा सनकी कहने लगें। जमीन पर पड़े किसी भी लावारिस धन अथवा वस्तु को न उठायें, चाहे वह एक रुपया हो या एक हजार रुपए हों। वह व्यक्ति, जो सज्जन-पुरुष नहीं है, न उसका खाना खाओ और नाही उसका मेहमान बनो।

- अपने पति अथवा पत्नी के साथ संभोग के पश्चात्, बच्चे को जन्म देने के पश्चात् और महावारी में व्यक्ति नापाक होती है,ऐसी स्थितियों में खाना खाने से पहले सफाई की बहुत सावधानी बरते।

- रचनात्मक सोच या कल्पना (Constructive intelligence) एक ईश्वरीय उपहार है। एक संगीतकार किसी भी समय लोगों की माँग पर मन को स्पर्श करनेवाला प्रस्तुतीकरण नहीं कर सकता हैं। पहले वह शांत होकर अपने मन और आत्मा में प्रकृति (Mother Nature) से मधुर सुरों को ग्रहण करता है और उसके बाद वह लोगों के सामने इसे प्रस्तुत करता है। एक कवि को कागज़ पर कविता लिखने से पहले

अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनने के लिए शांत रहकर ध्यान केंद्रित करना पड़ता हैं। संगीतकार और कवि दोनों के पास ताल और कविता का शब्दकोश नहीं होता हैं, बल्कि मुख्य रुप से वे किसी ईश्वरीय देन पर या निःसर्गमाता की प्रेरणा पर निर्भर करते हैं।

इसी प्रकार सफल व्यापार के लिए रचनात्मक रुप से सोचने के लिए ईश्वर की सहायता की बहुत जरुरत पड़ती है। और यह सहायता केवल स्वच्छ रहने से ही प्राप्त होती है। इस लिए स्वच्छ रहने की हदसे ज्यादा कोशिश करें।

शारीरिक स्वच्छताः- (Cleanliness of the body)

आपके घर में टी.वी सेट और केबल-कनेक्शन तो होगा। हम टी.वी दो तारों द्वारा बिजली सप्लाई करते हैं। एक Netural और एक Phase। हम टी.वी.केबल सप्लाई भी दो तारों द्वारा देते है। परंतु ये तार अलग प्रकार के होते हैं। बिज़ली सप्लाई करने वाले दोनों तार एक दूसरे के समांतर (Parallel) होते है। जबकि केबल में एक तार टी.वी में जाता है और दूसरा तार पहले तार के चारों ओर लिपटा होता है ताकि पहले तार का बाहरी अनचाहे सिग्नल से बचाव होता रहें। लिपटा हुआ तार अर्थिंग (Earthing या बचाव कवच) का काम करता है। यदि आप केबल के सिर्फ एक तार की सप्लाई टी.वी. में दोगे तो पिक्चर साफ नहीं नज़र आऐगा स्क्रिन पर चित्र टेढ़े होगें और दूसरें अनचाहे सिग्नल भी मिलते रहेंगे।

इसी प्रकार आप की आत्मा को ईश्वर और निःसर्गमाता के द्वारा लगातार सकारात्मक संदेश मिलते रहते है। इन मिलनेवाले संदेशो को अनचाहे संदेशों से रक्षण करना जरुरी है। आप का शरीर पर्याप्त रुप से दृष्ट (Evil) सिग्नलस से हमेशा सुरक्षित रहना चाहिए, ताकि आप का मन स्पष्ट रुप से सकारात्मक और ईश्वरी सिग्नलस को प्राप्त कर सके। और यह केवल पूर्णतयः शारीरिक स्वच्छता और ईश्वर के संरक्षण से ही संभव है।

शारीरिक स्वच्छता के लिए मेरे व्यक्तिगत सुझाव निम्न प्रकार से हैं।

- मनुष्य-शरीर से बाहर निकलने वाला पसीना, मल, मूत्र, रक्त और वीर्य सब गंदे होते है। हम यह जानते हैं और इन्हें धोकर साफ कर देते हैं। लेकिन हम इन्हें किस तरीके से और किस सीमा तक साफ करते हैं, यह संस्कृति और धर्म पर निर्भर करता हैं।

- आप सुबह से शाम तक भूखे रह सकते हो, लेकिन जब तक आप का उपवास रखने का उद्देश्य नहीं होगा तो, केवल भूखे रहने से ही आप को पुण्य प्राप्त नहीं होगा। उपवास रखकर पुण्य पाने के लिए पहले आप उपवास रखने का उद्देश्य बनाते हो और जब उपवास रखते हो तो भी उपवास में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इस बात का ख्याल रखते हो।

इसी प्रकार शारीरिक स्वच्छता और ईश्वरीय संरक्षण के उद्देश्य से अगर आप ईश्वर के बताए मार्ग से स्वच्छता प्राप्त करते हो, और इस बात का ख्याल रखते हो कि इस स्वच्छ हालत में आप को क्या करना है और क्या नहीं। तभी आप को ईश्वरीय संरक्षण मिलेगा।

- हम शैम्पू अपने बालों को ठीक-हालत में रखने के लिए प्रयोग करते हैं। तीन मिनट के लिए शैंम्पू लगा रहने के बाद यदि हम अपने बाल दस मिनट तक पानी से धोते रहें और यह चाहे कि सारा शैंम्पु धोकर निकाल दें तब भी हमारे बालों में शैंम्पू का असर रहेगा और हमारे बाल मुलायम और रेशम जैसे ही रहेंगे। क्योंकि वे शैम्पू में इस्तेमाल किए रसायनों को जज्ब करते हैं और रसायन का प्रभाव बालों में २४ से ४८ घंटे तक रहता हैं।

- इसी प्रकार बगलों के बाल और उदर के नीचे (जांघों) के बाल लंबे समय तक पसीने में भीगे रहते है। और पसीना गंदा होता है। इसी प्रकार संभोग करते समय उनमें वीर्य भी लगता है और माहवारी के समय खून भी। साफ-स्वच्छ होने के लिए हम स्नान करते हैं। हम बालों में चाहे कितनी भी मात्रा में साबुन और पानी लगाएँ, गंदा पसीना, वीर्य और खून का प्रभाव बालों में रहता ही है। नहाने के बाद भी गंदा प्रभाव खत्म नहीं होता है, जैसे शैम्पू का प्रभाव बालों में २४ घंटो के पहले समाप्त नहीं होता। इसलिए आध्यात्मिक स्वच्छता के लिए, बगलों और उदर के नीचे के स्थान के बाल हर पंद्रहवे-बीसवे दिन साफ करें। ४० दिन के बाद से ज्यादा देर न लगाएँ। क्योंकि उस अवधि के पश्चात् बाल आध्यात्मिक रुप से गंदे समझे जायेंगे और गंदी हालत में आप की कोई प्रार्थना ईश्वर के यहाँ स्वीकार नहीं होगी।

- वायु में धूल के कण होते हैं, धूल के कणों में हर तरह की चीज़ों के महीन कण होते हैं। यहाँ तक कि उनमें जानवर का मल और मनुष्य के मल के कण भी हो सकते हैं। और ड्रैनस तथा गटर के गंदे कण भी हो सकते हैं। हवा हमारे सिर के बालों में इन धूल के कणों को गहराई तक ले जाती है। ऐसे गंदे कणों से पूर्ण रुप से स्वच्छ रहने के लिए, साधु-सन्यासी, हिंदू पंडित अपने सर के बाल मुंडा देते है और मुसलमान तथा सिख अपने सिर पर टोपी अथवा पगडी पहनते हैं। आप ऐसी गंदगी से स्वच्छ रहने के लिए अपने तरीके के अनुसार सावधानी बरतें।

- हम प्रतिदिन स्नान करते हैं। जब कभी भी हम शौचालय जाते हैं, हम मल को धोने की पूरी सावधानी रखते हैं। लेकिन हम यूरिन से हमेशा लापरवाह रहते हैं। यदि यूरिन की एक बूँद भी मस्जिद, चर्च अथवा मंदिर के फर्श पर गिरती है और यदि पुजारी इसे जानता है, तो क्या वह इसे साफ किए बिना प्रार्थना करेगा? नहीं। यदि यह इतनी गंदी है, तो आप इसे अपने अंडरवियर में क्यों गिरने देते हो? और फिर भी सोचते हो कि आप स्वच्छ हो और प्रार्थना अथवा ईश्वर की सहायता और बचाव के योग्य हो?

  जिस प्रकार आप मल साफ करते हो, उसी प्रकार मूत्र भी साफ करें तथा ध्यान रखें कि एक बुंद भी आप के कपड़ो और शरीर पर न गिरे। यदि आप के कपड़ो और अंडरवियर में लगा हुआ है, तो हाथ और मुँह धोने के बाद भी आप आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ नहीं हो सकते हो। इस बात की सावधानी बरतें कि आप के वस्त्र और अंडरवियर मल मूत्र से पूर्णतय: स्वच्छ रहें।

  इसलिए मूत्र-त्याग बैठने की स्थिति में करें और कुछ समय इंतजार करें,ताकि मूत्र की अंतिम बूंद भी बाहर आजाऐं और फिर इसे टिश्यू-पेपर से सुखा लें अथवा पानी से धोयें, इससे आप पूरी तरह स्वच्छ हो जाऐंगें।

- निम्नलिखित दशाओं के पश्चात् स्नान करना आवश्यक है।

अ. बच्चे को जन्म देने के पश्चात् स्नान करना (जब रक्तस्राव बंद होता है अथवा ४० दिन के पश्चात्)।

ब. माहवारी के समय के पश्चात्।

क. संभोग के पश्चात्।

- आध्यात्मिक पवित्रता के लिए, साफ-सुधरे स्नानगृह में नहाना चाहिए। फर्श पर गिरती हुई पानी की बूँदे, आप को फिर से गंदा न करें।

अ. अपने शरीर से सारा रक्त, वीर्य, मल-मूत्र और पसीना इत्यादि साफ करने के पश्चात् ही नहाना शुरु करें।

ब. पहलें कुल्ला (गरारा) करें और मुँह साफ करें।

क. उस के बाद अपने नथनों को नाक के मुलायम हिस्से तक धोंयें।

ड. फिर पूरे शरीर पर पानी डालें तथा धोयें। शरीर का कोई भी हिस्सा सूखा नहीं रहना चाहिए।

- यदि आप स्वच्छ हैं और आप के लिए स्नान करना जरुरी नहीं है तो, स्वयं को आध्यात्मिक रुप से स्वच्छ करने के लिए निम्नलिखित साधन अपनाएँ-:

अ. स्वच्छ-स्थान पर बैठें। फर्श पर पानी गिरने से जो पानी के छींटे उड़ते हैं उनसे आपके वस्त्र गंदे नहीं होने चाहिए।

ब. कलाई तक अपने हाथ धोयें। तीन बार कुल्ला करें।

क. नथुनों को पानी से, नाक में कोमल स्थान तक तीन बार धोयें।

ड. पूरे चेहरे को तीन बार धोयें।

ई. प्रत्येक हाथ को कोहनियों तक फिर तीन बार धोयें।

फ. माथे से सिर के पिछले हिस्से तक अपने गीले हाथ सिर और बालों पर फेरें।

ज. अपने पैर टखनों (Ankle) के जोड़ो तक तीन बार धोयें।

- ऊपर दी गई प्रक्रिया वजु कहलाती है। इस स्थिति में एक अध्यात्मिक-कवच आपकी रक्षा करेगा और आप शांति महसूस करोगे।

  सभी पवित्र पुस्तकों को केवल वजु के पश्चात् ही छूना अथवा हाथ लगाना चाहिए अथवा हाथ में लेना चाहिए।

- निम्नलिखित अवस्थाओं में वजु अमान्य हो जाता है:-

१. मल-मूत्र, गैस, वीर्य, अथवा रक्त निकलने अथवा त्यागने पर।

२. वमन करने पर। (Vomiting)

३. घाव से खून बहना।

४. निद्रा।

कार्य-स्थल की स्वच्छता:- (Cleanliness of the work place)

- हम प्रार्थना करने के लिए मस्जिद, मंदिर अथवा चर्च जाने को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन ईश्वर वहाँ नहीं रहता है। फिर हम वहाँ क्यों जाना चाहते हैं? इसका कारण यह हैं कि वे स्थान पूर्णतय: स्वच्छ होते हैं और जैसे ही हम वहाँ प्रवेश करते हैं, हम शांति महसूस करते हैं और प्रार्थना करने की इच्छा होती है।

  हमारा कार्यस्थल भी एक पूजा-स्थल हैं। अपने परिवार के लिए ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाना सबसे अधिक पवित्र कार्य है। इसलिए हमें वे सब सावधानियाँ बरतनी चाहिएं जो हम पूजा-स्थल के लिए करते हैं।

- शराब पीना, काम-वासना में लिप्त रहना, तथा अश्लील तस्वीरें देखना और गाने सुनना, व्याभिचार और गाली गलौज करना इत्यादि इन सबका पूर्णतय: निषेध होना चाहिए। सामान्यत: जो कुछ भी हम पूजा स्थल पर नहीं करते हैं और नहीं रखते हैं, ऐसी चीज़े या कार्य काम करने की जगह पर नहीं करना चाहिए या नही रखना चाहिए।

- पवित्र आत्माएँ और आध्यात्मिक शक्ति आप की सहायता कर सकती हैं यदि आप के चारों ओर का वातावरण उनके पक्ष में हो अर्थात उनकी इच्छानुसार हो। कार्य-स्थान को अच्छी तरह साफ रखें और वातावरण को प्रसन्न रखने के लिए सुबह और शाम को सुंगधित धूप अगरबत्ती जलायें।

- जब कभी भी आप कार्य-स्थल पर काम करने के लिए आते हो, पहले सुगंधित अगरबत्ती जलायें, फिर कुछ प्रार्थना करें और प्रभु से अपनी सफलता के साथ-साथ प्राणी-मात्र की शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना करें। फिर अपना कार्य शुरु करें।

- यदि आप स्वच्छ खाना खाते हो, शारीरिक रुप से स्वच्छ रहते हो, कार्य-स्थल को साफ सुथरा रखते हो, अपना काम प्रार्थना के साथ शुरु करते हो और अपना व्यापार क्रमबद्ध तरीके से तथा ईमानदारी के साथ करते हो, तो यह निश्चित है कि आप और आप के वारिस कभी भी पतन नहीं देखेंगे। यह इसलिए हो सकता है क्योंकि आप ने उस ईश्वर की डोर मजबूती से पकड़ी है, जो इस संसार के साथ-साथ पूरे ब्रम्हाण्ड पर शासन करता हैं।

****

भाग-४

असफलता के सामान्य कारण

The Common Cause of Failure

असफलता के सामान्य कारण
The Common Cause of Failure

- यदि आप एक दूध के कटोरे में शक्कर मिलाते हो, तो उसका स्वाद अच्छा हो जाएगा। यदि आप सूखे-मेवे दूध में ड़ालते हो, तो स्वाद और बढ़ जायेगा। यदि आप दूध में केसर मिलाते हो तो सुगंध भी बढ़ जायेगी। यदि ये सब चीज़े मिलाने के पश्चात् आप दूध में एक बूंद नींबू का रस मिलाते हो तो क्या होगा? वह दूध खट्टा हो जायेगा और आपको सारी चीज़े बाहर फेंकनी पड़ेगी।

- एक इलैक्ट्रौनिक सर्किट ड़िज़ॉइन करें, विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में काम करें, सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले पुर्जे खरीदें और सबसे अच्छी व आधुनिक लैब में जोड़े। जब आपका इलैक्टोनिक सर्किट काम करना शुरु कर देता है, तो उसके ऊपर एक बूंद पानी डालें। क्या होगा? शॉर्ट सर्किट के कारण सब कुछ जल जाएगा।

- एक विषय का पूरी तरह से अध्ययन करें। परीक्षा में सम्मिलित होओ। सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें। बस सिर्फ अपना पहचान नंबर लिखने में एक छोटी-सी गलती करें। क्या होगा? आप की मार्कशीट में नंबर नहीं दिए जायेंगे।

- एक छोटी-सी गलती पूरी कोशिश को बर्बाद कर सकती है। सफलता के संघर्ष में भी यही होता है। एक व्यक्ति सफलता की सभी प्रक्रियाएँ और नियमों का पालन करता हैं और एक छोटी-सी गलती कर देता हैं, जो उसके लिए महत्वहीन अथवा इतनी मुख्य नहीं होती हैं। और वह जीवन के आखिर तक असफल ही रहता हैं। वह अपने भाग्य को दोष देता है, लेकिन अपनी स्वयं की गलती को नहीं समझता है।

कुछ गलतियाँ है, जिन्हें करने के बाद कोई कभी भी वास्तव में सफल नहीं हो सकता है, वे निम्नलिखित हैं:-

****

अध्याय - ३१
तीन महापाप
(The Three Great Sins)

● ब्रम्हांण्ड, प्रकृति और संसार जिसे हम अपने चारों ओर देखते हैं, लाखों साल पुराने हैं। इतने लम्बें समय में भी इसका पतन नहीं हुआ है और अभी भी यह बिल्कुल सही अवस्था में तथा काम करने की दशा में हैं, क्योंकि इसकी अपनी एक सुरक्षा पद्धति है। जब कभी भी इन में विनाश का कार्य या कोई दुर्घटना होती है, तो इसे भरने के लिए विकास की प्रक्रिया स्वतः विकसित हो जाती है। उदाहरण के लिए, बिजली अथवा आग जंगल को जला देती है। वायु फिर लंबी दूरी से बीज लाती है और वर्षा फिर जंगल को हरा-भरा कर देती है।

● आग के जलने से आसपास के वातावरण में आक्सीजन कम होता है, हरीभरी पत्तियाँ Photosynthesis प्रक्रिया द्वारा फिर से उसका निर्माण करके ऑक्सीजन की कमी को पूरा करती है। इसी प्रकार मनुष्य का जीवन-काल लगभग ७० वर्ष है। इतने लंबे समय तक जीने के लिए, प्रकृति ने मनुष्य शरीर में एक स्वःसरंक्षण पद्धति की रचना की है। जब एक वाइरस अथवा जीवाणु बाहर से हमारे शरीर पर आक्रमण करता है, तो सफेद रक्तकण खून में स्वयंः बढ़ने लगते हैं, जो वाइरस और बैक्टिरिया से लड़ते हैं और शरीर को स्वस्थ रखनें में मदद करते हैं।

● जब एक कुत्ता घायल होता है, तो उसके घाव तुरंत नहीं भरते हैं। कई बार मैंने उनके घाव में कीड़े देखे हैं। लेकिन कुछ समय पश्चात् प्रकृति की वही प्रतिरक्षात्मक पद्धति कुत्ते के सड़े हुए घाव को भी भर देती है। कुछ कुत्ते मर जाते हैं। लेकिन कई बच जाते हैं। इस घाव भरने की प्राकृतिक प्रक्रिया को हम सब अपने दैनिक जीवन में देखते और समझते है।

● मानव-संस्कृति अथवा समाज भी मनुष्य-शरीर की तरह है। इसकी भी प्रतिरक्षात्मक पद्धति है। ब्रम्हांण्ड (अखिल विश्व) में नकारात्मक और सकारात्मक शक्ति (Negative & Positive energy of cosmos) और कंपन की एक जटिल पद्धति (Complex system of vibration) है, जिसको समझना और उसकी व्याख्या करना बहुत कठिन है। लेकिन वे विद्यमान हैं और कार्य करती हैं। ऐसा कोई भी विनाशकारी कार्य जो मनुष्यों और उनके समाज की शाँत और प्रगतिशील जीवन-शैली की व्यवस्था में बाधा डालता है, धीरे-धीरे अंत को प्राप्त होगा। प्रकृति की जटिल प्रतिरक्षात्मक पद्धति बाधा डालने वाले तथ्यों को कमजोर करती हैं और व्यवस्था, शांति, और प्रगतिशील जीवन-शैली को मज़बूत बनाती हैं।

● ब्रिटिश साम्राज्य विशाल और शक्तिशाली था। ब्रिटेन को किस देश ने हराया? किसी ने नहीं। फिर उनकी श्रेष्ठता को क्या हुआ? वे टुकड़े-टुकड़े क्यों हो गए? वास्तव में वे स्वार्थी और निर्दयी उद्देश्य के साथ संसार पर राज्य करते थे। उन्होंने साधारण लोगों पर अमानुषिक नियम लागू कर रखा था। इसलिए बिना

हराये ही, प्रकृति ने उन के पंख काट दिए। आज ब्रिटेन यूरोप के पश्चिमी समुद्री तट का एक सामान्य देश मात्र हैं।

- यही सत्य विशाल रशिया (रुस) देश का भी है, जिसकी शक्ति शाली फौज इस दुनिया को कई बार नष्ट करने के लिए काफी थी। रशिया के विघटन के समय उसी मिलटरी के पास खाने के लिए पर्याप्त खाना भी नहीं था। रशिया को किसने खंडित किया? यह वही प्रकृति की प्रतिरक्षात्मक पद्धति थी। रशिया के साम्यवादी कानून समाज में शांत और प्रगतिशील जीवन व्यवस्था में मदद नहीं करते थे। वे सभी धर्मों के पूजा-स्थलों को बंद कर देते थे, कड़ी मेहनत से कमाई हुई दौलत से अपनी जायदाद बनाने के अधिकार को नहीं मानते थे। भाषण के अधिकार और विचारों की अभिव्यक्ति को नहीं मानते थे, स्वतंत्रता से संचार करने की आजादी नहीं थी। इसलिए प्रकृति ने उन्हें वापिस पुरानी जगह पर रख दिया। कुत्ते का घाव जैसे शुरु में बढ़ जाता है फिर सड़ जाता है और आखिर में भर जाता है उसी तरह सभी शक्तिशाली शासक, जिन्होंने भी इस धरती पर निर्दयता और अमानुष्यता के साथ शासन किया, शुरु में एक निश्चित सीमा तक तरक्की की और आखिरकार बिखरे-टूटे तथा बर्बाद हो गए।

- व्यक्ति के प्रति दिन की जिंदगी में भी और व्यक्तिगत स्तर पर भी इसी प्रकार का नियम काम करता है। जो प्रेम करने वाले सहनशील, ईमानदार और परिश्रमी हैं, सामान्यतः जो शांतिपूर्ण रहते हैं तथा समाज की उन्नति करने तथा व्यवस्था में शांति रखने में मदद करते हैं केवल ऐसे लोगों के लिए ही विश्व की प्रतिरक्षात्मक पद्धति उनके प्रगति और समृद्धि में मदद करती है। और जो कोई भी इसमें बाधा डालता है, कुत्ते के सड़े हुए घाव की तरह वह कुछ समय के लिए जीवित रहता है, कुछ समय के लिए तरक्की भी करेगा, लेकिन अंततः धीरे-धीरे खत्म हो जाता है और बर्बाद हो जाता है।

- यदि आप भष्ट, सांप्रदायिक अथवा अपराधी हो अथवा किसी भी तरह से समाज का शोषण कर रहे हो और समाज को कोई भी लाभ नहीं दे रहे हो, तो आप समाज के शरीर में वायरस अथवा कीटाणु की तरह हो। ब्रम्हांण्ड की प्रतिरक्षात्मक पद्धति आप के विरोध में कार्य करेगी। कुछ थोड़े समय के लिए हो सकता है की आप बचे रह सकोगे, अथवा फलोगे-फूलोगे, लेकिन अंततः आप बिखर जाओगे और नष्ट हो जाओगे, और आप की आसानी से कमाई हुई समृद्धि गंदे पानी की तरह बह जाएगी। ध्यान रखें सफलता का नियम आप की कभी मदद नहीं करेगा, यदि आप तीन महापापियों के समूह से हो अर्थात भ्रष्ट, सम्प्रादायिक और अपराधी हो।

- कुरआन में ईश्वर कहता हैं।

'वे जो प्राणी मात्र के लिए लाभदायी रहते हैं, वे धरती के नीचे वर्षा के जमा पानी की तरह बाकी रहते हैं और वे जो प्राणी-मात्र के लिए लाभदायी नहीं हैं, वर्षा के बहते पानी की ऊपरी सतह पर उठती झाग की तरह नष्ट हो जाते हैं।' (पवित्र कुरआन १ ३:१७)

****

अध्याय- ३ २
माता-पिता का अभिशाप
(Curse of Parents)

ईश्वर के बाद माता-पिता का स्थान होता है। बच्चा वास्तव में अपनी माता के रक्त और माँस से बनता हैं। नौ महीनों तक वह उसके शरीर का एक हिस्सा रहता है और कुदरत की निर्माण-प्रक्रिया के पूरा होने पर वह अलग हो जाता है। लेकिन अगले २ ५ वर्षों के लिए वह फिर अपने माता-पिता पर निर्भर रहता हैं। कुदरत ने मनुष्य व्यवहार के सॉफ्टवेयर को इस तरह से डिज़ाइन किया है कि माता-पिता अपने बच्चों के सुख के लिए अपने आप से ज्यादा उन का ध्यान देते हैं। वास्तव में माता-पिता बच्चों के पालन-पोषण में अपनी युवावस्था का सुनहरा समय, अपना आनंद, अपनी खुशियाँ और आराम का सबसे अधिक त्याग करते हैं। यह ईश्वर का मनुष्य जाति को पालने का एक अच्छा तरीका है।

इस प्रक्रिया का दूसरा भाग भी है। पुरुष-स्त्री की जोड़ी, जो बच्चे को जन्म देते हैं और पालन पोषण कर बड़ा करते है वह ६ ० साल की उम्र में रिटायर हो जाते हैं। और लगभग अगले २ ५ वर्षों तक अपने बच्चों पर निर्भर रहते हैं। फिर उसी मानव जाति की आध्यात्मिक सुरक्षा प्रक्रिया द्वारा बच्चे का यह कर्तव्य हैं कि वह अपने वृद्ध माता-पिता की अच्छी प्रकार देखभाल करे। यदि वह अपने कर्तव्य से पीछे हटता है, तो वह सृष्टि के नियम और प्राकृतिक पद्धति से भी पीछे हटता है।

यदि कोई भी कार्य ऐसा है, जो सृष्टि के नियम अनुसार नहीं है और प्रकृति की पद्धति में बाधा डालता है, तो बाधा डालने वाली क्रिया के स्रोत धीरे-धीरे सृष्टि के द्वारा नष्ट कर दिए जायेंगे।

जो अपने माता-पिता को नहीं अपनाता है और अपने कर्तव्य से पीछे हटता है तो वह प्रकृति की पद्धति का पालन नहीं करता है। वह सृष्टि में बाधा डालने वाला स्रोत है। कुदरत उसके पंख काट देती है। वह और उसकी समृद्धि-संपन्नता धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। वह एक आम आदमी की तरह समाज पर कोई भी प्रभाव छोड़े बगैर मर जाएगा। उसका जीवन अथवा मरण समाज के लिए कोई मायने नहीं रखता है। यदि आप समाज में और इस दुनिया में एक महत्वपूर्ण हस्ती होना चाहते हो, तो सृष्टि के नियम का पालन करो। अपने माता-पिता की देख भाल उसी प्रकार करें, जिस प्रकार उन्होंने आप के बचपन में की थी और आप को प्यार किया था।

अखिरी आध्यात्मिक ग्रंथ में ईश्वर कहता हैं,

'तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें आज्ञा दी है कि तुम्हें उसको छोड़ कर और किसी की पूजा नहीं करनी चाहिए। अपने माता-पिता के प्रति दयालु रहो। यदि उनमें से कोई एक वृद्ध है अथवा दोनों वृद्ध हैं, उन्हें वृद्धावस्था में अपने साथ रखो। उनके लिए अपने मुँह से कभी अपशब्द न निकालो और न ही क्रोध से कुछ उन्हें कहो, न ही उन्हें झिड़को, बल्कि हमेशा उन्हें आदर-मान दो और कहो, मेरे प्रभु। उन दोनों पर अपनी कृपा करो, जैसी उन्होने मेरी देखभाल बचपन में की थी, जब मैं छोटा था वैसी ही उनकी भी करो।' (पवित्र कुरआन १ ७-२ ३-२ ४)

पुत्र को पिता के अधीनस्थ (Subordinate) होना चाहिए और अपनी माता का आज्ञाकारी।
(अथर्ववेद ३-३०-२)

पैंगम्बर मुहम्मद (स.) ने कहा,

जो वृद्धावस्था में अपने माता-पिता की सेवा करके स्वर्ग जाने का लाभ नहीं कमाते हैं, उनकी नाक धूल चाटेगी (अर्थात वह अपमानित होगा)। (बुखारी)

एक बार पैगम्बर मूसा ने ईश्वर से पूछा, स्वर्ग में मेरा पडौसी कौन होगा? ईश्वर ने उत्तर दिया, एक लकड़हारा, जो अपनी बहुत ही कमज़ोर और बूढ़ी माँ की देखभाल बहुत ही अच्छी तरह कर रहा हैं।

माता-पिता की सेवा करना बहुत बड़ा पुण्य का काम है और उनकी अवज्ञा करना घोर अभिशाप है।

जिनके ऊपर ईश्वर का अभिशाप होगा, वह सफलता कैसे प्राप्त कर सकेंगे?

****

अध्याय - ३ ३
पानी की बूंदे
(The Drops of Water)

- अफ्रीका के जंगलों में हजारों शेर दूसरे जानवरों के बीच आजाद घूमते रहते हैं- जैसे हिरण, हाथी, जेब्रा और जंगली पशु इत्यादि। बहुत थोड़े से जानवर शेरों से अपना बचाव स्वंय कर सकते हैं, फिर भी जंगल में जीवन है और सभी प्रकार के जीव जंतु फूलते-फलते हैं। संक्षेप में जीवन और मृत्यु के बीच में एक संतुलन बना हुआ हैं। शेर केवल उतने ही जानवरों को मारता है, जितना कि उसकी भूख की संतुष्टि के लिए काफी है। वे जरुरत से ज्यादा नहीं मारते और न माँस को जमा करते हैं। संक्षेप में मनुष्य को छोड़ कर प्रत्येक जीवित प्राणी एक या दूसरे रास्ते से प्रकृति के संतुलन को कायम रखने में मदद करता है और प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद अथवा नष्ट नहीं करता है। इसलिए प्रकृति के संतुलन में कोई रुकावट नहीं आती और प्राकृतिक चक्र लगातार चलता रहता है।

- राजस्थान और हरियाणा आज से लगभग तीन चार सौ सालों पहले तक घने जंगल थे। राजा तैमूरलंग जिसने दिल्ली को लूटा और कत्लेआम किया था। वह अपनी आत्मकथा में कहता हैं, कि उसकी सेना ने दिल्ली पहुँचने से पहले १५ दिन से भी अधिक दिनों तक घने जंगलों में साँपों, हाथियों और बंदरों के बीच यात्रा की। लेकिन आज वहाँ कोई जंगल नहीं हैं। इसके विपरीत राजस्थान एक रेगिस्तान हो गया है और वह दिन प्रति-दिन बढ़ रहा है। यह प्रकृति के अनमोल उपहार जंगलो के बारे में लापरवाही, इनके महत्व को न समझना और उन्हें बर्बाद करने के कारण हुआ हैं।

- भारत में जो मारवाड़ी समुदाय हैं वह गुजरात और राजस्थान क्षेत्र से हैं। वह सबसे अधिक व्यापारिक मानसिकता के लोग हैं। अधिकांश बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ के वह मालिक हैं।

- एक मारवाडी सज्जन (Non ferrous metal) स्क्रेप का कारोबार करते थे। शुरु-शुरु में उनका व्यापार फूला-फला और उन्होंने अच्छा धन भी कमा लिया। लेकिन कुछ समय पश्चात् बिना किसी कारण के उनकी बर्बादी शुरु हो गई। उन्होंने अपना व्यापार और समृद्धि खो दी और दिवालिया हो गया। उनकी समझ में कोई कारण नहीं आ सका, इसलिए वह धार्मिक उपचार की ओर मुड़ा। उन्होंने अपने धर्म-गुरु से सलाह ली, अपनी दशा का वर्णन किया और अपने नुकसान के बारे में व्यापार में गिरावट का कारण पूछा और इस हालात से उभरने का उपाय पूछा। उनके गुरु ने कारण जानने के लिए साधना की और यह नित्कर्ष निकाला कि व्यापार में हानि ईश्वर के उपहार की बर्बादी के कारण थी। मारवाडी सज्जन ने प्रत्येक दृष्टिकोण से सोचा, लेकिन यह नहीं मालूम कर सका कि उन्होंने ईश्वर के कौनसे उपहार की बर्बादी कहाँ की थी?

- वह खाली हाथ मुंबई लौट आया। उन्होंने कई बार सोचा, दिन और रात सोचा, लेकिन कारण जान और समझ नहीं सके। एक दिन जब वह नहाने के लिए तैयार हो रहा था, तो उन्हें जवाब मिल गया। उन की पानी की टोंटी से लगातार पानी बह रहा था, वह ईश्वर का उपहार पानी था जिसे वह नष्ट कर रहे थे।

उन्होंने तुरंत पानी की टोंटी को ठीक कराया और उसके बाद उन का वक्त बदल गया, उन के व्यापार में फिर तरक्की होनी शुरु हो गई और वह लाभ कमाने लगे।

- मैंने फेंगशुई पर डा.नितिन प्रकाश लिखित किताब पढ़ी जो नवनीत पब्लिकेशन लि. से पब्लिश हुई थी। उस किताब में पृष्ठ नं ६२ पर मैंने पढ़ा कि टोंटी से व्यर्थ पानी बहने से सकारात्मक शक्ति और धन बह जाता है तथा दुर्भाग्य आ जाता है।

- जब पानी की निरर्थक बूँदे आप की समृद्धि को बहा कर ले जा सकती हैं, तो तब क्या होगा जब आप महत्वपूर्ण संसाधनों को और ईश्वर के उपहार को बर्बाद करते हो। जैसे धन, समय, आपकी शारीरिक और मानसिक शक्ति इत्यादि?

- इन उदाहरणों पर हम विश्वास करें या न करें, लेकिन यह सच है कि किसी भी वस्तु का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करना अथवा खर्च करना जीवन के ईश्वरीय संतुलन में बाधा ड़ालता है, तथा प्रकृति के संसाधनों में भी बाधक बनता है। कोई भी ऐसा तथ्य जो इस असंतुलन का कारण है प्रकृति द्वारा उसपर उचित कारवाई करके उसे नष्ट किया जाएगा।

- समृद्धि तब आती है, जब आप सफलता के लिए संघर्ष करते हो और प्रकृति भी आपका विरोध नहीं करती है। जब प्रकृति आपका विरोध करती है, तो विश्व व्यवस्था और शक्ति इत्यादि आप के पक्ष में नहीं होगी, तब आपके लिए सफल होना असंभव होगा। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कभी मत करो। यह धन, पानी, भोजन, बिजली, आपकी शारीरिक, मानसिक, काम-शक्ति और आपका समय इत्यादि भी हो सकता है। उनको अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करें और अपने जीवन में सफल और समृद्ध होने के लिए सर्वसाधारण और मध्य जीवनशैली अपनायें।

- पवित्र कुरआन में भी इसी सिद्धांत को सरल-भाषा में व्यक्त किया गया है, जो निम्नलिखित है,

फिज़ूलखर्ची मत बनो, क्योंकि ईश्वर फिज़ूलखर्च करनेवाले को पसंद नहीं करता हैं।
(पवित्र कुरआन ६:१४२)

और अपने नज़दीकी संबंधियों को उनका हक दो और जरुरतमंद तथा मुसाफिर को उनका हक दो और फिज़ूल खर्ची न करो। फिज़ूलखर्ची लोग निश्चित रुप से शैतान के साथी हैं और शैतान कभी भी अपने ईश्वर का शुक्रगुजार नहीं होता है। (पवित्र कुरआन १७-२६)

सारांश: (Summary)

यदि आप एक बाल्टी से ड्रम के अंदर पानी डालना शुरु करते हो तो यह ज़रुरी नहीं है कि ड्रम भर जाएगा। वह उसी वक्त भरेगा जब इसके तले में छेद न हो। इसी प्रकार यदि आप सफलता के सूत्रों का पालन करते हो, तो यह आवश्यक नहीं है कि आप निश्चित रुप से सफल हो जाओगे। आप सफल हो जाओगे बशर्ते कि आप असफल होने के कारणों को भी नज़रअंदाज न करो। यदि आपके अंदर अनेक कमियाँ है, तो आप के सफल होने की कोई संभावना नहीं है।

उनमें से कुछ थोडे सी कमियाँ निम्नलिखित हैं

१. आपको भ्रष्ट नहीं होना चाहिए, न ही संप्रादायिक अथवा अपराधी।

२. आपको अपने माता-पिता का अभिशाप नहीं लेना चाहिए।

३. आपको फिजूलखर्ची नहीं होना चाहिए।

****

भाग-५

अंतिम उपाय
The Last Remedies

अध्याय- ३ ४
ईश्वरीय ऋतु
(Divine Season)

- हर क्षण आकाश में ४ ० ० ० से अधिक हवाई जहाज यूरोप और अमेरिका के बीच यात्रा करते हुए, अटलांटिक महासागर को पार करते हैं। हवाई यातायात नियंत्रक सावधानी पूर्वक जहाज़ों को हवा में टकराने से बचाव करते हुए उनका पथप्रदर्शन करता है तथा रास्ता बताते हैं। अमेरिका से यूरोप की ओर अटालँटिक महासागर के ऊपर गर्म हवा के झोंके बहते हैं। प्रत्येक पॉयलट उस गर्म हवा की लहर में उड़ना चाहता है, क्योंकि इसमें हवाई जहाज उड़ाना बहुत आरामदायक होता है, और वे स्वःचलित पॉयलट स्विच ऑन कर देते हैं और आराम करते हैं। वायुमान में ईंधन की खपत भी कम होती है और अपने लक्ष्य पर निर्धारित समय से पहले पहुँच जाता है। इसके विपरीत कभी-कभी अटलाँटिक महासागर के उपर तेज हवा के म्कक्खड़ भी चलते हैं और ऐसे मौसम में अटलाँटिक महासागर को पार करना बहुत कठिन होता है। पॉयलट को सावधान रहना होता है। हवाई जहाज में ईधन की खपत भी अधिक होती है और उतनी ही दूरी तय करने में समय भी अधिक लगता है। इसके बावजूद अगर जहाज को सही तरिके से संचालित किया जाए तो पॉयलट हमेशा अपने सही लक्ष्य पर पहुँचता है, चाहे वह तेज हवा में यात्रा कर रहा हो अथवा शांत गर्म हवा के बहाव में।

- ज्योतिषियों ने मिश्र (Egypt) के महान राजा रेमसिस को भविष्यवाणी की, कि हिब्रु समुदाय में एक बच्चा पैदा होगा और इज़राईलियों को गुलामी से आज़ाद करायेगा। रेमसिस ने इस होने वानी परिस्थिती से बचाव की पूरी कोशिश की। रेमसिस ने सभी नवजात शिशुओं को मार ड़ाला। पूरे हिब्रू समुदाय को गुलामी में जकड़ लिया। लेकिन अपनी सारी सामर्थ्य और शक्ति लगाकर भी वह अपने भाग्य को बदल नहीं सका। पैगम्बर मूसा ने हिब्रु समुदाय में जन्म लिया और उन्होंने इजराईल के लोगों को गुलामी से आज़ाद कराया और रेमसिस नाईल नदी में डूब गया।

- ज्योतिषियों ने राजा कंस के लिए भी भविष्यवाणी की थी, कि उनकी बहिन का बेटा उसके जीवन का अंत करेगा। कंस ने अपनी बहिन व बहनोई को जेल में डाल दिया और उनके सभी बच्चों को मार ड़ाला। लेकिन वह भी अपना भाग्य नहीं बदल सका। अंततः श्री कृष्ण ने कंस को मार दिया।

- एक मिलटरी टैंक लगभग ४ ५ टन वजन का होता हैं। यह प्रति घंटा ७० मील की गति तक दौड़ सकता है। यह ४ ५ डिग्री ढालू (Slop) ज़मिन पर चढ़ सकता है। यह खुरदरी सड़क पर दौड़ सकता है, कीचड़ और यहाँ तक कि कम गहरे पानी में भी दौड़ सकता है। इस मिलटरी टैंक का निर्माण होने के पश्चात् इसकी जाँच की जाती है। जैसे पूरी गति से दौड़ना अचानक ब्रेक मारना और १ ०-१ ५ मीटर ही आगे बढ़कर रुक जाना इत्यादि। कठिन से कठिन टेस्ट के बाद तथा जाँचपरख के पश्चात यदि टैंक सहीसलामत रहता है, तो इसे सेना में ले लिया जाता है, अन्यथा उन्हें दुरुस्ती और अधिक सुधार के लिए वापिस भेज दिया जाता है।

- ईश्वर पवित्र कुरआन में कहते हैं,

- **क्या तुम लोगों ने यह समझ रखा हैं कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश तुम्हें मिल जाएगा, यद्यपि अभी तुमपर वह सब कुछ नहीं बीता है, जो तुम्हारे से पहले ईमानवालों पर बीत चुका है? उन लोगों पर कठिनाईयाँ आयी, और मुसीबतें ऐसी आयी, यहाँ तक कि समय का रसूल और उसके साथी ईमानवाले चिल्ला उठें कि ईश्वर की सहायता कब आएगी। (उस समय उन्हें तसल्ली दी गई कि) हाँ, ईश्वर की मदद पास ही है।'** (पवित्र कुरआन २:२१४)

- जिस प्रकार टैंको को काम में लाने से पहले बहुत कठिन जाँच की जाती है, उसी प्रकार मनुष्य अपनी जिंदगी में शुरु से ही लगातार जाँचा जाएगा और अपने सभी मोर्चों पर, जैसे शिक्षा, व्यापार, नौकरी, धन, प्यार, शादी, बच्चे, जायदाद और स्वास्थ इत्यादि, और ईश्वर उसकी परीक्षा जीवनभर लेते रहेगा। जैसे राजा रेमसिस और कंस अपना भाग्य जानते थे, वैसे ही कुछ हद तक अगर आप भी अपना विधिलिखित जान भी जाओगे फिर भी आप इसे अपनी इच्छानुसार बदल नहीं सकते। भाग्य को बदलने का एक ही रास्ता है और वह है कठिन परिश्रम तथा ईश्वर से नियमित रुप से प्रार्थना करके उसकी सहायता और कृपा प्राप्त करना।

इस पुस्तक में 'ईश्वरीय ऋतु' विषय को सम्मिलित करने का कारण आप को यह याद कराना है कि हर एक के जीवन में लंबे समय तक सुख और समृद्धि का समय हो सकता है इसी तरह समस्या से पूरी कोशिश करके बचने के बावजूद दुख, तनाव, आर्थिक समस्या, स्वास्थ्य तथा पारिवारिक समस्या जीवन में आते ही रहते हैं। क्योंकि व्यक्ति को अपने ईश्वर पर विश्वास रखना है और अच्छे स्वभाव कि परीक्षा देते रहना है। यह ईश्वरीय विधान अथवा प्रक्रिया है। व्यक्ति के कार्य और कर्म की जाँच करने और परीक्षा लेने का यह ईश्वर का तरीका आपकी इच्छानुसार बदलने वाला नहीं है। इसलिए एक ओर तो आप को यह ईश्वरीय परीक्षा नियमित रुप से पास करनी है और दूसरी ओर आपको हमेशा यह अपने मन में रखना है कि यह एक परीक्षा है और समय लगातार बदलता हैं, यह हमेशा एक जैसा नहीं रहता हैं। आप को कभी न अंत होने वाले बुरे समय से घबराना नहीं चाहिए। रात का अंत होगा और सूर्य निश्चित रुप से उगेगा और प्रकाश देगा, क्योंकि ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता हैं,

हर मुश्किल के बाद सुविधाजनक समय आता है, प्रत्येक मुश्किल के बाद आराम है।

(पवित्र कुरआन ९४-५-६)

- गीता कहती है, **'समय परिवर्तनशील है।'**

इसका अर्थ है, (अच्छा या बुरा) समय में बदलाव होता है।

ईश्वरी परीक्षा के काल को समझो और उसके अनुसार तैयार हो जाओ। यदि हवाई जहाज का संचालन सही ढंग से किया जाए तो हमेशा अपने लक्ष्य पर पहुँचता है, चाहे हवा कितनी भी अशांत हो। इसी प्रकार अगर आप ईश्वर के आदेश का पालन करते हो तो समय और स्थिति कितनी भी खराब हो आप अपने लक्ष्य में जरुर सफल होंगे।

ईश्वर कहता हैं,

जो कोई भी सही कार्य करता है, चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष और वे मुझ में आस्था भी रखता हों, तो मैं उन्हें इस संसार में पवित्र और आरामदायक जीवन में रखता हूँ तथा मृत्यु के पश्चात् उन्हें उनके महान कर्मों का उत्तम फल देता हूँ। (पवित्र कुरआन १६-९७ सारांश)

****

अध्याय-३५
नाम में क्या है?
(What's in Name)

- मेरा मित्र राजू कुमार की कम्पनी का नाम जोली एलौइज़ (Jolly Alloys) था। वह लोहा बेचने का व्यापार करते थे। और ज्यादा उन्नति के लिए उन्होंने अपने कम्पनी का नाम बदल कर टैक्सन इंटरप्राइजेस (Texon Enterprise) रख दिया। जो सुनने में अधिक आधुनिक लगता था। उनके अधिकांश ग्राहक वही पुराने थे। उनका व्यापार भी वही लोहा बेचना था। नए नाम से उन के व्यापार में बिक्री भी अच्छी थी। लेकिन कुछ विचित्र हो रहा था। उन्हें अपना भुगतान (Payment) नहीं मिल रहा था। उनके एक पुराने ग्राहक ने अपने एक मित्र के द्वारा पूना से मुंबई एक ड्राफ्ट राजू के लिए भेजा। लेकिन गाँव से अत्यावश्यक फोन आने के कारण वह मित्र राजू से मिलने के बजाय जल्दी में वह ड्राफ्ट लेकर अपने गाँव चला गया। इसी प्रकार राजू को अन्य भुगतान किसी-न-किसी कारण वश देरी से ही मिल रहे थे। इसलिए कुछ महीनों बाद उनके लिए व्यापार चलाना असंभव हो गया। लेकिन अपना व्यापार बंद करने के बजाय उन्होंने अपने व्यापार का नाम फिर 'जौली एलॉइंज' रख दिया। अब वह उसी क़म्पनी और उत्पाद (यानि लोहा) का कारोबार उम्मीद से अधिक समृद्धि से कर रहा है।

- मैंने अपना व्यापार 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' के नाम से शुरु किया। ईश्वर की कृपा से मेरा काम अच्छा था। जब मैंने अपनी कम्पनी के नाम को ट्रेड मार्क के रुप में रजिस्टर करने की कोशिश की, तो मैं इसे नहीं कर सका। अंत मैंने अपनी कम्पनी का नाम 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' से बदलकर 'हाइड्रो शम्स मशीनरी' रख दिया। शम्स का अर्थ अरबी में सूर्य होता है और यह नाम मेरे पिताजी के नाम शम्सुद्दीन का संक्षिप्त रुप था। यह नाम रखने के बाद मैंने वे ऑर्डर भी खो दिए, जो पहले से मेरे साथ पक्के किए गए थे। मेरी बिक्री भी धीरे-धीरे कम होती गई। मैं वास्तव में बड़ी मुश्किल में था। तब फिर मैंने अपनी कम्पनी का नाम पहले वाले नाम में यानी 'हायड्रो-इलैक्टिक मशीनरी' में बदल दिया। उसके पश्चात् ईश्वर की कृपा से फिर मैंने उस प्रकार की समस्या का कभी सामना नहीं किया।

- इसलिए मैं आप को सलाह देना चाहता हूँ कि अपनी कम्पनी का कोई एक विशेष नाम चुनने से पहले, उसे प्रयोग के आधार पर इस्तेमाल करने की कोशिश करें और उसकी समीक्षा करें और उसका असर देखें, फिर अगर उस कम्पनी के नाम से आप का नुकसान नहीं हो रहा है तो ही उस नाम को चुने अन्यथा दूसरा कोई नाम रखकर उसकी जाँच करें।

ज्योतिषशास्त्र और अंकशास्त्र एक जटिल विषय है। इसका अध्ययन कभी न करें। यदि आप इसका अध्ययन करते हो, तो आप अपनी इच्छा-शक्ति (Will Power), जोश और असंभव कार्य को करने का साहस खो सकते हो। अकबर ने ५० वर्षों से अधिक समय तक भारत पर राज्य किया और वह एक महान एवं सफल शासक था। लेकिन उसका पिता हुमायूँ सबसे अधिक असफल शासक था। उसकी असफलता का एक कारण यह था कि कोई भी निर्णय लेने से पहले वह अधिकतर ज्योतिषिय गणना का

सहारा लेता था। इस कारण, तत्काल कोई जोखिम भरा बहादुरी का निर्णय लेने की क्षमता उनमें नहीं थी।

- इसलिए मैं आप को ज्योतिषी के पास जाने की सलाह नहीं देता हूँ। क्योंकि कोई भी ज्योतिषी आप की कम्पनी का सही नाम अचूक तरीके से नहीं बता सकता हैं। यदि ज्योतिषी इतने विशेषज्ञ होते, तो वे एक खास नाम स्वंय के कारोबार के लिए चुनकर करोड़पति हो गए होते। लेकिन ज्यादातर वे अपनी पूरी जिंदगी थोडे से पैसो और ग्राहक की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं और ग्राहकों को अपनी ओर आने के लिए मनोवैज्ञानिक उपाय प्रयोग करते हैं। इसलिए उनके उपदेश न सुनें, बल्कि अपनी स्वंय के (Experiment) पर पूरा ध्यान दें और उसकी समीक्षा करें। केवल आप ही अपनी कम्पनी के नाम के लिए प्रयोग (Experiment) करने की कोशिश कर सकते हो और अपनी कंपनी के लिए सही नाम मालूम कर सकते हो।

इसलिए जब पूरी कोशिश करने के पश्चात् भी सफलता न मिले और कुछ भी सही न होता हो, तो अपनी कार्य-योजना और कार्य-विधि को सही करने के साथ-साथ दूसरा कोई शुभ नाम चुनने पर भी ध्यान दें।

- नाम का असर केवल कारोबार की सफलता पर ही नहीं पड़ता बल्कि बुरे नाम का असर व्यक्ति के जीवन पर भी पड़ता है। यह बात आप निम्नलिखित उदाहरण से समझ सकते है।

हज़रत अब्दुल हमीद कहते हैं कि एक बार में हज़रत सईद के पास बैठा हुआ था। उन्होंने मुझ से कहा कि मेरे दादा का नाम हज़न था। जब वह हज़रत मुहम्मद (स) के पास गए तो हज़रत मुहम्मद ने उन से उनका नाम पूछा। दादा ने अपना नाम हज़न बताया जिस का अर्थ होता है (गरम दिमाग/क्रोध वाला)। हज़रत मुहम्मद (स) ने कहा के इस नाम के बदले आप का नाम सहल होना चाहिए। जिस का अर्थ होता है आसानी (Convenience) मगर मेरे दादा ने कहा मेरे माता-पिता ने जो नाम रखा है उसे मैं बदलना नहीं चाहता। और उन के नाम का यह असर है कि उनके खानदान का हर व्यक्ति आज एक दम गरम दिमाग है।

(बुखारी, मुस्लिम, मुन्तखब अबवाब (Vol-Verse-85))

- **हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर कहते हैं कि उन की बहन का नाम आसीया था जिस का अर्थ है पापी। हज़रत मुहम्मद (स) ने उस को बदल कर जमीला रख दिया जिसका अर्थ है सुन्दर।**

(सही मुस्लिम, मुन्तखब अहदिस ८ ३ ७)

- जन्नत की कुंजी नाम की पुस्तक में सफा नं १७७ में लिखा है की एक बंजर जमीन को लोग हज़रा के नाम से पुकारते से जिस का अर्थ होता है बंजर जमीन। हज़रत मुहम्मद (स.) ने उस जमीन का नाम खिज़रा रख दिया। जिस का अर्थ होता है हराभरा। और कुछ दिनों के बाद वह बंजर जमीन सचमुच हरी भरी हो गई।

- नाम का असर व्यक्तिगत स्तर पर जैसे होता है वैसे ही व्यापारिक स्तर पर भी होता है। इसलिए अपनी कम्पनी का नाम हमेशा शुभ ही रखें। और उस के प्रभाव को परख लें उस के बाद नाम पक्का करें। क्योंकी एक नाम किसी दूसरे व्यक्ति को अगर लाभ दे रहा है तो यह जरुरी नहीं है की वह आप को भी लाभ देगा।

****

अध्याय - ३ ६

ब्रम्हांण्ड शक्ति का प्रभाव

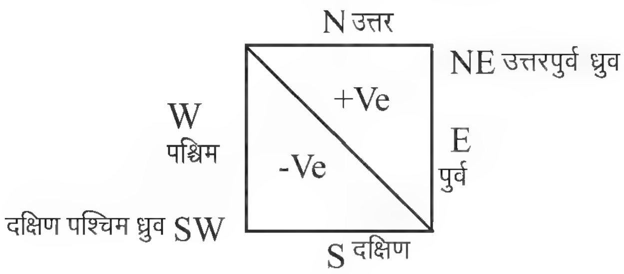
(Effect of Cosmos Energy)

- एक चुम्बक लें और उसे एक डोरी के साथ लटका दें। जब यह अज़ाद लटकता है, तो यह हमेशा अपने आप उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर हो जाएगा। इस चुम्बक को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दें और इसके प्रत्येक टुकड़े को लटका दें। उस चुम्बक का प्रत्येक टुकड़ा संपूर्ण चुंबक की तरह उत्तर-दक्षिण दिशा की सीध में अपने आप हो जाएगा।

- यह पूरी धरती अनेक जाने और अनजाने चुम्बकीय क्षेत्रों (Magnetic Field) से घिरी हुई है। तथा ब्रम्हांण्ड की शक्तियों (Cosmos Energy) से भी। चुम्बक स्वंय उत्तर-दक्षिण दिशा की सीध में पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्रों (Magnetic Field of earth) के प्रभाव से होता है।

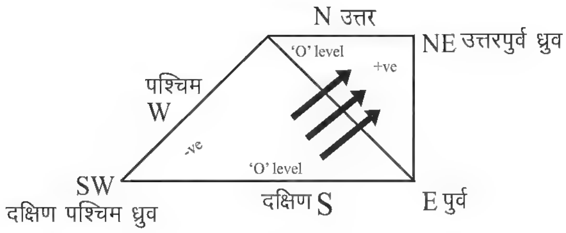
- इसी प्रकार पृथ्वी पर जमीन का प्रत्येक टुकड़ा और इमारत में (Cosmos Energy) का (Positive) और (Negative) क्षेत्र होता है। चुम्बक में, शक्ति उत्तर ध्रुव (North Pole) से दक्षिण ध्रुव (South Pole) की ओर बहती है, लेकिन जमीन के विषय में, चाहे जमीन का टुकड़ा हो अथवा बनी हुई इमारत, उत्तर-पूर्व की दिशा में (Positive Pole) होता है और दक्षिण-पश्चिम में (Negative Pole) होता है और शक्ति शक्तिशाली क्षेत्र से कमज़ोर क्षेत्र की ओर बहती है। यानि (Positive Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहा तो शक्ति का बहाव (Positive Pole) से (Negative Pole) की तरफ होगा। और अगर (Negative Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहा तो शक्ति का बहाव (Negative Pole) से (Positive Pole) की तरफ होगा। कुल मिलाकर जिस ध्रुव (Pole) का क्षेत्र ज्यादा रहेगा वेसा ही प्रभाव जमीन के टुकड़े पर या इमारत पर रहेगा।

निम्नलिखित चित्र से आप इस शास्त्र को अच्छी तरह समझ सकेंगे।:



ऊपर दिया गया वर्गाकार जमीन के टुकड़े में दोनों शक्ति क्षेत्र संतुलित हैं, इसलिए प्रभाव संतुलित होगा।

यदि इस उपरोक्त जमीन के टुकड़े का निम्नलिखित माप में बदलाव किया जाय तो:



दूसरे जमीन के टुकड़े में क्योंकि (Negative Energy) का क्षेत्र अधिक है, इसलिए शक्ति (Negative Pole) से (Positive Pole) की तरफ बहेगा इस तरह इस जमीन के टुकड़े पर नकारात्मक प्रभाव रहेगा।

सकारात्मक शक्ति (Positive Energy) वाला क्षेत्र जोश देता है, साथ ही अच्छा स्वास्थ, खुशी, रचनात्मक विचार और संपूर्ण समृद्धि। जबकि नकारात्मक क्षेत्र इसके विपरीत प्रभाव लाता है।

- इसलिए यदि आप पूरी-पूरी कोशिश करने के बावजूद सफल नहीं हो रहे हो, तो उस क्षेत्र की जाँच करें, जिसमें आप कार्य कर रहे हो। इमारत की तोड़-फोड़ किए बिना, ऐसे अनेक उपाय है, जिनसे सब कुछ ठीक हो सकता है। इसे सही करने के लिए विशेषज्ञ का राय लें। वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है, धर्म से उसका कोई सरोकार नहीं है। इसलिए यदि आपके पास खाली समय है, तो इसका अध्ययन एक शौक (Hobby) की तरह करो।

- (Positive Energy) उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहता है, इसलिए अधिकांश हिंदू परिवार अपने दरवाज़े उत्तर अथवा पूर्व की ओर रखते हैं। यह नियम शक्ति क्षेत्र के बहाव पर आधारित है, न कि धार्मिक विश्वास पर। इसी प्रकार वर्कशाप में और कंपनियों में, वे मशीनें, जिन में कच्चा माल उत्तर की तरफ से डाला जाता है, अच्छा काम एवं अच्छी उपलब्धि (Productivity) देती हैं, उन मशीनों की तुलना में जिनका मुँह दक्षिण की ओर है। मैंने स्वंय व्यक्तिगत रुप से भी अनुभव किया हैं कि अपने बैठने की स्थिति को पश्चिम से उत्तर की ओर बदलने के बाद मेरे काम करने की क्षमता में बढ़ोत्तरी हुई है।

- यदि आप अनियोजित शहर का अध्ययन करते हो, तो आप पाओगे कि वे दुकानें और होटल जिनका द्वार पूर्व और उत्तर की ओर है, उन की अपेक्षा अधिक विकसित और बेहतर व्यापार कर रही हैं, जिनका द्वार पश्चिम और दक्षिण की ओर है।

इसलिए अच्छी मशीनें लगाने और स्टाफ के होते हुए भी यदि आपकी उत्पादकता कम है, तो अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने के लिए उनकी दिशा उत्तर की ओर बदलें अथवा वास्तु शास्त्र की राय के अनुसार बदलें।

नुकसान पर चलने वाले अनेक होटलों और कारखानों को, उनकी स्थिति और दिशा बदलने के पश्चात् लाभ हुआ है। आप भी इसे परख सकते हो।

महान कवि इकबाल का एक शेर है कि,

मीरे अरब को आई ठंडी हवा जिधर से,
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है।

इस शेर का अर्थ है कि अरब के बादशाह अर्थात हज़रत मुहम्मद को जिस दिशा से ठंड़ी हवा आती थी मेरा देश हिंदुस्तान उसी दिशा में है। (हिंदुस्तान अरब देशों के पूर्व दिशा में है।)

हज़रत मुहम्मद (स.) हमेशा पूर्व की ओर अपना चेहरा करके बैठते थे। किसी ने पूछा कि आप (स.) हमेशा पूर्व दिशा कि तरफ ही अपना रुख कर के क्यों बैठते हों? तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि इस दिशा से मुझे ठंडक महसूस होती है। इसी बात को महान कवि इकबाल ने अपने शेर में कहा है।

****

अध्याय-३७
स्थानांतरण
(Migration)

- अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड सब विकसित देश हैं। लेकिन इन देशों में कितने लोग यहाँ के मूल निवासी हैं? ५ प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे, क्योंकि इन देशों में अधिकांश लोग यूरोप से आकर बसे हैं।

  मुंबई भारत की व्यापारिक राजधानी है, लेकिन वास्तव में कितने लोगों ने, जो यहाँ के मूलनिवासी हैं, जिन्होंने इसकी व्यावसायिक समृद्धि में योगदान दिया है। १० प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे। क्योंकि ९० प्रतिशत व्यापारी दूसरे प्रदेशों के निवासी हैं और वे मुंबई में आकर बस गए हैं। परंतु जो कोई भी यूरोप से बाहर जाकर बसा है अथवा मुंबई में आकर बसा है, शुरु में समृद्ध नहीं थे। उन्होंने समृद्धि स्थानांतरण के पश्चात् कठिन-परिश्रम और अपने को पूरी तरह समर्पित करके प्राप्त की।

- विजय टँक एंड वेसल्स लिमिटेड, रिफॉइनरिज के क्षेत्र मे बड़े प्रोजेक्ट का निर्माण करनेवाली प्रमुख कंपनी है। मैंने उनको अनेक हायड्रौलिक प्रेस सप्लाई किए हैं। सन १९८०-८५ में लिबिया में युद्ध और योजनाओं (Projects) के रद्द होने के कारण उन्हें २४ करोड़ का नुकसान हुआ। भारत में भी उनकी उन्नति में अनेक रुकावटें आई और वह एक बीमार यूनिट (Sick Unit) घोषित कर दी गई थी। लगभग अगले दस सालों तक उन्होंने अपनी कंपनी को दुबारा चलाने और कायम रखने के लिए बहुत संघर्ष किया, परंतु वह बीमार यूनिट ही रहे और उन्हें कुछ भी सही होता दिखाई नहीं दिया। फिर उन्होंने एक कठोर निर्णय लिया। मुंबई में चिपके रहने के बदले उन्होंने मुंबई की अपनी सारी ज़ायदाद बेच दी और बड़ौदा में बस गए। अपनी ज़ायदाद बेचने से जो धन उन्होंने प्राप्त किया, उससे और अपनी कड़ी-मेहनत के द्वारा वे फिर से जीवित हो उठे अर्थात उनकी कंपनी चल निकली। आज वे फिर अपने क्षेत्र में प्रमुख हैं, और उनकी कंपनी एक जानी मानी कंपनी है।

- पक्षी और जानवर भोजन और आश्रय स्थल की खोज में दूर-दूर के स्थानों में जाते हैं जिस के कारण वे विपरीत हालात में भी भोजन और आश्रय प्राप्त करते हैं तथा जीवित रहते हैं। स्थान परिवर्तन जीव-जंतुओं के लिए जीवित रहने और समृद्धि का एक रचनात्मक तरीका है।

  पवित्र कुरआन कहती है कि,

  जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे उनकी आत्माओं को जब फरिश्तों ने (उनके मरने के समय) खींचा तो उनसे पूछा कि यह तुम किस हाल में जी रहे थे? उन्होंने जवाब दिया कि हम धरती में कमज़ोर और बेबस थे। फरिश्तों ने कहा, क्या अल्लाह की धरती विस्तृत न थी कि तुम उसमें घरबार छोड़कर कही चले जाते? ये वे लोग है जिनका ठिकाना नर्क है और वह बड़ा ही बुरा ठिकाना है। (पवित्र कुरआन ४:९७)

- निःसंदेह ईश्वर की धरती बहुत बड़ी है तथा अवसरों से भरपूर है। ज़रुरत इसकी है कि आप उसे प्राप्त करने की कोशिश की शुरुआत करो। इसलिए अपनी पूरी कोशिश के बावजूद, यदि आप सफलता प्राप्त नहीं कर पाऐ, तो बजाय उम्मीद छोड़ने और हार स्वीकार करने के स्थान-परिवर्तन के बारे में सोचे।

- मैं वरली में जन्मा और पला बढ़ा जो मुंबई के पश्चिमी भाग में है। मैं वहाँ लगभग ३२ साल रहा लेकिन आखिरी तारीख तक एक कुत्ता भी मुझे देखकर न भौंका और न ही पूँछ हिलाई। मैं वहाँ पर पूरी तरह से अनजान हूँ। लेकिन वरली से मुंबई के उत्तरी-भाग भांडुप में स्थान परिवर्तन के पश्चात् जो मेरे व्यवसायिक स्थान के पास है। उस समय के पश्चात् मेरी इतनी समृद्धि हुई और मुझे इतना मान सम्मान मिला कि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इतना अधिक मान-सम्मान मुझे न दें, जो मैं पचा न सकूं। स्थान-परिवर्तन के पश्चात् मेरी पूरी जिंदगी बदल गई।

- कुछ बुद्धिमान लोग कहते हैं कि आपके जन्म स्थान पर आपके पास परिवार, घर, माता-पिता, सगे-संबधी और मित्र इत्यादि सब कुछ होता है। आप अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक जिंदगी में सुविधा और संतुष्टता महसूस करते हो, इसलिए आप कठिन संघर्ष नहीं करते हो। जबकि नए स्थान पर आपको हर वस्तु नए से विकसित करनी होती है, इसलिए आप कठिन परिश्रम करते हो और इसमें अपनी पूरी-पूरी कोशिश करते हो। इसलिए सफलता और मान सम्मान आपके कदम चूमती है।

- स्थान-परिवर्तन के कारण समृद्धि और उन्नति का एक अंधविश्वासी कारण यह भी है कि आपके जन्म-स्थान पर हर व्यक्ति आपको जानता है। जब आप दूसरों से ज्यादा तरक्की करते हो तो वे जलन महसूस करते हैं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुप से बुरी नज़र अथवा जादू द्वारा, या तोड़-फोड़ या झगड़ा फसाद या किसी दूसरी तरह से वे तुम्हारा नैतिक पतन करते हैं और काम से ध्यानभंग करते हैं तथा आपकी सफलता के रास्ते में बाधा डालते हैं। जबकि नए स्थान पर कोई भी आप को और आप के अतीत को नहीं जानता है, इसलिए न ही कोई आप के साथ मुकाबला करता है और न ईर्ष्या करता है, इसलिए आप आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र हो।

  इसलिए यदि पूरी कोशिश करने के बावजूद, कुछ भी अच्छा नहीं हो रहा है, तो समय बर्बाद न करें और न ही हिम्मत छोड़े। एक अच्छे स्थान पर बस जाएँ और आप को मालूम होगा कि ईश्वर की दुनिया विस्तृत है और अवसरों से भरपूर है।

सारांश:- (Summary)

- कल्पना करो कि आप के पास संसार की सबसे शानदार कार है और आप एक योग्य ड्राइवर हों। लेकिन यदि आप को सड़क के बीच के अबड़-खाबड़ स्थान अथवा खड्डे को पार कर आना है, तो आप क्या करोगे?

  टीले अथवा खड्डे को आसानी से पार करने के लिए जिसकी ज़रुरत है, वह हैं सामान्य सूझ-बूझ न कि आप के कार के इंजिन की शक्ति अथवा ड्राइवर की विशेष योग्यता। सामान्य-सी बात है, बायाँ अथवा दायाँ मोड़ लीजिए और रुकावट को पार कर लें।

- आप एक विशेषज्ञ हो सकते हो, आप सफलता के सभी सूत्रों का पालन करते होगे और राह में आने वाली अड़चनों के प्रति सावधान भी रहते होंगे तब भी अगर आप सफल नहीं होते हो, और न ही मंजिल तक पहुँच पाते हो। तो आराम से सोचो, कि आप कि सफलता में क्या रुकावटे आ रहीं हैं। सभी अड़चनों रुकावटों को दूर करने की कोशिश करो।

सफलता की राह में कुछ रुकावटें निम्नलिखित हो सकती हैं।

१. गलत नाम। नाम बदलो और अंतर देखो। (यह विषय अंकशास्त्र (Numerology) से सम्बंधित है।)

२. यदि आप नकारात्मक शक्ति क्षेत्र (Negative energy field) में कार्य कर रहे हो, जो आप के ऑफिस या कम्पनी की जगह या इमारत की वज़ह से है तो इसे वास्तुशास्त्र अथवा फैंगशुई द्वारा ठीक करें।

३. अपने चारों ओर के लोगों से होने वाली ईर्ष्या, अन्याय वाला कानून, राजनीतिज्ञों द्वारा शोषण, पुलिस और अपराधियों द्वारा शोषण, कच्चे-माल और बिजली की कमी इत्यादि का मामला हो तो किसी दूसरे अच्छे स्थान पर चले जाएँ। ईश्वर की दुनिया बहुत विस्तृत है।

४. याद रखो कई बार ऐसा भी होगा की आप की कोई गलती न होने के बावजूद आप को कष्ट और दुःख पहुँचेगा। या कष्ट और दुःख ईश्वर की तरफ से आप की परीक्षा के लिए होता है। आप ऐसी स्थिति को पहचान लें और सत्य के मार्ग पर मज़बूती से चलते रहें। अगर आप ऐसा करते हो तो आप न सिर्फ इस जीवन में सफल होंगे बल्कि आप मरने के बाद के जीवन में भी सफल रहोगे।

इसलिए Divine Season को समझने की कोशिश करो और हिम्मत के साथ आगे बढ़ते रहें।

****

अध्याय- ३८

आध्यात्मिक बाधांओ पर कैसे विजय पाँए

(How to Overcome the Spiritual Obstacles)

- मैंने अपनी ग्रेज्युएशन सन १९८३ में पूरी की। लेकिन ७६% अंक बी.ई.मैकनिकल के अंतिम वर्ष में प्राप्त करने के पश्चात् भी अत्याधिक कमज़ोर व्यक्तित्व तथा स्वास्थ के कारण अगले तीन वर्षों तक मैं किसी नामी कंपनी में नौकरी प्राप्त नहीं कर सका। एक छोटी-सी वर्कशाप में मैंने कुछ हायड्रौलिक का अनुभव प्राप्त किया। हाइड्रौलिक १९८५ में, भारत में एक बहुत ही नई टेक्नोलौजी (तकनीक) थी और बहुत थोड़े-से लोग इसके बारे में जानते थे, इसलिए मैंने नोकरी छोड़ दी और हाइड्रौलिक प्रेसेस डिज़ॉइन करने की कन्सल्टेसी (Consultancy) शुरु कर दी।

- मैं हिंदुस्तान एलाँइंस मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.के चैयरमेन मि.बी.एम.पटेल का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझपर विश्वास किया। जब मैंने उन्हें एक Solder wire extrusion press का डिजॉइन दिया, तो उन्होंने कहा, मैं फायनान्स करता हूँ आप के ड़िजाइन पर आप ही मैन्युफैक्चरिंग भी कीजिए। उन्होंने २५ मशीनों से अधिक का आर्डर बुका कर दिया। वह मेरे उत्पादन-क्षमता से दो वर्ष से अधिक का ऑर्डर था।

  जसवंत सिंह के साथ कटु-अनुभव के पश्चात मैंने एक सज्जन, श्री.बी.के.पंत से संपर्क किया, जिन्होंने मशीनें बनाने के लिए मुझे अपनी कम्पनी का प्रयोग करने की आज्ञा दे दी। मैं उनका भी आभारी हूँ।

  अगले चार साल तक मैंने बहुत पैसा कमाया। उस समय मैंने अपनी वर्कशाप खरीदी, मेरी शादी हो गई, एक कार खरीदा। मैंने अपने घर का नवीनीकरण किया इत्यादि। मैंने व्यवसायिक-जनरल्स, मैगजिन्स, तथा समाचार-पत्रों में अपने मशीनों का विज्ञापन भी दिया, और भारत पैट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड और विजय टँक्रस एंड वेसल्स लि.इत्यादि जैसी जानी-मानी फर्मस के अनेक ऑर्डर भी प्राप्त किए।

- फिर अचानक एक अजीब बात १९९०-९१ में मेरे साथ हुई।

१. हाथ में आए ऑर्डर मैं पूरे नहीं कर पा रहा था। (अनेक अनपेक्षित कारण और अज़ीब समस्याओं की वजह से)

२. यदि किसी तरह मैंने आर्डर पूरा कर भी लिया तो ग्राहक माल नहीं लेते थे।

३. यदि किसी तरह ग्राहक माल उठा भी लेते, तो उनकी कोशिश अधिक से अधिक उधार लेने की होती अथवा वह केवल एक हिस्सा ही भुगतान करते।

४. ग्राहक हमेशा बकाया भुगतान हड़पने की कोशिश करते।

५. मेरा स्वास्थ बुरी तरह से गिर गया।

६. मेरी कंपनी की बिक्री ८०% कम हो गई।

७. जब कभी भी नया ग्राहक आता वह मेरी मशीनों से प्रभावित होता और तुरंत आर्डर देने की इच्छा भी प्रकट करता लेकिन जैसे ही वह मेरे आफिस से बाहर जाता, उस का विचार और निर्णय बदल जाता।

मैं हैरान था की मेरे साथ क्या हो रहा है? इस प्रकार मैं बहुत आगे नहीं बढ़ सकता। मेरे शुभचिंतकों ने मुझे कुछ आध्यात्मिक पुरुषों से राय मशवरा करने के लिए कहा।

मैंने आधे दर्जन से अधिक आध्यात्मिक विद्वानों और बाबाजी से संपर्क किया। मेरा स्वास्थ और मन की शांति धीरे-धीरे थोड़ी ठीक हो रही थी। लेकिन अगले तीन सालों के लिए, मेरा उत्पादन लगभग बंद करने की सीमा तक रहा।

- फिर उस दयालु ईश्वर ने मुझ पर दया की। जब मैं ऐसे ही फुटपाथ पर चल रहा था। मैंने 'आसान रिज्क' नाम की पुस्तक देखी। मैंने उसे तत्काल खरीद लिया। उस पुस्तक ने मेरी व्यावसायिक-जिंदगी को फिर बदल दिया।

- रिज्क का शाब्दिक अर्थ भोजन है और सामान्य अर्थ ईश्वर का प्रत्येक आशीर्वाद है, जिसमें भोजन, घर, परिवार, व्यापार और सामान्य समृद्धि है। आसान का अर्थ है- सरल और सुविधाजनक। आसान रिज्क में ईश्वर के आशीर्वाद का सरल और सुविधाजनक रुप में कैसे प्राप्त करें यह बताया गया है।

- इस पुस्तक में कुछ पवित्र मंत्र बताए गए है जिनका प्रतिदिन जाप करने से समृद्धि बढ़ती है। इस पुस्तक का और अनेक दूसरी पुस्तकों का सारांश में आप के सामने रख रहा हूँ।

कुछ विशिष्ट पदों की विशेषता:- (मंत्र, पद या आयत इस अध्याय के अंत में देखीए।)

पद नं १ और २ (ईश्वर की शरण)

जब रोशनी होगी तो साया अपने आप वजूद में आ जाता हैं। वैसे ही जब आप पुण्य का या कोई महान कार्य करोगे तो बुरी शक्तियाँ अपने आप आप की तरफ आकर्षित होगी और आप के काम में बाधा डालेंगी। अपना काम अच्छि तरह करने के लिए हमें ईश्वर की शरण लेना बहुत जरुरी है। पद नं १ और पद नं २ पढ़ने से हम ईश्वर की शरण में आ जाते है।

कई बार ऐसा होता है कि जो कुछ भी हम खाते हैं, हमें संतुष्टि नहीं मिलती है। यदि आप खाने से पहले उपरोक्त पद को पढ ले तो खाना खाने के बाद आप संतोष महसूस करोगे।

पद नं ३ (ईश्वर की प्रशंसा और प्रार्थना)

देवदूत खाना नहीं खाते हैं। जब उन्हें भूख लगती है, तो वे उपयुक्त पद का पाठ करते हैं- शक्ति प्राप्त करने के लिए। पद नं ३ का पाठ करना बहुत आसान है। इस के पढ़ने से बहुत पुण्य मिलता है तथा ईश्वर को बहुत अधिक प्रसन्न करता है।

पद नं ४ (सूरे हम्द)

पवित्र कुरआन में स्वर्गीय खजाने से आए हुवे २ पद हैं। यह उनमें से यह एक है। मूलतः ये पद प्रभु द्वारा लोगों को उसकी प्रार्थना कैसे करें, इससे संबधित हैं। इसके चार आध्यात्मिक प्रभाव हैं।

१. जो नियमित रुप से इसका पाठ करते हैं, वे कर्ज़ (Debt) से मुक्त रहते हैं।

२. बीमारी से मुक्त रहते हैं।

३. बुरी आत्माओं से बचे रहते हैं।

४. और भारी मात्रा में धन प्राप्त करते है।

पद नं ६ (प्रार्थना)

इस पद में शांति है और तनाव, चिंता को कम करने का प्रभाव है। अगर आप इसका जाप करते हो तो यह आपको शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक लाभ देगा।

पद नं ८ (दरुद)

इस पद का पाठ हम प्रार्थना से पहले और बाद में प्रार्थना की आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए करते हैं। यह दरुद के रुप में जाना जाता है। मूलतः पैगंबर के लिए मागी जाने वाली एक दुआ है।

पद नं ७ (दुआ)

अगर आप कर्ज के बोझ से दबे हुए है तो इस प्रार्थना के जाप से पुरा कर्ज उतर जाता है।

पद नं ९ (सूरे अहद)

यह पद ईश्वर की प्रार्थना है। इसमें अधिक-से अधिक आर्शीवाद का प्रभाव है। केवल तीन बार इसके पाठ से इतना अधिक ईश्वर का आशीर्वाद मिलेगा, जितना पूरी पवित्र कुरआन का पाठ करने से।

इन पदों का पाठ कैसे करें?

बगैर डाक्टर की सलाह से खुद अपनी दवा से अपना इलाज करना स्वास्थ्य के लिए अत्याधिक हानिकारक है। ये पद भी दवा हैं। यदि आप सही प्रक्रिया को नहीं अपनाते हो, तो आप अपने जीवन को नष्ट करोगे और मेरे लिए भी नुकसान का कारण बनोगे। क्योंकि मैंने ही इन पदों को आपको बताया है। इसलिए इन पदों का जाप करते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

१. अपने को स्वच्छ करें। (सफाई के अध्याय के अनुसार)

२. जब इन पदों का पाठ करें, एक कमरे में ठहरें, जो स्वच्छ साफ हो, उसमें किसी व्यक्ति की तस्वीर न हो और ना किसी धार्मिक व्यक्ति की।

३.आप अपने मानसिक दृष्टिकोण को सही कीजिए। आप के प्रार्थना का लाभ आपके स्वंय के लिए और

प्राणीमात्र के लिए लाभदायक होना चाहिए। जिस धन के लिए आप इतना संघर्ष कर रहे हो, वह धन किसी के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए।

४. एक ईश्वर की प्रार्थना को दूसरे देवी-देवता की पुजा के साथ ना मिला दें। और ना इन पदों को दूसरी धार्मिक पुस्तकों के पदों के साथ मिलाकर पाठ करें।

५. इन पदों का अपमान न करें। सभी धार्मिक पुस्तकों के ईश्वरीय पदों के प्रति गंभीर रहें और सम्मान करें। क्योंकि एक ही ईश्वर द्वारा उनमें से अधिकांश को प्रदर्शित किया गया है, केवल भाषा ही अलग है।

६.अरबी भाषा का उच्चारण करना बहुत कठिन है। यदि हम इसका सही उच्चारण नहीं करते हैं, तो इसका अर्थ बदल जाता है। एक नया पाठक, जो अरबी भाषा नहीं जानता है, उच्चारण में अवश्य गलती करता है। इसलिए पदों के सही प्रभाव के लिए, इनका पाठ करते समय उस पद का वास्तविक अर्थ भी याद रखें। ऐसा करने पर आपके ऊपर उसका नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा अथवा ईश्वर का प्रकोप नहीं होगा।

इस पुस्तक को अश्लील उपन्यासों और फिल्मी पत्रिकाओं से दूर रखें, क्योंकि इसमें पवित्र पद सम्मिलित हैं।

यदि आपके लिए यह करना कठिन है, तो वे पृष्ठ जिनमें धार्मिक पद हैं, फाड़ कर अलग कर लें और उन्हें सही-तरीके से नष्ट करें। उन्हें एक मुसलमान के हाथों में सौपे या किसी मुस्लिम कब्रिस्तान में दफना दे अथवा उन्हें पूरे सम्मान के साथ किसी सागर अथवा नदी में प्रवाहित कर दें।

समृद्धि की प्रार्थना के लिए तैयारी:-

१. ६ से ८ घंटे की नींद के लिए जल्दी सोएँ।

२. सुबह सूर्योदय से पहले उठें।

३. शौचालय जाएँ, स्नान करें (आध्यात्मिक लाभ और शुद्धि के लिए, गरारे करें एवं नसिका की सफाई करें) शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जितना संभव हो खाली पेट पानी पीयें और सुबह सैर करने के लिए जायें।

४. अकेले जाने की कोशिश करें इससे आप बात करने से बच सकते हैं।

समृद्धि में वृद्धि के लिए पहली प्रार्थना:-

१. पद नं १ का पाठ करें (एक बार)

२. पद नं २ का पाठ करें (एक बार)

३. पद नं ६ का पाठ करें (एक बार)

४. हमेशा हर प्रार्थना से पहले ऊपर दिए गए पदों का पाठ करें और हर रचनात्मक कार्य को शुरु करने से पहले भी।

५. पद नं ३ का पाठ करें (१०० बार)

६. पद नं ६ का पाठ करें (एक बार)

७. यह धन संपत्ति की वृद्धि की पहली प्रार्थना है और लगभग ५ से १० मिनट का समय लेती है।

८ सबसे अच्छा और अधिक प्रभावशाली समय, इस प्रार्थना के लिए सूर्योदय से पहले का है।

धन-संपत्ति की दूसरी प्रार्थना:-

१. पद नं १ का पाठ करें (एक बार)

२. पद नं २ का पाठ करें (एक बार)

३. पद नं ६ का पाठ करें (तीन बार)

४. पद नं ४ का पाठ करें (४१ बार)

५. पद नं ६ का पाठ करें (एक बार)

६. शुरु में आपको इसे पुस्तक से पढ़ने की जरुरत हो सकती है। लेकिन धीर-धीरे आप इसे याद कर लोगे। तब इसका ४१ बार पाठ करने में केवल १० मिनट लगेंगे।

७. आधे घंटे पश्चात् जब आप सुबह की सैर से वापिस आते हो, तब तक आपकी प्रार्थना पूरी हो जाएगी। सावधान रहें कि साफ स्थान पर घुमें। जब आप किसी कूड़े दान अथवा कूड़े के ढ़ेर के पास से गुज़रे तो प्रार्थना रोक दें तथा पाठ के बीच में बातचीत ना करें।

८. यदि आप सुबह की सैर करने के लिए नहीं जाते हैं, तो आप इस प्रार्थना को अपने आफीस या घर में कर सकते है या आफीस आते-जाते समय अथवा किसी भी स्थान पर कर सकते हो।

धन संपत्ति में वृद्धि की तीसरी प्रार्थना

जब आप अपने ऑफिस में पहुँचते हो और अपनी कुर्सी पर बैठते हो। उसके पश्चात् प्रार्थना में रुकावट या बाधा से बचने के लिए टेलिफोन या मोबाईल फोन बंद कर दें।

१. पद नं १, २ और ६ का पाठ करें (एक-एक बार)।

२. पद नं ४ का पाठ करें (एक बार)

३. पद नं ८ का पाठ करें (तीन बार)

४. पद नं ६ का पाठ करें (एक बार)।

५. तब कहें, हे ईश्वर! इन पदों का पाठ करने में मैंने जो कुछ भी गलती की है कृपया इन्हें क्षमा करें और इस प्रार्थना को स्वीकार करें और इस प्रार्थना का फल उन सब आत्माओं को दें, जो आप में विश्वास रखते हैं।

फिर ईश्वर की मदद और आर्शीवाद अपने ही शब्दों और भाषा में अपने स्वंय के लिए मांगे।

६. अंत में पद नं ६ का फिर पाठ करें।

७. फिर अपने हाथों पर फुंक मारे और हाथ को अपने चेहरे पर फेंरें।

८. ४० दिन के पश्चात् आप अपनी ज़िदगी में बहुत बड़ा परिवर्तन और सुधार पाओगे।

९. सुख समृद्धि की आखिरी प्रार्थना दान है। हर महीने कुछ धन आपको एक अनाथाश्रम अथवा अपने परिवार और समाज के गरीब लोगों को देना चाहिए।

- पहली कोशिश में या पहली बार आप कुछ भी महसूस नहीं कर सकोगे। जिस प्रकार अंडो से बच्चे बनने में समय लगता है। जिस प्रकार जब चुम्बक को सपाट लोहे के टुकड़े पर बार-बार रगड़ा जाता है, तो उस लोहे के टुकड़े में चुम्बक के गुण आ जाते हैं। संत और ऋषिमुनि चमत्कार दिखाने से पहले दशकों तक साधना करते हैं।

  इसी प्रकार, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आध्यात्मिक पद जादू जैसा प्रभाव पैदा करेंगे, परंतु आप इसे पहले दिन और अगले दिन में प्राप्त नहीं करोगे। यदि आप इसे गंभीरता से कम-से-कम चालीस दिनों तक करते हो, तो आपको सकारात्मक प्रभाव महसूस होना शुरु होगा। इसलिए धीरज रखें और इसे करते रहें।

- यदि आप अत्याधिक चिंतित हो और आपकी समस्या का कोई समाधान नहीं है, तो अपनी आँखे बंद करो और कल्पना करो, आप खुले आसमान के नीचे खड़े हो और उस प्रभु से मदद के लिए पुकार रहे हो और विनंती कर रहे हो तथा १० मिनट तक पद नं ५ का पाठ करने के बाद, आप तरोताज़ा महसूस करोगे, आराम और विश्वास प्राप्त होगा। आपकी समस्या अगले ही दिन नहीं सुलझेगी, लेकिन यदि आप इन पदों का पाठ बार-बार करोगे, तो या तो आपकी समस्या सुलझ जायेगी या फिर ईश्वर आपको उससे अच्छा विकल्प देंगें।

- ईश्वर के बहुत सारे नाम है। हर नाम का अलग-अलग अर्थ है। हम ईश्वर के जिस नाम का अधिक जाप करते है तो उस नाम के अर्थ के मुताबिक हम पर ईश्वर की कृपा होती है।

  अगर आप परेशान हो या आप जो भी काम करते हो उस में परेशानी आती है। या आप क्या करे यह आप को समझ में नही आता है तो ईश्वर के इन दो नामों का जाप करें। (हर दिन कम से कम १०० बार) (देखीए पद नं. ९)

  या हादी (हादी का अर्थ है रास्ता दिखाने वाला)

  या रहीम (राही का अर्थ है बहुत रहम करने वाला)

  इस से आप की परेशानी कम होगी और आप सही निर्णय ले सकेंगें।

- अगर आप मुसलमान हैं तो हर फर्ज़ नमाज के बाद (पांचो नमाज में) एक बार आयतल कुर्सी और दस बार सुरे कद्र (पुरी सुरे) पढ़े। इस से अत्याधिक धन का लाभ होता है। मैंने (लेखक) इसे पढ़ने के बाद बहुत धन कमाया है। अधिक जानकारी के लिए मेरी पुस्तक 'कामयाबी के इस्लामी उसूल' पढ़े जो उर्दु, हिंदी और अंग्रजी में भी उपलब्ध है।

****

पद नं. १

अऊज बिल्लाहि मिनश्शैता नीर्रजीम	मैं दुतकारे गए शैतान से ईश्वर कि पनाह मांगता हूँ।
aa oo zoo billa hay meenash shayta nir rageem	

पद नं. २

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम	प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है, जो सारे संसार का रब है, बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है। (पवित्र कुरआन १:१)
Bis mil la hir rahman nir raheem.	

पद नं. ३ तस्बीह

सुबहानल्लाहि वबिहम्दिहि सुबहानल्लाहिल अज़ीम	अल्लाह पवित्र है। अल्लाह पवित्र है और महान है।
Soob haan allahe wa bee hamdee hee. Soob haan allah hill aazeem.	

पद नं. ४ सूरह हम्द

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन	सब प्रशंसा अल्लाह के लिए ही है, जो संपूर्ण संसार का रब है
Al ham doo lil lahe rab bil aalaameen	
आर्रहमानिर्रहीम	वह बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है,
Ar rahamaan nir raheem	
मालिकि यौमिद्दीन	कयामत के दिन का मालिक है।
Malee kee yao mid deen	
इय्या कनअबुदु व इय्या कनस्तईन	हम तेरी ही इबादत (भक्ति) करते हैं और तुझ से ही मदद माँगते हैं।
Eeya ka naa boo doo wa eeya ka nas ta een.	
इहदिनस सिरातल मुस्तकीम	प्रभु। हमें सही राह दिखायें।
eh dee nas seeraa tal musta qeem.	
सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलैहिम	उन लोगों का मार्ग दिखाएँ जो आपकी कृपा के पात्र हुए हैं।
Seeraa tal lazee na an amm ta alai him.	
गैरिल मगज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन	उन लोगों का मार्ग ना दिखाएँ जो प्रकोप के भागिदार हुए हैं तथा जो राह से भटके हुए हैं। (पवित्र कुरआन १-१-७)
gai ril magzoo bee alai him wa laz zoaal leen.	

पद नं. ५

या हय्यो या कय्यूमो बिरहमतिका अस्तगिस	ओ! विद्यमान प्रभु! स्वयं जीवित रहने वाले। हम तुझ से तेरी दया की विनंती करते है।
yaa hai yo yaa qai yoom. Bee rah mateeka asta gees.	

पद नं. ६ दरुद

सल्लल्लाहू अला मुहम्मद सल्लल्लाहु व अलैहि वसल्लम	ईश्वर आशीर्वाद दे मुहम्मद (स.) पर। उनके परिवार को आशीर्वाद दे तथा शांति प्रदान करे।
Sal lal lahoo ala mohammad. Sal lal lahoo a alai hay wa sal lam.	

पद नं. ७

अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मयिन्नल कुलूब	जान लो, ईश्वर की याद से संतुष्टि और शांति मिलती है
Alla bee zik ril la hay tat ma inn nal Qoo loob.	

पद नं. ८ सूरह अहद

कुल हू वल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम युलद वलम यकुल लहु कुफुवन अहद	कहो वह ईश्वर है, वह एक है, ईश्वर वही है जिस पर सभी निर्भर हैं। उसकी न कोई संतान है और न ही वह किसी की संतान हैं। और उसके समान कोई भी नहीं है। (पवित्र कुरआन ११२-१-४)
Qul ho Allah ho ahad Allah hus samad Lam yalid walam yoo lad Walam ya Qul la hoon koo foo wan ahad.	

पद नं. ९

या रहीम या हादी	ऐ दयालु ईश्वर! ऐ मार्गदर्शन करनेवाले!
yaa haadee yaa Raheem.	

भाग- 6

इस पुस्तक में हमने धार्मिक शिक्षा और ईश्वरपर विश्वास इन बातों पर अत्याधिक महत्व दिया है।

लेकिन ईश्वर है कौन?

हमारे मन में उसके प्रति दृढ़ श्रद्धा निर्माण होने के लिए हम ईश्वर को शास्त्रीय और आध्यात्मिक नज़रियें से समझने की कोशिश करते हैं।

अध्याय- ३ ९
ईश्वर कौन है ?
(Introduction of God)

हिंदू धार्मिक पुस्तकों में ईश्वर का निम्नलिखित वर्णन है:-

१. **'महोदिव प्रथिव्यध्च सम्राट नो भवत्विन्द्र ऊती'** (पवित्र ऋग्वेद १:१९:७)

वह महानतम् ईश्वर! पृथ्वी और आकाश का मालिक है। हे ईश्वर! हमारी सहायता करो।

२. **'प्रजा पति जर्नयति प्रजा रुमा:'** (अथर्ववेद १:१००:१)

प्रत्येक प्राणी की रचना ईश्वर ने की है।

३. **'तवमग्ने प्रथमो अङिरस्तम:'** (पवित्र ऋग्वेद २:३१:१)

हे ईश्वर! तुम आरंभ से ही हो, अर्थात आदि अनंत हो तथा प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखते हो।

४. **'विश्वस्य मिषतो वशी'** (पवित्र ऋग्वेद २:१९०:१०)

प्रत्येक वस्तु पर ईश्वर का संपूर्ण नियंत्रण है।

इस्लाम धर्म के धार्मिक ग्रंथो में ईश्वर का निम्नलिखित वर्णन है:-

१. 'क्या तुम्हें पता नहीं कि धरती और आकाशों का शासन अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा संरक्षक और तुम्हारा मद्दगार नहीं है?' (पवित्र कुरआन २:१०७)'

२. 'वही प्रथम भी है और अन्तिम भी, और गोचर (ज़ाहिर) भी है और अगोचर (छिपा) भी, और उसे हर चीज़ का ज्ञान है।' (पवित्र कुरआन ५७:३)

३. अपने प्राणियों पर ईश्वर का पूर्ण नियंत्रण है। (पवित्र कुरआन ६:१८)

४. वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ का जाननेवाला। वही सर्वोच्च करुणामय और दयावान् है। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह सम्राट है बड़ा ही पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्तता प्रदान करनेवाला, निगहबान, सबपर प्रभुत्व रखनेवाला, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करनेवाला, और बड़ा ही होकर रहनेवाला। पाक है अल्लाह उस 'शिर्क' (एक ईश्वर के साथ अनेक ईश्वर को मानना) से जो लोग कर रहे हैं। वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए सभी उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है एक अल्लाह की तसबीह (गुणगान) कर रही है और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है। (पवित्र कुरआन ५९:२२:२४)

उपर लिखे गए श्लोक और आयतों से हम समझ सकते है कि ईश्वर ही सब का निर्माता है और मालिक है।

सिख, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्म के अनुसार भी ईश्वर ही इस ब्रम्हांड को बनानेवाला और कंट्रोल करने वाला है।

कितने ईश्वर हैं?

इस्लाम धर्म के अनुसारः-

१. पवित्र कुरआन कहता है '**कहो, वह अल्लाह एक है। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।**' (पवित्र कुरआन ६:१०२)

हिंदु धर्म के अनुसारः-

१. उपनिषद कहता हैं, '**एकम एवंम अद्वितीयम**' (छांदोग्य उपनिषद ६:२:१) अर्थात 'बिना किसी और की साझेदारी के वह एक ही है।'

२. ऋग्वेद कहता है, '**हे ईश्वर में आस्था रखने वालो, उस ईश्वर के सिवाय किसी की पूजा न करें, ईश्वर केवल एक ही है।**' (ऋग्वेद ८:१:१)

३. हिंदू-वेदांत का ब्रम्हसूत्र कहता है, '**एकम ब्रम्ह द्वितीय नास्ते किंचन**' अर्थात 'ईश्वर एक है, उसके सिवाय कोई भी नहीं, एक छोटा-सा अंश भी नहीं।'

४.अथर्ववेद में कहा है, **वह ईश्वर एक है, जो व्यक्तियों के हृदय में प्रवेश करता है और उनके रहस्यों को जानता है।** (अथर्ववेद १०:९:२९)

सिख धर्म के अनुसारः-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पहले खंड में, जपुजी साहब का पहला पद है-''एक ही ईश्वर अस्तित्व रखता है, जो वास्तविक रचनाकार है, वह डर और द्वेष रहित है, वह अजन्मा है, वह अनादि है और वह सँभालता है। वह महान तथा दयालु है।''

सिख अपनी प्रार्थना में ''वाहे गुरु'' का पाठ करते हैं। इसका अर्थ है, 'एक सच्चा ईश्वर।'

पारसी धर्म के अनुसारः-

पारसी ईश्वर को 'अहूरा-मजदा' के नाम से पुकारते हैं। उनकी धार्मिक पुस्तक 'दासातीर' कहती है, ईश्वर एक है और कोई भी उसके बराबर नहीं है।

ईसाई धर्म और यहूदी धर्म के अनुसारः-

पवित्र बाइबल कहती है,

१. **ओ! इजरॉयल की संतानो सुनों (यहूदी समुदाय), हमारा मालिक ईश्वर है, वह एक है।** (पवित्र बायबल ६-४)

२. मैं ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई भी तुम्हारा बचाव नहीं कर सकता है। (पवित्र बायबल ४३-११)

३. मैं ही ईश्वर हूँ, मेरे सिवाय कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। (पवित्र बायबल ४६-९)

४. हमारा ईश्वर एक है। (एडयूटरोनोमी ६:४ मार्क १२:२९:३२)

५. तुम एक ईश्वर की पूजा करो और उसी के आदेश अनुसार धार्मिक सेवा करो। (मैथ्यु ४:१०)

६. तुम्हें ये वस्तुऐं इसलिए दिखाई गई थी, ताकि तुम्हें मालूम हो कि हमारा मालिक ईश्वर ही है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं। आज के दिन तुम इस बात को मान लो कि हमारा मालिक ईश्वर ही है। स्वर्ग में ऊपर और पृथ्वी पर नीचे, कोई दूसरा नहीं। (डयूटरोनोमी ४:३५:३९)

ईश्वर कैसा दिखाई देता है? (How God looks like?)

इस्लाम के अनुसार :

१. "संसार की कोई चीज़ उसके जैसी नहीं, वह सब कुछ सुनने और देखनेवाला है।" (पवित्र कुरआन ४२:११)

२. "निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है, वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ से बाख़बर है।" (पवित्र कुरआन ६:१०३)

३. "अल्लाह आसमानों और ज़मीन का प्रकाश (नूर) है। उसके प्रकाश की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ (आलमारी) में चिराग़ रखा हुआ हो। चिराग़ एक फ़ानूस में हो। फ़ानूस का हाल यह हो कि जैसे मोती की तरह चमकता हुआ तारा, और वह चिराग़ ज़ैतून के एक ऐसे बरकतवाले पेड़ के तेल से रोशन किया जाता हो जो न पूर्वी हो न पश्चिमी। जिसका तेल आप ही आप जल उठता हो चाहे आग उसको लगे न लगे। (इस तरह) प्रकाश पर प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन एकत्र हो गए हो)। अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसको चाहता है पथ-प्रदर्शन करता है। वह लोगों को मिसालों से बात समझाता है। वह हर चीज़ से ख़ूब परिचित है।" (पवित्र कुरआन २४:३५)

धार्मिक पुस्तकों से कुछ और प्रसंगः-

१. एक बार पैगम्बर मूसा ने ईश्वर से आग्रह किया कि "ऐ रब मुझे देखने की शक्ति दे कि मैं तुझे देखूँ।" ईश्वर ने कहा, "तू मुझे नहीं देख सकता। हाँ, तनिक सामने के पहाड़ की ओर देख। अगर वह अपनी जगह स्थिर रह जाए तो अलबत्ता तू मुझे देख सकेगा।" तो उसका रब जब पहाड़ पर अपना थोड़ासा तेज़ जाहिर किया तो पहाड़ चकनाचूर हो गया और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा। जब होश में आया तो बोला, "पाक है तेरी ज़ात, मैं तेरे सामने तौबा करता हूँ और सबसे पहले ईमान लानेवाला मैं हूँ।" (पवित्र कुरआन ७:१४३)

२. पवित्र कुरआन में ईश्वर यहूदी लोगों से कहता है,

"याद करो जब तुमने मूसा से कहा था कि हम तुम्हारे कहने का हरगिज़ विश्वास न करेंगे, जब तक कि अपनी आँखों से खुले तौर पर अल्लाह को न देख लें। उस समय तुम्हारे देखते-देखते एक ज़बरदस्त कड़के ने तुमको आलिया। तुम बेजान होकर गिर चुके थे, मगर फिर हमने तुमको जिला उठाया, शायद कि इस उपकार के बाद तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ।"

(पवित्र कुरआन २:५५-५६)

इन दोनों प्रसंगों से हमें पता चला है कि ईश्वर इस संसार का प्रकाश तो है। मगर यह साधारण उजाले वाला प्रकाश नहीं है बल्कि इतना शक्तिशाली हैं कि हम उस की एक झलक भी नहीं देख सकते है।

हिंदू धर्म के अनुसारः-

१. उसके जैसा कुछ भी नहीं है, आँखे उसको नहीं देख सकती हैं।
(सावेत सावात्रा उपनिषद, प्रकरण ४:१९:२०)

२. वह शरीर-रहित है तथा विशुद्ध (Pure) है। (यजुर्वेद ४०:८)

३. कोई भी मूर्ति ईश्वर जैसी नहीं है। (यजुर्वेद ३२:३)

४. ईश्वर प्रकाश है, शरीर-रहित, बिना किसी कमी के संपूर्ण शुद्ध, दूरदर्शी, प्रत्येक वस्तु पर उसका नियंत्रण हैं, वह किसी पर निर्भर नहीं, वह अनंत काल के लिए मालिक है।
(यजुर्वेद संहिता लेखक सल्फ आय एच ग्रिफिथ ८९-५३८)

५. मेरे गुणों (Features) को न जानने वाले मूर्ख लोग मुझे शरीर वाला समझ कर मेरा अपमान करते हैं। (गीता ९-११)

६. ईश्वर हर जगह मौजूद रहने वाला प्रकाश है। (यजुर्वेद ४०:१)

- सिख धर्म ईश्वर को 'एक ओंकार' कहता है, जिसका अर्थ है, ईश्वर बिना किसी रुप के।
- पारसी-धार्मिक पुस्तक दासातीर भी बिना-शरीर और आकार के रुप में ईश्वर का वर्णन करती है।

पवित्र बाइबल के अनुसारः

ईश्वर कहता है,

"मेरे अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है, तुम्हें मेरा चित्र नहीं बनाना चाहिए। न तो आकाश में, न धरती पर और न ही पानी के नीचे, मेरे समान कोई है। इसलिए तुम्हें किसी के सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए, न ही तुम्हें उनसे प्रभावित होना चाहिए, तुम्हारा ईश्वर मैं हूँ।"
(पवित्र बायबल, इक्झोडस २०:३-५६)

"इस ब्रम्हांड का प्रकाश केवल मैं हूँ।" (पवित्र बायबल, जॉन ८:१२)

ईश्वर के गुण क्या है? (What is his features)

पवित्र कुरआन के अनुसारः-

१) जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ इन्सानों के ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती। यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह ख़ुद ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आसमानों और

ज़मीन पर छाया हुआ है।

२) अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सब हाल को जानता है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। (पवित्र कुरआन ५:९)

३) ईश्वर ने कहा, हम मनुष्य के गर्दन की नस से भी अधिक उसके निकट हैं। (पवित्र कुरआन ५०:१६)

पवित्र वेदों के अनुसारः-

१. सभी दिशाएँ उसके लिए हैं। (वह एक ही समय सब दिशाओं में देख सकता है) (पवित्र ऋग्वेद ४-१३-१०)

२. ईश्वर की दृष्टि सभी दिशाओं में है। (पवित्र ऋग्वेद ३-८१-१०)

३. कोई भी ईश्वर को ढक नहीं सकता है, न तो आकाश, न ही आकाश से बरसती बरसात। (पवित्र ऋग्वेद १४-५२-१)

४. हे ईश्वर, तुम पहले हो और कोई भी तुम्हारी अपेक्षा तुम से अधिक कोई नहीं जानता है। (पवित्र ऋग्वेद २-३१-१)

५. महान ईश्वर इस सृष्टि को पैदा करने की क्रिया को रचता है। वह अच्छे स्वभाव वालों की इच्छाएँ पूर्ण करता है। वह मालिक है। वह हर जगाह है। वह सभी प्रशंसा के योग्य है। वह हर मान-सम्मान के लायक है। वह धनी है। वह सबका निर्माता है और हर वस्तु का ज्ञान रखता है। (पवित्र ऋग्वेद २-१-३)

६. वह महान ईश्वर सब को पालने वाला है। शक्ति का स्त्रोत है, वह एक ही है, जो रसद (इदद्) देता है। वह दयालु है। वह पोषक है। वह अपने भक्तों की रक्षा करता हैं। (पवित्र ऋग्वेद २-१-६)

७. ईश्वर सबसे महान है। (पवित्र ऋग्वेद २:२८४)

८. वह इस संसार का निर्माता हैं वह सब जगह है-पूर्व-पश्चिम तथा ऊपर और नीचे सब जगह है। (पवित्र ऋग्वेद २-१९०-१०)

९. मैं तुम्हारे सबसे अधिक निकट हूँ और तुम्हारा रक्षक हूँ। (पवित्र ऋग्वेद १-१४-५)

१०. वह जो बगैर कान के सुनता है और सब को सुनने की शक्ति भी देता है वह ईश्वर है। (उपनिषद)

११. ब्रम्हांड का मालिक एक है। वह प्रत्येक जीवात्मा की आत्मा है। वह जीवन के हर रुप में व्याप्त है। वह सभी कार्यों का मार्गदर्शन करता है। वह सबसे ऊपर है। वह हर व्यक्ति का शरण-स्थल है। वह सबको देखता है। वह सबको जानता है और कोई भी विशेषण उन पर लागू होने के योग्य नहीं है। (शेताष्वतार उपनिषद प्रकरण, अध्याय-६ मंत्र-११)

१३. वह स्वंय खाता नहीं है, बल्कि वह हर एक को खिलाता है। (पवित्र ऋग्वेद २०-१६४-१)

१४. **ईश्वर का न कोई माता-पिता हैं, न हीं कोई मालिक।** (स्वेतस्तत्र उपनिषद ६-९, भाग २, पान २६३)

१५. **उसकी कोई छवि नहीं है, उसे कोई भी देख नहीं सकता है, वे जो उसका अनुसरण मन और मस्तिष्क से करते हैं, वह उन्हें अमर बना देता है।** (स्वेतस्वत्र उपनिषद ४-२०)

- (गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण पत्रिका ने अपने उपनिषद विशेषांक में २२० उपनिषदों का उल्लेख किया है। इन २२० उपनिषदों में अल्लोपनिषद का उल्लेख पंद्रहवे स्थान पर

इति अल्लोपनिषद के श्लोक

आदल्ला बुक मेककम अल्लबूक निखादकम ।।४।।	इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।
अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला सुर्य चंद्र सर्व नक्षत्रा।।५।।	अल्लाह की युगों युगों से प्रार्थना हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।
अल्लों ऋषीणां सर्व दिव्यां इन्द्रायपूर्व माया परमन्तरिक्षा।।६।।	अल्लाह संतो का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से पहले है और सारे ब्रम्हांड से अधिक विलक्षण (Mysterious) है।
अल्ल पृथिव्या अन्तक्षिं विश्वरुपम् ।।७।।	अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सोर्य मंडल की सभी वस्तुओं में होता है।
इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।	अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।
ओम अल्ला इल्लला अनदि।	ॐ (Om) अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।
दे स्वरुपाय अथर्वण श्यामा हुही जनान पशून सिद्धान। जलवरान् अदृश्टं कुरु कुरु फट।	ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लोगों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों (पुरोहितों) का नाश कर, और पानी के नुकसान पहुँचाने वाले किटाणुओं (Bacteria) से हमारी रक्षा कर।
असुरसंहारिणी हुं ही अल्लो रसुल महमदरकबरस्य अल्लो।	अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स.) अल्लाह के पैगंबर हैं।
अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला।	अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं। (अल्लोपनिषद ४-१०)

किया गया है। डा. वेद प्रकाश उपाध्याय ने भी अपनी पुस्तक वैदिक साहित्य एक विवेचन, प्रदीप प्रकाशन द्वारा प्रकाशित १९८९ में अल्लोपनिषद का वर्णन इस प्रकार किया है।)

पारसी धर्म की धार्मिक पुस्तक दासातिर के अनुसार ईश्वर के गुण इस प्रकार है।

ईश्वर एक है, कोई भी उसके समकक्ष नहीं है। उसका न आदि है न अंत है, न उसका पिता है न माता, न पुत्र है ना पत्नी। उसका न कोई शरीर है, न कोई आकार। न आँखे उसे देख सकती हैं और न ही मन कल्पना कर सकता है, न समझ सकता है। वह हमारी कल्पना से भी अधिक महान है। वह हमारे स्वयं से भी अधिक हमारे निकट है।

पारशी धर्म की अन्य पुस्तकें जैसे अवास्था, गाथा, और यानसा के अनुसार, ईश्वर (आहुरा माजदा) रचयिता है, सबसे अधिक महान (पोषक) सबको पालता है और उदार है।

सिख धर्म के श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार ईश्वर के गुण इस तरह है:-

ईश्वर ही करतार (रचयिता) है, साहिब (हर एक का मालिक) अकाल (अनंत) सतनाम (पवित्र), परवरदिगार (पोषक), रहीम (दयालु) करीम (कृपालु) है।

ईश्वर क्या कहता है? (What God Says?)

पवित्र वेदों में:-

१. उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम

यह मेरा है यह तेरा है ऐसी सोच तुच्छ लोग रखते है, यह दुनिया मेरा परिवार है ऐसी सोच केवल उच्च विचारों से प्रेरित लोग ही करते हैं।

२. सत्य मार्ग बिल्कुल आसान है। (ऋग्वेद १३-३-८)

३. हर सांस जुआरी को श्राप देती है। उसकी पत्नी उसका त्याग करती है। और कोई भी जुआरी को पैसा नहीं देता। (ऋग्वेद १०-३४-३)

४. ऐ जुआरियों! खेती करो और जुआं खेलना बंद करो और खेत से जो भी आप कमाऐंगे उस पर संतोष करो। (ऋग्वेद १०-३४-१३)

५. दारु पीने वाले शराबी स्वयं अपने पर नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसे कार्य करते हैं जिससे हे ईश्वर! आपको क्रोध आता है इसलिए आप भी ऐसे लोगों की सहायता नहीं करते।
(ऋग्वेद ०८-२१-१४)

६. हे ईश्वर! जो लोग ज्यादा सूद प्राप्त करने के उद्देश्य से दूसरों को क़र्ज़ देते हैं, उन क़र्ज़ देने वालों की सारी संपत्ति आप ज़ब्त कर लेते हों। (ऋग्वेद ०३-५३-१४)

७. (ऐ मनुष्यों) तुम अपने से बड़ों का आदर करों और अपने मन में अच्छे विचार उत्पन्न करो। आपस में मतभेद मत करो, दोस्ती करो और एक साथ रहो। अच्छे कर्म करते हुए मेरे पास

आओ, मैं तुम में समझ और अच्छे विचार पैदा करुंगा। (ऋग्वेद १०-१९१-३)

८. ईश्वर ने तुम्हें स्त्री बनाया है, इसलिए ध्यान रहे कि तुम्हारी नज़र हमेशा नीची रहें। पांव नज़दीक-नज़दीक रखो और ऐसे कपड़े पहनो जिस से कोई तुम्हारा शरीर ना देख पाए। (ऋग्वेद ०८-३३-१९)

९. बेटे को अपने पिता का सहयोगी होना चाहिए और माँ का आज्ञाकारी। (अथर्ववेद ०३-३०-०२)

१०. दान करनेवाले दानी लोग अमर हो जाते हैं। उन्हें न किसी चीज़ का ड़र होता है न दुःख। विनाश से उनको संरक्षण मिल जाएगा। दान करने से ये दानी लोग दुनिया में सफल होते है और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्ति करते हैं। (अथर्ववेद १०-१९७-०८)

११. ऐ दोस्तों। एक ईश्वर के सिवा अन्य किसी की भक्ति न करें, तो आप की हिंसा से रक्षा होगी। (ऋग्वेद ०८-०१-०१)

१२. जो अपनी मेहनत से कमाया हुआ खाना अकेले ही खाते हैं। तब वह गलत मार्ग से कमाया हुआ खाना खाने जैसा है। (ऋग्वेद १०-११७-०६)

१३. हे ईश्वर! आप सत्कर्म आचरण करनवालों को अच्छा उपहार देते है और यही आपकी विषेशता है। (ऋग्वेद ०१-०१-०६)

१४. हे ईश्वर! यह दुनीया आपकी महानता के कारण थर-थर कांपती हैं। गलत कर्म करनेवाले मनुष्य तेरे ही प्रकोप के कारण शिक्षा प्राप्त करते है। सदाचारी मनुष्य की आपके आशीर्वाद से प्रशंसा होती है। (ऋग्वेद ०१-८०-११)

१५. ऋग्वेद कहता है, ऐ माननेवालो, ईश्वर के अलावा किसी की भी भक्ति मत करो। (ऋग्वेद ०८-०१-०१)

१६. अथर्ववेद कहता है, ईश्वर एक ही है। (अथर्ववेद १०-०९-२९)

१७. सारे मानवप्राणी मनु की संतान है। (ऋग्वेद ०१-४५-११)

१८. मनुष्य को सत्य के मार्ग पर नम्रतापूर्वक चलना चाहिए। (ऋग्वेद १०-३१-०२)

१९. परिश्रम के बिना देवदूतों को भी ईश्वर का आशीर्वाद नहीं मिलता। (ऋग्वेद ०४-३३-११)

२०. ईश्वर मानवजाति को सुमधुर विचार, सहनशक्ति और द्वेषरहित भावना से पुरस्कृत करेंगे। जैसे गाय अपने बछड़े पर प्रेम करती है वैसा ही प्यार एक दूसरे पर करने की आज्ञा ईश्वर देता है। (अथर्ववेद ०३-३०-०१)

२१. पत्नी को हमेशा पति से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। (अथर्ववेद ०३-३०-०२)

पवित्र कुरआन में:-

१. वास्तविकता यह है कि ईश्वर ने ईमानवालों से उनकी जान और उनके माल जन्नत (स्वर्ग) के बदले ख़रीद लिए हैं। (अर्थात हमारी जान और माल अब ईश्वर का ही है। तो अब हमें उसके

आदेश अनुसार ही जीवन बीताना चाहिए।) (पवित्र कुरआन ९:१११)

२. अगर तुम उन बड़े-बड़े गुनाहों से बचते रहो जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है तो तुम्हारी छोटे-मोटे गुनाह को हम तुम्हारे हिसाब से हटा देंगे (क्षमा कर देंगे) और तुमको इज़्ज़त की जगह में (स्वर्ग) दाख़िल करेंगे। (पवित्र कुरआन ४:३१)

३. ईश्वर प्राणिमात्र से एक माँ की अपेक्षा ९९ह अधिक प्यार करता है। (हदिस)

४. ईश्वर और उसके पैगंम्बरों की आज्ञा मानो। (पवित्र कुरआन ८:४६)

५. वास्तविकता यह है कि जो अपराधी बनकर अपने ईश्वर के सामने हाज़िर होगा उसके लिए जहन्नम हैं जिसमें न वह जीएगा न मरेगा। (पवित्र कुरआन २०:७४)

६. और यह दुनिया की ज़िन्दगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। वास्तविक ज़िन्दगी का घर तो आख़िरत का घर है। (पवित्र कुरआन २९:६४)

७. वे लोग नाहक अपने घरों से निकाल दिये गये केवल इसलिए कि वे कहते हैं: हमारा ईश्वर एक है। और यदि ईश्वर लोगों को एक दूसरे से हटाता न रहता तो (सन्तों सन्यासियों आदि के) आश्रम और गिरजा और यहूदियों के उपासना गृह और मस्जिदें, जिनमें ईश्वर का अधिक नाम लिया जाता है, सब ढ़ा (तोड़) दी जाती। निश्चय ही ईश्वर उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करेगा। निःसंदेह ईश्वर बलवान और प्रभुत्वशाली है। (पवित्र कुरआन २२:४०)

८. उपकार कर जिस तरह ईश्वर ने तेरे साथ उपकार किया है, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने की कोशिश न कर, ईश्वर बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता। (पवित्र कुरआन २८:७७)

९. ऐ ईमान लानेवालो, तुम पूरे के पूरे इस्लाम (आज्ञापालन) में आ जाओ और शैतान का अनुपालन न करो कि वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (पवित्र कुरआन २:२०८)

पवित्र बाइबल में:-

१. तुम्हें न चित्र बनाना चाहिए न मूर्ति और न उनके सामने घुटने टेकने चाहिए। और ना उनके नाम पर धार्मिक रीति-रिवाज करना चाहिए। (पवित्र बाइबल मॅट ४:१०)

२. मासूम बच्चों मूर्ति से स्वयं की रक्षा करो। (मूर्ति पूजा से बचो) (पवित्र बाइबल जॉन ५:२१)

३. अच्छाई की खोज करो बुराई से बचो। इससे तुम सुख से जीवन व्यतीत कर सकोगे। (पवित्र बाइबल आमोस, ५:१४)

४. ईश्वर की प्रार्थना करो जो तुम्हारा मालिक है, उसने ही तुम्हें आश्रय दिया है, उसकी सेवा करो। (पवित्र बाइबल मॅट ४:१०)

५. सभी व्यक्तियों के साथ शाँतिपूर्वक रहें। (पवित्र बायबल रोम १२:१८)

६. मुझको पुकारो और मैं तुम्हें उत्तर दूँगा। (पवित्र बाइबल जेर ३३:३)

७. **बुराई से अलग रहो और अच्छे कर्म करो।** (पवित्र बाइबल पीएस ३४:१४)

८. **ईश्वर में विश्वास रखो।** (पवित्र बाइबल मार्क ११:२२)

९. **वे लोग, जो अपने ईश्वर को जानते हैं, मज़बूत (शक्तिशाली) होंगे।** (पवित्र बायबल जॉन ११:३२)

१०. **वह जो मुझ में विश्वास रखता है, महान तर कार्य करता है।** (पवित्र बायबल जॉन १४:१२)

११. **सुअर (Pork) का मांस मत खाओ।** (पवित्र बाइबल लेविक्टस ११:७:१० डयुटोरोनोमी १४:८)

१२. **शराब मत पीओ।** (पवित्र बायबल, प्रॉव्हबस् २०, ऐफेसियन्स ५-१८)

ईश्वर कितना महान है?

१. प्रकाश की गति ३००००० किलो मीटर प्रति सेकंड है। प्रकाश ३०००००Km/Sec की गति से जितनी दूरी एक वर्ष में सफर करती है उस दूरी को एक प्रकाश वर्ष कहते हैं। हमारे सूर्य मंडल के सूर्य को छोड़कर धरती से जो निकटतम सूर्य है वह धरती से ४ प्रकाशवर्ष की दूरी पर है।

२. हम अपने ब्रम्हांड की सही लम्बाई-चौड़ाई नहीं जानते हैं। आज भी हमें नए तारे नज़र आते है। नए तारे नज़र आने का अर्थ है की पहली बार उनका प्रकाश आज हम तक पहुंचा है। जबकि उनका जन्म अरबों साल पहले पृथ्वी और ब्रम्हाँड के साथ हुआ होगा। इसलिए वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि हमारे ब्रम्हाँड का किनारा अरबों प्रकाश-वर्ष दूर होगा।

३. पदार्थ को शक्ति में बदला जा सकता है। वैज्ञानिक आइंस्टाईन ने एक सिद्धांत प्रस्तुत किया है, जो रुपांतरण परिवर्तन को शासित करता है। यह है,

$E=mc^2$

E =(Energy generated) शक्ति

c =(Speed of light) प्रकाश कि गति

m =(Mass) पदार्थ

- **ईश्वर जब किसी वस्तु की रचना करना चाहता है तो वह केवल कहता है हो जा। और वह वस्तु ईश्वर की कल्पना और आज्ञा के अनुसार रुप धारण करती है।** (पवित्र कुरआन १९:३५)

४. हम अपने जूते के सोल (तले) में लगे धूल के कण को नाप सकते हैं। हम अपने शरीर के वज़न को जानते हैं और वह कण हमारे शरीर से कितना छोटा है यह भी पता कर सकते है। मगर न तो हम संख्या के अनुसार अपने ब्रम्हांड का क्षेत्रफल का वर्णन कर सकते हैं और न ही हम अपने पृथ्वी से ब्रम्हांड कितना बड़ा है इस का वर्णन कर सकते हैं। हमारे जूते के सोल पर चिपके धूल के कण की उपस्थिती, ब्रम्हांड में पृथ्वी के अस्तित्व की तुलना में बड़ी है। अर्थात हमारी पृथ्वी का अस्तित्व इस ब्रम्हांड में एक कण के बराबर भी नहीं है। और इस तरह धरती पर जन्में किसी महापुरुष या किसी पैगंबर, वली या देवी-देवता का अस्तित्व भी इस महान ब्रम्हांड को बनाने वाले महान ईश्वर के सामने एक कण के बराबर भी नहीं।

ऋग्वेद (१४:५२:१) का श्लोक है कि 'कोई भी ईश्वर को ढक नहीं सकता है, न तो आकाश, न ही आकाश से बरसती बरसात।' अर्थात ईश्वर इस ब्रम्हांड से भी बड़ा है।

ईश्वर के बारे में निष्कर्ष :- (Conclusion about God)

- अनेक धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात, वैज्ञानिक निष्कर्ष, निरीक्षण और अनेक विद्वानों के साथ विचार-विमर्श करके में निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ:-
- ईश्वर एक है।
- उसका कोई आकार नहीं है।
- वह इस संपूर्ण ब्रम्हाँड का मालिक और इस ब्रम्हांड से महान है।
- वह इस ब्रम्हाँड की मूल शक्ति का गुप्त स्रोत है। (जिसे में समझ नहीं सका और व्याख्या भी नहीं कर सका)
- उसकी दृष्टि इस ब्रम्हांड की प्रत्येक वस्तु से होकर गुजरती है। (यह संपूर्ण ब्रम्हांड उसके लिए पारदर्शी है।)

ईश्वर सर्वव्यापक कैसे है? (How God is Omnipresent)

- जब हम बिजली का स्विच ऑन करते हैं, तो बिजली का बल्ब अपनी रोशनी फैलाता है। बल्ब शक्ति का एक छोटा सा स्रोत है, इसलिए बल्ब के द्वारा फैलती रोशनी कमजोर होती है। और एक सनग्लास (Sunglass) के द्वारा रोकी भी जा सकती है। एक वेल्डिंग आर्क (Welding Arc) की शक्ति की सतह उंची होती है। इसलिए इसकी किरणें सीधे सनग्लास के द्वारा नहीं रोकी जा सकती हैं। बल्कि इसकी (Ultraviolet) अल्ट्रावॉयलेंट किरणों को रोकने के लिए एक विशेष ग्लास की आवश्यकता होती है।

  एक्स-रे उच्चतर स्तर की शक्ति रखती है और वेल्डिंग ग्लास के द्वारा नहीं रोकी जा सकती है। यहाँ तक कि मनुष्यों का मांस भी इसे नहीं रोक सकता है। यह हड्डियों की तरह घने पदार्थ के द्वारा ही रोकी जा सकती है।

  रेडियो एक्टिव किरणें यूरेनियम इत्यादि से निकलती हैं, जो एटोमिक प्लॉटस में प्रयोग की जाती हैं। यह ऐसी उच्च स्तर की शक्ति रखती हैं कि वे मनुष्य की हड्डियों, लकड़ी के पार्टिशन और ईटों की दीवार से भी आर-पार हो जाती हैं। उनको रोकने के लिए वैज्ञानिक सीसे (Lead) की ईंट की तीन फीट मोटी दीवार बनाते हैं। इसलिए जितनी अधिक उच्च-स्तर की शक्ति का स्रोत होगा उस से उतनी शक्तिशाली और पदार्थों के आरपार होकर गुजरने वाली किरणें निकलती हैं।

- जब एक अधिक दृढ़ इच्छा-शक्ति (Will Power) वाला व्यक्ति एक दूसरे कमजोर इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति की आँखों में देखता है, तो वह कमजोर इच्छा शक्ति के व्यक्ति के ऊपर नियंत्रण कर लेता है और

कमज़ोर व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति वाले व्यक्ति की आज्ञा का पालन करता है। इसे हिप्नोटिज्म कहते है।

मैंने एक व्यक्ति को अपनी आँखों की टकटकी से मेज़ पर सिक्के को चलाते हुए देखा है। कई योगी और ऋषि जो कुंडलिनी जाग्रत करते हैं, वे अपनी आँखो की टकटकी से वस्तुओं को भी हिला सकते हैं। उपर्युक्त दो उदाहरणों से मैं मानता हूँ कि आँखों की दृष्टि भी प्रकाश की किरणों की तरह हैं जिन में उर्जा और चुंबक की तरह ताकत है। जिसे वैज्ञानिक अभी भी नहीं समझा सके है।

- इस ब्रम्हांड में, महान ईश्वर ही शक्ति का मूल और उच्चतम स्त्रोत है। इसलिए उसका प्रकाश उच्चतम स्थिति अथवा स्तर रखता है, और इसलिए उसकी दृष्टि और उसका प्रकाश ब्रम्हांड में प्रत्येक वस्तुओं से गुज़र सकती है। एक किरण जो रेडिओएक्टिवं पदार्थ द्वारा निकलती है, वह सीसे की मोटी दीवार द्वारा तो रोकी जा सकती है। लेकिन ईश्वर की दृष्टि को कुछ भी नहीं रोक सकता है। यह संपूर्ण ब्रम्हाँड ईश्वर के सामने पारदर्शी है।

- प्रकाश के किरणों की गति ३००००० Km/ sec. है। इस गति से चलने के बावजूद सूर्य की किरणों को धरती पर पहुँचने के लिए ८ मिनट लगते है। लेकिन ईश्वर के प्रकाश की गति इतनी अधिक है कि ब्रम्हांड की सीमा पर भी ईश्वर का प्रकाश या दृष्टि शून्य (Zero) सेकंड में पहुँचती है। अर्थात ईश्वर के प्रकाश की गति अनंत (Infinite) है।

- ईश्वर ने कहा है:

'जो कुछ भी तुम बताते हो अथवा जो कुछ भी तुम अपने हृदय में छिपाते हो, वह उसे जानता है।'
(पवित्र कुरआन २:२८४ सारांश)

ईश्वर ने कहा:

'मैं तुम्हारी रक्त की मुख्य रक्त-वाहिनी से भी मैं तुम्हारे अधिक समीप हूँ।'
(पवित्र कुरआन ५०:१६ सारांश)

ईश्वर ने कहा:

'तुम स्वंय अपने बारे में इतना नहीं जानते हो, जितना मैं तुम्हें जानता हूँ।' (पवित्र कुरआन ६७:१४ सारांश)

क्योंकि उसकी दृष्टि हमसे होकर गुजरती है, इसलिए उससे हमारा कुछ भी छिपा नहीं हैं, सब कुछ वह जानता है। वह हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका, प्रत्येक परमाणु और कण-कण जानता है। यहाँ तक कि हमारे ह्रदय की हर धड़कन, हमारे मन की प्रत्येक बात वह जानता है। निश्चित रुप से वह हम से हमारे शरीर की रक्तवाहिनियों से भी अधिक नज़दीक है। तथा इस संसार में कहीं भी, किसी भी समय ईश्वर की इच्छानुसार शक्ति और पदार्थ रुप धारण करतें हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि वह हर जगह विद्यमान है, सर्वव्यापक (Omnipresent) है।

जन्म और मृत्यु ईश्वर के लिए क्यो नहीं ?

आइनस्टाईन का दूसरा सिद्धांत (Law of Relativity) कहता है कि, जब किसी वस्तु की गति प्रकाश से ज्यादा बढ़ती है, उदा. ३,००,००० किमी/ सेकंड से ज्यादा बढ़ती है तब उस वस्तु के लिए समय की गति धीरे-धीरे कम हो जाती है। इस बात को अच्छी तरह से समझने के लिए हम एक अंतरिक्षयान और उसके अंदर लगी एक दीवार घड़ी के उदाहरण पर विचार करते हैं। मान लो एक अंतरिक्ष यान प्रकाश की गति से अधिक गति में यात्रा करने की क्षमता रखता है और उसके केबिन की दीवार पर एक घड़ी लगी हुई है।

जब अंतरिक्षयान प्रकाश की गति से कम गति में यात्रा करता है, तो दीवार घड़ी अपनी नियमित गति से कार्य करेगी। जैसे ही अंतरिक्ष यान की गति प्रकाश की गति को पार करती है, दीवार घड़ी धीमी होनी शुरु हो जाती है। जैसे जैसे अंतरिक्ष यान की गति बढ़ेगी, घड़ी और धीमी होती जाएगी। जब यान की गति अनंत (Infinite speed) हो जाएगी तो घड़ी बिल्कुल रुक जाएगी। यान में समय रुक जाऐगा। उस यान में कोई बूढ़ा नहीं होगा और न ही कोई चीज़ पुरानी होगी। क्योंकि उस यान में समय रुका हुआ हैं।

प्रारंभ में यह समझा जाता था कि प्रकाश में केवल सात रंगों की किरणें हैं। फिर यह खोज की गई कि दूसरे प्रकार की किरणें भी है, उदाहरण के लिए Infrared और Ultra violet किरणें। फिर दूसरे प्रकार की किरणों की खोज़ की गई, जैसे एक्स-रे और रेडिओ एक्टिव तत्वों का रेडियेशन। खोज़ की प्रक्रिया अभी समाप्त नहीं हुई है और अभी भी अनेक प्रकार की किरणों और लहरों की खोज़ करनी बाकी है। उनमें से कुछ को हम सामान्य रुप से जानते हैं जैसे आँखों की दृष्टि तथा विचार शक्ती दोनों की गति प्रकाश की गति से भी अधिक है।

मन और ह्रदय, भी विद्युत शक्ति पर कार्य करते हैं। विचार यह भी शक्ति का कोई रुप है। इसलिए विचार टेलेपैथी द्वारा दूर बैठे व्यक्ति के मन में पहुँचाया जा सकता है। लेकिन शक्ति के इस रुप की खोज और परिभाषा अभी होनी है।

वैज्ञानिक तथ्य के आधार पर कहते हैं कि इसमें कोई संदेह नहीं कि ईश्वर शक्ति अथवा प्रकाश का कोई रुप है, और जैसे उसकी शक्ति अनंत है वैसे ही ईश्वर का प्रकाश (तेज) या उसकी दृष्टि अनंत गति रखती है। इसलिए समय उसके लिए रुक गया है। इसलिए अनंत काल से वह एक ही समान रुप में है और आदि काल तक वह इसी दशा में रहेगा। इसलिए वह न जन्म लेता है और न ही कभी मरेगा।

मान लो, ब्रम्हांड का डायमीटर (व्यास) ६००००० कि. मी. है, प्रकाश इसके मध्य से शुरु हो कर ब्रम्हांड के किनारे एक सेकंड में पहुँचेगा। क्योंकि उसकी गति ३००००० कि. मी.प्रति सेकंड हैं।

इसी प्रकार ईश्वर की गति अनंत है, इसलिए वह ब्रम्हांड के किसी भी कोने में तुरंत शून्य सेकंड में पहुँच जाता है। इसलिए ईश्वर हर कहीं हमेशा विद्यमान है। इसलिए ईश्वर सर्वव्यापक भी है।

क्या ईश्वर मेरे अन्दर है?

हज़रत मन्सूर एक संत थे। वे प्रार्थना और भक्ति साधना में हमेशा व्यस्त रहते थे और उन्होंने अपने आप पर से नियंत्रण खो दिया था। एक दिन उन्होंने 'अनल हक' की घोषणा कर दी। इसका अर्थ है मैं ही ईश्वर हूँ। ऐसा कथन कहने के लिए उन्हें मृत्युदंड दिया गया और उनका सिर काट दिया गया। कई दूसरे संत

भी कहते है कि आत्मा ही परमात्मा है अथवा परमात्मा मेरे अंदर है।

भक्ति-साधना और अतिशय प्रार्थना के पश्चात संत ऐसे कथन निम्नलिखित कारणों से कहते हैं,

- फरिश्ते खाना नहीं खाते हैं। जब वे कमज़ोरी महसूस करते हैं, तो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं और शक्ति तथा ताकत प्राप्त करते हैं।

- आत्मा शक्ति का रुप है, निरंतर परिश्रम तपस्या और भक्ति के कारण यह और पवित्र और शुद्ध हो जाती है। शुद्ध और पवित्र आत्मा वाले जब ईश्वर की प्रार्थना करते है तो उनकी आत्मा को भी फरिश्ते की तरह शक्ति मिलती हैं। इस स्थिति में व्यक्ति कभी कभी ऐसा अनुभव करता है कि वह आकाश में उड़ रहा है उसे अपने मन में प्रकाश नज़र आता है।

- पैगम्बर अनेक मार्ग से ईश्वर की आज्ञा प्राप्त करते हैं। एक तरीका यह हैं कि वे महसूस करते हैं कि कोई उनके हृदय में बोल रहा है। इस प्रकार का आदेश प्राप्त करने को 'वही' कहते हैं। और अगर कोई संत ऐसा आदेश प्राप्त करें तो उसे 'इलहाम' कहते हैं।

- जब कोई महापुरुष ईश्वर से कोई सवाल करता है, तो वह उसका उत्तर अपने मन में ही पा जाता है। मगर ईश्वर का मन में आदेश पाते वक्त कभी-कभी बहुत तकलीफ होती है। हज़रत मुहम्मद के साथी कहते है कि जब हज़रत मुहम्मद पर वही आती तो वह ठंडे मौसम में भी पसीना-पसीना हो जाते। पैगम्बर के साथ ईश्वर की मदद रहती है। इसलिए वह अपने आप पर से नियंत्रण नहीं खोते। मगर साधारण संत और तपस्वी ईश्वर से संपर्क की गर्मी और तकलीफ को नहीं सहन कर पाते है और अपने आप पर से नियंत्रण खो देते है। और ऐसी हालत में वह ऐसा दावा करने लगते हैं, कि में ईश्वर हूँ या ईश्वर मेरे भीतर है।

- हमने अध्ययन किया है कि, एक बार हजरत मूसा ने ईश्वर से आग्रह किया कि में आप को देखना चाहता हूँ। ईश्वर ने कहा तुम मुझे नहीं देख सकोगे। मैं अपनी एक झलक इस पहाड़ पर प्रगट करुंगा, आप पहाड़ को देखते रहें। जब ईश्वर ने अपना थोड़ा तेज़ उस पहाड पर प्रगट किया तो पहाड़ चकनाचूर हो गया और हज़रत मूसा बेहोश हो कर गिर पड़े।

तो इन्सान ईश्वर की एक झलक भी नहीं देख सकता है तो ईश्वर उस के अंदर कहाँ से आ जाएगा?

- गीता का श्लोक है की,

"सभी जानदार मुझ में नहीं रहतें। मेरी कुदरत है कि मैंने सभी जानदार को पैदा किया और उनको पालता हूँ। फिर भी मैं उन में रहता नहीं।" (गीता ९:५)

- जब हमारा हृदय और आत्मा शुद्ध हो जाती है, तो हृदय के द्वारा हम ईश्वर से सीधे-सीधे जुड जाते हैं, ऐसी स्थिति में हम जब ईश्वर की प्रार्थना करते है और उससे कुछ मांगते है तो हमें अपने हृदय में उसका उत्तर प्राप्त होता हैं। ईश्वर का हमारे हृदय से सीधा संपर्क होता है, लेकिन ईश्वर कभी हमारे अंदर नही होता है।

ईश्वर का परिवार (Family of God)

चार अंधे व्यक्तियों से हाथी का वर्णन करने के लिए कहा गया।

पहले अंधे व्यक्ति ने हाथी की टांगों को छुआ और कहा, हाथी एक पेड़ के तने की तरह है। दूसरे अंधे व्यक्ति ने हाथी कि पूंछ को छुआ और कहा हाथी एक चाबुक की तरह है। इसी प्रकार तीसरे और चौथे ने अलग-अलग हिस्सों को स्पर्श किया और उसी के अनुसार वर्णन किया।

हम सब उन चार अंधे व्यक्तियों से अधिक अलग नहीं हैं। जब हमें ईश्वर का वर्णन करने को कहा जाता है, तो हम भी उसे आकार वाला और परिवार वाला समझते है। क्योंकि हम जैसे है वैसे ही सोचते है। हम मनुष्य अपने स्वभाव के आगे की कल्पना ही नहीं कर सकते हैं।

इस विस्तृत ब्रम्हांड के बारे में सोचो। ईश्वर के इस महान साम्राज्य में पृथ्वी के अर्थहीन अस्तित्व के बारे में सोचो। इस संसार में पृथ्वी का अस्तित्व हमारे जूते के सोल में लगे कण के बराबर भी नहीं है। ईश्वर जब किसी वस्तु की रचना करना चाहता है, बस वह इतना कहता है, हो, और वस्तु उसकी इच्छानुसार आकार ले लेती है। यदि ईश्वर चाहता कि पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को सही राह पर चलना चाहिए तो केवल इतना कहने से, कि धरती के हर व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त हो तो पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को महान गौतम बुद्ध की तरह अपने आप ज्ञान प्राप्त हो जाता।

जब ईश्वर के पास मनुष्य-मात्र को सही रास्ते पर चलाने अथवा सिखाने का इतना आसान विकल्प है, तो वह इस पृथ्वी पर स्वंय जन्म क्यों लेगा अथवा अपने पुत्र को क्यों भेजेगा। ईश्वर के महान साम्राज्य में एक छोटी-सी अर्थहीन पृथ्वी के लिए ईश्वर का इतना कष्ट करना क्या कोई वाजबी बात है?

हम कहते हैं ईश्वर का पुत्र है अथवा ईश्वर खुद पृथ्वी पर जन्म लेता है आदि, आदि। क्योंकि हम ईश्वर की महानता और उसके महान साम्राज्य की कल्पना नहीं कर सकते अथवा समझ सकते हैं। अगर हम उसे और उसकी महानता को समझते तो हम ऐसा नहीं कहते।

जब एक सिपाही को मिलटरी में भर्ती किया जाता है, तो उसे ट्रेनिंग लेनी पड़ती है और अनेक परीक्षाएँ पास करनी होती है। जैसे पहाड़ पर चढ़ना, लड़ना, कांटेदार तार के नीचे रेंगना, सरकना और पानी में गोता लगाना इत्यादि। परीक्षाएँ देते समय विद्यार्थी दर्द और थकावट महसूस करते हैं। लेकिन परीक्षा की प्रक्रिया ही तकलीफ देह है। सरकार विशेषज्ञ भी नियुक्त करती है, ताकि सिपाही बेहतर ट्रेनिंग प्राप्त करें। लेकिन न तो विशेषज्ञ और न ही परीक्षक सिपाही को परीक्षा पास करने में गलत तरीके से मद्द कर सकते है। सिपाही को अपनी योग्यता स्वयं सिद्ध करनी ही होती है।

यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा हॉल है। प्रत्येक मनुष्य को जीवन में स्वर्ग प्राप्त करने के लिए अनेक परीक्षाएँ पास करनी पड़ती हैं और परीक्षाएँ पास करने में मद्द के लिए ईश्वर पैगम्बर भेजता है। पैगंम्बर एक सीमा से बाहर मद्द नहीं करते। प्रत्येक व्यक्ति को अकेले ही परीक्षा पास करनी है। कोई भी संत, पैगम्बर अथवा अवतार इत्यादि मनुष्यों को मानवता का केवल उपदेश देते हैं। वह सही राह पर चलने के लिए केवल मार्गदर्शन करते हैं। वे मुक्ति अथवा स्वर्ग नहीं दे सकते हैं। व्यक्ति को स्वर्ग पाने के लिए स्वयं सही मार्ग पर चलना ही पड़ता है। यदि हम ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे की पूजा करते हैं, तो हम एक ईश्वर को छोड़कर जिसकी पूजा करते हैं वह हमें मुक्ति नहीं दे सकता है, क्योंकि यह उनके हाथ में नहीं है। केवल ईश्वर ही अंतिम शक्ति है।

यजुर्वेद में लिखा है कि;

"न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देग।।"(यजुर्वेद ३३:११)

यानि बिना परिश्रम किए देवताओं को भी (ईश्वर की) कृपा नहीं मिलती।

पवित्र कुरआन में लिखा है कि,

"जिनको ये लोग पुकारते हैं (यानि देवी देवता या कोई पैगम्बर या वली अल्लाह या कोई महापुरुष), वे तो खुद अपने रब के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूंढ रहे है कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से ड़रे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही ड़रने के योग्य।" (पवित्र कुरआन १७:५७)

हम अपने घर में बहुत सारे बिजली के उपकरण रखते हैं, जो २४० वॉल्ट एसी.करंट पर कार्य करते हैं। उन्हें किसी दूसरे प्रकार से भी शक्ति देने की कोशिश करें। जैसे २४० वॉल्ट डीसी.तो क्या होगा? अगर आपने ऐसा किया तो आपके पूरे उपकरण नष्ट हो जायेंगे। ये दो प्रकार और दो स्त्रोतों से काम नहीं कर सकते हैं। तो फिर इस सृष्टि के कार्य दो अथवा तीन प्रकार के सिद्धांतो या शक्ति स्त्रोतों से कैसे चल सकते है। इस सृष्टि को अच्छी तरह चलाने के लिए शक्ति के दो स्त्रोत नहीं हो सकते हैं, और न सिद्धांतो के दो प्रकार हो सकते हैं। इस सृष्टि के कार्य को सुचारु रुप से चलाने के लिए एक ही शासन करने वाली शक्ति है और वह एकमेव ईश्वर है।

ईश्वर ने मनुष्यों की रचना क्यों की? (Why God created Human being)

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता हैं,

'मैंने मनुष्यों और जिन्न की रचना अपनी भक्ति (प्रार्थना) के लिए की।' (पवित्र कुरआन ५१:५६)

करोड़ों देवदूत हैं, जो निरंतर ईश्वर की प्रार्थना करते रहते हैं, फिर ईश्वर ने मनुष्यों और जिन्न की रचना अपनी प्रार्थना के लिए क्यों की?

यह इसलिए कि देवदूतों की रचना इस प्रकार से की गई है कि उनमें पाप करने की कोई इच्छा नहीं होती है। वे ईश्वर की अवज्ञा के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। वे ऐसा कुछ भी नहीं करते हैं, जो करना मना है। देवदूत भोजन नहीं करते हैं। जब वे कमजोरी महसूस करते हैं, तो वे ईश्वर की प्रार्थना करते हैं और शक्ति प्राप्त करते हैं।

इसके विपरीत मनुष्य स्वभाव से ही कुटिल है। कुछ भी उसकी लालसा की प्यास को बुझा नहीं सकता है। वह पाप करना चाहता है। अपनी आवश्यकताओं की सीमा से परे धन-दौलत इक्ट्ठी करने के लिए वह हर सिद्धांत का बलिदान करता है। और जब ऐसे स्वभाव का व्यक्ति व्यस्त जीवन में से समय निकालकर प्रार्थना करता है और ईश्वर के सामने घुटने टेकता है, तो यह एक बहुत बड़ी बात है। ईश्वर इसलिए पवित्र देवदूतों की अपेक्षा कुटिल मनुष्यों की प्रार्थना को अधिक महत्व देते है।और इसलिए उसने मनुष्य की रचना की है।

****

भाग क्र.७

अखिल विश्व की समृद्धि

जातीय मतभेद यही मानवता के दुखों का मूल कारण है। और अज्ञानता ही जातीय मतभेदता का मुख्य कारण है। जब तक लोग अन्य धर्मों की शिक्षा को समझ नहीं लेते तब तक वह उन लोगों को गलत समझते है और उनसे नफरत करते है।

हमें अगर सारी सफलता और समृद्धि मिल भी गई तब भी इस हिंसात्मक जग में हम सुख शांति महसूस नहीं करेंगे। इसलिए इस संसार की तरक्की और हमारी मन शांति के लिए हमें शांतता और सहनशीलता का संदेश सारे जहाँ में पहुँचाना चाहिए। इस पुस्तक का आखिरी भाग मैंने विश्व की समृद्धि के लिए समर्पित किया है।

हम संक्षिप्त में हर एक धर्म कि श्रद्धा और विश्वास की बारे में अध्ययन करेंगे। और इस विश्व में अवतार के आने की पद्धति उनके विचार, नए धर्म की जानकारी और मानवता की सीख इस बारे में सारी बातें समझने की कोशिश करेंगे।

****

अध्याय-४०

मार्गदर्शन की सतत प्रक्रिया

(The Continuous Process of Guidance)

- ईश्वर ने हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की रचना की। आदम ईश्वर के सब धार्मिक-आदेश जानते थे, जिन्हें उन्होंने अपने बच्चों तक पहुँचा दिया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, धार्मिक शिक्षा जो एक पीढी से दूसरी पीढ़ी को मिलती है उसमें बदलाव बढ़ता गया और लोग सच्चे विश्वास के साथ नये धार्मिक संस्कारों को जोड़ते गए तथा एक ईश्वर की प्रार्थना से पीछे हटते गए।

उनको सही राह दिखाने के लिए ईश्वर ने लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व हज़रत नूह (मनू) को भेजा। जैसे-जैसे समय बीता, वही बात फिर दुहरायी गई, मानवता ने अपनी राह बदल दी।

तब फिर ईश्वर ने लगभग ३३०० वर्ष पूर्व उसी विश्वासों के बिगाड़ को सही करने के लिए हज़रत मूसा को भेजा। उन्होंने अपना कार्य संपन्न करने की पूर्ण कोशिश कि थी। लेकिन मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा तेढ़ा है कि वह उसी की पूजा करना पसंद करता है, जिसे वह देख सकता है। और जो सही है उसकी अपेक्षा वह उसकी इच्छाओं का अनुकरण करना अधिक पसंद करता है। उन्होंने फिर से मूर्तीपूजा करना शुरु कर दिया। फिर उनको सीधा रास्ता दिखाने के लिए ईश्वर ने लगभग २००० वर्ष पूर्व हज़रत ईसा को भेजा। जैसे-जैसे समय बीतता गया लोग फिर अपनी पुरानी राह पर चले गए। तब उसने लगभग १४०० वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद (स.) को मनुष्यजाति का मार्गदर्शन करने के लिए भेजा।

- ये कुछ जाने-माने प्रसिद्ध पैगंबर हैं, परंतु वास्तव में १,२४००० से अधिक पैगंबर हैं, जो संसार के भिन्न-भिन्न हिस्सों में अलग-अलग समय पर आए।

- पवित्र क़ुरआन में ईश्वर कहता है,

कोई भी लोगों का ऐसा समुदाय नहीं गुज़रा है, जिसमें हमने कोई पैगंम्बर न भेजा हो।

(पवित्र क़ुरआन ३५:२४)

- इस दुनिया में हज़रत आदम से हज़रत मुहम्मद (स) का दुनिया में आना यह मानवजाति को उचित शिक्षा देने की एक सतत प्रक्रिया थी। जो भी पैगंम्बर आए उन्होंने एक ही शिक्षा दी और वह है, एक ईश्वर की प्रार्थना और मानवता।

इसलिए वास्तव में केवल एक ही धर्म है, जो है मानवता और एक ईश्वर की प्रार्थना, लेकिन भिन्न वर्गों के पुरोहितों के अहंकार और जिददी स्वभाव के कारण लोग अलग-अलग धर्मों में बटते गऐ।

हमारा विश्वास है कि वास्तव में धर्म केवल एक ही है और इस दुनिया में पैगंबरों का आना और जाना मानवजाति को एक ईश्वर द्वारा उपदेश देने की एक निरंतर प्रक्रिया है। निम्नलिखित तथ्य हमारे विश्वास का समर्थन करते है।

१. ईश्वर की मूल धारणा, जैसे कि वह एक है, सर्व व्यापक तथा वह आकार रहित है, आदि आदि, सभी धर्मों में सामान्य है।

२. अधिकांश पैगंबरों के नाम सामान्यतः सभी धर्मों में एक जैसे हैं, और सभी धर्मग्रंथों में उनका एक जैसा वर्णन किया गया है। पैगंबर भी मानते हैं कि वे कोई भी नया धर्म नहीं लाये हैं, बल्कि वे केवल पहले वाले पैगंम्बरों के उपदेशों का समर्थन करते हैं। धार्मिक इतिहास भी सभी धर्मों के बीच में सामान्य है, जैसे नूह (मनु) के युग में भयंकर बाढ़, इजिप्त से यहूदियों का प्रस्थान (Exodus) आदि, आदि।

३. नरक, स्वर्ग, फैसले (कयामत) का दिन और आचरण के नियम-सिद्धांत सभी धर्मों में लगभग एक सामान हैं।

४. सभी धार्मिक पुस्तकों ने एक अंतिम पैगंम्बर की भविष्यवाणी की है।

पवित्र धार्मिक पुस्तकों के कुछ पद निम्नलिखित हैं, जो हमारी मान्यताओं और विश्वास का समर्थन करते हैं,

- हज़रत ईसा (जीसस क्राईस्ट) बाईबल में कहते है; **'सोचो नही कि मैं नियमों का अथवा पैगंम्बरों का विनाश करने आया हूँ। बल्कि कार्यसंपन्न करने आया हूँ।'** (अर्थात जो काम वह अधूरा छोड़ गए उसे पूरा करने आया हूँ।) (संट मैथ्यू ५:१७)

- गौतम बुद्ध द्वारा अंतिम देवदूत की भविष्यवाणी निम्न प्रकार से है:-

ओ नंदा, मैं इस संसार में प्रथम बुद्ध नहीं हूँ, न ही मैं अंतिम हूँ। सही समय पर इस संसार में एक बुद्ध प्रकट होंगे, जो सच्चाई और दान-धर्म का उपदेश देंगे। उसकी व्यवस्था शुद्ध और पवित्र होगी। वह ज्ञान और बुद्धि का स्वामी होगा। वह सबका नैतृत्व करेगा और सभी व्यक्तियों का मार्गदर्शन करेगा। वह उस सत्य का उपदेश देगा जैसा सच मैंने पढ़ाया है। वह संसार को जीने की राह बताएगा, जो शुद्ध होगी और उस समय उनका नाम मैत्रेय रहेगा।

(Gospel of Buddha by Carus, page 17)

गौतम बुद्ध का ऐसा कहना कि न में प्रथम बुद्ध हूँ न अंतिम हूँ। यह प्रमाणित करता है की वह भी पैगम्बर थे। और उनसे पहले भी पैगम्बर आए और उनके बाद भी आएंगे और यह मानवजाति को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया चलती रहेगी।

- **ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है, मुसलमानो, कहो कि : "हम ईमान लाए अल्लाह और उस मार्गदर्शन पर जो हमारी ओर उतरा है (अर्थात कुरआन) और जो इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याकूब की सन्तान की ओर उतरा था और जो मूसा और ईसा और दूसरे सभी पैग़म्बरों को उनके रब (प्रभु) की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।'** (पवित्र कुरआन २:१३६)

- ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

मुसलमान हो या ईसाई हो, या यहूदी हो या साबाईन (हिन्दू) जो कोई भी एक ईश्वर पर विश्वास रखेगा, कयामत के दिन (अपने कर्मों का हिसाब देने) पर विश्वास रखेगा, और सारे पैगंम्बर सही थे इस पर विश्वास रखेगा, और ईश्वर ने जो पुस्तकें प्रकट की उन के सही होने पर विश्वास रखेगा और सच्चे रास्ते पर ही चलेगा तो ऐसे आदमी को कयामत के दिन किसी बात का ड़र न होगा (पवित्र कुरआन २:६२, ५:६९)

- ईश्वर पवित्र कुरआन में कहता है,

"उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति निश्चित की है जिसका आदेश उसने नूह (मनु) को दिया था, और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (Revealation) के द्वारा भेजा है, और जिसका आदेश हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस आदेश के साथ कि क़ायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।"

(पवित्र कुरआन ४२:१३)

- हमारा ऐसा सोचना कि सारे धर्म शुरु में एक ही थे, और धरती पर बार-बार पैगंम्बरों का आना मानव जाति को सच्चा रास्ता बताने की ईश्वर की तरफ से एक सतत प्रक्रिया है एक अंतिम पैगंम्बर की हर धर्म में भविष्यवाणी के कारण भी है। इसे संयोग नहीं कहा जा सकता है कि प्रत्येक आध्यात्मिक पुस्तक ने उसी सामान्य चारित्रिक गुणों के साथ अंतिम देवदूत की भविष्यवाणी और वर्णन किया। जहाँ से आदेश आए और जिसने पैगंम्बर भेजे वह स्रोत एक ही है, इसलिए उनमें से प्रत्येक ने एक ही समान भविष्यवाणी की और उसी एक व्यक्ति को अंतिम देवदूत के रुप में वर्णन किया।

- यदि हम वास्तव में विश्वास करते हैं और समझते हैं कि सभी धर्म मानवजाति को उपदेश देने की एक निरंतर प्रक्रिया हैं, यदि हम विश्वास करते हैं कि सभी पैगंम्बर सच्चे हैं और एक ही ईश्वर द्वारा भेजे गए हैं, यदि हम एक ईश्वर की भक्ति करते हैं और मानवता की सेवा करते हैं, तो लोगों के बीच में कभी भी सांप्रदायिक द्वेष नहीं होगा। कभी भी सामूहिक जाति-संहार, सांप्रदायिक दंगे, युद्ध और मनुष्यों का शोषण नहीं होगा। यह संसार एक शांतिपूर्ण स्थान होगा, प्यार से परिपूर्ण, तथा सहनशीलता से भरपूर, यह भावनाएँ विश्वसमृद्धि और शांति को बढ़ावा देगी। इसलिए इस संदेश को जन-मन तक पहुँचाने और फैलाने के भरपूर प्रयत्न करने चाहिए।

ईश्वर ने कहा,

तुम्हारे बीच लोगों का एक ऐसा समूह होना चाहिए जो लोगों को भलाई करने तथा सही व्यवहार के लिए आमंत्रित करे और अश्लीलता का निषेध करें। केवल यही वे लोग हैं, जो सफल होंगे। (पवित्र कुरआन ३:१०४)

इसलिए शाँति, समृद्धि और दयालुता का लोगों के बीच प्रसार करने से केवल लोगों को ही लाभ नहीं होगा, बल्कि हमारी स्वंय की सफलता भी दोनों जहान (लोकों) में निश्चित होगी।

हमने इस अध्याय में पढ़ा कि जो पैगंम्बर इस धरती पर आए उन्होंने धर्म की एक जैसी ही शिक्षा दी। अब हम अलग-अलग धर्मों के सिद्धांतों का अध्ययन करते है और देखते है की क्या वास्तव में सारे धर्मों की शिक्षा एक जैसी है?

****

अध्याय-४१

अनेक धर्मों का अध्ययन

(Understanding Various Religions)

सभी धर्मों की मूल रचनाः (Basic structure of all religions)

सभी धर्मों में अनेक तथ्य सामान्य हैं और केवल कुछ थोड़े-से तथ्य ही अलग हैं, जो अलग-अलग धर्मों में विशेष हैं। इसलिए पहले हम उन तथ्यों का अध्ययन करेंगे जो सब में सामान्य है। ऐसा करने से हमें उन तथ्यों को बार-बार दोहराने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

१. स्वर्ग (Heaven)

सभी धर्मों का यह विश्वास है कि वे जो ईश्वर में आस्था रखते हैं, जीवन में अच्छा व्यवहार करते हैं, पापों से बचते हैं, दान देते है और नियम से ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में जायेंगे। स्वर्ग में भौतिक सुख-सुविधाओं की जिंदगी मनुष्य की कल्पना से परे है।

२. नरक (Hell)

सभी धर्मों का विश्वास है कि वे जो पाप करते हैं, निरुद्देश्य जीवन व्यतीत करते हैं, गलत साधनों से धन कमाते है, दूसरे मनुष्यों को दुःख देते हैं और ईश्वर की प्रार्थना नहीं करते हैं, उनको आग में सज़ा होगी, यह जलने की जगह नरक कहलाता है।

३. ईश्वर के निर्णय का दिन (The Judgment day)

सभी धर्म यह विश्वास करते हैं कि एक दिन यह ब्रम्हांड नष्ट हो जाएगा और वह कयामत का दिन होगा।

४. आचरण के नियम (Code of Conduct)

निम्नलिखित आचरण संबधी नियम सभी धर्मों में सामान्य हैं:-

क्या नहीं करना चाहिए :-

१. दूसरे निर्दोष व्यक्तियों को सताना और मारना।

२. दूसरों की ज़ायदाद को जबरदस्ती अपने अधिकार में लेना।

३. विवाह के अतिरिक्त संबध करना (व्याभिचार)।

४. झूठ बोलना।

५. चोरी करना तथा रिश्वत लेना।

६. जूआ खेलना।

७. सांसरिक और भोग विलास के जीवन में लिप्त होना इत्यादि।

क्या करना चाहिए:-

१. शारीरिक, घर और व्यवसाय की जगह के स्वच्छता का ख्याल रखना।

२. नियम से दान और गरीबों को खाना खिलाना।

३. सहनशीलता।

४. सच्चाई से अपना जीवन व्यतीत करना।

५. ईश्वर में आस्था रखना और नियम से प्रार्थना करना।

६. मानवता की सही राह पर चलना, और दूसरों को धार्मिक सिद्धांतो का अच्छी तरह ज्ञान कराना, अथवा उपदेश देना इत्यादि।

निर्णय का दिन (The Judgement day) क्या है?

स्वर्ग, नर्क और आचरण के नियमों पर सारे लोग सहमत होते है। लेकिन कयामत या प्रलय के विषय पर लोगों में मतभेद है। इसलिए हम इस का विस्तार से वर्णन करते है।

वैज्ञानिक तथ्य तथा आँकड़े (Scientific Facts and Figure)

सूर्य में Atomic Fusion की प्रक्रिया निरंतर होती रहती है। हेलियम गैस के दो एटम Fusion के द्वारा मिलकर एक By product बनाते है और इस प्रक्रिया में गर्मी और प्रकाश उत्पन्न होता हैं, जो हमारी Solar System और हम प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार तेल और पेट्रोल पृथ्वी पर एक सीमित मात्रा में हैं और एक समय के पश्चात यह खर्च हो जायेंगे और खत्म हो जायेंगे, इसी प्रकार सूर्य में हेलियम गैस सीमित है और एक समय के पश्चात खर्च हो जाएगी। वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि इसे बहुत ज्यादा समय लगेगा, लेकिन कोई भी यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता है कि यह कब होगा?

जब हेलियम गैस खर्च हो जाएगा और Fusion Process रुक जाएगा, तो सूर्य ठंडा होना शुरु हो जायेगा और सूर्य तथा इस सोलर सिस्टम के मरण की प्रक्रिया शुरु हो जायेगी। सूर्य गुलाबी होने और विस्तृत होना शुरु हो जायेगा और बुध, शुक्र, मंगल, पृथ्वी और कुछ ग्रहों जो पृथ्वी से परे है उन को भी अपने घेरे में ले लेगा। वह लंबे समय तक इस दशा में रहेगा, फिर सूर्य सिकुड़ना शुरु करेगा और एक ठोस मास बन जायेगा या ब्लेक होल बन जाएगा। जब गैस वाला सूर्य पृथ्वी को घेरे में लेगा, तब कोई रात नहीं होगी और लगातार वह एक दिन बहुत लंबे समय तक चलेगा।

पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण शक्ति (Gravitational force) है, जो प्रत्येक वस्तु को पृथ्वी के केंद्र की ओर आकर्षित करती है। जब शक्तिशाली सूर्य का गोला पृथ्वी को अपने घेरे में ले लेगा तो सूर्य की गुरुत्वाकर्षण शक्ति धरती के गुरुत्वाकर्षण शक्ति को बेकार (Neutral) कर देगी। और पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु भार रहित (Weightless) महसूस करेगी। जिस प्रकार अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में महसूस करता है। इसलिए पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु तैरना अथवा उड़ना शुरु कर देगी, जिस प्रकार वस्तुएँ अंतरिक्ष में रॉकेट के कॉकपिट में तैरती हैं अथवा आकाश में बादल उड़ते हैं।

- On 13th feb. 2007 NASA released an image (news release number. STScl-2007-09) with title "The colorful demise of a sun like star." (Visit http:/hubblesite.org/news/2007/09, to know more about a dying star NGC 2440 which is similar to our sun.)

यह छवि, नासा के हबल स्पेस टेलिस्कोप द्वारा ली गई हैं। इस चित्र में सूर्य की तरह का एक नक्षत्र है। जिसका वैज्ञानिक पद (Designation) एन जीसी २४४० है, इसे मरते हुए दिखाया गया है। इस मरते हुए सूर्य ने अपना गैस अपने चारों तरफ दूर-दूर तक फैला दिया है। इस गॅस के गोले के केंद्र में जो सफेद बिंदु है वही पहले नक्षत्र (सूर्य) था। इस मरते हुए नक्षत्र (सूर्य) की चमक Ultraviolet light के कारण है और अलग-अलग रंग हेलीयम, ऑक्सिजन, नाइट्रोजन के जलने के कारण हैं।

'एन जी सी २४००' की छवि और अतिरिक्त सूचना के लिए निम्नलिखीत वेबसाईट देखिए:- http:/hubblesite.org/news/2007/09.

धार्मिक तथ्य तथा आँकड़े :-

पवित्र कुरआन में प्रलय (कयामत) का इस प्रकार वर्णन है।

१. **केवल ईश्वर ही जानता है कि फैसले (कयामत) का दिन कब आयेगा।** (पवित्र कुरआन ७:१८७)

२. **फैसले के दिन आकाश गुलाब की तरह गुलाबी हो जायेगा।** (पवित्र कुरआन ५५:३७)

३. **पृथ्वी अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति खो देगी और पर्वत बादलों और रुई के गोलों की तरह तैरेंगे।** (पवित्र कुरआन ७०:९)

४. **फैसले के दिन का समय (कयामत का एक दिन) सोलर कैलेंडर के ५०००० वर्ष के बराबर होगा।** (पवित्र कुरआन ७०:४)

५. **फैसले के दिन सूर्य एकदम हमारे सिरों के ऊपर होगा और पृथ्वी ताँबे की तरह लाल और गर्म होगी।** (पवित्र कुरआन ७०:८)

६. **फैसले के दिन ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का लेखा-जोखा जाँचेगा।**

नतीजा:- (Conclusion)

वैज्ञानिक तथ्य धार्मिक विश्वास को प्रमाणित करते है,

हमने स्वर्ग, नर्क, कयामत (प्रलय) और आचरण संबधित नियमों का अध्ययन किया जो सारे धर्मों में एक समान थे। अब हम अलग-अलग धर्मों का अध्ययन करते हैं।

जैन धर्म:-

- जैन परंपराओं के अनुसार, जो धर्म का ज्ञान लोगों को देते है वह तीर्थंकर के रुप में जाने जाते हैं। वर्धमान महावीर (५९९ बी.सी. से ५७२ बी.सी.) चौबिसवें तीर्थंकर थे।

- वर्धमान महावीर, सिद्धार्थ और त्रिशाला के पुत्र थे और जीवन के सभी आनंद उन्हें प्राप्त थे। लेकिन समाज के जटिल धार्मिक विश्वास, बलिदान तथा अंधविश्वास, जाति-पाति के आधार पर भेद-भाव तथा जीवन के गिरते नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के कारण वे संतुष्ट नहीं थे। इसलिए उन्होंने घर छोड़ दिया और साधना के लिए बाहर चले गए। बीस वर्ष की साधना के पश्चात उन्होंने ज्ञान की रोशनी प्राप्त की।

- उन्होंने दुनिया को निम्नलिखित सिद्धांतो का उपदेश दिया, जो पाँच महाव्रत कहलाते हैं। अर्थ है, पाँच महान व्रत अथवा प्रतिज्ञाएँ।

१) **अहिंसा**: जिसका अर्थ है, व्यक्ति को कभी भी हिंसा नहीं करनी चाहिए, किसी जीवित प्राणी को सताना या मारना नहीं चाहिए।

२) **सत्य**: जिसका अर्थ है, व्यक्ति को हमेशा सत्य बोलना चाहिए, व्यक्ति अपने कथन में भी सच्चा हो और कर्म में भी।

३) **अस्तेय**: का अर्थ है, किसी दूसरे की वस्तु नहीं लेनी चाहिए।

४) **ब्रम्हचर्य**: का अर्थ है, व्यक्ति ने शुद्ध पवित्र जीवन व्यतीत करना चाहिए।

५) **अपरिग्रह**: का अर्थ है, व्यक्ति को अपनी आवश्यकता से अधिक कोई वस्तु इक्ट्ठी नहीं करनी चाहिए।

- सामान्य मनुष्य को सिद्धांतो को समझने की आसानी के लिए, वर्धमान महावीर ने निम्नलिखित नियम बनाये, जो मूल-गुण कहलाते हैं (व्यवहार के मूल नियम):

१. किसी व्यक्ति को माँस नहीं खाना चाहिए।

२. किसी व्यक्ति को शराब नहीं पीनी चाहिए।

३. किसी भी जीव को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।

४. कभी भी झूठ मत बोलो।

५. कभी भी चोरी मत करो।

६. महिलाओं का आदर करें।

७. वस्तुएँ और भोजन, अनाज इक्ट्ठा न करें।

- वर्धमान महावीर ने तीन रत्नों का भी वर्णन किया है, (त्रिरत्न) जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपनाना चाहिए:

१. सम्यक चरित्र अर्थात उचित व्यवहार।

२. सम्यक दर्शन अर्थात सही दार्शनिकता।

३. सम्यक ज्ञान अर्थात सही ज्ञान।

- वर्धमान महावीर ने दृढ़ता से अहिंसा का उपदेश दिया। उन्होंने जातिगत भेद-भाव को नही माना, उन्होंने घोषणा की स्त्रियों को भी तपस्या, धार्मिक पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करना और सन्यास का अधिकार है।

  उनका मुख्य उपदेश सभी जीवित प्राणियों से प्यार, दया और हमदर्दी थी। अर्थात जियो और जीने दो।

बौद्ध धर्म :-

- गौतम बुद्ध (५६३ से ४८७ बी.सी.) का वास्तविक नाम सिद्धार्थ था। वह शुद्धोधन और मायादेवी के पुत्र थे, उनकी पत्नी का नाम यशोधरा था और उनके पुत्र का नाम राहुल था। वह एक राजकुमार थे और अपनी युवावस्था तक महल में रहे। सभी प्रकार के दु:खों और तकलीफ से दूर। लेकिन जब वह आम लोगों के संपर्क में आए, तो मनुष्य जीवन में दु:खों को देखकर वह विचलित हो उठे। उनके मन में प्राणिमात्र को दुखों से मुक्त करने की प्रबल लालसा उठी। उन्होंने साधना के लिए घर छोड़ दिया और १२ साल तक तपस्या करने के पश्चात 'गया' में उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।

- गौतम बुद्ध ने अनुभव किया कि सभी सांसारिक जीवन के मूलभूत चार महान सत्य है।

  दुक्खा, अर्थात दु:ख।

  समुदया, अर्थात दु:ख का कारण।

  दुक्खा-निरोध, अर्थात दु:खों को दूर करने की संभावना।

  प्रतिपदा अर्थात दुखों को दूर करने का रास्ता।

- प्रत्येक मनुष्य दु:खों का सामना करता है। यह इसलिए होता है कि मनुष्य अनेक वस्तुओं को प्राप्त करना चाहता है। जब वह उन्हें प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह दु:खी हो जाता है। इसलिए दु:खों को वश में करने के लिए व्यक्ति को अपनी पसंद की वस्तुओं को पाने की इच्छा को वश में करना होगा। इच्छाओं पर नियंत्रण करने और दु:खो को वश में करने का रास्ता व्यवहार की शुद्धता है।

- गौतम बुद्ध ने अष्टांग मार्ग का उपदेश व्यवहार को शुद्ध करने के लिए दिया, जिससे दु:खो को और इच्छाओं को वश में किया जा सकता है।

  उचित श्रद्धा। (Proper attitude)

  संतुलित विचारधारा। (Balanced thinking)

  संतुलित वाणी। (Balanced speech)

  उचित कार्य। (Proper action)

उचित साधनों के द्वारा रोज़ी-रोटी कमाना। (Earning lively hood through proper means)

संतुलित व्यायाम। (Proper exercise)

संतुलित स्मरणशक्ति। (Proper memory)

संतुलित समाधि (Proper Samadhi)

- गौतम बुद्ध ने व्यवहार के पाँच नियमों का भी उपदेश दिया। यह उपदेश लोगों को अष्टांग मार्ग पर चलने में सहायता करते हैं।

१. हिंसा नहीं करना। (Non-violence)

२. दूसरों की वस्तु को लेने से बचना। (Refraining from taking what belongs to others)

३. सांसरिक इच्छाओं पर नियंत्रण करना। (Control over carnal desires)

४. सच्चाई का जीवन व्यतीत करना। (Truthfulness)

५. नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करना। (Not taking intoxicants)

यह पाँच नियम 'पंचशील' कहलाते हैं।

- बोद्ध धर्म में भी स्वर्ग, नर्क, मरने के बाद का जीवन और एक ईश्वर का वर्णन है। मगर अधिकांश लोग इसे नहीं जानते। अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तक का अध्ययन करें।

(Lord Buddha Nastik or Astik (Atheist or Believer-Writer-Anjum Faraz (Alig.)) Published by: Satyamarg Prakashan, Lucknow.)

हिंदू धर्म :-

हिंदू धर्म संसार का सबसे अधिक पुराना धर्म है। यह लगभग ४००० साल पुराना है। इस धर्म की अनेक धार्मिक पुस्तकें तथा धार्मिक हस्तियां हैं। हम हिंदू धर्म को सरल तरीके से निम्नप्रकार से प्रस्तुत करने का प्रयास करते है:-

- हिंदू धर्म का असली नाम सनातन धर्म या वैदिक धर्म है।

- हिंदू धर्म भी दूसरे धर्मों की तरह स्वर्ग और नरक की धारणा तथा प्रलय का दिन मानता है।

- वेद, जो हिंदू धर्म की सबसे अधिक पवित्र और प्रमाणित धार्मिक पुस्तकें है, यह भी ईश्वर का वर्णन इस प्रकार करती है। ईश्वर का कोई आकार नहीं है, ईश्वर ने न जन्म लिया है और न ही किसी को जन्म दिया है और कोई भी उसकी तरह नही है।

- हिंदू धर्म की पुस्तकों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

१. श्रुति २. स्मृति

श्रुति का अर्थ है, कोई ज्ञान जो प्रदर्शित की गई हो, जो सुनी गई हो, जो अनुभव की गई हो, जो समझी गई हो।

श्रुतियाँ का ईश्वरीय होना, ईश्वर से संबधित होना, ईश्वर का शब्द होना विद्वानों द्वारा समझा गया है।

तथा वे सबसे अधिक पवित्र हैं। श्रुतियाँ वेदों और उपनिषदों में बाँटी गई हैं। वेद संस्कृत शब्द 'विद्या' से लिया गया है, जिसका अर्थ है ज्ञान। वेद का अर्थ है-महा ज्ञान।

वेद चार हैं।

१. ऋग्वेद- स्तुतिगान से संबधित। (Deals with songs of Praise of God.)

२. यजुर्वेद-बलिदान संबधी सूत्र। (Deals with sacrificial Rituals.)

३. सामवेद-मधुर संगीत से संबधित। (Deals with Melody.)

४. अथर्ववेद-धार्मिक सूत्रों से संबधित। (Summery of Religious Knoweldge.)

ये वेद सबसे अधिक पवित्र पुरानी धार्मिक पुस्तकें हैं और लगभग ४००० साल पुरानी।

- २०० से अधिक उपनिषद हैं।

- स्मृति का अर्थ है-यादगार, वह जो याद है। वे वेद और उपनिषदों से कम प्राचीन हैं तथा ईश्वरीय मूल की नहीं है। वे मनुष्यों द्वारा लिखी गई हैं, जीवन कैसे बिताया जाए, इसका मार्गदर्शन करने के लिए हैं। वे भी धर्मशास्त्र की तरह हैं। धर्मशास्त्र से संबधित हैं। स्मृति में हमें इतिहास या वीरों के कारनामों का महाकाव्य या गाथा भी मिलती है।

दो महाकाव्य हैं:-

१. रामायण २. महाभारत

रामायण श्री राम की कहानी से संबधित है। महाभारत चचेरे भाई कौरव और पांडवों के बीच युद्ध की कहानी है। यह श्रीकृष्ण की कहानी से भी संबधित है।

- भगवद्गीता, श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्धक्षेत्र में दिया गया उपदेश है और यह महाभारत का ही एक हिस्सा है। इसमें १८ अध्याय हैं, अध्याय २५ से अध्याय ४२ तक।

- हिंदू धर्मग्रंथो में दूसरी स्मृति पुराण है, जो हिंदु देवी देवताओं, सृष्टि की रचना आदि से संबधित हैं। यह १८ भागों में महाऋषि व्यास द्वारा रचा गया था। पुराण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भविष्यपुराण है। यह

भविष्य के बारे में बताता है।

- वेद अधिक पवित्र एवं पुराने हैं और जब पुस्तकों में खंडन अथवा परस्पर विरोध होता हो, तो वेदों का अनुसरण करना चाहिए।

- तीसरे प्रकार की स्मृति मनु-स्मृति है, जो जीवन के सूत्रों से संबधित है और मनु द्वारा संकलित की गई है।

- जिस प्रकार कुरआन बाइबिल और तोहरा जीवन के सूत्र वर्णन करते हैं और पैगंम्बर हजरत मोहम्मद(स.), हज़रत ईसा और हज़रत मूसा से संबधित हैं। मनु-स्मृति जीवन के सूत्र वर्णन करती है और मनु से संबधित है। इसलिए ऐसा माना जाता है कि हिंदू मनु के अनुयायी हैं। (मनु को महा नूह या हज़रत नूह (अ.स) भी कहा जाता है।)

- दूसरे धर्मों की तुलना में हिंदू धर्म की अधिकांश धार्मिक पुस्तकों से आम लोग अनजान हैं तथा वे लोगों द्वारा नहीं पढ़ी जाती हैं। इसलिए आम लोगों के वास्तविक विश्वास तथा वेदों में वर्णित विश्वास तथा ईश्वर की धारणा में बहुत बड़ा अंतर है।

- हिंदू धर्म के दो त्यौहार-दशहरा तथा दीवाली सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। दशहरा श्री राम की रावण पर विजय की याद में मनाया जाता हैं और दीवाली, श्री राम के चौदह वर्ष के बनवास के पश्चात अपनी राजधानी अयोध्या में वापिस आने के दिन के उपलक्ष्य में मनायी जाती है।

ईसाई धर्मः-

- हज़रत मरियम (मेरी), पैगंबर ज़करिया की भतीजी थी। वह अत्याधिक पवित्र थी और अधिकांश समय ईश्वर की प्रार्थना में लीन रहती थी। वह अविवाहित थी। प्रधान देवदूत उनके पास आया और समाचार दिया कि वह एक बच्चे को जन्म देगी। जीसस क्रॉइस्ट का जन्म ४ बी.सी.में जेरुसलम से ६-७ कि.मी. दूर जुड़िया के वेथल्हम में हुआ था।

- पैगंबर जॉहन बापटिस्ट जार्डन नदी में लोगों को ईसाई धर्म की दिक्षा (Baptized) दिया करते थे। ३० वर्ष की आयु में जीसस ने पैगंबर जॉहन द्वारा ईसाई धर्म की दिक्षा (Baptized) लेने गए। जब पैगंबर जॉहन जीसस को ईसाई धर्म कि दिक्षा दे रहे थे, उस समय उन्होंने पहचान लिया कि जीसस क्रॉइस्ट ही वह मसीहा हैं, जिनके बारे में उन्होंने बहुत पहले ही भविष्यवाणी की थी। इस अवसर पर पवित्र आत्मा (Holy Spirit) नीचे उतरी और जीसस क्रॉइस्ट के साथ हो गई। चालीस दिन के व्रत और प्रार्थना के पश्चात जीसस ने लोगों को ईश्वर के संदेश का उपदेश देना आरंभ कर दिया।

- जीसस ने १२ शिष्य अपने संदेश के प्रसार के लिए चुने। जुडस ऑइस्केरिअट, जीसस के १२ शिष्यों में से एक शिष्य थे। जिसने जीसस को धोखा दिया और जिसके कारण जीसस रोमन के लोगों के द्वारा कैद कर लिए गये थे।

- रोमन गवर्नर पोंटियस पिलेट ने राजनीतिक विद्रहों के झूठे आरोप में जीसस को कीलों से ठोक कर सूली पर लटकाने का ऑर्डर दिया। ईसाइयों का ऐसा विश्वास है कि जीसस को गोलगाथा में सूली पर लटकाया गया था और उनकी मृत्यु के पश्चात तीन दिन बाद जीसस फिर जीवित हो गए और ४० दिन तक पृथ्वी पर रहे, फिर स्वर्ग को चले गए।

- ईसाई जीसस क्रॉइस्ट को प्रभु का पुत्र मानते हैं। ईसाई लोगो का विश्वास है की जीसस क्रॉइस्ट, पवित्र आत्मा तथा ईश्वर के मेल से एक सर्वोच्च शक्ति अथवा ईश्वर की शक्ति स्थापित होती है, जो इस अखिल विश्व पर शासन करती है।

- ईसाईयों के विश्वास के अनुसार सब मनुष्य पापी हैं। ईसाई लोगों का विश्वास है कि जीसस क्रॉइस्ट ने सब मनुष्यों के पाप के प्रायश्चित की खातिर सूली पर लटकने की सज़ा ली।

  ईसाई लोग अन्य धर्मों की तरह स्वर्ग, नरक और कयामत के दिन को मानते है। 'क्रिसमस' जीसस क्रॉइस्ट के जन्म-दिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। ईसाई लोगों के विश्वास के अनुसार जिस दिन जिसस क्रॉइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया था उस दिन को वह 'गुड-फ्रायडे' मनाते है। गुड-फ्रायडे के तीसरे दिन 'ईस्टर डे' मनाया जाता है। ईसाई लोगों के विश्वास के अनुसार ईस्टर डे के दिन जीसस क्रॉइस्ट पुनः जीवित हुए थे।

- जीसस क्राईस्ट ने कुछ लिखा नहीं है अथवा अपने पीछे लिखा हुआ कोई दस्तावेज या किताब नहीं छोड़ी है। लगभग ६०-१०० वर्ष पश्चात उनके पृथ्वी से जाने के बाद उनके अनुयायियोंने उनके उपदेशों को रिकार्ड किया था।

- पवित्र बाईबिल को दो विस्तृत भागों में बाँटा जा सकता थाः

१. न्यू टेस्टामेंट और ओल्ड टेस्टामेंट

- न्यू टेस्टामेंट में मैथ्यू, मार्क, ल्यूक, जॉहन नाम की चार मुख्य पुस्तकें हैं। ये गोस्पल्स भी कहलाती हैं। इन चार पुस्तकों के अतिरिक्त न्यू टेस्टामेंट में २३ पुस्तकें हैं, जो उनके अनुयायियों द्वारा लिखी गई थी, इन में जीसस क्रॉइस्ट, उनका जीवन और उनके उपदेशों का वर्णन है।

- ओल्ड टेस्टामेंट में प्रेषित मूसा की पाँच पुस्तके हैं। लेकिन इन पुस्तकों के विषय को दोबारा इस तरह लिखा गया कि यह ३१ पुस्तके बन गई। शुरु में ओल्ड टेस्टामेंट हिब्रु तथा अरेमाईक (Aramaic) भाषा में थी।

जीसस क्रॉइस्ट का दूसरी धार्मिक पुस्तकों में वर्णनः-

जीसस क्रॉइस्ट एक महान ईश्वर दूत थे। दूसरे धर्मों के लोग भी उन्हें एक पैगम्बर के रुप में मानते हैं और उनका आदर करते हैं। हिंदू धर्म में, भविष्य पुराण में जीसस क्रॉइस्ट का वर्णन हमें मिलता है।

पवित्र कुरआन में २ ५ बार जीसस क्रॉईस्ट का उल्लेख है। उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं।

- और ऐ नबी, इस किताब (पवित्र कुरआन) में मरयम का हाल बयान करो, जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर पूर्व की ओर एकान्तवासी हो गई थी और परदा डालकर उनसे छिप बैठी थी। इस हालत में हमने उसके पास अपनी एक आत्मा को (अर्थात् फ़रिश्ते को) भेजा और वह उसके सामने एक पूरे इनसान के रूप में प्रकट हो गया।

- मरयम यकायक बोल उठी कि "अगर तू कोई ईश्वर से डरनेवाला आदमी है तो मैं तुझसे करुणामय ईश्वर की पनाह माँगती हूँ।"

- उसने कहा "मैं तो तेरे रब का भेजा हुआ हूँ और इसलिए भेजा गया हूँ कि तुझे एक पवित्र लड़का दूँ।"

- मरयम ने कहा, "मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जबकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं है और मैं कोई बदकार औरत नहीं हूँ।"

- फ़रिश्ते ने कहा, "ऐसा ही होगा, तेरा रब कहता है कि ऐसा करना मेरे लिए बहुत आसान है, और हम यह इसलिए करेंगे कि उस लड़के को लोगों के लिए एक निशानी (Revealation) बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता (Blessing for mankind)। और यह काम होकर रहना है।"

- मरयम को उस बच्चे का गर्भ रह गया और वह उस गर्भ को लिए हुए एक दूर के स्थान पर चली गई।

- फिर प्रसव-पीड़ा (Labour pain) ने उसे एक खजूर के पेड़ के नीचे पहुँचा दिया। वह कहने लगी, "क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और मेरा नामो-निशान न रहता।"

- फ़रिश्ते ने पाँयती से उसको पुकारकर कहा, "ग़म न कर। तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्रोत (Spring) बहा दिया है और तू तनिक इस पेड़ के तने को हिला, तेरे ऊपर रस भरी ताज़ा खजूरें टपक पड़ेंगी। अतः तू खा और पी और अपनी आँखें ठण्डी कर।

- फिर अगर कोई आदमी तुझे दिखाई दे तो उससे कह दे कि "मैंने करुणामय (ईश्वर) के लिए रोज़े की मन्नत मानी है, इसलिए आज मैं किसी से न बोलूँगी।"

- फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम में आई। लोग कहने लगे, "ऐ मरयम, यह तो तूने बड़ा पाप कर डाला।

- ऐ हारून की बहन, न तेरा बाप कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही कोई बदकार औरत थी।"

- मरयम ने बच्चे की ओर इशारा कर दिया। लोगों ने कहा, "हम इससे क्या बात करें जो पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है?"

- बच्चा बोल उठा, "मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी, और नबी बनाया, और बरकतवाला किया जहाँ भी मैं रहूँ, और नमाज़ और ज़कात की पाबन्दी का हुक्म दिया जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ, और अपनी मां का हक़ अदा करनेवाला बनाया और मुझको ज़ालिम और अत्याचारी नहीं बनाया।

- सलाम है मुझपर जब मैं पैदा हुआ और जब मैं मरूँ और जब ज़िन्दा करके उठाया जाऊँ।"

- यह है मरयम का बेटा ईसा और यह है उसके बारे में वह सच्ची बात जिसमें लोग शक कर रहे हैं। अल्लाह का यह काम नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। वह पवित्र ज़ात है। वह जब किसी बात का निर्णय करता है तो कहता है कि हो जा, और बस वह हो जाती है।

- (और ईसा ने कहा था कि) "अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी करो, यही सीधा मार्ग है। (पवित्र क़ुरआन १९:१६:३६)

यहूदी धर्म :-

१७०० BC में फिलिस्तीन और उसके आसपास के क्षेत्र के हिब्रु समुदाय के लोग भयंकर सूखे के कारण इजिप्त (Egypt) में आकर बस गए। शुरु में इजिप्त के लोगों ने उनका स्वागत किया, लेकिन बाद में उन्होंने पूरे हिब्रु समुदाय को गुलाम बना लिया, जिस से हिब्रु समाज को काबु में रखा जा सके और उन के बड़े मात्रा पर होने वाले निर्माण कार्य के लिए मुफ्त में मज़दूर मिल जाए।

लगभग ४०० सालों तक वे इजिप्त के लोगों के गुलाम रहे। तब ईश्वर ने हज़रत मूसा को उन्हें बंधुआ मज़दूरी और गुलामी से मुक्त कराने के लिए भेजा और उन्हें सही मार्ग पर चलाया। ईश्वर ने हज़रत मूसा को अपनी ईश्वरीय ग्रंथ तोरात को लोगों के मार्गदर्शन के लिए दी। इसमें जेनेसिस, एक्सोडस, लेवटीक्यूस और डियूट्रोनामी नामक पाँच पुस्तकें सम्मिलित हैं। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद लगभग ४० सालों तक यह हिब्रु समुदाय रेगिस्तान में घूमते रहे, फिर ये दुबारा फिलिस्तीन में स्थापित हुए। वही लोग जो हज़रत मूसा (अ.स.) को मानने वाले थे उनको यहूदी कहा जाता है।

१. यहूदी भी विश्वास करते हैं कि ईश्वर एक है और आकार रहित है, उनका विश्वास है कि हजरत उजेर ईश्वर के पुत्र हैं।

२. यहूदियों का फैसले के दिन (कयामत) स्वर्ग और नरक के बारे में वही विश्वास है जो इस्लाम धर्म का है।

३. 'तौरात' भी क़ुरआन और बाइबिल की तरह सभी पैगंबरों और ईश्वरीय पुस्तकों का वर्णन करती है।

उनकी प्रार्थना का स्थान 'सिनःगौग' कहलाता है। वे जो तौरात का अध्ययन करते हैं, उन्हें स्नातक (ग्रेज्युएशन) की सम्मानित पदवी प्राप्त होती है और वह 'रब्बी' कहलाते हैं। पासौवर, सुकोथ, सिमचत्त, रोश, हशनॉह तथा योत किपुर इत्यादि उनके त्यौहार हैं।

इस्लाम धर्मः-

- पवित्र कुरआन में ईश्वर, अपने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (स.) को आदेश देता है किः

"ऐ मुहम्मद! ईश्वर ने तुम को जिस धर्म का पालन करने का आदेश दिया है, यही आदेश उसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा को दिया था। और उसने सभी को यह भी आदेश दिया था कि धर्म का (अच्छी तरह) पालन करो और एक दूसरे से मतभेद ना रखो।"

(पवित्र कुरआन ४२:१३)

- तो इस्लाम धर्म कोई नया धर्म नहीं है। यही धर्म मनु (हज़रत नुह) का था, यही धर्म हज़रत इसा और मुसा का था। और यही धर्म हर पैगम्बर का रहा है। तो यह धर्म कोई नया धर्म नहीं है बल्की ईश्वर के आदेशानुसार है। यह शुरु से था और आखिर तक रहेगा। जब-जब इस में परिवर्तन हुआ तो ईश्वर ने नये अवतार भेजे ताकि धर्म के बिगाड़ को दूर कर दें। हज़रत मुहम्मद (स.) इसी सुधार की आखिरी कड़ी हैं। अब इस कलयुग के यही कल्कि अवतार हैं। हज़रत मुहम्मद (स.) के बाद अब कोई पैगम्बर या अवतार नहीं आएगा।

- हमने इसके पहले अध्ययन किया के सभी धर्म कि अनुसार ईश्वर एक है इसलिए हमें सिर्फ एक ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त मुसलमान होने के लिए निम्नलिखित पांच तथ्यों में विश्वास करना जरुरी हैः-

१. देवदूतों (फरिश्तों) का अस्तित्व

२. ईश्वर द्वारा अवतरित सभी पुस्तकों की सच्चाई पर विश्वास करना। कुरआन, बॉइबिल, तौरात और वह पुस्तकें जो पैगंम्बर अब्राहम, दाऊद और नूह इत्यादि को दी गई हैं।

३. विश्वास करना कि मुहम्मद पैगंम्बर सहित सभी पैगंबर सच्चे हैं।

४. विश्वास करना कि फैसले के दिन (कयामत के दिन) प्रत्येक व्यक्ति दुबारा जीवित होगा और पृथ्वी पर अपने जीवन के कर्मों का लेखा-जोखा देना होगा।

५. विश्वास करना कि भाग्य है और यह ईश्वर द्वारा निश्चित किया जाता है। जो सरल भी हो सकता है और कठिन भी।

- इस्लाम पर विश्वास अथवा ग्रहन करने के पश्चात चार शारीरिक क्रियाएँ करना जरुरी हैं:-

१. नमाज़ (दैनिक प्रार्थना)

२. रोजा (उपवास)

३. ज़कात (दान)

४. हज़ (मक्का की यात्रा करना। यह केवल उनके लिए है, जो धनवान हैं। यह गरीबों के लिए नहीं है।)

- यदि कोई व्यक्ति इस्लाम के ६ तथ्यों पर हृदय से व ईमानदारी से विश्वास करता है और शारीरिक क्रियाओं को भी ईश्वर की आज्ञा मानता है और आवश्यक भी समझता है। परंतु किसी कारणवश इन्हें करने में असमर्थ है, फिर भी बिना चार शारीरिक क्रियाओं को किए ऐसा व्यक्ति भी मुसलमान समझा जायेगा।

- **इस्लाम के अनुसार एक ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करना तथा उसके पवित्र आदेश की सच्चाई को न मानना एक अपराध है, जिसे ईश्वर कयामत के दिन कभी भी क्षमा नहीं करेगा, और ऐसे पापी को वह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। इन अपराधों के अतिरिक्त, ईश्वर सभी गलतियों और पापों को क्षमा कर सकता है।** (पवित्र कुरआन, सुरह निसा, आयत नं ४८.)

- प्रत्येक शारीरिक क्रिया के न करने के लिए एक दंड है। जब एक व्यक्ति उन्हें नहीं करता है, तो उसे नरक में उसकी सजा मिलेगी, जितनी बार उसने उनको नहीं किया। लेकिन सज़ा के पूरा होने के बाद वह मुक्त किए जाएंगे और स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। वे जो एक ईश्वर के अस्तित्व को सच नहीं मानते हैं, धरती पर उनके इन्कार के कारण उन्हें स्वर्ग में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं होगा।

इस्लाम में शारिरीक क्रियाएँ (प्रार्थनाएँ) क्यों की जाती है?

नमाज क्या है?

- १४ साल के वनवास के दौरान एक बार श्री.हनुमान जी ने श्रीराम जी से पुछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करु तो श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी को इस तरह ईश्वर की प्रार्थना करने का तरीका सिखाया।

- प्रथमः तारकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय
  कुंडला कारमचतुर्थ अर्धे चंद्रकः
  पंच बिन्दू संयुक्त ओम मित्यजयोती रुपक (श्री राम तत्वअमृत)

- अर्थात पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ, फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर की याद में ध्यान लगाओ।

  वेदो के अनुसार ईश्वर की भक्ति का सर्वश्रेष्ठ तरीका अष्टांग है। अष्ट का अर्थ है आठ। अंग का अर्थ है शरीर। अष्टांग यानि शरीर के आठ भागों से जमीन को छुकर ईश्वर की प्रार्थना करना। शरीर के आठ भाग इस प्रकार है। माथा, नाक, दोनों हाथ, दोनों घुटनें, दोनों पैर के पंजे। अष्टांग को अरबी में सजदा कहते है और अंग्रेजी में (Prostration) कहते है। बायबल में भी इस प्रकार की भक्ति को सर्वोत्तम माना गया है।
  (जेनीसीस १७:३, नंबर २०:०६, जोशो ५:१४, मॅथ्यु २६:३९)

  भक्ति का जो तरीका श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी को बताया था और वेदों में जो अष्टांग के नाम से जाना जाता है, मुसलमानों की नमाज इन्हीं दो भक्ति के तरीकों का मिला जुला रुप है। ऊपर बताए गए तरीके में और नमाज़ में सिर्फ इतना फर्क है कि नमाज़ में खड़े होने के बाद पहले झुकते है फिर सजदा करते हैं। और श्रीराम जी ने पहले दंडवत करने और फिर झुकने के लिए कहा। बाकी सीधे खड़े होना, सजदा करना

और धरती पर बैठ कर ईश्वर का ध्यान करना एक जैसा है।

- तो नमाज़ कोई नया इबादत का तरीका नहीं है। यह तो सदियों से ऋषि मुनि करते रहे हैं।

  ऋग्वेद का श्लोक है कि **"हे ईश्वर! हम तेरी प्रार्थना सुबह, दोपहर और सूरज डूबने के बाद करते है। तो हमें अपना सच्चा भक्त बना।"** (ऋग्वेद १०-१५१-६५)

  वेदों में 'त्रिकालसंध्या' के बारे में लिखा है यानि दिन में तीन बार ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। सुबह, दोपहर, शाम। तो दिन में तीन बार ईश्वर को याद करने का शताब्दियों से नियम रहा है। इस्लाम में इसे पांच बार कर दिया है। जो दो वक्त अतिरिक्त हैं वह शाम (असर) और रात (इशा) का है।

- मेरी अपनी समझ से (जो गलत भी हो सकती है) इस के दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि अब प्रार्थना एक दम आसान कर दी गई है। सिर्फ पांच से दस मिनट में यह खत्म हो जाती है। जबकि पहले ध्यान लगाने में बहुत समय लग जाता था। और दूसरी वज़ह यह है कि पहले ज़माने में शाम को अंधेरा छाते ही लोग खा-पी कर सो जाते थे। अब लोग आधी रात तक जागते रहते हैं।

- कुरआन शरीफ में ईश्वर कहता है कि हमने मनुष्य को सिर्फ अपनी प्रार्थना (इबादत) के लिए ही बनाया है। (पवित्र कुरआन ५१:५६) कुरआन में यह भी है कि ईश्वर की याद से ही मन को शांति मिलती है (पवित्र कुरआन १३:२९)। इसलिए हर मनुष्य को ईश्वर की दिन में पांच बार प्रार्थना जरुर करनी चाहिए।

साल में एक महीने का उपवास क्यों करें?

- लोगों को शराब की लत क्यों होती है? क्योंकि उनका अपने आप पर नियंत्रण नहीं होता है। इसलिए एक शराबी इस बात को जानता है कि वह गलत कर रहा है। फिर भी अपने आप से हार कर शराब पीता है।

- शराब, सिगरेट, जुआ और ऐसे बहुत से गलत काम वही छोड़ सकता है जिसका अपने आप पर और अपनी इच्छाओं पर मज़बूत नियंत्रण होगा।

- भूख इन्सान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। भूख से बेताब हो कर लोग चोरी करते है, ड़ाका ड़ालते हैं, और औरतें भीख माँगती है या अपनी इज़्ज़त बेचती है। जो इन्सान भूख लगने पर भी अपने आप पर नियंत्रण रख सकता है और साधारण इन्सानों की तरह दिन गुज़ार सकता है वह अपने आप पर नियंत्रण कर के हर बुराई छोड सकता है। रोजा या उपवास यह विधि अपने आप पर नियंत्रण करने की एक ट्रेनिंग है।

- **मनु ने हिन्दू धर्म के मानने वालों को उपवास रखने का आदेश दिया था।**

  (मनुस्मृती पाठः६-श्लोक क्र. २४)

- हज़रत ईसा (स) ने खुद ४० दिन का उपवास रखा और ईसाईयों को भी उपवास रखने का आदेश दिया था। (Mathew 17:21, Mark 9-29) और हज़रत मुहम्मद (स) तो खुद बहोत ज्यादा रोजा रखते थे। मगर ईश्वर ने साधारण लोगों के लिए सिर्फ एक महिने का रोजा अनिवार्य किया।

मुक्ति पाने और अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण करने के लिए पहले ज़माने में लोग घोर तपस्या करते थे। और समाज से कट कर सन्यास ले लेते थे। मगर ईश्वर ने अब इसे सरल कर दिया है। समाज में रहते हुए एक महीने का रोजा रखने से हमारे अंदर अपने आप पर नियंत्रण रखने की, उतनी ही शक्ति पैदा होती है, जितनी एक तपस्वी घोर तपस्या करके अपने आप में पैदा करता है। इसलीए इस सरल उपाय पर अवश्य अमल करना चाहिए। और अपनी इच्छाशक्ति को मज़बूत बनाने और सत्य के रास्ते पर मज़बूती के साथ चलने के लिए हमें एक महीने का उपवास जरुर रखना चाहिए।

हज क्यों करें?

मनु के युग में भयंकर बाढ़ आया था। इस में मनु और उनके कुछ साथी बच गए थें। और सारी दुनिया के लोग मारे गए थे।

उसके बाद यह दुनिया मनु के बेटों से फिर बसी। हम सब मनु की ही संतान है। मनु की संतान धरती के चाहे जिस क्षेत्र में बसे हो, उसने उस भयंकर बाढ़ को जरुर याद रखा। आप इंटरनेट पर सर्च करके पता करे तो आप को मालुम होगा के विश्व के हर देश में इस बाढ़ की कथा जरुर मौजूद है। मगर इस बात से आश्चर्य भी होता है कि हर देश की कथा में कुछ न कुछ असमानता जरुर है। ऐसा क्यों?

- जब एक पिता के सब संतान है। और बाढ़ भी एक ही थी तो इस कथा में मतभेद क्यो हुआ? इस का कारण है Communication error. (संवाद में कमी)

- आप अगर दस लोगों को एक सर्कल के रुप में बैठा दें। फिर एक व्यक्ति के कान में चुपके से कुछ कहें और उसे कहें कि आप को कही हुई बात वह अपने पड़ौसी व्यक्ति के कान में चुपके से कह दे। इस तरह हर व्यक्ति अपने पड़ौसी व्यक्ति के कान में आप की बात कहता रहें। जब दसवे व्यक्ति तक बात पहुंचेगी और आप उस से वही बात सुनेंगे जो आप ने पहले व्यक्ति के कान में कही थी। तो आप को यह सुनकर बहुत आश्चर्य होगा कि दसवाँ व्यक्ति आप की बात बिल्कुल तोड़मरोड कर बताऐगा। और ऐसी बात कहेगा जिस का अर्थ आप की कही हुई बात से बिल्कुल अलग होगा।

यह एक सत्य है, इसीलिए मैनेजमेंट में (Verbal Communication) (मुंह से बोले हुए आदेश) से मना किया है जो कि Communication error का मुख्य कारण है। इसलिए लिखे हुऐ रिकार्ड पर ज्यादा महत्व दिया जाता है।

बाढ़ की कथा के साथ भी यही हुआ और विश्व के अन्य धर्मों के साथ भी यही हुआ। हज की एक वजह यह भी है कि इस्लाम धर्म के साथ भी ऐसा न हो।

ईश्वर ने विश्व के सभी लोगों को जीवन में एक बार धरती के केन्द्र पर जमा होकर एक साथ प्रार्थना करने का हुक्म दिया है। इसी को हज कहते है। विश्व के लोग जब तक एक जगह जमा होते रहेंगे। और एक दूसरे

की गलती तथा धर्म के बिगाड़ को दूर करते रहेंगे तो फिर धर्म के कानून कभी नहीं बदलेंगे

इसीलिए बायबल में भी हज यात्रा का उल्लेख है (Pslam 84-1-12). और वेदों में भी मक्का, काबा शरीफ का वर्णन है और इसकी यात्रा के लिए भी कहा गया है। मगर वह लोग जिन्हें धर्म का ज्ञान था उन्होंने साधारण लोगों को हमेशा देव मालावी कथाओं में बहलाए रखा। और पवित्र वेदों के मूल सिद्धांतों को कभी समझने नहीं दिया।

हज के और कई कारण (Reason), लाभ (Benefit), तत्वज्ञान (Philosophy) है। उनका इस छोटी सी पुस्तक में विवरण करना मुश्किल है।

आने वाले पाठ में हम उन विषयों का अध्ययन करेंगे जो इस्लाम और हिन्दू धर्म में एक समान है। ताकि मुसलमान और हिन्दू भाईयों के बीच नफरत कुछ कम हो सके।

****

अध्याय-४२
इस्लाम और हिन्दू धर्म की समानताएँ
(Similarity between Islam & Hindu Dharam)

पुरुष मेधा या बकरा ईदः-

एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं जैसे; अल्लाह, मालिक, रहमान इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल ९९ नाम हैं। इस में कुछ नाम उसके विशेष गुणों के लिए हैं। जैसे; खालिक अर्थात पैदा करने वाला। क्योंकि ईश्वर के सिवाय और कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है। मालिक, ईश्वर के सिवाय इस संसार का और कोई मालिक नहीं है।

लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी है, जो उसकी स्वभाव (Features) के अनुसार है जैसे; रहीम अर्थात अत्याधिक दया करने वाला। गफूर अर्थात क्षमा करने वाला।

कभी-कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैगम्बरों को भी याद करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.) को रहीम और गफूर के नाम से याद किया है (पवित्र कुरआन १०:१२८)। क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालु और क्षमा करनेवाले थे।

इसी प्रकार हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में ईश्वर ने बहुत से पैगम्बरों को अपने ही नामों से याद किया है, उदाहरणतः हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि ब्रम्हा ने अपने शरीर के दो भाग किए। एक भाग पुरुष का तथा दूसरा भाग स्त्री का बन गया।

यही बात हदिस और बाइबल में भी है, कि हज़रत आदम (अ.स.) के शरीर के बायीं ओर (Left Side) से हज़रत हव्वा को पैदा किया गया।

तो हरिवंश पुराण में जिसे ब्रम्हा कहा गया है, वह वास्तव में ईश्वर स्वंय नहीं, हजरत आदम (अ.स.) हैं।

इसी प्रकार अथर्ववेद में हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को ब्रह्मा कहा गया है और लिखा है कि ब्रम्हा (अ.स.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (कुर्बानी) दी। यही बात पवित्र कुरआन में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुर्बानी दी थी। (पवित्र कुरआन ३७:१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.स.) के द्वारा की गई कुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रम्हा कहा गया वह स्वंय ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं।

आपको यह पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ होगा इसलिए हम इस प्रसंग पर कुछ और वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। हज़रत इब्राहीम (अ.स.) को सभी धर्म के लोग हज़रत आदम और हज़रत नूह के पश्चात बहुत से पैगम्बरों के पिता मानते हैं और बहुत आदर करते हैं।

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) एक मूर्तिकार के पुत्र थे। बचपन से ही वह एक ईश्वर को मानते थे। एक बार जब

शहर के सारे लोग शहर से बाहर मेले में गये हुए थे, तो उस समय हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने सभी देवी, देवताओं की मूर्तियों को तोड़ डाला। इस घटना से क्रोधित होकर राजा ने उन्हें कठोर दण्ड देने का निश्चय किया, तथा एक विशालकाय अग्निकुंड में फेंकने की आज्ञा दी लेकिन ईश्वर ने अपने इस सत्यवान पैगम्बर को अग्नि में जलने से बचा लिया और अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ सकी।

इस घटना के पश्चात वह फिलिस्तीन शहर में जाकर बस गये। और एक ईश्वर को मानने और उसके बनाये हुए नियम पर चलने का उपदेश लोगों को देने लगे। ९० वर्ष की आयु में, ईश्वर द्वारा उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई। जिसका नाम उन्होंने इस्माईल रखा।

जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) बहुत छोटे थे, तब ईश्वर के आदेश के अनुसार हज़रत इब्राहीम (अ. स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) और अपनी पत्नी हज़रत हाजरा (अ.स.) को मक्का शहर में ले जाकर छोड़ दिया। जब हज़रत इस्माईल (अ.स.) कुछ बड़े हुए, तो आप (हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने एक सपना देखा कि आप अपने सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी ईश्वर की राह में कर रहे हैं। पैगम्बर का सपना कभी झूठा नहीं होता है, इसलिए वह समझ गये कि उन्हें अपनी सबसे प्रिय चीज़ की कुर्बानी करनी ही है और उनकी सब से प्रिय चीज़ उनका पुत्र है।)

हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने अपने सपने के बारे में हज़रत इस्माइल को कह सुनाया और उनकी राय पूछी। हज़रत इस्माईल (अ.स.) ने अपने पिता को उत्तर दिया, जो आज्ञा ईश्वर ने आपको दी है, उसे अवश्य पूर्ण कीजिए और आप मुझे धैर्य (सब्र) रखने वालों में पाऐंगे।

(पवित्र क़ुरआन ३७:१०२)

जब हज़रत इब्राहीम (अ.स.) अपने साथ हज़रत इस्माइल (अ.स.) को मक्का शहर के बाहर मिना की पहाड़ी पर ले कर चले, तो शैतान ने तीन बार उन्हें भटकाने (बहकाने) की भरपूर कोशिश की, तब तीनों बार हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने उस शैतान को पत्थर मार कर भगा दिया। मीना पहुँचकर हज़रत इस्माइल ने कहा की आप मेरे हाथ-पैर बांध दो। वरना मेरे तड़पने से आप को मुश्किल होगी। फिर उन्होंने अपने प्रिय पुत्र हज़रत इस्माइल (अ.स.) के हाथ-पैर को बांध दिया। फिर उन्होंने अपनी आँख पर पट्टी बांध दी क्योंकि वह चाहते थे कि पुत्र मोह से उनका हाथ न काँपे। फिर उन्होंने हज़रत इस्माईल के गले पर छुरी चलाने की भरपूर कोशिश की। किन्तु ईश्वर को हज़रत इब्राहीम (अ.स.) और हज़रत इस्माईल (अ.स.) की केवल परीक्षा लेनी थी। इसलिए ईश्वर के आदेश से हज़रत जिब्रील (अ.स.) ने स्वर्ग से एक दुम्बा (मेंढ़ा) लाकर हज़रत इस्माईल की जगह पर लिटा दिया और हज़रत इस्माईल (अ.स.) के बदले दुम्बे की कुर्बानी हो गयी।

इस पूरे घटना क्रम को अथर्ववेद में पुरुष मेधा के नाम से याद किया जाता हैं। इस छोटी सी पुस्तक में हम सारे श्लोक नहीं लिख सकते है। उसमें से एक श्लोक हम यहाँ लिखते है। इस घटना में हज़रत इस्माईल (अ.स.) (अथर्व) ने हज़रत इब्राहीम (अ.स.) (ब्रम्हा) की जो बात मान ली थी। वह श्लोक इस प्रकार है।

> **मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हदयंच यत् ।**
> **मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शतः** (अथर्ववेद १०:०२:२६)

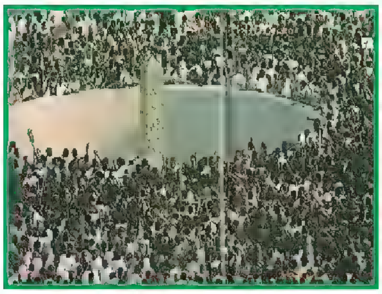
अर्थात अथर्वा ने अपने पिता ब्रम्हा की बात को दिल और जान से मान लिया और पवित्रता उनके चेहरे

पर झलक रही है।

तो अथर्ववेद में जिसे ब्रम्हा के नाम से याद किया गया है वह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) हैं। अथर्वा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्माईल (अ.स.) हैं। अंगिरा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्हाक (अ.स.) हैं। इसलिए जैसे यह तीनों पैगम्बर ईसाई, यहूदी और मुसलमानों के पैगम्बर हैं, उसी तरह यह तीनों पैगम्बर हिंदू धर्म के पैगम्बर भी हूए। पुरुष मेधा अर्थात मनुष्य की कुर्बानी है। इसी को आज मुस्लिम समाज बकरा ईद या इदुलजूहा के नाम से मनाते हैं।

जिस जगह यह घटना घटित हुई वह स्थान मीना (मक्का शहर के नज़दीक) है, जहाँ हाजी हज के लिए जाते हैं और वहाँ पर तीन दिन खैमे (Tent) में रहते हैं और ईश्वर की प्रार्थना करते है। जिस जगह हज़रत इब्राहीम (अ. स.) ने शैतान को पत्थर मारा था, उसी स्थान पर हाजी आज भी कंकरी (छोटे पत्थर) मारते हैं।

(अधिक जानकारी के लिए A.H. Vidyarthi की पुस्तक Muhammad in Hindu Scripture (Adam Publication) का अध्ययन करें।)



हज की यात्रा करनेवाले इस विशेष स्तंभ को छोटी कंकरी मारते है। (इसी जगह शैतानने हज़रत इब्राहीम (अ. स.) को गुमराह करने की कोशिश की थी)



मीना नाम की पहाडी जिसका वर्णन अथर्ववेद में है और इसी जगह हज़रत इब्राहीम (अ. स.) ने हज़रत इस्माईल (अ. स.) अथवा अथर्व की कुर्बानी देने की कोशिश की थी।



हिन्दू धर्म के पैगम्बर कौन हैं?

हज़रत आदम (अ. स.) के विषय में:-

भविष्य-पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वा को विष्णू ने गीली मिट्टी से पैदा किया प्रदान नगर (जन्नत) के पूर्व हिस्से में, ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ sq कौस का एक बहुत बड़ा जंगल था। (कौस किलोमिटर से बड़ा होता है) अपनी पत्नी (हव्वा) को देखने की बेताबी से आदम गुनाहवाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कली (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के जरिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु के हुक्म को तोड़ डाला परिणाम स्वरुप उनको पृथ्वीपर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी औलादें हुई। आदम की उम्र ९ ३ ० साल थी। (भविष्य पुराण)

यही बात कुरआन में भी लिखी है और बाइबिल में भी। इसलिए हम यह कह सकते हैं, कि हज़रत आदम हिन्दू धर्म के भी पैगम्बर हैं।

हज़रत नूह (अ. स.) के विषय में:-

मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल में एक बहुत बड़ा बाढ़ आया था। जिस में केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

नूह (मनू) ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर जाति के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को सवार किया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब में डूब गयी।

यही बात कुरआन में भी लिखी है (पवित्र कुरआन ११-२५-४८) यही बात बायबल में भी लिखी है (जेनीसीस ६-८)

इसलिए हम कह सकते हैं कि कुरआन में जिस पैगम्बर मनु को हज़रत नूह कहा गया है। बायबल में जिसको Prophet Noah कहा गया है और भविष्य पुराण में जिसे नूह कहा गया है, वह एक ही इन्सान हैं और इन्हीं को हिन्दू धर्म की अन्य ग्रंथों में मनु के नाम से जाना जाता है।

A.J.A. Dubois ने अपनी किताब (Hindu Manners, customs & ceremonies) में कहा है, कि जैसे मुसलमान हज़रत मुहम्मद (स.) के अनुयायी (मानने वाले) हैं और जैसे, इसाई हज़रत ईसा के अनुयायी हैं, वैसे ही हिन्दू धर्म के माननेवाले हज़रत नूह या मनू के अनुयायी हैं।

अपनी बात को साबित करने के लिए वे कहते हैं, हर धर्म के लोग जिस पैगम्बर को मानते हैं वह उनके बनाये हुए नियम को भी मानते हैं। इसाई बाइबल को मानते हैं, मुसलमान कुरआन और हदीस शरीफ को मानते हैं। (हदीस में हज़रत मुहम्मद (स.) के आदेश और उनके जीवन गुज़ारने का तरीका बयान किया गया है।) इसी तरह हिन्दू धर्म में मनु स्मृति ही धार्मिक कानून का ग्रंथ है और यह मनु द्वारा लिखित है।

और दूसरा सबूत यह है कि हर धर्म के अनुयायी जिस पैगम्बर को मानते हैं, वह महत्वपूर्ण घटनाओं को उन पैगम्बरों के समय से गिनते हैं, जैसे कि इसाई अपना साल हज़रत ईसा (स. अ.) की जन्मतिथि से गिनते हैं। इसी तरह हिन्दू धर्म में मनु के समय आये हुए बाढ़ का बहुत महत्व है। वह अपनी महत्वपूर्ण घटनाओं को इसी बाढ़ के बाद से गिनते हैं। उदाहरण के रुप में वह कहते हैं कि कलयुग की शुरुआत इसी बाढ़ के समाप्त हो जाने के बाद से शुरु हुई।

हज़रत इब्राहीम (अ. स.) के विषय में:

- पुरुष मेधा और बकरा ईद इस पाठ में हम ने पढ़ा कि हज़रत इब्राहीम (अ. स.), हज़रत इस्माईल (अ. स.) और हज़रत इसहाक (अ. स.) को अथर्ववेद में ब्रम्हा, अथर्वा और अंगिरा के नाम से याद किया गया है। इसलिए इन तीनों को भी हिन्दू धर्म के मानने वाले अपना पैगम्बर कह सकते हैं।

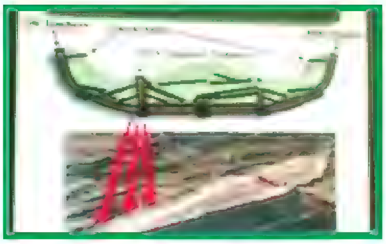
हज़रत मुहम्मद (स.) के विषय में:

- हज़रत मुहम्मद (स.) का वेद, पुराण और उपनिषदों में महामे ऋषि, मोहम्मद, अहमद, नराशंस और कल्कि अवतार के नाम से ३१ बार भविष्यवाणी है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) को भी सनातन धर्म के लोग अपना पैगम्बर कह सकते हैं।

"Hindu manners, customs and ceremonies"
Written by: Abbe. J.A. Dubois
Publisher: Low Price Publications
B-2, Wardhaman Palace,
Nimri Commercial Centre, Ashok
Vihar, Phase-IV, Delhi - 110052

The boat of Manu


Expert trying to analyse the boat of Manu (Noah)


Analysing the boat impression



Analysing the boat.

मक्का या मक्केश्वर ?

सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) की धार्मिक किताबों में मक्का शहर और काबा शरीफ को कई नामों से याद किया गया है। इन में से कुछ इस तरह हैं:

१. इलास्पदः

एल, एलिया, इला, इलाया आदि यह सब नाम अलग-अलग धर्मों में ईश्वर के लिए बोले जाते है। पद यानि जगह (Place)। इलास्पद यानि ईश्वर की जगह।

२. इलायास्पदः

इसका अर्थ भी ईश्वर की जगह है। पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या ने वेदों के अपने हिंदी अनुवाद में इसका अनुवाद पृथ्वी का पवित्र स्थान किया है।

३. नाभा प्रथिव्याः

नाभि का अर्थ है नाफ (Centre/Navel) और प्रथिव्या यानि धरती। नाभा प्रथिव्या यानि धरती की नाफ या धरती का केंद्र या Centre of earth.

- इलायास्पद पढेवयं नाभा प्रथिव्या अधि ।।

इसका अर्थ है कि धरती का पवित्र स्थान यानि ईश्वर का घर, पृथ्वी के केंद्र पर है।

४. नाभि कमलः

परम पुराण में कहा गया है कि नाभि कमल वह तीर्थ स्थान है जहाँ से सृष्टि का निर्माण हुआ।

हरी वंश पुराण (पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या द्वारा अनुवादित, पृष्ठ ४९९-५०१, भाग-२) में भी यही बात कही गई है और यही बात हदीस शरीफ में भी कही गयी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि आकाश और पृथ्वी के निर्माण के जमाने में पृथ्वीपर चारों तरफ पानी ही पानी था तो उस पानी की सतह (Surface) से सब से पहले काबा स्थान प्रकट हुआ, फिर धरती उस के नीचे से चारों तरफ फैलती गई। (मअरिफते काबा, पृष्ठ-५)

५. आदि पुष्कर तीर्थः

पदम पुराण में है कि धरती का सब से प्राचीन, सब से पवित्र और सब से लाभदायक तीर्थ स्थान आदि पुष्कर तीर्थ है। पदम पुराण ने इस पवित्र स्थान की यात्रा के महत्व का उल्लेख इन शब्दों में किया है।

- जो दिल से आदि पुष्कर तीर्थ जाकर सेवा की चाह करता है उसके तमाम पाप धुल जाते हैं।

- जो आदि पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है वह अनंत पुण्य (Too Much Eternal Blessings) का

हकदार होता है।

- सब तीर्थां में आदि पुष्कर ही प्राचीन तीर्थ स्थान है। आदि पुष्कर तीर्थ जाकर स्नान करने से मुक्ति मिलती है। (ज़म ज़म का कुआँ काबा शरीफ से ५० फुट की दूरी पर है और रोज़ाना लाखों लीटर पानी सऊदी हुकूमत इस से निकालती है। जिसे हाजी पीते हैं और देश-वापसी के समय अपने साथ ले जाते हैं।)

६. दारुकाबनः

ऋग्वेद में लिखा है कि, **ऐ ईश्वर की प्रार्थना करने वालों! दूर देश में समुद्र-तट के करीब जो दारुकाबन है वह इन्सान का बनाया हुआ नहीं हैं। इस में ईश्वर की प्रार्थना कर के उसकी कृपा से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ।** (ऋग्वेद १०-१५५-३)

७. मक्तेश्वरः

Sir M. Monier Willium की संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी का अर्थ है The city of Makkah/Yagya यानि मक्का और कुर्बानी की जगह।

मक्का में ईश्वर का घर तो है ही, इस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माइल (अ.स.) की कुर्बानी भी दी थी, जिसे अथर्ववेद में पुरुष मेधा के नाम से लिखा गया है और हर साल हज के दिन लाखों जानवरों की कुर्बानी भी दी जाती है।

- अब तक हमने अलग अलग ग्रंथों में मक्का शहर और पवित्र काबा को किस नाम से याद किया गया है, इस का अध्ययन किया। अब अथर्ववेद में काबा शरीफ के बारे में क्या लिखा है इसका अध्ययन करते हैं।

अथर्ववेद में काबा शरीफ की प्रशंसा और वर्णन इस प्रकार है।

- **ऊर्ध्वो नु सृष्टों ३ स्तिर्यंडः नु सृष्टा ३ःसर्वादिशः पुरुष आ वभूवाँ ।।३ ।।**
पूरं यो ब्रम्हणों वेद यस्याः पुरुष उच्यते।। (अथर्ववेद १०-२-२८)

अर्थातः चाहे उसकी दीवारे ऊंची और सीधी हों (या ना हों) मगर ईश्वर उसकी हर दिशा में नज़र आता है। जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं वे यह जानते हैं।

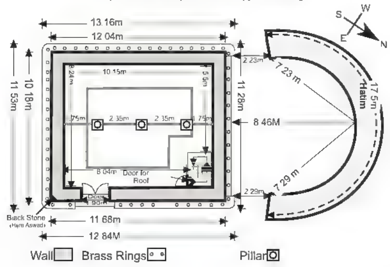
काबा शरीफ Cubical नज़र आता है। मगर यह Perfect Cubical इसके हर दीवार का Size अलग-अलग है। मगर यहाँ ईश्वर की ऐसी कृपा है कि जो इसे देखता है वह बस देखते रह जाता है। और उसे इसको देखने में आनंद मिलता है और लोगों का इस के चारों तरफ परिक्रमा करने का मन होता है और उस में भी वह आनंद महसूस करते हैं।

- **यो वै तां ब्रम्हणों वेदामृतेनावृतां पुरम।**
तस्मै ब्रम्हच ब्राह्मश्च चक्षुः प्राण प्रजां ददुः (अथर्ववेद १०:२:२९)

अर्थातः जो इस घर को पहचानता है (और इसके पास प्रार्थना करता है) उस पर ईश्वर की कृपा होती है, और हज़रत इब्राहीम (अ. स.) (ब्रम्हा) की दुआ उसके साथ रहती है। उसे ईश्वर ज्ञान, सम्मति, खुश्हाली और संतान देते हैं।

- **अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोद्धा।**
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गों ज्योतिषवृतः (अथर्ववेद १०:२:३१)

Cross-section of holy Kaaba.
Copied from http //www.al-qiyamah.org



अर्थात फरिश्तों के रहने की इस जगह के चारो तरफ आठ सर्कल हैं और नौ दरवाजे हैं, इसे कोई विजय नहीं कर सकता। इस में अमर जीवन हैं और दिव्य ज्योति इस से हर तरफ फैलती रहती है।

श्लोक में जिसे सर्कल कहा हैं वह वास्तव में पहाड़ है। काबा शरीफ के चारों तरफ आठ पहाड़ हैं। उनके नाम इस तरह हैं:-

१) जबले खलीज २) जबले कीकान ३) जबले हिंदी ४) जबले लाला ५) जबले कादा ६) जबले अबू-हदीदा ७) जबले अबी-काबिस ८) जबले उमर

नोटः- अरबी में जबले का अर्थ पहाड़ है।

काबा शरीफ के चारों तरफ जो इमारत है उस में नौ दरवाज़े थे। उन के नाम इस तरह है:

१) बाबे इब्राहम २) बाबे अल-विदा ३) बाबे सफा ४) बाबे अली ५) बाबे अब्बास ६) बाबे नबी ६) बाबे सलाम ७) बाबे जियाद ८) बाबे हरम

नोटः- अरबी में बाबे का अर्थ दरवाजा है।

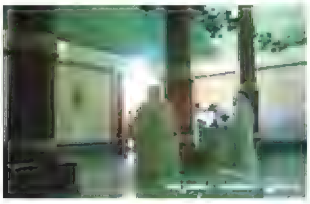
काबा शरीफ को विजय नहीं किया जा सकता। एक बार ५३० A.D. में यमन के राजा अब्राहा ने हाथियों का लश्कर लेकर मक्का पर चढ़ाई कर दी थी, ताकि वह काबा शरीफ को गिरा दे। जब वह मक्का शहर के करीब पहुँचा तो अबाबील नाम की बहुत सी छोटी चिड़ियाँ अपनी चोंच में कंकरी (Small stones) ले जाकर उन सैनिकों पर फेंकने लगी। और कंकरी लगते ही सैनिक अपने हाथियों समेत भूसे की तरह सड़-गल गयें। इस तरह पूरी सेना का विनाश हो गया। इसका पूरा वर्णन आप कुरआन शरीफ के सूरह फील १०५ में पढ़ सकते हैं। इसलिए इस शहर को विजय करना असम्भव है।

- **तस्मिन हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठते।**
तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रम्हविदो विदुः (अथर्ववेद १०:२:३२)



अर्थात प्रार्थना के लायक उस ईश्वर के घर में तीन स्तंभ (Column) और तीन बीम (beem) हैं और यह घर अमर जीवन का केंद्र है। ईश्वर की प्रार्थना करने वाले इस बात को जानते हैं।

ऊपर का चित्र काबा शरीफ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)



Inside view

(पर काबा शरीफ के अन्दर का दृश्य, इसमें तीन स्तंभ(Column) साफ नज़र आते है।)

- **प्रभ्राजमानां हरिर्णीं यशसा संपरीवृताम।**
  पुर हिरण्ययीं ब्रम्हा विवेशापराजिताम। (अथर्ववेद १०-२-३३)

अर्थात ब्रम्हा (हज़रत इब्राहीम अ. स.) इस जगह रहे। यहाँ ईश्वर की दिव्य ज्योति (नूर) बरसता है। वहाँ की प्रार्थना लोगों को अमर बना देती है।

मक्का शहर या काबा शरीफ धरती का केंद्र कैसे है ?

- **इलायास्त्वां वयं नाभा प्रार्थव्या आधि।** (ऋग्वेद ३-२९-४)

- ऋग्वेद में कहा गया है कि, ईश्वर का घर धरती के नाभ (केन्द्र) पर है। इसलिए हम इस बात का पता करते हैं कि धरती का केन्द्र कहा है और इस समय उस केन्द्र पर क्या है।

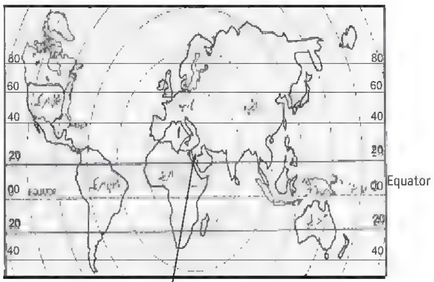
Equator 0° Latitude है। यानी Horizontal Plane या Direction में यह पृथ्वी के मध्य में है। मगर धरती की वह जगह जहाँ इन्सान बसते है उसके मध्य से नहीं गुजरता है। अगर हमें बसी हुई धरती के मध्य स्थान से गुजरना हो, जहाँ इन्सान बसते है, तो हमें अंदाज से 20° Latitude उत्तर की तरफ हटना पड़ेगा।

इसी तरह ° Latitude ग्रीन वीच (एक शहर) से गुजरता हैं। मगर यहाँ भी इन्सानों द्वारा बसी हुई धरती के ° Vertical direction में मध्य से नहीं गुज़रता। अगर हमें Vertical direction में इन्सानों से बसी

हुई धरती के मध्य से गुजरना है तो अंदाज से 40° पूरब की तरफ हटना होगा।

यानि वह धरती जिस पर इन्सान बसते है उस का केन्द्र अंदाज से 20° Latitude and 40° Longitude पर है। अब हम अगर धरती के नक्शे में इस जगह पर कौनसा शहर बसा है इस की तलाश करें तो इस मकाम पर हम मक्का शहर को पाते है।

मक्का शहर 21° Latitude and 39° Longitude पर है।



मक्का (धरती का केंद्र)

ऋग्वेद में है कि धरती के केन्द्र पर ईश्वर का घर है। तो मक्का शहर ही धरती के केन्द्र पर है, और काबा शरीफ ही ईश्वर का घर है।

ऋग्वेद में यह भी लिखा है,

ऐ ईश्वर कि प्रार्थना करनेवाले लोगों! दूर देशों में समुद्र किनारे द्वारकाबन है जिसका निर्माण किसी मनुष्य ने नहीं किया। वहाँ प्रार्थना करके ईश्वर के आशीर्वाद से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ। (ऋग्वेद १०-१५५-३)

इस श्लोक में काबा को दारुकाबन कहा गया है। और काबा शहर समुद्र किनारे से अंदाजन ४० कि. मी. दूरी पर है।

तो अगर हम स्वर्ग में जाना चाहते है, तो ईश्वर के इस शहर और घर जाकर जरुर प्रार्थना करनी चाहिए।

एक गलत विश्वासः-

क्या मुसलमान काबा शरीफ को पूजते हैं?

नहीं! मुसलमान काबा शरीफ को नहीं पूजते।

काबा शरीफ एक पवित्र घर की तरह है। जिसे काबातुल्लाह यानि ईश्वर का घर कहते हैं। आज भी मुस्लिम धर्म के अनुयायी उसके अंदर नमाज पढ़ते हैं। यह अंदर से बिल्कुल खाली है, इसके अंदर कुछ भी नहीं है। इसके अंदर का भाग आप www.youtube.com पर देख सकते है। इसकी छत पर चढ़ कर हज़रत बिलाल ने अज़ान दी थी। मुसलमान अगर काबा शरीफ को ईश्वर मानते तो इस की छत पर खड़े रहकर कोई अजान क्यों देगा? इससे साबित होता है कि मुसलमान काबा शरीफ की पूजा नहीं करते, बल्कि एक

अत्यंत पवित्र स्थान की तरह उसका आदर करते हैं। इस की सिर्फ परिक्रमा की जाती है जिसे तवाफ कहते हैं। पहले नमाज फिलिस्तीन के शहर येरुस्लम की एक मस्जिद 'मस्जिद-ए-अक्सा' की तरफ मुँह करके पढ़ी जाती थी। लगभग ६२४ A.D के बाद से पवित्र कुरआन के आदेशानुसार नमाज़ काबा शरीफ की तरफ मुँह करके पढ़ी जाने लगी। (पवित्र कुरआन २:१४४)

पहली बार काबा शरीफ को फरिश्तों ने बनाया था। उसके बाद हज़रत नुह (मनु) के काल में बाढ़ में यह गिर गया था। फिर हज़रत इब्राहीम ने (अथर्ववेद में जिसे ब्रम्हा कहा गया है) उसे फिर से बनाया था। उसके बाद कई बार इसकी मरम्मत की गई। यदि भविष्य में किसी भूकंप में यह गिर भी जाता है तो इसके गिरने से इस्लाम धर्म खत्म नहीं होगा। ईश्वर हमेशा था, है, और रहेगा। और मुसलमान सिर्फ एक ही निराकार ईश्वर की पूजा करते है, और उसके द्वारा भेजी गयी ईश-वाणी जो कुरआन के रुप में संग्रहित है उसका अनुकरण करते हैं।

कुरआन में हिन्दू धर्म का उल्लेख

- हिन्दू धर्म का असली नाम सनातन धर्म है। और हिन्दू धर्म के मानने वालों को पवित्र कुरआन में साबाईन के नाम से पुकारा है। कुरआन की वह आयतें जिसमें हिन्दू भाईयों का उल्लेख है वह इस प्रकार है।

- **जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या साबाईन (हिन्दू) अर्थात कोई व्यक्ति किसी भी धर्म और समुदाय का हो जो एक ईश्वर और कयामत के दिन को मानेगा। (अर्थात इस बात को मानेगा कि मरने के बाद कयामत के दिन अपने कर्मों का हिसाब किताब देना है) और नेक आमाल (कर्म) करेगा, तो ऐसे लोगों को उन के सत्य कामों का बदला ईश्वर के पास मिलेगा। और कयामत के दिन उनको न किसी तरह का डर होगा और न ही वे उदास होंगे।**
(पवित्र कुरआन २:६२)

- **विश्वास रखो कि हज़रत मुहम्मद(स.) को माननेवाले हो (यानी मुसलमान) या यहूदी, ईसाई हों या साबाईन (हिन्दू), जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएगा और अच्छा कर्म करेगा, उसका बदला उसके रब के पास है और उसके लिए किसी ड़र और रंज का मौका नहीं है।**
(पवित्र कुरआन २:६२)

- पवित्र वेद ई. सन १८०० तक लिखित रुप में न थे। बल्कि पंडितो ने इसे याद कर रखा था। भिन्न-भिन्न खंडो को भिन्न-भिन्न तरह से भिन्न-भिन्न ऋषियों ने लिख रखा था। वेद पुस्तक के रुप में न थे और न इन का किसी पुस्तक की तरह नाम था। ई.१८०० में मार्क्स मिलर नामी व्यक्ति ने वेदों को २० साल की कड़ी मेहनत के बाद पुस्तक के रुप में एक जगह जमा किया। प्राचीन काल में वेद जिस हालात में थे उसके अनुसार कुरआन में वेदों को याद किया गया है। कुछ वेदों में ईश्वर के आदेश स्पष्ट रुप में बयान किए गए है। और कुछ वेदों में उदाहरण देकर काव्य रुप में बयान किए गए है।

- शम्स नवैद उस्मानी (एस. अब्दुल्ला तारीक) ने अपनी पुस्तक "अभी न जागे तो" में लिखा है कि 'बाईयनात' वह ईश्वरी पुस्तकें हैं जिस में ईश्वर के आदेश साफ-साफ और सरल शब्दों में बयान किया

गया है। और 'जबर' वह ईश्वरी पुस्तकें हैं जिस में बातों को उदाहरण देकर बयान किया गया है। यह दो नाम बाईबल और तौरात के लिए नहीं है तो वेदों के सिवा यह किस के लिए हो सकते है?

- पवित्र कुरआन की वह आयते जिस में बाइयनात और जबर का उल्लेख है वह इस प्रकार है।

और हमने (ऐ मुहम्मद) तुमसे पहले पुरुषों को ही पैगम्बर बना कर भेजा था, और उनकी तरफ हम वही भेजा करते थे, और अगर तुम (वह लोग जो इस बात को) नहीं जानते हो तो अहले किताब (वह समुदाय जिनके पास ईश्वरी किताब है) उनसे पूछ लो। और उन पैगम्बरों को हमने बाइयनात और जबर देकर भेजा था। और हमने यह किताब (कुरआन) तुम (मुहम्मद) पर प्रकट की है ताकि जो आदेश लोगों के लिए है वह आप उनको बता दो। ताकि लोग इस पर विचार करें। (पवित्र कुरआन १६:४३-४४)

- पवित्र कुरआन में प्राचीन धार्मिक ग्रंथों को सुहफे ऊला और जबरुल अव्वालीन भी कहा गया है। सुहफ का अर्थ है ग्रंथ। ऊला का अर्थ है प्रथम या पहला या प्राचीन। अव्वलीन शब्द अव्वल से बना है, जिसका अर्थ भी प्रथम या पहला है और वह आयतें निम्नलिखित है।

- **"और वे कहते हैं कि यह (हज़रत मुहम्मद) अपने रब (ईश्वर) की ओर से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?"(उनके सवालों का जवाब देने के लिए ईश्वर द्वारा निम्नलिखित आयत प्रकट हुई।) "क्या उनके पास उसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि सुहफे ऊला (आदिग्रंथो) में उल्लेखीत है।" (इसका अर्थ है कि आप लोग हज़रत मुहम्मद से उनके पैगम्बर होने का सबूत मांगते हो, जबकी उनके पैगम्बर होने की भविष्यवाणी आप के ग्रंथों में मौजूद है। तो क्या उनका नाम आप की ग्रंथो में होना उनके पैगम्बर होने का सबूत नहीं हैं?)**
(पवित्र कुरआन २६:१२६)

इस आयत के प्रकट होने की एक वज़ह यह हो सकती है कि, अरब देश का हज़ारो साल से भारत देश से व्यापार संबध रहा है। और भारतीय लोंगों के बहुत सारे कबीले यमन, सऊदी अरब, बहरेन इत्यादी में बसे हुए थे। और वहाँ बसे भारतीय लोंगों ने जब यह सवाल हज़रत मुहम्मद से किया तो ईश्वर ने उपरोक्त आयत द्वारा उनको जवाब दिया। (मुहम्मद (स.) के जमाने का हिन्दूस्तान, लेखक काजी मुहम्मद अतहर मुबारक पूरी)

(वेदों में ३१ बार हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी है। और हिन्दू धर्म में अनेक ग्रंथों में भी हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी अहमद, महामद, महामे ऋषि, नराशंस और कल्कि अवतार के नाम से आयी है। उस में से दो श्लोक इस तरह हैं।)

- एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचाय्येण समन्वित।।
महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।। (भ. पू. पर्व-३, खण्ड-३, अध्याय ३, श्लोक-५)

भविष्य पुराण के अनुसार, 'किसी दूसरे देश में एक पैगम्बर अपने साथियों के साथ आएगा। उसका नाम 'महामद' होगा, और वह एक मरुस्थलीय (Desert) जगह पर प्रकट होगा'

- अज्ञान हेतु कृत मोहमदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक। (श्रीमद भगवत पुराण २:७२)

मोहम्मद के ज़रिए (अज्ञान का) अंधेरा दूर होगा और ज्ञान और Spirituality परवान चढ़ेगी।

कुरआन की एक और आयत जिस में आदिग्रंथ का उल्लेख है वह इस प्रकार है।

- 'तुम्हारा ईश्वर दयालु और महान है। उसी ने कुरआन को प्रकट किया है। इस कुरआन को पवित्र फरिश्तें ने उतारा है तुम्हारे (हज़रत मुहम्मद के) हदय में ताकि तुम लोगों को उपदेश देते रहो। और यह अरबी भाषा में हैं। और इसकी खबर जबरे अव्वालीन में लिखी हुई है।' (पवित्र कुरआन २९:१९६)

'जबरे अव्वालीन' का अर्थ है 'आदि ग्रंथ'।

नोटः- कुरआन को ऋग्वेद में भी आखरी मशाल (Last Tourch) के नाम से याद किया गया है। और वेदों को पहली मशाल (First Tourch) के नाम से याद किया है, वह श्लोक इस तरह है।

'जब आखिरी मशाल को पहली मशाल के साथ रखा जाएगा तो ही अग्नि का रहस्य खुलेगा।'

(ऋग्वेद ३-२९-३)

अर्थात जिसे कुरआन और वेद दोनों का ज्ञान होगा वही अग्नि का रहस्य जान पाएगा। और यह सत्य है की अभी तक किसी आचार्य ने स्पष्ट रुप से कभी भी अग्नि के रहस्य के बारे में लोगों को नहीं बताया हैं। क्योंकि उन्हें केवल वेदों का ज्ञान होता है कुरआन का नहीं।

तो कुरआन में वेदों और हिन्दू धर्म के बारे में भी लिखा हुआ है। मगर वह अरबी भाषा में होने के कारण साधारण लोग जान नहीं पातें हैं।

****

अध्याय-४ ३

आखिरी पैगंम्बर

(The Last Messenger)

- मार्गदर्शन की सतत प्रक्रिया इस अध्याय के अध्ययन से हमने यह नित्कर्ष निकाला है कि, आरंभ में सभी धर्म एक समान थे। ऐसा नित्कर्ष निकालने का एक कारण यह है कि सभी धार्मिक पुस्तकों में अंतिम देवदूत के चरित्र और व्यक्तित्व की जो भविष्यवाणी की है वह लगभग एक समान है।

- इस अध्याय में हम यह अध्ययन करेंगे कि उन पुस्तकों ने अंतिम देवदूत की क्या भविष्य वाणी की है:

इस्लाम धर्म में अंतिम पैगंबर की भविष्यवाणी:-

१. पवित्र कुरआन के अध्याय नं.६१ के आयत नं ६ में कहा है:-

जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा था, ऐ ईज़रॉइल के बेटों, मैं तुम्हारे लिए ईश्वर का भेजा हुआ पैगंम्बर हूँ, प्रमाणित (Confirm) करने जा रहा हूँ, उस तोरात को, जो मेरे से पहले आया है (अर्थात तौरात एक सच्ची किताब है) और उस पैगंम्बर की अच्छी खबर देने वाला हूँ कि जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा।

(अर्थात हज़रत इसा और बहुत से पैगम्बरों ने हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी अहमद के नाम से की है। और यह भविष्यवाणी अहमद के नाम से क्यों की गई थी इसका रहस्य जानने के लिए मेरी पुस्तक "Who is Agni? Prophet or paigumber." का अध्ययन करें जो कि वेबसाईट से मुफ्त में डाऊनलोड की जा सकती है अथवा पढ़ी जा सकती है।)

२. पवित्र कुरआन के अध्याय नं. ३३ के आयत नं. ४० में कहा है:- हज़रत मुहम्मद (स.) तुम्हारे आदमियों में किसी के पिता नहीं है, लेकिन वह ईश्वर के पैगंम्बर है तथा पैगंम्बरों में अंतिम हैं।

३. अंतिम पैगंम्बर के अनेक नाम हैं:-

मुहम्मद, अहमद, मुदस्सिर तथा मुज़म्मिल उनमें से कुछ हैं।

पैगंम्बर मुहम्मद के बारे में कुछ जानकारी, जो दूसरी धार्मिक पुस्तकों में उनकी भविष्यवाणी से संबधित हैं, निम्न प्रकार से हैं:-

- उनका जन्म ५७० ए.डी. में चंद्रमास के १२ वे दिन मक्का के प्रसिद्ध कुरेश परिवार में हुआ था।

- खजूर और जैतून पैगंम्बर मुहम्मद और अरब के सामान्य लोगों के भोजन के मुख्य अंश थे।

- उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह था (जिसका अर्थ है-ईश्वर का दास अथवा सेवक)

- उनकी माता का नाम आमना बीबी था (जिसका अर्थ है शांति से पूर्ण)
- वह एक अच्छे घुड़सवार और तलवार चलाने में कुशल व्यक्ति थे।
- पहली बार उन्होंने ईश्वर का संदेश एक गुफा में देवदूत हज़रत जिब्राईल के ज़रिये प्राप्त किया।
- एक बार उन्होंने 'बुराक' नामक अत्याधिक तेज़ गति से चलने वाला घोड़ा ईश्वर से प्राप्त किया, जिस पर सवार होकर उन्होंने स्वर्ग और सभी सात आसमान देखे। (यह घटना 'मेराज' कहलाती है।)
- वह मधुर-भाषी एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे।
- उनकी बारह पत्नियाँ थीं।

ईश्वर का देवदूत होने के कारण, वह सही भविष्यवाणी भी किया करते थे।

- जब उन्होंने अपने पूर्वजों के शहर मक्का पर विजय प्राप्त की उस समय, १०,००० अनुयायी उनके साथ थे। उन्होंने बिना युद्ध और खून बहाये विजय प्राप्त की और उनके साथियों ने कभी भी किसी से बदला नहीं लिया और मक्का के प्रत्येक रहवासी को क्षमा कर दिया।

ईसाई धर्म में अंतिम पैगंबर की भविष्यवाणी-

ग्रीक बॉइबिल में अंतिम देवदूत को Paraclete के रुप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक अँग्रेजी भाषा की बॉईबिल में, परेक्लेट शब्द का अनुवाद आरामदायक शाँतिदूत (शाँति प्रदान करने वाला) के रुप में किया गया है।

बॉइबिल में जीसस ने कहाः

१. यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तो मेरे आदेशों को याद रखो, और मैं फादर (ईश्वर) से प्रार्थना करुँगा, तथा वह तुम्हें एक दूसरा शांतिदूत देगा, जो अंत तक तुम्हारे साथ रहेगा। (सेंट जोहन १४:१५:६)

२. शांतिदूत जिसे फादर (ईश्वर) मेरे बाद भेजेगे वह तुम्हें सब कुछ याद दिलाएगा, जो कुछ भी मैंने तुम्हें कहा था। (सेंट जोहन १४:२६)

३. मैं तुम्हें पानी द्वारा पश्चाताप कराता हूँ और धर्म में दाखिल करता हूँ। मगर मेरे बाद जो आएगा वह बहुत शक्तिशाली होगा। जिस का जूता पहनने के योग्य भी मैं नहीं हूँ। वह लोगों को आग द्वारा पश्चाताप (तौबा) कराएगा और धर्म में दाखिल करेगा। (सेंट मैथ्यु ३:११)

(कुछ विद्वान इस भविष्यवाणी को जोहन दी बेप्टीशियन के लिए कहते हैं। मगर जोहन ने कभी शक्ति का उपयोग नहीं किया। आग से पश्चाताप कराने का अर्थ है युद्ध करके अधर्म को पराजित करना और हज़रत इसा के बाद केवल हज़रत मुहम्मद ने ऐसा किया। इसलिए यह भविष्यवाणी जोहन दी बेप्टीसाइज के लिए भी नहीं हो सकती है।)

- मूल हिब्रु बाइबिल (Old Testament) के सुलेमान (Solomon) की किताब (अध्याय ५, श्लोक १६) कहते है:

- हिक्को मुमिताकीम वे कुल्लो मुहम्मदिम जेहदूदेह व जेहरई बयना जेरुसलेम (Old Testament, book Solomon, Ch. No. 5, Verse No. 16)

  अर्थात "उसके बोल कितने मीठे हैं, वह बहुत प्यारा है। ऐ जेरुसलेम की बेटियों, हज़रत मुहम्मद मेरा प्यारा और मेरा दोस्त है" (हिब्रु भाषा में नाम के साथ 'इम' आदर के लिए लगाया जाता है, इसलिए यहाँ पर नाम 'मुहम्मदिम' आया है।)

जैन धर्म में अंतिम पैगंबर की भविष्यवाणी:-

- जैन धर्म में कालकी अवतार की भविष्यवाणी इस तरह है:-

  श्री महावीर स्वामी की मृत्यु ५७१ बी.सी.में हुई। जैन धार्मिक पुस्तक हरिवंश पुराण में यह उल्लेख किया गया है कि महावीर जैन की मृत्यु के ६०५ वर्ष ५ महीने पश्चात राजा शक ने जन्म लिया, और गुप्त सम्बात के राज्य के २३१ वर्ष पश्चात कल्कि अवतार ने जन्म लिया।

  ये भविष्यवाणियाँ निम्नलिखित शब्दों में हैं:-

  गुप्ताना चश्त द्वयम।
  एक विवंश्च वर्षणि कालविद मिरुदा ह्तम।
  चित्वा रिंश देवात: कल्किराजस्य राजता।
  ततोड़ जिटंजयों राजा स्यादिन्द्रपुर संस्थित: (जिनसेन कृत हरिवंश पुराण ६०)

- त्रिलोक सागर नामक एक दूसरी पुस्तक में उल्लेख किया गया हैं कि श्री महावीर स्वामी के निर्वाण के ६०५ वर्ष तथा सात महीने पश्चात शक राज्य आया और उसके ३९४ वर्ष तथा सात महीने उसके राज्य करने के पश्चात कल्कि अवतार ने जन्म लिया।

  पणछस्सयं वस्संपण मासजंद गमिय वीर पिबुह दो
  सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं (त्रिलोकसागर पृ ३२)

  कलकी अवतार के जन्म के वर्ष की भविष्यवाणी वही है, जैसी मुहम्मद पैगंम्बर की है।

  इन भविष्यवाणीयों के मुताबिक कल्कि अवतार का जन्म ५०० AD के आस पास हुआ था। और महापुरुषों में केवल हज़रत मुहम्मद ही ५७० AD में जन्मे है।

यहुदी धर्म में अंतिम पैगंबर की भविष्यवाणी:-

पैगंम्बर मूसा की पाँचवी पुस्तक में भविष्यवाणी है, जिसे ड्युटरोनोमी कहा गया है, ईश्वर ने मूसा को कहा कि।

मैं उनके भाईयों के बीच में से एक पैगंम्बर को खड़ा करुँगा, बिल्कुल उसी प्रकार का (अर्थात मूसा की तरह) और अपने शब्द उसके मुँह में दूँगा कि वह उन सबको वही कहेगा जिसका आदेश में दूंगा।
(ओल्ड टेस्टामेंट, डियूटरोनोमी १८:१८)

हज़रत मुहम्मद हज़रत इस्माइल के वंश से हैं। और हज़रत इस्माइल हज़रत इस्हाक के भाई है। यहूदी लोग (बनी इसराई) हज़रत इसहाक के वंश से है। इस तरह हज़रत मुहम्मद (स.) सभी यहूदियों के लिए भाई के नस्ल से हुए।

बुद्ध धर्म में अंतिम पैगंबर की भविष्यवाणीः-

गौतम बुद्ध द्वारा अंतिम देवदूत की भविष्यवाणी निम्न प्रकार से हैः-

ओ नंदा, मैं इस संसार में प्रथम बुद्ध नहीं हूँ, न ही मैं अंतिम हूँ। सही समय पर इस संसार में एक बुद्ध प्रकट होंगे, जो सच्चाई और दान-धर्म का उपदेश देंगे। उसकी व्यवस्था शुद्ध और पवित्र होगी। वह ज्ञान और बुद्धि का स्वामी होगा। वह सबका नैतृत्व करेगा और सभी व्यक्तियों का मार्गदर्शन करेगा। वह उस सत्य का उपदेश देगा जैसा सच मैंने पढ़ाया है। वह संसार को जीने की राह बताएगा, जो शुद्ध होगी और उस समय उनका नाम मैत्रेय रहेगा। (Gospel of Buddha by Carus, page 17)

डा.वेद प्रकाश उपाध्याय ने अपनी पुस्तक में विस्तार में इस विषय में चर्चा की है कि मैत्रेय का अर्थ भी मुहम्मद होता है। और यह भविष्यवाणी भी हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ही है।

हिंदू धर्म में अंतिम देवदूत की भविष्यवाणीः-

वेदों में भविष्यवाणी (Prediction in Vedas)

१. स्वामी विवेकानंद, गुरुनानकदेवजी और हिंदू धर्म के महान विद्वान, जैसे पंडित सुंदरलाल, श्री बलराम सिंह परिहार, डा.वेद प्रकाश उपाध्याय, डा.पी.एच.चौबे, डा.रमेश प्रसाद गर्ग, पंडित दुर्गाशंकर सत्यार्थी, श्री केशरी लाल भगत सहमत थे कि अवतार का अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर पृथ्वी पर जन्म लेता है, बल्कि अवतार का अर्थ है कि वह व्यक्ति जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है और उसका संदेश दूसरों तक पहुँचाता है अर्थात एक देवदूत है। (हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ-डा.एम.ए.श्रीवास्तव)

२. हिंदू धर्म के ग्रंथो में अंतिम देवदूत की भविष्यवाणी पाँच नामों द्वारा की गई है, वे नाम हैं-नराशंस, ममाह ऋषि, कल्कि अवतार, मुहम्मद तथा अहमद।

३. अथर्ववेद अंतिम देवदूत का वर्णन नराशंस के नाम द्वारा करता है। ये वर्णन कुंतप सुक्त के प्रथम मंत्र हैं।
(अध्याय -२०)

४. अथर्ववेद अंतिम देवदूत के रुप में ममाह ऋषि का भी वर्णन करता है तथा कहता है कि ममाह ऋषि रेगिस्तान में ऊंट की सवारी करने वाला होगा। (कुंतप सुक्त दूसरा मंत्र)

५. साम वेद अंतिम देवदूत का वर्णन अहमद के रुप में करता है। यह कहता है कि अहमद ने अपने मालिक से धार्मिक सूत्र प्राप्त किया। यह धार्मिक सूत्र बुद्धि से भरपूर है। मैं उससे वैसे ही प्रकाश लेता हूँ, जैसे सूर्य

से।

अहमिधि पितु परिमेघामृतस्य जग्रह। अहं सूर्य इवाजनि। (सामवेद २:७:८)

६. भविष्य-पुराण कहता है, दूसरे देश में पैगंम्बर अपने साथियों के साथ आयेंगे। उनका नाम 'महामद' होगा और वह रेगिस्तान में प्रकट होगा।

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्येण समन्वितः।।

महामद इति ख्यातः शिष्यशाखा समन्वितः।। (म. पु. पर्व-३, खंड-३, अध्याय-३, श्लोक-५)

७. पवित्र वेदों के अनुसार नराशंस में निम्नलिखित चारित्रिक गुण होंगे:-

- मधुर-भाषी
- भविष्य का ज्ञान रखेगा
- श्रेष्ठतम व्यक्तित्व का धनी होगा
- मानव-जाति को गलत-राह से रोकेगा और उसकी रक्षा करेगा।
- उनकी बारह पत्नियाँ होंगी।
- नराशंस ऊंट की सवारी करने वाला होगा।
- ईश्वर नराशंस की ६००९० शत्रुओं से रक्षा करेगा।
- ईश्वर नराशंस को १०००० गायें देगा।

८. कल्कि-पुराण तथा भगवत-पुराण ने कल्कि-अवतार के बारे में भविष्यवाणी निम्नप्रकार से की:-

- कल्कि अवतार का जन्म चन्द्रमास के बारहवें दिन होगा।
- वह एक अत्याधिक सम्मानित परिवार में जन्म लेगा।
- वह सिल-सिल द्वीप में (अरब क्षेत्र) जन्म लेगा।
- उसके पिता का नाम विष्णुभगत होगा। (विष्णु का अर्थ है ईश्वर और भगत का अर्थ है ईश्वर की पूजा करनेवाला)

- उसकी माता का नाम सुमति होगा (जिसका अर्थ है शांति)
- वह कुशल तलवारबाज एवं घुडसवार होगा।
- परशुराम उसे एक गुफा में उपदेश देगा।

(उपरोक्त विवरण, 'भारतीय धर्मग्रंथ में हजरत मुहम्मद' लेखक डा.एम.ए.श्रीवास्तव की लिखी पुस्तक से लिए गये है।)

९. डा.वेद प्रकाश उपाध्याय, डा.एम.ए.श्रीवास्तव, तथा ए.एच.विद्यार्थी ने अपनी-अपनी पुस्तकों में विस्तार से चर्चा कि है कि नराशंस, ममाह ऋषि और कल्कि अवतार एक ही व्यक्ति है तथा यह मुहम्मद है। क्योंकि सभी भविष्यवाणी के लक्षण शत-प्रतिशत पैगंम्बर मुहम्मद के साथ मिलती हैं। और कई स्थानों पर उनके वास्तविक नाम मुहम्मद और अहमद के रुप में भी भविष्यवाणी है।

१०. संग्राम पुराण में भविष्यवाणी (Prediction in Sangram Puran)

पंडित धर्मवीर ने एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी, अंतिम ईश्वर-दूत जो सन १९२३ में नेशनल प्रिंटिंग प्रैस, दरियागंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की गई थी। अपनी पुस्तक में वह लिखते हैं कि काक-भुसंडि और गरुड़ लंबे समय तक श्री राम की संगति में रहे, वे श्री राम के उपदेशों केवल स्वंय ही अनुकरण नहीं करते थे, बल्कि उन उपदेशों को आम लोगों तक भी पहुँचाते थे। तुलसीदास जी ने उपर्युक्त उपदेशों का संग्राम

यूहा न पक्षपात कछू राखहुं। वेद, पुराण, संत मत बाखहुं।	में बिना किसी पक्षपात के संतो, वेदों और पुराणों के उपदेशों को प्रकट करता हूँ।
संवत विक्रम दोऊ अनझ। महाकोक नस चतुर्पतझ।	वह विक्रमी सवंत सात को चार सितारों के उदय के साथ जन्म लेगा।
राजनिती भव प्रिति दिखावै। आपन मत सबका समझावै।	वह शासन करने के योग्य होगा। तर्क अथवा ताकत द्वारा वह अपने उपदेश को समझायेगा।
सुश्न चतुसुदर सतचारी। तिनको वंश भयो अति भारी।	उनके चार सेवक होंगे, जिनके कारण उनके अनुयायी बढेंगे।
तब तक सुंदर मद्यिकोया। बिना मोहम्मद पार न होया।	जब तक आध्यात्मिक पुस्तकें पृथ्वी पर हैं, मुहम्मद के बिना मोक्ष संभव नहीं है।
तबसे मानहू जन्तु भिखारी। समस्य नाम एहि व्रतधारी।	लोग, जीव-जंतु और भिखारी यह मुहम्मद का नाम लेने के बाद ही ईश्वर के भक्त होंगे।
हर सुंदर निर्माण न होई। तुलसी वचन सत्य सच होई।	उनके पश्चात कोई भी उनके समान जन्म नहीं लेगा। तुलसी दास का वचन सच होगा।

संग्राम पुराण, स्कंन्द१२, कांड ६, पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीवाद (हज़रत मुहम्मद (स) और भारतीय धर्म ग्रंथ, डा. एम.ए.श्रीवास्तव, पेज. नं. १८)

पुराण के अपने अनुवाद में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा कि शंकर जी ने भविष्य के धर्म के बारे में अपने पुत्र से निम्नलिखित शब्दों में भविष्यवाणी की थी।

उपर्युक्त उल्लेख केवल कुछ पदों में है। वास्तव में अंतिम देवदूत की भविष्यवाणी पवित्र वेदों में ३ १ बार से भी अधिक दुहराई गई है, पुराण और उपनिषद में भी कई बार की गई है। जैसा कि यह हमारा विषय नहीं है, इसलिए हम अंतिम देवदूत का वर्णन बस इतना ही करेंगे।

****

एक नम्र अपील

यदि हम विदेश जाते हैं, जहाँ हमारे लिए प्रत्येक व्यक्ति नया और अजनबी है, और यदि हमें मालुम होता है कि उनके बीच में एक व्यक्ति हमारे अपने देश का है। तब बिना उसके बारे में कुछ भी जाने हम उसके प्रति मित्रता, हमदर्दी और आकर्षण महसूस करते हैं। क्योंकि उस व्यक्ति और हमारे बीच में कुछ चीज़ सामान्य है, और वह है हमारी मातृभूमि।

इस समानता के कारण दूसरे धर्म के लोगों से मित्रता, हमदर्दी और आकर्षण का कुछ एहसास हमें अवश्य होगा यदि हम अपने और दूसरों के धर्मों के बीच समानता के बारे में सीखेंगे और जानेंगे।

अब हम अनेक समानताएँ जो हमारे और सब धर्मों के बीच समान हैं जानते है, जैसे किः-

१. एक ईश्वर की प्रार्थना।

२. आचरण की नियमावली।

३. नरक, स्वर्ग और फैसले के दिन (कयामत) का विश्वास।

४. पैगंम्बर और अंतिम देवदूत।

हमें इस समानता के ज्ञान को आम लोगों के बीच प्रसारित करना है जिस से उनके बीच का द्वेष को कम हो और इस संसार और मनुष्य जाति के जीवन में शाँति और समृद्धि आए।

हे ईश्वर! हमें सच्चाई को समझने का ज्ञान दे और उसका अनुकरण करने की शक्ति दे। हम इस पुस्तक की इति श्री, अथर्ववेद के पवित्र मंत्र का पाठ करते हुए, ईश्वर की प्रार्थना के साथ करते हैं

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो तथा।

शिक्षा णो अस्मिन पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिर शीमहि।

हे ईश्वर! हमें इस दिशा में ज्ञान दें, ताकि हम अपने जीवनकाल में ज्ञान की ज्योति प्राप्त करें।

(अथर्ववेद १८:३:६७)

अंतिम शब्द (Last Word)

यह पुस्तक अपने अनुभव और ज्ञान को आपके साथ बाँटने की एक कोशिश है। मैंने अपने ज्ञान और अनुभव के अनुसार, धन-समृद्धि कमाने और उसे ज्यादा समय तक शेष रखने के बारे में संक्षिप्त चर्चा की है।

मैं केवल एक विद्यार्थी हूँ, इन विषयों का विद्वान नहीं। मैंने इस पुस्तक में गलतियाँ की होगी। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, कृपया अपने सुझाव और विचार मुझे भेजें। अगले एडीशन में हम उन सारी गलतियाँ को सुधारने की कोशिश करेंगे।

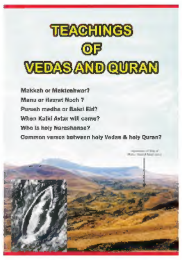
सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

क्यू.एस.ख़ान

Email: hydelect@vsnl.com

लेखक द्वारा लिखित कुछ पुस्तकों का परिचय

पवित्र वेद और इस्लाम धर्म





इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य मुस्लिम और हिंदू भाईयों के बीच राजनीतिक पार्टियों के द्वारा जो द्वेष (नफरत) पैदा की जा रही है उसे कम करना है।

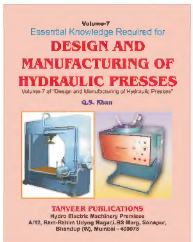
इस पुस्तक में लेखक ने ऐसे विषयों के बारे में जानकारी देने का प्रयास किया है जो दोनों धर्म में समान हैं।

अगर हम किसी दूर देश में जाऐं और यदि हमें पता चले की हमारे देश का कोई व्यक्ति वहाँ मौजूद है तो उस से बिना परिचय के भी एक अपना पन, सहानुभुति या दोस्ती का एहसास होता है। और यह एहसास एक समान (Common) देश से होने के कारण होता है।

समान (Common) चीज़ें दोस्ती बढ़ाती हैं। इसलिए लेखक ने इस पुस्तक में दोनों धर्मों के समान विषयों की जानकारी देने की कोशिश की है। मुझे आशा है कि यह समानताएं दोनों समुदायों के बीच नफरत (द्वेष) कम करने और भाई-चारा बढ़ाने का ज़रिया बनेंगे।

आशा है कि शांतता-प्रेमी लोग इस पुस्तक को पसंद करेंगे।

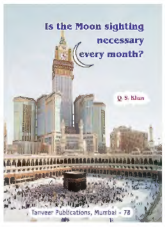
हायड्रौलिक मशीन डिज़ाईन और निर्माण



इस युग में अब अधीकतर मशीनें हायड्रौलिक से चलती है। किंतु हायड्रौलिक की शिक्षा कालिजों में बहुत कम पढ़ायी जाती है।

लेखक को हायड्रौलिक मशीन बनने का २५ वर्ष का अनुभव है। जो ज्ञान उन्हें हायड्रौलिक की विदेशी पुस्तकें पढ़ कर मिला और जो अनुभव उन को अपने २५ वर्ष के हायड्रौलिक मशीन निर्माण में मिला उस को लेखक ने पुस्तक के रुप में आप के सामने रख दिया है ताकी नौजवान विद्यार्थी इस से लाभ उठा सके।

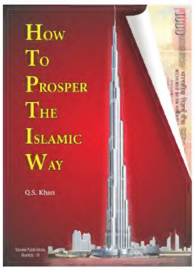
क्या हर माह चांद देखना जरुरी हैं?



हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा के चांद देख कर उपवास रखो और चांद देख कर ईद मनाओ। इसलिए मुस्लिम समुदाय किसी Scientific और Astrological भविष्यवाणी को नहीं मानते है। इसलिए ईद कब होगी यह चांद देखने तक अनिश्चित रहती है।

लेखक ने अपनी पुस्तक में इस अनिश्यतता को दूर करने का प्रयास किया है। आज अमेरिका के मुस्लिम लेखक से मिलते जुलते सिद्धांत से चांद की पहली तारीख मानते है और ईद मनाते हैं। इसलिए अमेरिका में अनिश्चतता नहीं है। अगर भारत के लोग भी इस सिद्धांत को माने तो अनिश्चतता जरुर दूर हो जाएगी।

तरक्की के इस्लामी उसूल

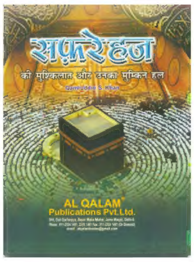


मुसलमान आर्थिक रुप से बहुत पिछड़े हुए हैं। और इस का कारण धर्म का सही ज्ञान न होना हैं। जब धर्म का सही ज्ञान नहीं होता है तो लोग बेईमानी, गुंडागर्दी, तस्कारी और काले धंदों से धन कमाने का प्रयास करता हैं। ऐसा धन तो किसी को फलते ही नही तो वह और गरीब हो जाते है।

इस पुस्तक में लेखक ने धर्म की सिमा में रहते हुए कैसे धनवान हो इस की जानकारी मुसलमानों को देने की कोशिश की है।



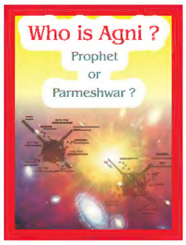
सफरे हज



हाजी की हज यात्रा ४० दिन की होती है। मगर जो हज यात्रा से पहले सही जानकारी नहीं प्राप्त करते है उन्हें इस हज यात्रा में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। लेखक ने इस पुस्तक द्वारा हज यात्रीयों का सरल शब्दों में मार्गदर्शन किया है।

अग्नि कौन?

वेदों में 'अग्नि' एक रहस्य है। लेखक ने इस पुस्तक में इस रहस्य पर ज्ञान का प्रकाश डालने का प्रयास किया है।



More than 10 books written by Author Q.S.Khan.
you can download free of cost from our website
www.freeeducation.co.in